हिन्दी-शेक्सपियर

चौथा भाग

लेखक

गंगाप्रसाद एम० ए०

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, प्रयाग

१९१४

[मूल्य ॥)

Printed and published by Apurva Krishna Bose, at the
Indian Press Allahabad

What needs my Shakespeare for his honoured bones
The labour of an age in piled stones?
Or that his hallowed reliques should be hid
Under a starry pointing pyramid?
Dear son of memory, great heir of fame,
What need'st thou such weak witness of thy name?
Thou in our wonder and astonishment
Has built thyself a lifelong monument

MILTON

विषय-सूची

शेक्सपियर का "नाट्य"

काव्य के दो भेद हैं, एक "श्रव्य" और दूसरा "दृश्य।" 'श्रव्य' वे हैं जो केवल कानों द्वारा सुने जाते हैं। 'दृश्य' वे हैं जिनको 'नाट्य' करके नाट्यशाला में दिखाते हैं। महाकवि कालिदास का रघुवश 'श्रव्य' है और 'शकुन्तला' वा 'विक्रमोर्वशी' दृश्य हैं। शेक्सपियर के मुख्य मुख्य काव्य केवल 'दृश्य' ही हैं और अपनी कोटि में वे सर्वोपरि गिने जाते हैं। शेक्सपियर में एक विलक्षण बात यह है कि वह न केवल कवि ही था, किन्तु नाटककार भी, अर्थात् अपनी कविता के साथ साथ वह नाट्य भी करता था। इसी कारण उसके रचे नाटकों में एक प्रकार की सरलता और सरसता पाई जाती है। जहाँ शेक्सपियर नाटक रचने के लिए प्रसिद्ध है वहाँ वह अपने जीवन-समय में 'नाट्य' खेलने के लिए भी कुछ कम प्रसिद्ध न था, इसलिए यहाँ हम सूक्ष्मतया उसकी नाट्यप्रवीणता का वर्णन करना चाहते हैं* ।

---

*अँगरेजी भाषा में 'श्रव्य' नाटक भी पाये जाते है, जैसे मिल्टन का सॅम्सन एगोनिस्टीज (Samson Agonistis)। ऐसे नाटककभी नाट्यशाला में दिखाने के लिए नहीं रचे गये, किन्तु वे अन्य काव्यों की भाँति काव्य-मात्र हैं। परन्तु नाट्यशास्त्र में दक्ष होने के कारण शेक्सपियर ने इस प्रकार के नाटक नहीं लिखे।

हम जीवन-चरित में पढ चुके हैं कि १५८६ ई० में जब शेक्सपियर घर से भाग कर लन्दन आया तो उसका किसी विशेष मनुष्य से परिचय नहीं था। उसने एक नाट्यशाला में घोडे पकडने का कार्य कर लिया। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि बहुत जल्दी वह उच्च पद पर नियत हो गया।

शेक्सपियर सबसे पहले नाट्य खेलने के लिए प्रसिद्ध हुआ; यद्यपि थोडे दिनो पीछे नाट्य-रचना में उसका नाम इतना बढ गया कि नाट्य-खेलने में उसकी कीर्ति दब गई।

सन् १५७१ ई० में अँगरेज़ी राजसभा (पार्लिमेंट) ने एक नियम पास किया कि जो नाट्य खेलनेवाले लोग किसी प्रसिद्ध पुरुष या राजा महाराजा की आज्ञा बिना नाट्य किया करेंगे उनको साधारण जीविका-रहित नीच पुरुष समझा जायगा। इसलिए नाटक करनेवालो को बडे बड़े लार्डों से आज्ञा-पत्र प्राप्त करना पड़ता था और नाट्यसभायें प्राय: उन्हीं प्रसिद्ध-जनों के नाम से पुकारी जाती थीं। १५८७ ई० में इस प्रकार की आठ या नौ कम्पनियाँ अर्थात् सभायें लन्दन में उपस्थित थीं और शेक्सपियर इनमें से किसी न किसी में नाट्य किया करता था। एक कम्पनी इनमें से महारानी कम्पनी कहलाती थी क्योंकि इनको आज्ञापत्र सीधा महारानी एलीज़बेथ से मिलाथा।

सबसे बडी नाट्यसभा लार्डलीसेस्टर कम्पनी थी जो लार्डलीसेस्टर की मृत्यु पर १५९२ ई० में अर्ल आफडर्बी कम्पनी हो गई और १५९४ ई० में यही कम्पनी लार्ड-चैम्बरलेन्सकम्पनी हो गई, क्योंकि लार्ड डर्बी के मृत्यु पर इनको लार्ड-चैम्बरलेन से आज्ञापत्र लेना पडा। हमको इस सभा के बहीखातों से विदित होता है कि १५९४ ई० में शेक्सपियर इसका सभासद था और १६०३ ई० में वह इसके अधिष्ठाताओं में था। सबसे बड़े

और प्रसिद्ध नाट्य प्रवीण पुरुष रिचार्ड बर्बेज, जौन हैमिङ्ग, हनरी कौण्डल, और अगस्टाइन फिलिप्स, शेक्सपियर के परम मित्रों में थे। शेक्सपियर के रचे हुए नाटक भी प्राय पहले पहल इसी कम्पनी द्वारा खेले गये थे।

उस समय लन्दन में दो प्रसिद्ध रङ्ग भूमियाँ अर्थात् नाट्य-शालायें (Theatres) थीं। एक 'दी थियेटर', दूसरी 'दी कर्टेन'। शेक्सपियर की कम्पनी ने १५९२ ई० में एक और नाट्यशाला खोली, जिसका नाम 'दी रोज' रक्खा गया। 'दी रोज' में ही शेक्सपियर नाट्य किया करता था। १५९४ ई० में वह 'न्यूइंग्टन बट्स', नाम की नाट्यशाला में खेलने लगा और १५९५ से १५९९ ई० तक पुरानी नाट्यशालाओं अर्थात् 'दी कर्टेन' और 'दी थियेटर' में खेलने लगा। १५९९ ई० में रिचार्ड बर्बेज ने 'दी थियेटर' की दीवारों को गिराकर 'दी ग्लोब' नामक एक नई नाट्यशाला बनाई। यह अठपहलू और लकड़ी की बनी हुई थी। शायद शेक्सपियर ने 'पचम हनरी' नामक नाटक में इसी नाट्यशाला को अँगरेजी अक्षर ओ (o) के आकार का बताया है। १५९९ ई० से यह नाट्यशाला शेक्सपियर की कम्पनी के हाथ में रही और इसके लाभ में उसको भाग मिलता रहा। अपने अन्तिम दिनों अर्थात् १६०९ या १६१० ई० में शेक्सपियर 'दी ब्लैक फ्रायर्स थियेटर' नामक नाट्यशाला में भी खेलने लगा। परन्तु यहाँ वह बहुत दिनों तक न रहा। इसी नाट्यशाला की जगह पर आज कल 'क्वीन विक्टोरिया स्ट्रीट' में 'दी टाइम्स' नामक समाचारपत्र का कार्यालय है।

नाट्य-शास्त्र की प्रवीणता में शेक्सपियर बहुत प्रसिद्ध है। १५९२ ई० में चीटिल ने लिखा था कि शेक्सपियर अपने काम में बहुत दक्ष है। 'विलियम बीस्टन' नामक एक बड़े प्रसिद्ध

नाटक खेलने वाले ने बहुत दिनों पीछे लिखा था कि शेक्सपियर नाट्य-विद्यानिधान था। १५९४ ई० के बड़े दिन पर विलियम कैम्प और रिचार्ड बर्बेज के साथ इसने ग्रीनिच के महल में महारानी एलीजवेथ की उपस्थिति में नाटक खेले थे। इन सब को बीस पैाड इनाम मिला था। वैन जौनसन के लिखे हुए "Every man in his Humour." नामक नाटक को पहले पहल खेलने वालों में शेक्सपियर भी था। उसी कवि के एक दूसरे नाटक सिजैनस (Sejanus) के खेलने वालों में भी शेक्सपियर का नाम मिलता है। रो का कथन है कि अपने 'हैमूलेट' नामक नाटक में वह 'आत्मा' बना करता था, और "as you like it" में 'आदम'। १६२३ में उसके नाटकों की जो सूची तैयार की गई थी उस के मुख्य खेलने वालों में उस का निज नाम भी है। इन सब बातों से प्रतीत होता है कि शेक्सपियर को नाट्य करने का बड़ा शौक था और उस ने इस विद्या में बड़ा नाम पैदा किया था। वैन जौनसन ने इसी कारण निम्नलिखित प्रशंसा-युक्त पद्य लिखा है।

"Sweet Swan of Avon! what a sight it were
To see thee on our waters yet appear,
And make those flights upon the banks of Thames
That so did take Eliza and our James

सुनिये विनती कलहंसकुलेन्द्र,
सुपवन-मानस केर विहारी।
उड़ते अबहू तट टेमस पै,
तुम वाहि उडान सदा सुख कारी॥
लखि कै जेहि एलिजबेथ कौन,
मुदै लहती मन में हितकारी।

नृप जेम्स प्रभू मनही मन में,
जिमि होत प्रसन्न हते लखि प्यारी ॥

शेक्सपियर लिखित एक पद्य से बहुत से लोग यह समझते हैं कि उसे केवल रुपया कमाने के लिए रङ्गभूमि में जाना पड़ा, नहीं तो उसे यह काम प्रिय न था। वह लिखता है कि :—

Alas! 'tis true I have gone here and there,
And myself a motley to the view

अर्थात् "शोक है कि मुझे इधर उधर जाना पड़ा और सब के सामने भेस धारण करने पड़े"। सम्भव है कि किसी विशेष समय विशेष कारणों से शेक्सपियर को नाट्य से घृणा हो गई हो, परन्तु यह उसका स्वभाव नहीं था। जिस मनुष्य ने तीस वर्ष तक, अर्थात् १५८६ से १६०६ ई० तक, अपने जीवन का बहुमूल्य समय नाटक रचने और नाटक खेलने के अतिरिक्त और किसी बात में व्यय न किया हो उस के लिए यह कहना कि उसे नाट्य से घृणा थी, अनुचित ही नहीं, किन्तु सर्वथा मिथ्या है। यदि हम शेक्सपियर के जीवन से नाट्यप्रियता को निकाल लें तो उसका जीवन ही निर्जीव प्रतीत होने लगता है और शेक्सपियर और अफ्रीका के एक अज्ञ नीग्रो में कुछ भेद नहीं रह जाता, क्योंकि एक नाट्यप्रेमी मनुष्य ही ऐसे विचित्र ग्रन्थ लिख सकता है। जिन कहानियों को शेक्सपियर ने लिया है वे नई नहीं हैं और किसी न किसी अवस्था में वह पहले भी विद्यमान थीं। कोई कोई तो नाटकरूप में भी उपस्थित थीं। परन्तु यह केवल शेक्सपियर की नाट्य-विद्या का परिचय ही था जो इन कहानियों को ऐसे मनोहर और हृदय-रूप में दिखाता है। क्या किसी इतिहास वेत्ता या इतिहासलेखक से यह आशा हो सकती थी कि जूलियस सीजर, पंचम हनरी या तृतीय

रिचार्ड के जीवन को ऐसे मनोरञ्जक रूप में प्रकट कर सकता। जो कुछ हो, इसमें सन्देह नहीं कि नाट्यविद्या का उसे पूरा पूरा ज्ञान था और यही कारण है कि शेक्सपियर इतना नाम पासका।

शेक्सपियर के नाटको के सर्वप्रिय होने का मुख्य कारण यही है कि वह स्वयं नाट्य करता था। इसके चिह्न उसकी सब पुस्तकों में पाये जाते हैं। बहुत सी बातें तो ऐसी हैं कि वे केवल रङ्ग-भूमि में ही सीखी जा सकती हैं या कम से कम उसी को सूझ सकती हैं जो नाट्य करता हो। 'अष्टम हनरी' नामक नाटक में वह लिखता है।

'Tis ten to one this play can never please
All that are here ; some come to take their ease
And sleep an act or two , but those we fear
We have frighted with our trumpets.

अर्थात् "अधिकतर यह कहा जा सकता है कि यह नाटक उन सब को प्रसन्न नहीं कर सकता जो यहाँ उपस्थित हैं। बहुत से इसी लिए आते हैं कि एक आध अङ्क में सो जाते हैं और फिर हमारे बाजे की ध्वनि से जग पडते हैं।"

इसी प्रकार 'पंचम हनरी' की प्रस्तावना में उसने श्रोतागण से क्षमा की प्रार्थना की है कि रङ्गभूमि 'अजीनकूर' रणक्षेत्र के समान नहीं है और इस पर सेनायें नहीं आसकतीं। इसलिए आप अपने मन में इस छोटी सी जगह को कल्पना द्वारा बडा बना लीजिए।

ये सब बाते केवल एक नट को सूझ सकती हैं। अन्य चाहे कितना ही बुद्धिमान् क्यो न हो, उसे ये बातें सूझना दुस्तर हैं। 'हैमलेट' में वह अन्य नवीन नाट्यसभाओ की बुराई करता

है और कहता है कि "आजकल नये छोकरे चिल्ला चिल्ला कर नाट्य खेलते हैं और अपने को नट कहने लगते हैं"।

इससे प्रतीत होता है कि हैमलेट का लिखने वाला स्वयं भी खेलता था और अपने सहयोगी सहव्यवसायियों की समालोचना भी करता था। एक स्थान पर वह लिखता है।

'All the world's a stage and the men and women merely players"

अर्थात् "संसार एक रङ्गभूमि है और स्त्री, पुरुष केवल नट, नटी हैं।"

'कोरियोलेनस' में वह लिखता है।

"Like a dull actor now I have forgot my part and I am out even to a full disgrace"

अर्थात् "एक सुस्त नाट्य करने वाले के समान मैं अपना पार्ट भूल गया और अब लज्जित हो रहा हूँ।"

इन सब से यही विदित होता है कि अन्य कवियों की भाँति शेक्सपियर केवल कवि ही नहीं था किन्तु नट भी था। इसी लिए वह बहुत से उत्तम नाटक लिख सका।

पाश्चात्य और पूर्वीय नाट्य नियमों में भेद है। भारतवर्ष नाटकों का शिरोमणि था। यहाँ प्राचीन समय में इतने नाटक खेले जाते थे कि जिनकी गणना नहीं हो सकती। कालिदास, भवभूति, हमारे देश के शिरोमणि हैं। शकुन्तला, उत्तर-रामचरित सर्वगुणसम्पन्न समझे जाते हैं। 'शकुन्तला' की प्रशंसा तो बड़े बड़े जर्मन और अँगरेज विद्वानों ने की है और यदि आज 'संस्कृत' ऐसी ही सर्व-प्रिय और प्रचलित भाषा होती तो हम को पूर्ण विश्वास है कि संस्कृत के अपूर्व नाटक भी जगद्विख्यात हो

जाते। परन्तु इन नाटको के लिखनेवाले नाट्य नहीं करते थे श्रोर यदि करते होंगे तो इसका कुछ पता नहीं है। दूसरा भेद पश्चिमी श्रोर पूर्वी नाटक-लेखको में यह है कि भारतवर्ष के लोग प्राचीन नियमों में अधिक आबद्ध हो गये थे श्रोर चाहे कैसी ही आवश्यकता क्यों न हो उनका उल्लङ्घन नहीं करते थे। पश्चिम में यह बात न थी, श्रोर न है। शेक्सपियर ने किन्हीं नियत नियमो का पालन नहीं किया, किन्तु जिस प्रकार एक योद्धा अखाड़े में जाकर नये नये दाव पेच खेलता है श्रोर देशकाल के अनुसार नई नई बातें निकालता है, उसी प्रकार शेक्सपियर नये अवसर पर नये ढंग निकालता था।

भारतवर्षीय नाटको का नियम है कि इनका परिणाम हर्षदायक ही होता है, परन्तु पाश्चात्य देशों का यह नियम नहीं है। यूनानी लोग प्रायः उन्हीं नाटकों को उत्तम समझते थे जिनमें दु:खो की महत्ता प्रकट की जाती थी। भारतीय नाटकों में हत्या इत्यादि अमङ्गल अप्रदर्शनीय बातो को रङ्ग-भूमि में नहीं दिखलाते। किन्तु इनके लिए उचित स्थान नेपथ्य है। बुरी बातो को लोग सभा के सम्मुख उच्चारण भी नहीं करते श्रोर यदि किसी की मृत्यु अथवा अन्य दुर्दशा का वर्णन करना हो तो कान में कह देते हैं। परन्तु पाश्चात्य नाटकों में ये सब काम रङ्गभूमि में किये जा सकते हैं श्रोर सभा में बैठे हुए श्रोतागण किसी को मरते देख कर घृणा नही करते। यह केवल रुचि भेद है।

शेक्सपियर इन सब प्रकार के भावो से अभिज्ञ था श्रोर हमारा तो यह विचार है कि उसके नाटक भारत वर्षियो को भी उतने ही प्रिय हो सकते हैं जितने अन्य देश के लोगों को।

लेखक।

हिन्दी-शेक्सपियर

चौथा भाग

हैम्लिट

डैन्मार्क का राजकुमार

HAMLET, PRINCE OF DENMARK

डैन्मार्क के राजा हैम्लिट की अचानक मृत्यु पर उसकी विधवा महारानी गर्ट्रूड ने दो महीने के भीतर ही भीतर उसके भाई क्लौडियस से विवाह कर लिया। यह बात लोगों को बहुत बुरी मालूम हुई क्योंकि यह क्लौडियस न तो शारीरिक रूप में और न मानसिक गुणों में ही उसके भूतपूर्व पति के समान था, किन्तु वह ऐसा ही कुरूप था जैसा वह नीच और दुष्ट था। बहुत से लोगों को इस नये और असतीत्व-सूचक सम्बन्ध से अनेक प्रकार के सन्देह होने लगे। उनका विचार यह था कि क्लौडियस ने अपने योग्य भाई को गुप्त रीति से इसलिए मरवा डाला है कि उसकी विधवा से विवाह कर ले और उसके राज्य को लेकर मृत राजा के छोटे लड़के हैम्लिट को जो गद्दी का अधिकारी था राज-बहिष्कृत कर दे।

परन्तु महारानी के इस अतीव अनुचित कार्य्य ने और किसी मनुष्य के हृदय को इतना दुःख नहीं पहुँचाया जितना

इस युवक राजकुमार को। क्योंकि उसे अपने मृत बाप से बहुत गहरा प्रेम था और उसका स्वभाव ऐसा कोमल था तथा उसको अपने आत्म-गौरव का इतना विचार था कि अपनी माता गर्ट्रूड के इस अयोग्य व्यवहार से उसके हृदय पर बड़ी भारी चोट लगी। कुछ तो अपने पिता की मृत्यु के शोक से और कुछ अपनी माता के विवाह की लज्जा से इसके आत्मा को शोकरूपी बादलों ने इस प्रकार आच्छादित किया कि उसका रूप तथा सुख सब नष्ट हो गया। अब वह पहले की भाँति न तो पुस्तकावलोकन में ही समय व्यतीत कर सकता था और न उस प्रकार के खेल तमाशों से अपना जी बहला सकता था जो बहुधा इस अवस्था के युवकों को अच्छे लगते हैं। उसे संसार फीका लगने लगा। यह दुनिया उसको ऐसे बाग के समान मालूम होने लगी जिसमें घास-पात के आधिक्य के कारण उत्तम और उपयोगी पुष्प तथा वृक्षों की बढ़वार मारी गई है और जहाँ व्यर्थ कूड़ा-कर्कट के सिवा और कुछ शेष नहीं रहा। यद्यपि एक उच्च और यशस्वी युवक के लिए अपने ही राज्य से पृथक् हो जाना भी एक ऐसा कारण था जिससे बहुत कुछ कष्ट पहुँच सकता था, लेकिन हेमिलट के दुःख का यह हेतु नहीं था। वह बात जिससे उसको इतना रंज हुआ और जिसके कारण उसका खाना-पीना हँसना खेलना सब बन्द हो गया यह थी कि मेरी माता मेरे योग्य पिता को इतना भूल गई। वह पिता भी कैसा? जिसने आयु भर इसके साथ बड़े प्रेम और नम्रता का व्यवहार किया था और यह स्वयं भी इसके लिए बड़ा प्रेम तथा भक्ति प्रकट किया करती थी। जो नित्य प्रति उसके साथ ही लगी रहती थी। मानो यह और इसका पति के लिए प्रेम दोनो सहोदर हैं और यही माता दो महीने के भीतर मेरे चचा से अर्थात् अपने

मृत-पति के भाई से विवाही गई। प्रथम तो ऐसे निकटवर्त्ती रिश्तेदारों में विवाह का सम्बन्ध ही धर्म-नियम*के विरुद्ध था। दूसरे यह विवाह इतनी जल्दी हुआ कि और भी भयानक मालूम होने लगा। तीसरे यह मनुष्य जिसको उसकी माता ने अपने राज तथा जीवन का साथी बनाया ऐसा अयोग्य था कि इन सब बातों ने मिल कर हैम्लिट को ऐसा शोकातुर किया कि दस राज्यों के चले जाने से भी उसको इतना रञ्ज होना असम्भव था।

उसकी माता गर्ट्रुड तथा इस नये राजा ने बहुत कुछ कोशिश की कि राजकुमार का चित्त बहल जाय। परन्तु वे अपने परिश्रम में कृत-कार्य्य न हो सके। वह अब भी राजसभा में काले कपड़े पहनकर आया करता था। मानो अभी वह अपने पिता की मृत्यु पर शोक मना रहा है। वे वस्त्र उसने कभी नहीं उतारे। यहाँ तक कि अपनी माता के विवाह के दिन भी वह काले ही कपड़े पहने रहा और सहभोज तथा विवाहोत्सव में भी सम्मिलित न हुआ क्योंकि यह बात उसे अपमान-सूचक मालूम होती थी।

रानी ने अपने बेटे को दुखी देखकर बहुत कुछ समझाया और कहा—

प्यारे बेटे, इस रात-रूपी वस्त्र को उतार दो और खुशी से रहो। अपने योग्य पिता की मृत्यु पर हमेशा शोक करना ठीक नहीं है। मृत्यु तो एक साधारण बात है। जो जन्म लेता है उसे अवश्य मरना है।

---

*ईसाइयों में मृत पति के भाई से विवाह करना अनुचित समझा जाता है। भारतवर्ष में विधवा का देवर अर्थात् पति के भाई से विवाह करना अधर्म नहीं समझा जाता।

हैम्लिट—हाँ जी! यह तो एक साधारण बात है।

रानी—फिर तुम्हारे लिए यह असाधारण क्यों प्रतीत होता है?

हैम्लिट—प्रतीत नहीं होती किन्तु है ही! प्यारी माँ! काले वस्त्र, हाहाकार, आँसू इत्यादि ऊपरी बाते तो केवल प्रतीत ही हो सकती हैं क्योंकि इनमें आदमी बनावट भी कर सकता है। परन्तु इन सब बाहरी चिह्नों से परे मेरे हृदय मे वह शोक है जिसके सामने ये बातें कुछ भी नहीं हैं।

राजा क्लौडियस—हैम्लिट! अपने पिता की मृत्यु करना ये तो हर एक सपूत का कर्त्तव्य है। तुम्हारी ये बातें कुछ कम प्रशसनीय नहीं हैं। परन्तु तुम को जानना चाहिए कि तुम्हारे पिता के पिता का भी देवलोक हुआ था और इन पितामह के पिता का भी देहान्त हुआ, पितामह के पिता का भी! प्रपितामह के पिता का भी! और मृत मनुष्य के पुत्रों का कर्तव्य हुआ कि किसी नियत समय तक शोक मनावे। परन्तु सदा शोक ही मनाते जाना अधर्म है। इससे पुरुषत्व की हानि होती है। इससे प्रकट होता है कि मनुष्य ईश्वर के कार्य्यों से सन्तुष्ट नहीं है। उसका हृदय निर्बल है, बुद्धि कम है। क्योंकि जब हम जानते हैं कि एक बात साधारण है तो उसका विरोध करना उचित नहीं है ऐसा करना सृष्टिक्रम या परमात्मा के नियमों के विरुद्ध है। क्योंकि ईश्वर की यही इच्छा है कि एक न एक दिन सब के पिताओं की मृत्यु हो। अब हम यह चाहते हैं कि इस शोक को त्याग दो और हमको पितावत् समझो!

सर्व पर विदित हो कि तुम हमारे सर्व से निकट-वर्त्ती हो और इसलिए हमारी गद्दी के अधिकारी भी। मैं तुमको पैत्रिक स्नेह के साथ यह अधिकार देता हूँ। तुम मेरे युवराज हो। तुम्हारी इच्छा विटिम्बर्ग की पाठशाला में पढ़ने जाने की है। परन्तु हम इसको इसलिए अस्वीकार करते हैं कि तुम नित्य हमारी आँखों के सामने रहोगे।

रानी—हैम्लिट! अपनी माता का कहा मानो और विटिम्बर्ग मत जाओ।

हैम्लिट—माता जी, मैं आपका आज्ञाकारी पुत्र हूँ।

यद्यपि हैम्लिट राजमहल में ही रहता था और विटिम्बर्ग-महाविद्यालय को जाने का विचार उसने छोड़ दिया परन्तु उसको उसको शान्ति प्राप्त नहीं हुई।

सब से बड़ा खेद हैम्लिट को यह था कि उसे अपने पिता की मृत्यु का प्रकार ज्ञात न था। क्लौडियस ने यह प्रसिद्ध कर रक्खा था कि उसकी मृत्यु सर्प के काटने से हुई। परन्तु राजकुमार को यह शङ्का थी कि यह सर्प यही क्लौडियस है। या यों कहिए कि इसी क्लौडियस ने उसको मार डाला और अब यह गद्दी पर बैठा हुआ है।

परन्तु उसको अभी यह निश्चय न था कि यह बात कहाँ तक ठीक है। या मेरी माता की भी सम्मति इसमें ली गई थी। अथवा उसको इस हत्या का ज्ञान भी है। इसलिए इन सोच-विचारों में उसका मन बहुत विक्षिप्त हो गया।

हैम्लिट ने एक बार सुना कि उसके मृत पिता का आत्मा जो रूप में उसके सदृश था दो तीन रात बराबर किले के सामने चबूतरे पर टहलता हुआ पहरेदारों को दिखाई पड़ा। इसके

वस्त्र वही थे जो राजा अपने जीवन के समय पहना करता था। यह आत्मा ठीक बारह बजे रात को आया करता था। इसका मुख पीला था जिससे क्रोध की अपेक्षा शोक के चिह्न अधिक दिखाई देते थे। इसकी डाढी तिलचावली थी। रङ्ग कुछ कुछ साँवला था जैसा कि जीवन के समय दिखाई पडता था। पहरेदारो ने यह भी कहा कि कई बार हमने उससे बात की परन्तु उसने कुछ उत्तर नही दिया। एक समय उसने कुछ मुँह उठाया और बोलना चाहा परन्तु इतने में सवेरा हो गया और मुर्गे ने बाँग दी इसलिए झट वह आत्मा वहाँ से खिसक गया। क्योंकि यह एक प्रसिद्ध बात है कि मृत पुरुषों के आत्मा शवालयों में से निकल कर केवल रात के समय ही घूम सकते हैं और ज्यों ही सवेरा हुआ वह बाहर नहीं ठहर सकते।

राजकुमार इस बात को सुनकर बडा चकित हुआ। परन्तु इस आत्मा का रूप उसके पिता के रूप के इतना सदृश था कि वह इस पर अविश्वास नही कर सका और समझ गया कि अवश्य मेरे पिता का ही आत्मा होगा।

फिर उसने विचार किया कि यदि मेरे पिता का आत्मा रात के समय इस प्रकार फिरता है तो उसका कोई न कोई प्रयोजन अवश्य होगा। यद्यपि इसने किसी पहरेदार से बात नहीं की परन्तु सम्भव है कि मुझे अपना पुत्र समझ कर मुझ से कुछ भेद कह दे, इसलिए उसने निश्चय कर लिया कि आज रात को पहरे पर चल कर उसकी प्रतीक्षा करनी चाहिए।

जब रात हुई तब राजकुमार अपने एक मित्र होरेशियो और एक पहरेदार मार्सीलस के साथ उसी चबूतरे पर टहलने लगा, जहाँ वह आत्मा दिखाई पड़ा था। रात बडी ठण्डी थी और

वायु बड़े वेग से चल रही थी। इसलिए वे लोग ऋतु के विषय में कुछ बातें करने लगे। उसी समय होरेशियो ने कहा कि देखो वह आत्मा आया।

अपने मृत पिता के आत्मा को देखकर राजकुमार चकित और भयभीत हो गया। पहले तो उसने ईश्वर से प्रार्थना की कि रक्षा कीजिए। क्योंकि उसे मालूम नहीं था कि यह कोई शुभात्मा है या दुरात्मा। यह भलाई करने आया है या बुराई करने। परन्तु थोड़ी देर में उसे साहस आ गया। उसके पिता की शकल ऐसी दयोत्पादक और शोचनीय दिखाई दी और यह मालूम हुआ कि यह अवश्य कुछ बातें करना चाहता है कि भट राजकुमार कहने लगा—"महाराज! पिताजी! डेन्मार्क-नरेश! हम तो आपकी अस्थियों को शवालय में समाधिस्थ कर आये थे। अब क्या कारण है कि आपका आत्मा अपने घर को छोड़ कर रात में इस प्रकार डराता फिरता है। आपको क्या अशान्ति है कि आप वहाँ पर नहीं रह सकते और इस तरह घूमते हैं। बताइए हमको आपके आत्मा की सद्गति के लिए क्या करना उचित है?"

आत्मा ने राजकुमार की ओर संकेत करके कहा कि चलो, ऐसी जगह पर चलें जहाँ एकान्त हो और हम गुप्त रीति से बातचीत कर सकें। होरेशियो और मारसीलस ने कहा कि राजकुमार तुम न जाओ। क्योंकि उनको भय था कि यह आत्मा कोई दुरात्मा न हो जो किसी नदी, समुद्र या पर्वत के शिखर पर राजकुमार को ले जाकर उसे डराना चाहता हो। परन्तु हेम्लिट ने उनकी बात न मानी और कहा कि मुझे अपने प्राण इतने प्यारे नहीं हैं कि इनकी रक्षा की परवाह हो। रहा आत्मा, आत्मा तो अमर ही है अतएव आत्मा को आत्मा भय नहीं पहुँचा सकता।

साथियों ने उसे रोकना चाहा परन्तु वह ज़ोर करके उनके हाथों से छूट गया और आत्मा के पीछे पीछे हो लिया। जब वे दोनों एकान्त में पहुँचे तो आत्मा कहने लगा।

"मैं तुम्हारे पिता का आत्मा हूँ। मुझे यह दण्ड दिया गया है कि नियत समय तक रात में इधर उधर फिरा करूँ और दिन के समय आग में जला करूँ जिससे भौतिक पाप मुझ से छूट जायँ। मुझे यह आज्ञा नहीं है कि अपने वन्दीगृह का कुछ भी हाल बता सकूँ। नहीं तो मैं उस दशा का वर्णन करता जिसके एक एक शब्द को सुनकर तुम्हारे रोंगटे खड़े हो जाते, तुम्हारा रक्त जम जाता और तुम्हारी आँखें पथरा जातीं।

राजकुमार—हे ईश्वर!

आत्मा—अगर तुमको कभी अपने बाप से प्रेम रहा हो तो तुम उसकी हत्या का बदला लो।

राजकुमार—हत्या?

आत्मा—हाँ हत्या! घोर हत्या!!

राजकुमार—मुझे जल्दी से बताओ कि वह हत्यारा कौन है? मैं फौरन ही बदला लेने की कोशिश करूँगा।

आत्मा—तुम इसी योग्य हो। इसीलिए कहता हूँ। यह प्रसिद्ध कर दिया गया है कि मुझे एक साँप ने काट खाया। परन्तु राजकुमार, सुनो—जिस साँप ने तुम्हारे बाप के प्राण लिए उसीके सिर पर आज राजमुकुट रक्खा हुआ है।

राजकुमार—क्या मेरा चचा?

आत्मा—हाँ वही पशु, वही व्यभिचारी पशु जिसमें सतीत्व नष्ट करने के गुण हैं, इसी दुष्ट ने मेरी प्यारी और

पति-भक्ता रानी को फुसला लिया। वह मुझ जैसे पति को छोड़ कर जो उसको प्राणों से भी अधिक प्यार करता था और विवाह के समय जिससे ईश्वर की साक्षी में प्रतिज्ञाये की गई थी ऐसे दुष्ट के साथ व्यभिचारिणी हो गई, जो रूप या गुण किसी में मेरे तुल्य नहीं है। मेरा नित्य नियम यह था कि दोपहर के समय बगीचे में सोया करता था। एक दिन मुझे अकेला पाकर यह तुम्हारा दुष्ट चचा मेरे पास चला आया और मेरे कान में ऐसी विषैली वनस्पति निचोडी कि जिसके पडते ही मेरा रक्त जम गया और समस्त शरीर पर एक प्रकार का श्वेत कोढ़ हो गया। इस प्रकार सोते समय इस भाई ने मेरे प्राण, मेरे राज्य और मेरी रानी को ले लिया। इसलिए हे पुत्र! तू इस दुष्ट को दण्ड दे और डेन्मार्क की गद्दी पर ऐसे व्यभिचारी और हत्यारे को राज न करने दे। परन्तु अपनी माता पर कुछ भी क्रोध न करना। मैं उसको सर्वथा ईश्वर के आश्रय छोडता हूँ। जैसा उसने किया है वैसा पावेगी।

राजकुमार ने प्रतिज्ञा की कि मैं अवश्य बदला लूँगा और आत्मा वहाँ से चला गया।

जब हैम्लिट अकेला रह गया तब उसने अपने मन में दृढ व्रत किया कि आज से जो कुछ पढा लिखा मेरे मस्तिष्क में था उसे भूल जाऊँगा और केवल उन्हीं बातों का स्मरण रहेगा जो इस आत्मा ने कही हैं। पहरे पर आकर उसने अपने मित्र होरेशियो को सम्पूर्ण वृत्तान्त कह सुनाया परन्तु और लोगों को कुछ भी न बतलाया। मारसीलस तथा होरेशियो दोनों से शपथ

मोहिनी मूर्ति मेरे पुत्र के रोग को दूर कर देगी क्योंकि वह जानती थी कि आफीलिया बड़ी गुणवती लड़की है और इसका सम्बन्ध दोनों वंशों के लिए श्रेयस्कर होगा।

परन्तु हैम्लिट का रोग ऐसा नहीं था जिसकी इस प्रकार चिकित्सा हो सके। उसके मन में हर वक्त अपने पिता के आत्मा का ही ध्यान रहता था। और बिना बदला लिए उसे कल नहीं पड़ती थी। ज्यों ज्यों उसके इस कर्त्तव्यपालन में देर होती जाती थी। वह समझता था कि मैं पाप कर रहा हूँ। परन्तु राजा को मारना कोई सुलभ कार्य्य नहीं था क्योंकि हमेशा उसके साथ पहरेदार रहा करते थे। जब कभी राजा पहरेदारों से अलग होता उसी समय रानी उसके पास होती थी। इसलिए ऐसे समय कमरे में घुस जाना असभ्यता थी। इस हत्यारे को अपनी ही माता का पति समझकर उसे बदला लेने में कुछ कुछ सकोच हो जाया करता था। हैम्लिट स्वभाव का ऐसा मृदु और कोमल था कि एक साधारण मनुष्य के प्राण लेने के लिए भी तैय्यार न हो सकता था फिर इन सब बातों के सिवा एक बात यह भी हो गई थी कि बहुत दिनों की चिन्ता तथा शोक ने उसकी इच्छा शक्ति को कुछ निर्बल कर दिया था इसलिए उसको अपने प्रयोजन की सिद्धि का साहस नहीं होता था। फिर कभी कभी उसे यह सन्देह हो आया करता था कि सम्भव है यह मेरे पिता का आत्मा न हो क्योंकि उसने यह सुन रक्खा था कि दुष्ट आत्माएँ मनमाना भेस धारण कर सकती हैं और मनुष्यों को पाप करने के लिए बहकाया करती हैं। इसलिए वह समझता था कि कहीं किसी दुरात्मा ने मुझ से अपने चचा और राजा की हत्या कराने के लिए मेरे पिता का भेस न धारण कर लिया हो। इन सब बातों को सोचकर उसने अपने मन में

कहा कि जब तक भली प्रकार किसी बात का निश्चय न कर लिया जाय उस काम को करने के लिए उद्यत न होना चाहिए।

जब वह इस सोच विचार में था उस समय कुछ नाटक खेलनेवाले उस नगर में आये। इनके नाटकों को हैम्लिट पहले बहुत पसन्द किया करता था और विशेष कर एक नट के शोक-प्रद व्याख्यान को तो बहुत ही सुना करता था जिसमें ट्रौय के राजा प्रियम की मृत्यु पर उसकी रानी हैक्यूबा के शोक करने का वर्णन था। हैम्लिट ने इन नाटकवालों को बुलाया और उसी नाटक के खेलने की प्रार्थना की। नाटक वाले ने ऐसी उत्तमता से खेल खेला और ट्रौय के जलाने, तथा वृद्ध राजा के मारने का ऐसा चित्ताकर्षक चित्र खींचा जिसमें दुखिया वृद्धा महारानी एक चीथरा ओढे चिल्लाती हुई इधर उधर भाग रही थी कि सब दर्शकों के आँखों में आँसू आ गये और सबको यही ख़्याल हुआ कि हम वास्तविक दृश्य देख रहे हैं। न केवल दर्शक ही किन्तु नाटकवाले भी दुःख का अनुभव करने लगे और वक्ता की आँखों से आँसुओं की धार बध गई।

इस नाटक को देखकर हैम्लिट ने विचारा कि अगर नाटक-वाले एक बनावटी दुःख से इतने आकर्षित हो सकते हैं और उस रानी के शोक को, जिसे मरे हुए सहस्रों वर्ष हो चुके, इस प्रकार अनुभव कर सकते हैं तो मुझे जिसका पिता वस्तुतः एक दुष्ट मनुष्य से मारा गया हो कितना शोक न करना चाहिए। कैसी लज्जा का स्थान है कि मैं इसकी मृत्यु का बदला लेने में ऐसा आलस्य करूँ।

फिर वह सोचने लगा कि नाटकों में चित्त आकर्षित करने की बहुत बड़ी शक्ति है। उसे [illegible] आया कि एक समय जब

नाटक खेलनेवाले हत्या के दोषों पर वक्तृता कर रहे थे उस समय दर्शकों में से एक हत्यारे ने आकर्षित हो कर अपने दोषों का इक़रार कर लिया। इसलिए उसने विचारा कि इन नाटक-वालों से एक ऐसा नाटक खिलवाना चाहिए जो मेरे पिता की दुर्घटना के सदृश हो। अतएव उसने स्वय एक नया नाटक रचवाया और उसमें आने के लिए राजा और रानी दोनों को निमंत्रण दिया।

नाटक की कथा यह थी कि वियना नगर के एक ड्यूक का नाम गोंजेगो था और उसकी स्त्री का नाम वेप्टिस्टा। ड्यूक के किसी सम्बन्धी लूसियेनस ने सोते समय उसको बाग में विष दे दिया और थोड़े दिनों पीछे उसकी स्त्री से विवाह कर लिया।

राजा, रानी तथा अन्य सभ्यगण नाटक देखने ..। हैम्लिट ध्यान लगाकर राजा की ओर देखने लगा कि .. का राजा पर क्या प्रभाव पड़ता है। थोड़ी देर मे ..। एक राजा और उसकी रानी एक दूसरे के गले में .. चरों पर आये।

नाटकी राजा ने कहा—

आप के मुख से वे हर्षसूचक चिह्न नहीं पाये जाते। इसलिए मुझे आप पर विश्वास नहीं है। परन्तु इससे आप को मेरी प्रीति में सन्देह नहीं करना चाहिए। क्योंकि स्त्रियों को प्रेम और सन्देह बराबर होते हैं जितना उनका प्रेम होता है उतना ही वे शङ्का किया करती हैं। जब प्रेम अधिक होता है तब थोड़ी सी बात पर शङ्का हो जाती है।

नाटकी राजा—अब मैं थोड़े दिनों में तुमको छोड़ने वाला हूँ। प्यारी, मेरी शारीरिक शक्ति अब दिन प्रति दिन घटती जाती है और मेरा अन्त निकट आ पहुँचा है। तुम हमारे पीछे प्रेम और गौरव के साथ रहना। शायद तुमको मुझ से भी अधिक प्रिय पति की प्राप्ति हो जाय।

नाटकी रानी—ऐसा मत कहो, ऐसा मत कहो। नहीं तो यह प्रेम नहीं किन्तु पाप है। दूसरा पति करना उचित नहीं। वही दूसरा पति करती हैं जिन्होंने अपने पहले पति को मार डाला है।

इसको सुन कर हैम्लिट की माता और उसके पति दोनों के मुख पर उदासी छा गई।

नाटकी रानी—जो स्त्रियाँ दूसरा विवाह करती हैं वे प्रेम के कारण नहीं करतीं। यदि मेरा दूसरा पति हो तो समझना चाहिए कि मैंने अपने पहले पति को मार डाला।

नाटकी राजा—मैं समझता हूँ कि तुम अपने वर्त्तमान विचारों के अनुकूल कह रही हो। परन्तु बहुधा इन विचारों के विरुद्ध हो जाता है ..... हमारी इच्छायें हमारी स्मृति के

अधीन हैं। यह उस कच्चे फल के समान है जो आज वृक्ष पर लगा हुआ है। परन्तु पकने पर गिर पडता है। इसी प्रकार स्मृति के न्यून होने पर हमारी इच्छायें भी वदल जाती हैं। हम उत्तेजित होकर कभी कुछ निश्चय कर लेते हैं। परन्तु पीछे उस निश्चय को वदलना पडता है। यह कोई आश्चर्य की वात नहीं है कि हमारी दशा के परिवर्त्तन पर हमारा प्रेम भी वदल जाय। अभी यह अनिश्चित वात है कि प्रेम दशा के अधीन है या दशा प्रेम के अधीन! वडे मनुष्य की अवनति पर उसके साथी उसको छोड जाते हैं। दरिद्र मनुष्य अगर धनी हो जाय तो उसके शत्रु भी मित्र हो जाते हैं। हम व्रत करने में तो स्वतत्र हैं परन्तु उनका पालन हमारे हाथ में नहीं है। इसलिए इस समय तो तुम कहती हो कि मैं दूसरा विवाह न करूँगी। परन्तु अपने पहले पति की मृत्यु पर तुम्हारे ये विचार भी नष्ट हो जायँगे।

नाटकी रानी—अगर विधवा होकर मैं फिर विवाह करूँ तो पृथ्वी माता मुझे खाना न दे, सूर्य्य देव मुझको प्रकाश न दें, शान्ति जाती रहे और मेरा सर्वनाश हो जाय!

नाटकी राजा—प्यारी तुमने वडी कठिन प्रतिज्ञा की है। इस समय मुझे नींद आरही है सो जाने दो!

नाटकी राजा तो रङ्गभूमि में सो गया और हैम्लिट पूछने लगा, "माता जी! आपको नाटक पसन्द है?"

रानी—मेरी समझ में तो रानी ने वडी कठिन प्रतिज्ञा की है।
हैम्लिट—हाँ! परन्तु वह अपनी प्रतिज्ञा का पालन करेगी।

क्लौडियस—क्या तुमने नाटक सुन लिया है? इस में कुछ दोष तो नहीं है?

हैम्लिट—नहीं नहीं! कुछ दोष नहीं?

राजा—इस नाटक का नाम क्या है?

हैम्लिट—चूहे-दानी! इस नाटक में एक हत्या का वर्णन है जो वियना नगर में हुई थी परन्तु हम आप जो धर्मात्मा लोग हैं, उनसे इसका कुछ भी सम्बन्ध नहीं है।

जब ये बातें हो रहीं थीं रङ्ग-भूमि में एक मनुष्य लूसियेनस आया और उसने सोते हुए नाटकी राजा के कान में विष डाल दिया।

इस पर तो राजा क्लौडियस के पापमय आत्मा को इतना दु:ख हुआ कि वह शेष नाटक को न देख सका और रोग का बहाना करके रानी सहित वहाँ से उठ गया। राजा के चले जाने पर नाटक बन्द कर दिया गया। अब हैम्लिट को पूरा निश्चय हो गया कि उसके मृत पिता के आत्मा ने रात के समय जो कुछ कहा था वह सब ठीक था। परन्तु अभी वह यह निश्चय नहीं करने पाया था कि बदला किस प्रकार लेना चाहिए। उसी समय उसे सूचना मिली कि उसकी माता ने उसे अकेले में कुछ बातचीत करने के लिए बुलाया है।

राजा ने रानी को इसलिए भेजा था कि तुम अपने लडके को समझा दो कि इस प्रकार की बातें न किया करे। क्योंकि इससे हम तुम दोनों की बदनामी है। परन्तु राजा को रानी पर पूरा विश्वास न था इसलिए यह समझ कर कि कहीं यह अपने पुत्र के दोषों को न छिपा ले उसने पोलोनियस को परदे की आड में छिपाकर खडा कर दिया कि जो कुछ बातें गर्ट्रूड और उसके लडके में हों उनका सम्पूर्ण वृत्तान्त प्रकाशित करदे।

जब हैम्लिट अपनी माता के पास जा रहा था उस समय उसने क्लौडियस को ईश्वरोपासना करते देखा। उसके मन में आई की यही तलवार से इसको समाप्त करदूँ परन्तु सोचने लगा कि ईश्वरोपासना के समय अगर मैं इसे मार डालूँगा तो यह स्वर्ग को चला जायगा। इसलिए यह तो पूरा बदला न होगा।

जब हैम्लिट अपनी माता के कमरे में पहुँचा तो उसने कहा, "माता जी! क्या बात है?"

रानी—हैम्लिट! तूने अपने बाप को अप्रसन्न कर दिया है।

हैम्लिट—माता जी! तुमने मेरे बाप को अप्रसन्न कर दिया है।

रानी—आ! आ! यह तो कोई उत्तर नहीं है।

हैम्लिट—जा! जा! यह तो कोई प्रश्न नहीं है।

रानी—क्यों? क्यो? हैम्लिट!

हैम्लिट—क्या बात है?

रानी—क्या तुम मुझे भूल गये?

हैम्लिट—नहीं! नहीं! तुम रानी हो।

तुम अपने पति के भाई की स्त्री हो और मेरी माता हो।

रानी—अब मैं उनको भेजती हूँ जो तुम से बात कर सकते हैं।

हैम्लिट—आओ! आओ! बैठो। मैं तुम्हें दर्पण में तुम्हारा मुख तो दिखा दूँ।

यह कहकर राजकुमार ने अपनी माता को पकड लिया और वह चिल्ला उठी क्योंकि उसने समझा कि यह मुझे मार डालेगा। रानी की आवाज सुनकर पोलोनियस परदे की आड़ से कहने लगा।

"दौडो दौडो ! रानी को बचाओ"। हैम्लिट ने एक तलवार उठाकर मारी और वह मर गया। परन्तु जब उसने परदा उघाड कर देखा कि यह मृत पुरुष आफीलिया का पिता पोलोनियस है तो उसे शोक हुआ। रानी ने कहा—

"हाय ! कैसा हत्या का काम किया ?"

हैम्लिट—हत्या ! क्या यह इससे भी बडी हत्या है कि राजा को मारकर उसके भाई से विवाह किया जाय।

रानी—राजा को मारकर !

हैम्लिट—हाँ मैं यही कहता हूँ, कि अब हाथ मलना छोड दो और बैठ जाओ। मै तुमको तुम्हारे दोष बताऊँगा। देखें तुम्हारे हृदय में कुछ भी अनुभव शक्ति है !

रानी—मैं ने क्या किया है कि तू मुझ पर ऐसा गरजता है ?

हैम्लिट—तुम ने तो वह काम किया है जिस पर लज्जा भी लज्जित होती है। और धर्म केवल धोखे की टट्टी ठहरता है। इससे तो विवाह की प्रतिज्ञायें ज्वारी की शपथ के समान हो गई और उनका कुछ भी मोल न रहा।

रानी—अरे वह कौन सा काम है ?

अब हैम्लिट ने दो चित्र दिखाए। एक उसके मृत पिता का था और दूसरा क्लौडियस का। वह अपने पिता की ओर सकेत करके कहने लगा "देखो ! इनका चेहरा कैसा प्रभावशाली है। बाल कैसे उत्तम हैं। नेत्र कैसे अच्छे हैं। बिलकुल देवता मालूम होते हैं। यह तुम्हारे पति थे। अब तुम अपने वर्त्तमान पति की ओर दृष्टि डालो। देखो, यह कैसा घुन के समान

दिखाई देता है। जिसने अपने भाई के प्राण ले लिये। क्या तुम्हारे आँखें है? तुम यह तो कह नहीं सकतीं कि मैंने प्रेमवश होकर ऐसा किया क्योंकि इस वृद्ध अवस्था में प्रेम इतना उत्कट नहीं होता। फिर क्या बात थी जिसके कारण तुमने यह विवाह किया। बुद्धि तो तुम में अवश्य है नहीं तो चल फिर भी न सकतीं, पर वह भ्रष्ट हो गई है।

रानी—हे हैम्लिट! अब मत कहो। मुझे अपने दोष साक्षात् हो रहे हैं। तुम्हारे शब्द तलवार के समान घाव कर रहे हैं।

उसी समय मृत-पिता का आत्मा राजकुमार को दिखाई दिया जो यह कहने आया था कि अपनी माता को कष्ट मत दो। रानी ने हैम्लिट को हवा से बातें करता देखकर खयाल किया कि यह पागल हो गया है। ऐसा सोचते ही उसको ढारस हो गया और कहने लगी।

"पुत्र, तुम ये बाते अपने मस्तिष्क के विकार के कारण करते हो।"

हैम्लिट ने उत्तर दिया कि "नही नही, मैं ठीक कहता हूँ। देखो मेरी नाडी उसी प्रकार चलती है, जैसे अच्छे आदमी की! माताजी, अपने पापों पर विचार करो और प्रायश्चित्त करो। अब मेरे चचा के पास मत जाना। ईश्वर से प्रार्थना करो कि वह तुमको क्षमा करे।"

जब वह इन बातों को समाप्त कर चुका और रानी चली गई तो पोलोनियस की लाश को देख कर वह रोने लगा क्योंकि उसे यह खयाल हुआ कि आफ़ीलिया को अपने बाप की मृत्यु पर रञ्ज होगा।

थोड़ी देर पीछे जब वह राजा के समीप गया तो राजा ने पूछा—

राजा—हैम्लिट! पोलोनियस कहाँ है?

हैम्लिट—भोजनशाला में।

राजा—भोजनशाला में! कहाँ?

हैम्लिट—वहाँ नहीं जहाँ कि वह भोजन करता था किन्तु वहाँ जहाँ कि उसका भोजन किया जाता है। कीडे मकोडे उसकी लाश पर सहभोज कर रहे हैं। कीडे ही वास्तविक राजा हैं। क्योंकि क्या राजा क्या रङ्क सब अपने अपने शरीरों को इन्हीं के लिए पालते हैं। सब का यही अन्त होनेवाला है।

राजा—हाय! हाय! पोलोनियस कहाँ है?

हैम्लिट—स्वर्ग में! किसी को भेज दो कि देख आवे। अगर वहाँ न मिले और नर्क में हो तो तुम स्वयं चले जाओ।

राजा तो हैम्लिट से छुटकारा पाने का पहले ही से इरादा कर रहा था परन्तु पोलोनियस की मृत्यु पर उसे पूरा अवसर प्राप्त हो गया और उसने दो आदमियों के साथ राजकुमार को इङ्गलैण्ड भेज दिया। उस समय इङ्गलैण्ड डेन्मार्क के अधीन था। क्लौडियस ने यद्यपि गर्ट्रूड और अन्य पुरुषों से यह कह दिया कि विद्रोह को रोकने के लिए हम हेम्लिट को थोडे दिनों के लिए अन्य देश में भेजे देते हैं जब शान्ति हो जायगी तो बुला लेंगे। परन्तु वस्तुत उसका विचार हैम्लिट के मारने का था इसलिए इन दो मनुष्यों के हाथ इङ्गलैण्ड के राजा के पास एक पत्र भेजा

जिसमें उसके लिए आदेश था कि राजकुमार को आते ही मार डालो।

दैवगति से जब हैम्लिट और उसके साथी जहाज में बैठे इङ्गलैण्ड को जा रहे थे तब सोते समय राजकुमार ने दूतों की जेब से पत्र निकाल लिया और अपने नाम के स्थान में चुपके से उन्हीं दूतों का नाम लिख कर फिर उसी स्थान पर रख दिया। थोड़ी देर में डाकुओं के एक जहाज ने इनके जहाज पर आक्रमण किया। हैम्लिट ने युद्ध में बड़ी वीरता दिखाई और शत्रु के जहाज पर चढ़ गया। इतने में यह दूत तो भागकर इङ्गलैण्ड चले गये हैम्लिट उसी जहाज पर रह गया और जहाजवाले उसे डेन्मार्क की हद पर एक जगह छोड़ गये।

देश में आकर उसने अपने चचा को पत्र लिखा कि अकस्मात् मैं फिर अपने देश में आगया हूँ और कल श्रीमान् के दर्शन करूँगा। जब दूसरे दिन वह घर आया तो एक भयानक दृश्य दिखाई दिया।

यह उसकी प्यारी और रूपवती आफीलिया का मृतक-संस्कार था। पिता की मृत्यु के पश्चात् इस स्त्री के मस्तिष्क में भी विकार होगया। यह सोचकर कि मेरे बाप को मेरे ही प्यारे ने इस कठोरता से मार डाला। उसके आत्मा को इतना दुःख हुआ कि उसे तन मन का होश न रहा और वह इधर उधर निरर्थक गीत गाया करती थी। थोड़ी दूर पर एक नदी के किनारे एक झाऊ का वृक्ष था जिसकी शाखायें नदी की धार के ऊपर झुकी हुई थीं। एक दिन आफीलिया उस झाऊ पर झूलने लगी और शाखा के टूट जाने पर पानी में गिर पड़ी। थोड़ी देर

तक तो वह पानी पर बहती रही। परन्तु जब उसके कपडे भीग कर भारी हो गये तब डूब गई और डूबते ही मर गई।

जिस समय हैम्लिट नगर में घुसा उस समय आफीलिया का मृतक संस्कार हो रहा था और उसके शव के साथ उसका भाई लार्टीज तथा राजा रानी और अन्य सभ्यगण उपस्थित थे। हैम्लिट को मालूम नहीं था कि यह क्या बात है। इसलिए वह एकान्त स्थान में खडा होकर देखने लगा।

मृत शरीर के लिए जो जो संस्कार होने चाहिएं वे सब एक एक करके प्रतिपालित किये गये। उसके पश्चात् लार्टीज पुरोहित से कहने लगा।

"अब क्या शेष है ? बताओ अब क्या करना चाहिए ?"

पुरोहित—अब तो कुछ नहीं करना। संस्कार के लिए जो कुछ मुझे करना था या जो कुछ मेरा अधिकार था वह सब कुछ कर दिया।

लार्टीज—अब कुछ नहीं करना।

पुरोहित—जहाँ तक हम को अधिकार था हमने कर दिया। उसकी अकाल मृत्यु हुई। इसलिए यदि राजा का हुक्म न होता तो इसको कबरस्तान में भी स्थान न मिल सकता। परन्तु आज्ञा पालन करनी होती है। अब इसका उसी प्रकार संस्कार हुआ जैसा साधारण कुमारियों का हुआ करता है।

लार्टीज़—क्या ! कुछ नहीं करना !

पुरोहित—शान्ति पाठ करके हम प्रार्थना को अपवित्र नहीं करना चाहते। जो कार्य्य उस देह के साथ होता है जिसके

शान्तिपूर्वक प्राण निकले हों वही कार्य्य ऐसे शरीर के साथ नहीं हो सकते।

लार्टीज—अच्छा अब इसके शव को समाधि में रक्खो। इस निर्मल और पवित्र देह से स्वर्गीय पारिजात पुष्प उगेंगे। पुरोहित! हमारी बहन स्वर्ग की देवी बनेगी और तू नरक में पड़ा चिल्लाता रहेगा।

जैसा कि कुमारियों के शवों के साथ हुआ करता था रानी ने उसी नियमानुसार आफ़ीलिया की देह पर पुष्पवर्षा की और कहा—

"मधुर के लिए मधुर! जिस प्रकार तू कुसुम कोमला थी इसी प्रकार मैं इन पुष्पों को रखती हूँ। आफ़ीलिया मेरी तो यह आशा थी कि तू मेरे हैम्लिट की दुलहिन होती और मैं तेरी सुहाग-शय्या पर फूल बखेरती। पर हाय! दैव! मुझे तुम्हारी लाश पर फूल बखेरने पड़े।"

जिस समय आफ़ीलिया की लाश कबर में उतारी गई। लार्टीज अति दुःखित होकर चिल्लाने लगा।

"जिसके कारण आज हमारी प्यारी बहन की यह दशा हुई उसके सिर पर हजार आफ़तें आवें। अभी ठहरो! ठहरो! मैं एकबार और इस स्वर्णमयी शरीर को देख लूँ। अरे एकबार और इसे गले लगालूँ।"

इसके पश्चात् वह कबर में कूद पड़ा और आफीलिया को गोद में लेकर कहने लगा।

"अब मैं यहाँ से नहीं उठने का। मेरे ऊपर मिट्टी डाल दो।"

हैम्लिट अब तक अकेला खडा सुन रहा था और आफीलिया की मृत्यु पर उसे शोक हो रहा था क्योंकि आफीलिया उसे प्राणों से भी प्यारी थी परन्तु जब उसने देखा कि एक भाई अपनी बहन के लिए इतना प्रेम प्रकट कर सकता है तो उससे न रहा गया और प्रेमभाव ने उसके हृदय में इतना जोर मारा कि वह आड में से निकल कर आफीलिया की कबर में कूद पडा और कहा कि मुझे आफीलिया से जितना प्रेम था उतना चालीस हजार भाइयोंको भी नहीं हो सकता। लार्टीज् तो उस समय शोक के मारे उन्मत्त ही हो रहा था। हैम्लिट को कबर में देखकर और यह समझ कर कि इसी हैम्लिट के दुष्ट कर्म्मों से मेरी बहन की मृत्यु हुई है, क्रोध के मारे उसने हैम्लिट का गला पकड लिया और गुत्थम-गुत्था होने लगी। परन्तु साथियों ने कह सुन कर उस समय उन दोनों को छुडा दिया।

जब संस्कार हो चुका तो हेम्लिट ने लार्टीज से क्षमा माँग ली और उस समय वे दोनों मित्र हो गये।

परन्तु क्लौडियस को हेम्लिट के बचकर देश में आ जाने से बडा रञ्ज हुआ। क्योंकि उसने उसे इङ्गलैण्ड-नरेश द्वारा मरवाने का उपाय किया था। अब वह इस प्रयोजन के लिए अन्य उपाय सोचने लगा।

लार्टीज कुछ दिनों फ्रान्स में रहा था और उसने वहाँ तलवार के खेल में बडा नाम पाया था। हैम्लिट को भी तलवार का बडा शौक था। इसलिए क्लौडियस ने इन दोनों को उत्साहित किया कि एक दिन समस्त सभा के सामने खेल दिखाना चाहिए। इस खेल में प्राय सच्ची तलवारें नहीं ली जाती हैं

परन्तु राजा ने गुप्त रीति से लार्टीज के लिए सच्ची और तीक्ष्ण तलवार रख दी थी। इसके अतिरिक्त उसने लार्टीज के कानों में ठूँस ठूँस कर यह बात भर दी थी कि तुम्हारे बाप तथा बहन का घातक यही हैम्लिट है इसलिए अवश्य इससे बदला लेना चाहिए। क्लौडियस ने यह भी कह रक्खा था कि हैम्लिट राज विद्रोह की तय्यारियाँ कर रहा है। इसलिए जल्दी से उसे मार डालना चाहिए। इन कारणों से लार्टीज हैम्लिट के मारने के लिए तैय्यार हो गया। इधर हैम्लिट को इस कपट की कुछ भी खबर न थी। क्लौडियस ने उससे कहा था कि देखो, तुम तलवार के खेलों के लिए बड़े प्रसिद्ध हो। परन्तु जिस दिन से लार्टीज फ्रान्स देश से आया है वह अपने सामने किसी को नहीं गिनता इसलिए एक दिन अखाड़े में तुम दोनों का खेल हो जाना चाहिए। मुझे तुम्हारी वीरता से यही आशा है कि तुम उसे अवश्य परास्त करोगे। तुम मेरे भतीजे और राजवंशी होने से इसी यश के योग्य हो।

इस प्रकार युद्ध आरम्भ हुआ और समस्त सभ्यगण अखाड़े के चारों ओर बैठ गये। हैम्लिट को कपट छल का तो कुछ ज्ञान ही न था इसलिए उसने झूठी तलवार उठा ली लेकिन उसने लार्टीज की तलवार को न देखा। लार्टीज पहले तो हैम्लिट को खिलाने लगा। जब जब हैम्लिट की जीत होती मालूम होती थी यह दुष्ट राजा क्लौडियस बड़ी प्रशंसा करता था और खूब तालियाँ पीटता था। परन्तु थोड़ी देर पीछे युद्ध भयानक हो गया और लार्टीज ने कुपित होकर ऐसी तलवार हैम्लिट के मारी कि उसे घायल कर दिया।

हैम्लिट को इस पर बड़ा क्रोध आया और वह लार्टीज के ऊपर ऐसा झपटा कि उसकी तलवार छीन कर उसको भी

घायल कर दिया । तलवार के सिरे को क्लौडियस ने विष में बुझवा दिया था । इसलिए अब इन दोनों युवकों के जीने की आशा नहीं रही ।

उसी समय रानी गर्ट्रूड अपनी जगह से चिल्ला उठी—कि "मुझे विष दे दिया । हाय ! विष दे दिया ।"

वास्तव में बात यह थी कि क्लौडियस को यह शङ्का हुई कि अगर लार्टीज की तलवार से भी हैम्लिट न मरा तो फिर कैसा होगा । इसलिए उसने एक प्याला विषीले शरबत का अपने पास रख छोड़ा था कि जब हैम्लिट गर्मी में पानी माँगेगा तो शरबत पिलाकर उसको ठण्डा कर दिया जायगा । दैवगति से धोखे में रानी इसी प्याले को उठाकर पी गई क्योंकि रानी को अपने पति की इस दुष्टता की खबर नहीं थी । पीते ही विष ने अपना काम करना आरम्भ कर दिया और वह मर गई ।

रानी के मरते ही हैम्लिट को कुछ शङ्का हो गई कि अवश्य दाल में कुछ काला है । उसने नौकरों को आज्ञा देकर चारों ओर के फाटक बन्द करा दिए । लार्टीज को विषीली तलवार की खबर ही थी । उसे अपना अन्त बहुत निकट मालूम होता था । इसलिए उसने राजकुमार से कहा कि "अब आप सब हाल मुझ से ही पूछ लीजिए । यह तलवार विषैली है और हम दोनों को इसका घाव लगा है । इसलिए तुम अब बहुत थोड़ी देर इस संसार में रहोगे । यह सब काम तुम्हारे चचा क्लौडि-यस का है । तुम्हारी माता को भी राजा ने ही विष दिया है ।"

अब तो हैम्लिट के शरीर में आग लग गई । उसका अन्त निकट था । यदि वह अपने पिता की मृत्यु का बदला लेना

चाहता था तो उसका अवसर यही था, अन्यथा सदा के लिए उसके नाम पर कलङ्क का टीका लग जाता, इसलिए वह विषैली तलवार लेकर राजा पर झपटा और एक ही चोट से उसको समाप्त कर दिया।

अब मरते समय लार्टीज और हैम्लिट दोनों ने एक दूसरे से अपने अपराधों की क्षमा माँगी क्योंकि इन दोनों में वस्तुत: किसी प्रकार की शत्रुता नहीं थी। यह शत्रुता केवल दुष्ट क्लौडियस के कारण हुई थी। इसलिए वे दोनों युवक एक दूसरे को क्षमा करके मर गये।

होरेशियो जो कि हैम्लिट का परम मित्र था। यह सब दृश्य देख रहा था। इन सब की मृत्यु को देखकर उसे इतना कष्ट हुआ कि उसने आत्मघात करने की ठान ली। परन्तु प्राणान्त से पहले हैम्लिट ने उससे यह प्रार्थना की कि "सिवा आप के और किसी मनुष्य को समस्त भेद ज्ञात नहीं है। इसलिए मेरा यह निवेदन है कि कृपा कर के आप आत्मघात न करें और मेरी मृत्यु के पश्चात् क्रमश: सब हाल लोगों से कह दें जिससे सब को मालूम हो जाय कि मैंने जो कुछ किया अनुचित नहीं किया।"

होरेशियो ने अपने मित्र की प्रार्थना स्वीकार कर ली। इस मर्मभेदी कथा को सुनकर सब लोगों को बड़ा कष्ट हुआ और उन सब ने हैम्लिट के आत्मा की शान्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। क्योंकि हैम्लिट बड़ा प्रिय और सभ्य राजकुमार था और उसके शुभगुणों के कारण समस्त प्रजा उसको बहुत चाहती थी। यदि ईश्वर उसे जीवित रखता तो वह अवश्य डेन्मार्क का एक योग्य और प्रभावशाली राजा होता।

बारहवीं रात्रि।

TWELFTH NIGHT

मिसेलिन नगर में दो बहन भाई थे जो साथ साथ पैदा हुए थे और जो अपने जन्म दिन से ही इतने समान थे कि सिवा वस्त्रों के भिन्न होने के और कोई पहिचान उनमें नहीं हो सकती थी। बहन का नाम वायोला था और भाई का नाम सिवाश्चियन। उन दोनों का एक ही घड़ी में जन्म हुआ था और एक ही घड़ी में उनका अन्त भी निकट आ पहुँचा। क्योंकि जब वह एक जहाज पर बैठे हुए कहीं जा रहे थे, तूफान आया और उनका जहाज इलीरिया देश के निकट एक चट्टान से टकराकर टूट गया। जहाज का कप्तान थोडे से मनुष्यों को साथ लेकर एक छोटी नाव में बैठ कर भाग आया। बाकी लोग समुद्र में डूब गये। वायोला भी उसी नाव में थी। परन्तु उसे अपने बचने की इतनी खुशी नहीं हुई जितना अपने भाई के डूबने पर रञ्ज हुआ। उसने कप्तान से पूछा—

"भद्र! यह कौन सा देश है?"

कप्तान—"देवि! इलीरिया?"

वायोला—हाय! मैं इलीरिया मे रह कर क्या करूँ। मेरा भाई तो स्वर्ग में पहुँचा। कप्तान क्या तुम समझते हो कि वह डूबा न होगा?

कप्तान—देवि, सुनो। घबराओ मत। जिस समय तुम और यह थोड़े से लोग नाव में बैठने लगे और जहाज टूटा,

मैंने देखा कि तुम्हारे भाई ने अपने को एक मस्तूल से बाँध लिया और उसी के सहारे बहता बहता कहीं जा पहुँचा।

वायोला को यह बात सुन कर ढारस आया और उसने पूछा, "कप्तान! क्या तुम इस देश को जानते हो?"

कप्तान—हाँ! क्योंकि जिस स्थान पर मैं उत्पन्न हुआ था वह यहाँ से तीन घण्टे की दूरी पर होगा।

वायोला—यहाँ का राजा कौन है?

कप्तान—एक योग्य और गुणी पुरुष।

वायोला—उसका नाम क्या है?

कप्तान—आर्सीनो।

वायोला—आहा! मैं ने तो अपने पिता के मुख से आर्सीनो का नाम सुना था। उस समय उसका विवाह नहीं हुआ था।

कप्तान—वह अब भी कुआँरा है। एक महीने की तो मैं कह सकता हूँ। जब मैं इलोरिया मे था तो यह चर्चा फैल रही थी कि राजा एक सुन्दरी पर जिसका नाम ओलीविया है मोहित हो रहा है।

वायोला—वह कौन है?

कप्तान—एक गुणसम्पन्ना कन्या है। इसका पिता एक प्रतष्ठित पुरुष था जो बारह महीने हुए मर गया और इसको अपने लडके के अधिकार में छोड गया। यह लडका भी सुनते हैं मर गया है। और ओलीविया अपने

भाई के शोक में इतनी दुखी हो रही है कि उसने अन्य मनुष्यों को देखना तक छोड़ दिया है।

वायोला—मैं चाहती हूँ कि मैं भी इसी लड़की की सेवा करती क्योंकि उसकी और मेरी अवस्था एक सी है ?

कप्तान्—यह तो दुर्लभ बात है क्योंकि वह किसी से नहीं मिलती। यहाँ तक की राजा के दूतों से भी नहीं।

अब वायोला ने एक और विचार किया। वह यह था कि पुरुष के भेस में राजा का सेवक बन जाय। एक युवती के लिए पुरुष के भेस में इधर उधर घूमना एक अद्‌भुत बात थी परन्तु वायोला के रूप तथा आयु और परदेश का विचार करके यही उचित मालूम हुआ।

कप्तान एक भद्र पुरुष था। उसको इस लड़की की शोचनीय दशा पर दया आगई और वह इस से नम्रता का व्यवहार करने लगा। वायोला ने इसको अपना मित्र समझ कर अपने मन का भाव इस पर प्रकट कर दिया और कुछ द्रव्य देकर कहा कि आप मुझे पुरुष के से वस्त्र बनवा दीजिए। मैं राजा के पास नौकरी करूँगी। कप्तान ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और ठीक वैसे ही वस्त्र बनवा दिए जैसे कि उसका भाई सिवाश्चियन पहनता था। इस प्रकार जब वायोला यह कपड़े पहन कर तैय्यार हुई तो उसका रूप बिल्कुल उसके भाई के समान दिखाई देता था और उसने वायोला के बजाय अपना नाम सिसारियो रक्खा।

इसी कप्तान द्वारा सिसारियो राजा की सेवा में उपस्थित हुआ। राजा इस नौकर के रूप, गुण तथा सम्भाषण से इतना प्रसन्न हुआ कि उसने इसे अपना निज का सेवक नियत कर

लिया। राजा सिसारियो को इतना पसन्द करता था कि एक मिनट को भी अपने पास से अलग न करता और अपने आन्तरिक से आन्तरिक भावों को भी उस पर प्रकाशित कर देता था। आर्सीनो ने ओलीविया के प्रेम का हाल भी उससे कह दिया। क्योंकि बहुत दिनों से राजा सिवा प्रेमालाप के और कुछ भी नहीं करता था बहुत दिनों से उसने ओलीविया से विवाह के लिए प्रार्थना की थी। परन्तु यह लड़की इस बात पर राजी नहीं होती थी इसलिए राजा को बड़ा दुःख रहता था। वह न तो उन खेल-तमाशों से जी बहला सकता था जिनको वीर राजकुमार खेला करते हैं और न राजसभा में बैठ कर राजकार्य्य करता था किन्तु नित्य प्रति शृङ्गाररस सम्बन्धी कथा तथा बाजे गाने में ही अपना समय व्यतीत करता था। सिसेरियो से और उससे इसी विषय पर घण्टों बातचीत हुआ करती थी और राजमन्त्री लोग यह समझते थे कि यह नौकर राजा के साथ रहने के योग्य नहीं है।

युवती कुमारियों के लिए युवक राजों के प्रेम की बात सुनना अच्छा नहीं होता। वायोला को इस का शीघ्र अनुभव होने लगा। क्योंकि ज्यों ज्यों राजा ओलीविया के लिए अनुराग प्रकट करता था त्यों त्यों वायोला के हृदय में राजा के लिए प्रेम होता जाता था। यहाँ तक कि वह राजा पर सर्वथा मोहित हो गई और उसे इस बात पर आश्चर्य होने लगा कि ऐसे गुणी, योग्य और रूपवान् पुरुष को पाकर भी ओलीविया क्यों इसका तिरस्कार करती है। उसने कईबार सकेत मात्र राजा से कहा कि यदि ओलीविया आप को नहीं चाहती तो जाने दीजिए, आप सन्तोष कीजिए। परन्तु राजा ने न माना। वायोला ने कहा—

"महाराज ! कल्पना कीजिए कि एक स्त्री आप से उतना ही स्नेह करती है जितना आप आलीविया से (और सम्भव है कि ऐसी स्त्री हो) और आप उससे प्रेम न करते हो तो आप शायद यही कहेंगे कि मैं तुमको नहीं चाहता। तुम मेरा ध्यान छोड़ दो। क्या उसको इस पर सन्तोष नहीं करना चाहिए ?"

राजा—संसार में किसी स्त्री का हृदय ऐसा उदार नहीं है जिसमें उतना प्रेम समा सके जितना मैं आलीविया से करता हूँ।

वायोला—परन्तु मैं जानता हूँ।

राजा—तू क्या जानता है ?

वायोला—मुझे भली प्रकार ज्ञात है कि स्त्रियाँ पुरुषों से कितना प्रेम रखती हैं। उनके हृदय इतने ही उदार हैं जितने हमारे। मेरे पिता के एक लड़की थी जिसका एक मनुष्य पर अनुराग था (जैसा शायद मेरा आप पर अनुराग होता अगर मैं स्त्री होती)।

राजा—उसका क्या हुआ ?

वायोला—कुछ नहीं। महाराज ! उसने अपने प्रेम की कहानी किसी से न कही किन्तु गुप्त रक्खी और जिस प्रकार घुन भीतर ही भीतर किसी चीज को खा जाया करता है। इसी प्रकार वह प्रेम के मारे घुल गई। क्या यह प्रेम नहीं था ? पुरुष अपने प्रेम का प्रकाश अधिक कर सकते हैं परन्तु प्रेम अधिक नहीं होता।

राजा—क्या वह प्रेम रोग से मर गई ?

वायोला—अपने बाप के घर में मैं ही बहन और मैं ही भाई हूँ।

जब ये बातें हो रही थी, राजा के पास एक मनुष्य आया जिसको उसने आलोविया के पास भेजा था। उसने कहा.—

"श्रीमन्! मैं देवीजी के पास नहीं जा सका। उनकी नोकरानी ने कहा कि सात वर्ष तक पञ्चतत्त्वों को भी उनका मुख देखने को न मिलेगा किन्तु अपने भाई की मृत्यु के शोक में वे अपने मुख पर कपड़ा डालकर अपने ही कमरे में रहेंगी।"

राजा ने यह सुनकर कहा.—

"जिस स्त्री का हृदय इतना कोमल हो कि वह अपने भाई के लिए इतना प्रेम प्रकट कर सके वह अपने पति के लिए न जाने कितना प्रेम प्रकट करेगी, यदि कुसुमसदृश कामबाण उसके हृदय को वेध दे।"

फिर राजा ने वायोला से कहा—"सिसारियो! मैंने तुझ से अपने मन की सब बात कह दी है। इसलिए अब तू आलोविया के समीप जा और उससे मेरे अनुराग का हाल कह। देख, ऐसा उपाय करना कि तेरा परिश्रम निष्फल न हो और तुझे बिना मिले न लौट आना पड़े। उसके दरवाजे पर बैठ जाना और कहना कि चाहे मेरे पैर वृक्ष की जड़ के समान पृथ्वी में जम जाय परन्तु बिना देखे मैं यहाँ से नहीं जाने का।"

वायोला—महाराज! अगर उसको इतना शोक है तो वह मुझे अपने पास तक न जाने देगी।

राजा—खूब कोलाहल करना और चिल्लाना जिससे कार्य्य निष्फल न हो।

वायोला—अच्छा, अगर बात करने का अवसर मिल जाय तो क्या कहूँ?

राजा—मेरे प्रेम का हाल उस पर प्रकट करना और मेरी प्रतिज्ञाओं का इस प्रकार वर्णन करना कि उस पर असर हो जाय। तेरी आकृति मुझसे अच्छी है तू मुझसे आयु में भी कम है। इसलिए मेरी गम्भीर आकृति की अपेक्षा वह तेरी मनोहर आकृति का अधिक ख्याल करेगी।

राजा की आज्ञा पाकर वायोला आलोविया के घर को चल दी। परन्तु यह काम उसकी इच्छा के विपरीत था क्योंकि वह एक स्त्री को उस मनुष्य से विवाह के लिए राजी करने जा रही थी जिसको वह स्वयं भी अपना पति बनाना चाहती थी। परन्तु स्वामी की आज्ञा का पालना आवश्यक था और उसने इस कार्य्य को बड़ी सचाई के साथ किया। जब वह आलोविया के घर पहुँची तब उसकी नौकरानियों ने सूचना दी कि—

"एक युवक आप से बात करना चाहता है।"

आलोविया—कह दो कि मैं नहीं मिल सकती।

नौकरानी—मैंने कह दिया था। परन्तु वह कहता है कि मैं मिल कर ही जाऊँगा। मैंने कहा कि आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं है। उसने उत्तर दिया कि मैं इस बात को जानता हूँ। इसीलिए आया हूँ। मैंने कहा कि आप शयनागार में सो रही हैं। उसने कहा कि ठीक है। तभी तो मुझे आने की आवश्यकता हुई। वह कहता है कि जब तक आप उसे अपने पास तक आने की आज्ञा न देंगी वह आपके दरवाजे से न टलेगा।

आलोविया—किस प्रकार का मनुष्य है?

नौकरानी—मनुष्य जाति का।

आलोविया—उसका स्वभाव कैसा है?

नौकरानी—बड़ा तीक्ष्ण! चाहे आप मानें या न मानें वह तो आपके पास हो कर ही जायगा।

आलीविया को ऐसे आग्रही मनुष्य के देखने की इच्छा हो गई और उसने अपने मुख पर घूँघट डाल कर उसको भीतर आने की आज्ञा दी। वायोला बड़े साहस के साथ कमरे में चली गई और कहा—

'इस घर की स्वामिनी कौनसी है?"

आलीविया—मुझसे बात कहो। मैं उसकी ओर से उत्तर दूँगी। क्या चाहते हो?

वायोला—सुन्दरि! मुझे यह बता दो कि इस घर की स्वामिनी कौन है? क्योंकि मैंने उन्हें कभी नहीं देखा। मैं अपनी वक्तृता को अन्य के सामने व्यर्थ कहना नहीं चाहता। क्योंकि इसको रचने के अतिरिक्त इसको याद करने में मुझे बड़ा समय लगा है। सुमुखि! मेरा अनादर न करो क्योंकि मेरा हृदय कोमल है।

आलीविया—तुमको किसने भेजा है?

वायोला—यह उत्तर मेरी वक्तृता का भाग नहीं है। मैंने जो कुछ सीखा है उससे अधिक कुछ नहीं कह सकता। कृपा करके बताओ कि क्या तुम्हीं इस घर की स्वामिनी हो जिससे मैं शीघ्र अपनी वक्तृता आरम्भ करूँ।

आलीविया—क्या तुम कौतुकी हो?

वायोला—नहीं, नहीं! परन्तु मैं वह नहीं हूँ जो तुम जानती हो! क्या घर की स्वामिनी तुम्हीं हो?

आलीविया—हाँ मैं ही हूँ।

वायोला—अगर तुम्हीं हो, तो तुमको वह वस्तु अपने ही पास न रखनी चाहिए जिसको ईश्वर ने तुम्हें दान करने के लिए प्रदान की है । पहले मैं अपनी वक्तृता का वह भाग कहूँगा जिसमें तुम्हारे रूप की प्रशंसा है। फिर संदेसा।

आलीविया—आवश्यक संदेसा कहो। प्रशंसा को जाने दो।

वायोला—नहीं, नहीं। इसके याद करने में तो मुझे बड़ा कष्ट उठाना पड़ा है। यह बड़ी रसीली है।

आलीविया—तुम तो बड़े धृष्ट हो। तुमने मेरे द्वार पर बड़ा आग्रह किया। मैंने तुमको संदेसा सुनने नहीं बुलाया किन्तु तुम्हारा मुख देखने को कि तुम कौन हो, जो इतने दुराग्रही हो। अगर तुम पागल हो, तो यहाँ से चले जाओ। अगर तुम में कुछ भी बुद्धि हो तो संक्षेप से कहो।

वायोला—मैं तो दूत मात्र हूँ।

आलीविया—इस दूत का संदेसा बड़ा भयङ्कर है। इसकी भूमिका ही ऐसी क्लिष्ट है। अच्छा, कहो।

वायोला—न तो युद्ध का समाचार लाया हूँ। न कोई अशान्ति फैलाने आया हूँ। मेरे शब्द ऐसे ही मधुर हैं जैसा मेरा आशय!

आलीविया—परन्तु तुम आरम्भ बड़ी धृष्टता से करते हो! कौन हो और क्या चाहते हो?

वायोला—जो कुछ धृष्टता है वह सब आपके ही आतिथ्य-सत्कार से सीखी गई है। मैं कौन हूँ और क्या चाहता

हाँ, यह बात तुम्हारे ही कानों को सुनना चाहिए।

ओलीविया ने नौकरों को कमरे से निकाल दिया और

ओलीविया—"तुम्हारा मज़मून क्या है ?"

वायोला—प्यारी सुन्दरि—

ओलीविया—तुम्हारी वक्तृता की रचना कहाँ हुई थी ?

वायोला—ओर्सिनो के मन में।

ओलीविया—मैंने पढ़ा है। इसमें कुछ नहीं। और क्या कहना है ?

वायोला—सुन्दरि! मुझे अपना मुख तो दिखाओ।

ओलीविया—क्या तुम मेरे मुख के लिए कुछ सन्देसा लाए हो ? यह भी तुम्हारी वक्तृता का भाग नहीं है। अच्छा पर्दा हटाती हूँ। देखो क्या तसवीर अच्छी है ?

यह कहकर ओलीविया ने घूँघट खोल दिया और उसके बात का कुछ भी ध्यान न रहा कि मैंने सात वर्ष घूँघट [illegible] की प्रतिज्ञा की थी। इसका कारण यह था कि ओलीविया वायोला के रूप को देखकर उसके ऊपर आसक्त हो गई थी।

रूप के साथ तुम में अभिमान भी बहुत है। मेरा स्वामी तुम को चाहता है। इस प्रेम का बदला तो अवश्य देना चाहिए!

आलीविया—वह किस प्रकार मुझे चाहता है?

वायोला—वह नित्य आपका ही स्मरण रखता है। आपके लिए उसकी आँखो से अश्रुधारा बहती है।

आलीविया—तुम्हारे स्वामी को मालूम है कि मैं उसे नहीं चाहती। मैं जानती हूँ कि वह एक योग्य और सदाचारी पुरुष है। परन्तु मैं उसे नहीं चाहती। यह उत्तर मैंने उसे बहुत दिन हुए दे दिया था।

वायोला—अगर मैं तुमको अपने स्वामी की भाँति चाहता होता तो तुम्हारे निषेध की कुछ भी परवा न करता।

आलीविया—क्या करते?

वायोला—तुम्हारे द्वार पर झोंपडी डालकर 'आलीविया! आलीविया' किया करता और आधी रात के समय इतना चिल्लाता इतना चिल्लाता कि तुम को नींद न आती। तब तो तुम अवश्य मुझ पर दया करतीं।

आलीविया—तुम बहुत कुछ कर सकते हो। पर तुम्हारा वश क्या है?

वायोला—मेरी दशा की अपेक्षा उच्च है। मैं एक भद्र पुरुष हूँ।

आलीविया—अच्छा जाओ। और अपने स्वामी का संदेसा लेकर कभी मत आना। हाँ, यह और बात है कि तुम उसकी दशा बताने के लिए कभी कभी चले आया करो।

आलीविया ने अपनी इच्छा के विरुद्ध यह कहकर वायोला को भेज दिया। पर अब वह इसके प्रेम का अनुभव करने लगी।

उसने अपने जी में कहा कि अगर यह नौकर ही राजा होता तो कैसी अच्छी बात थी। वह भूल गई कि इस नौकर और मेरी कुलीनता में कितना भेद है। मदनदेव उसके हृदय को अपने कोमल शरों से बींधने लगे। वह कहने लगी कि "यह नौकर किसी उच्च वंश का प्रतीत होता है। इसकी बोली कैसी मधुर है। इसका मुख कैसा लावण्य-युक्त है। इसके आचार व्यवहार कैसे उत्तम हैं" फिर वह अपने इस निलज्जपन पर लजाने लगी कि देखो थोड़ी सी देर में मैं इस नौकर के ऊपर इस प्रकार मोहित हो गई। परन्तु प्रेम की डोर का बंधा हुआ मनुष्य उस से मुक्त नहीं हो सकता। इसलिए उसने अपने प्रेम को संकेत द्वारा प्रकट करने के लिए सिसारियो (वायोला) के पास एक अँगूठी भेजी और कहला भेजा कि "यह अँगूठी तुम्हारे स्वामी ने भेजी थी जिसे तुम मेज पर रक्खी छोड़ गये थे। इसे लेते जाओ।"

वायोला समझ गई कि वास्तविक बात क्या है। क्योंकि वह आर्सीनो के पास से कोई अगूठी नहीं लाई थी। उसे निश्चित होगया कि अवश्य आलोविया मुझको चाहने लगी है। क्योंकि इस प्रेम का प्रकाश उसकी बातों तथा चेहरे से ही होता था। यह बात जान कर उसे खेद हुआ और अपने मन में कहने लगी।

"शोक है कि आलोविया शून्य से प्रेम कर रही है। तभी तो भेस बदलना बुरा है"।

वायोला आर्सीनो के महल को लौट आई और अपने परिश्रम की विफलता का हाल सुनाया। परन्तु आर्सीनो को अभी यही आशा बनी रही कि सिसारियो अवश्य एक दिन अपने

कार्य्य को सिद्ध कर लेगा। इसलिए उसने फिर हुक्म दिया कि तुम नित्य आलीविया के घर जाया करो।

इसके पश्चात् उसने अपना चित्त बहलाने के लिए एक गीत गवाया और कहा—

"सिसारियो! जब मैंने रात यह गीत सुना तो मुझे कुछ शान्ति हो गई। यह कोई अच्छा गीत तो नहीं है पर मुझे पसन्द है। जब जुलाहे लोग धूप में बैठ कर ताना बाना तानते है तब इसको गाते हैं।"

गीत सुनते ही वायोला के मुख पर उदासी छागई। क्योंकि इसी अतृप्त प्रेम की सताई हुई वह भी थी। राजा ने उसके उदास मुख को देख कर पूछा—

"सिसारियो! यद्यपि तेरी आयु अभी थोडी है, परन्तु मालूम होता है कि तू किसी के प्रेम में आसक्त है।"

वायोला—हाँ श्रीमन्!

आर्सीनो—वह कौन स्त्री है! और उसकी क्या अवस्था है?

वायोला—आप के से रंग की और आपके समान आयुवाली!

आर्सीनो को यह सुन कर आश्चर्य हुआ कि सिसारियो अपने से बडी स्त्री को चाहता है। परन्तु वायोला का कहना ठीक था क्योंकि वायोला का चित्त राजा के अनुराग से परिपूर्ण हो रहा था। इसी ओर उसने गुप्त रीति से सकेत किया था।

जब वायोला दुबारा आलीविया के पास गई तब भीतर जाने में पहलीवार की भाँति कष्ट न हुआ। यदि कोई युवती किसी युवक से बातचीत करना चाहती है तो उसके चाकर भी झट से ताड जाते हैं। इसलिए ज्यों ही वायोला दरवाजे पर पहुँची बडे आदर के साथ नौकर उसे आलीविया के कमरे

उसने अपने जी में कहा कि अगर यह नौकर ही राजा होता तो कैसी अच्छी बात थी। वह भूल गई कि इस नौकर और मेरी कुलीनता में कितना भेद है। मदनदेव उसके हृदय को अपने कोमल शरों से बींधने लगे। वह कहने लगी कि "यह नौकर किसी उच्च वंश का प्रतीत होता है। इसकी बोली कैसी मधुर है। इसका मुख कैसा लावण्य-युक्त है। इसके आचार व्यवहार कैसे उत्तम हैं" फिर वह अपने इस निलज्जपन पर लजाने लगी कि देखो थोड़ी सी देर में मैं इस नौकर के ऊपर इस प्रकार मोहित हो गई। परन्तु प्रेम की डोर का बंधा हुआ मनुष्य उस से मुक्त नही हो सकता। इसलिए उसने अपने प्रेम को संकेत द्वारा प्रकट करने के लिए सिसारियो (वायोला) के पास एक अँगूठी भेजी और कहला भेजा कि "यह अँगूठी तुम्हारे स्वामी ने भेजी थी जिसे तुम मेज पर रक्खी छोड़ गये थे। इसे लेते जाओ।"

वायोला समझ गई कि वास्तविक बात क्या है। क्योंकि वह आर्सीनो के पास से कोई अगूठी नही लाई थी। उसे निश्चित होगया कि अवश्य आलोविया मुझको चाहने लगी है। क्योंकि इस प्रेम का प्रकाश उसकी बातों तथा चेहरे से ही होता था। यह बात जान कर उसे खेद हुआ और अपने मन में कहने लगी।

"शोक है कि आलोविया शून्य से प्रेम कर रही है। तभी तो भेस बदलना बुरा है"।

वायोला आर्सीनो के महल को लौट आई और अपने परिश्रम की विफलता का हाल सुनाया। परन्तु आर्सीनो को अभी यही आशा बनी रही कि सिसारियो अवश्य एक दिन अपने

से उसी प्रकार प्रेम की बातें करने लगी जैसे स्त्रियाँ अपने पतियों के साथ किया करती हैं । राजा को ये बातें सुन कर विश्वास हो गया कि सिसारियो ने विश्वासघात किया और मेरी प्राणों से प्यारी के प्रेम को अपनी ओर आकर्षित कर लिया। वह सिसारियो पर बड़ा क्रुद्ध हुआ, मानो अभी प्राण दण्ड देना चाहता है । उसने कहा—

"अच्छा नौकर ! मेरे साथ चल ! मेरी क्रोधाग्नि प्रज्वलित हो रही है जिसमें शीघ्र ही तू भस्म होने वाला है ।"

वायोला इस विपत्ति के समय बिल्कुल न घबराई क्योंकि वह मन से उसको प्यार करती थी । वह कहने लगी, "महाराज, जो चाहें सो करें । मैं उसी में सन्तुष्ट हूँ ।"

जब आलीविया ने देखा कि वायोला राजा के पीछे पीछे जा रही है तो उसने जोर से पुकार कर कहा—

"स्वामिन् ! कहाँ जाते हो ?"

वायोला ने उत्तर दिया कि—"मैं उसी के पीछे जाता हूँ जो मुझे अपने प्राणों से भी प्रिय है ।"

आलीविया सिसारियो को घर ले जाने के लिए आग्रह कर रही थी क्योंकि विवाह के नियम के अनुसार उसको अधिकार था । परन्तु वायोला उसके साथ आने को [illegible] थी, कहती थी कि "मेरा [illegible] । [illegible] नहीं [illegible]

इस उलझन के [illegible]
जिसने आलीविया का [illegible]
[illegible] । के विरुद्ध
[illegible] का विवाह [illegible]

उसने अपने जी मे कहा कि अगर यह नौकर ही राजा होता तो कैसी अच्छी बात थी। वह भूल गई कि इस नौकर और मेरी कुलीनता मे कितना भेद है। मदनदेव उसके हृदय को अपने कोमल शरो से बींधने लगे। वह कहने लगी कि "यह नौकर किसी उच्च वश का प्रतीत होता है। इसकी बोली कैसी मधुर है। इसका मुख कैसा लावण्य-युक्त है। इसके आचार व्यवहार कैसे उत्तम हैं" फिर वह अपने इस निलज्जपन पर लजाने लगी कि देखो थोडी सी देर में मैं इस नौकर के ऊपर इस प्रकार मोहित हो गई। परन्तु प्रेम की डोर का बंधा हुआ मनुष्य उस से मुक्त नही हो सकता। इसलिए उसने अपने प्रेम को संकेत द्वारा प्रकट करने के लिए सिसारियो (वायोला) के पास एक ॲंगूठी भेजी और कहला भेजा कि "यह ॲंगूठी तुम्हारे स्वामी ने भेजी थी जिसे तुम मेज पर रक्खो छोड गये थे। इसे लेते जाओ।"

वायोला समझ गई कि वास्तविक बात क्या है। क्योंकि वह आर्सीनो के पास से कोई अगूठी नही लाई थी। उसे निश्चित होगया कि अवश्य आलोविया मुझको चाहने लगी है। क्योकि इस प्रेम का प्रकाश उसकी बातों तथा चेहरे से ही होता था। यह बात जान कर उसे खेद हुआ और अपने मन मे कहने लगी।

"शोक है कि आलोविया शून्य से प्रेम कर रही है। तभी तो भेस बदलना बुरा है"।

वायोला आर्सीनो के महल को लौट आई और अपने परिश्रम की विफलता का हाल सुनाया। परन्तु आर्सीनो को अभी यही आशा बनी रही कि सिसारियो अवश्य एक दिन अपने

कार्य्य को सिद्ध कर लेगा। इसलिए उसने फिर हुक्म दिया कि तुम नित्य आलोविया के घर जाया करो।

इसके पश्चात् उसने अपना चित्त बहलाने के लिए एक गीत गवाया और कहा—

"सिसारियो! जब मैंने रात यह गीत सुना तो मुझे कुछ शान्ति हो गई। यह कोई अच्छा गीत तो नहीं है पर मुझे पसन्द है। जब जुलाहे लोग धूप में बैठ कर ताना बाना तानते हैं तब इसको गाते हे।"

गीत सुनते ही वायोला के मुख पर उदासी छागई। क्योंकि इसी अतृप्त प्रेम की सताई हुई वह भी थी। राजा ने उसके उदास मुख को देख कर पूछा—

"सिसारियो! यद्यपि तेरी आयु अभी थोडी है, परन्तु मालूम होता हे कि तू किसी के प्रेम मे आसक्त है।"

वायोला—हॉ श्रीमन्!

आर्सीनो—वह कौन स्त्री है! और उसकी क्या अवस्था है?

वायोला—आप के से रँग की और आपके समान आयुवाली!

आर्सीनो को यह सुन कर आश्चर्य हुआ कि सिसारियो अपने से बडी स्त्री को चाहता है। परन्तु वायोला का कहना ठीक था क्योंकि वायोला का चित्त राजा के अनुराग से परिपूर्ण हो रहा था। इसी ओर उसने गुप्त रीति से सकेत किया था।

जब वायोला दुबारा आलोविया के पास गई तब भीतर जाने में पहलीबार की भॉति कष्ट न हुआ। यदि कोई युवती किसी युवक से बातचीत करना चाहती है तो उसके चाकर भी झट से ताड जाते हं। इसलिए ज्यों ही वायोला दरवाजे पर पहुँची बडे आदर के साथ नौकर उसे आलोविया के कमरे

में ले गये। वायोला ने कहा कि "मैं फिर अपने स्वामी का सँदेसा ले कर आया हूँ"। आलीविया ने उत्तर दिया कि—

"मुझसे कभी राजा के विषय में कुछ मत कहना! हाँ यदि कुछ और कहना चाहो या किसी और का प्रेम सँदेसा लाये हो तो कह सकते हो।"

यही नहीं किन्तु आलीविया ने साफ साफ कह दिया कि मैं तुमको चाहती हूँ और तुमसे विवाह करने को उद्यत हूँ। वायोला जिसको आलीविया ने पुरुष समझा था वस्तुतः स्त्री थी। इसलिए जब उसे इस प्रेम को सुन कर अप्रसन्नता हुई तो आलीविया कहने लगी—

"देखो! इसका क्रोध भी कैसा प्यारा मालूम होता है। सिसारियो, वसन्त के फूलों की सौगन्ध! मुझे तुम से प्रेम है। और मैं नहीं समझती कि किस प्रकार इस भाव को गोपन करूँ।"

पर आलीविया का सब परिश्रम व्यर्थ हुआ। वायोला क्रुद्ध होकर यह कहती हुई वहाँ से चली गई कि "मैं कभी किसी स्त्री से प्रेम न करूँगा।"

ज्यों ही वायोला आलीविया के पास से गई, मार्ग में एक मनुष्य ने लाठी से उस पर आक्रमण किया। यह वह पुरुष था जिसको आलीविया ने तिरस्कृत कर दिया था। इसने सुना था कि आलीविया वायोला से प्रेम करती है, इसलिए डाह की आग से जलकर उसने वायोला के मार डालने का इरादा कर लिया। अब वायोला विचारी क्या कर सकती थी। वह तो स्त्री मात्र थी। उसने कभी अपने हाथ से शस्त्र न छुआ था। यद्यपि भेष पुरुषों का सा था परन्तु हृदय स्त्रियों के समान कोमल था।

इसलिए जब शत्रु को अपनी ओर आता देखा तब उसका हृदय काँप उठा और उसने चाहा कि मैं अपने स्त्री होने के भेद को प्रकट कर दूँ । परन्तु परमात्मा की कृपा से एक आशातीत सहायता उपस्थित हो गई । वहाँ होकर एक पथिक निकला जिसने सिसारियो को देखकर और यह समझ कर कि मैं इसे पहिचानता हूँ, उस शत्रु से कहा—

"यदि इस युवक ने कुछ अपराध किया है तो मैं इसको अपने ऊपर लेता हूँ। तुमको अगर युद्ध करना है तो मुझसे करो।"

अभी वायोला ने इस अजनबी पुरुष को धन्यवाद भी नहीं दिया था कि राजा के अनुचर वहाँ पर आ गये और उन्होंने इस पुरुष को किसी अपराध में पकड़ लिया। इस प्रकार पकड़ा जाने पर इस आदमी ने वायोला से कहा—"यह सब तुम्हारा साथ देने का फल है।" फिर वह वायोला से अपनी रुपयों की थैली माँगने लगा। वायोला इस मनुष्य को बिल्कुल नहीं पहिचानती थी, इसलिए थैली का नाम सुनकर हक्का-बक्का रह गई। आदमी ने फिर कहा—

"आश्चर्य क्यों करते हो, इस समय मुझे रुपयों की आवश्यकता है। मैं अब तुम्हारी क्या सहायता कर सकता हूँ। मेरी थैली दे दो।" वायोला की समझ में एक बात भी न आई। वह थोड़ा सा रुपया अपने पास से देने लगी क्योंकि आज इसी मनुष्य ने उसकी जान बचाई थी। परन्तु वह कहने लगी कि "मैं तुमको नहीं जानता।" यह सुन कर तो वह आदमी झल्ला उठा और कहने लगा—

"देखो लोगो। जिस पुरुष को तुम यहाँ पर देखते हो। यह बड़ा कृतघ्न है। मैंने इसे मौत के मुँह से बचाया है। इसी के लिए मैं इलोरिया में आया था और इसी के लिए यह दुःख सहे।" पुलिसवालों ने कैदी की कुछ बात न सुनी और यह कहते हुए चले गये—

"हम को इस से क्या ?"

जब कैदी पुलिस के साथ जा रहा था वह वायोला को सिवाश्चियन नाम से पुकार पुकार कर कोसता जाता था कि इस कृतघ्न दुष्ट ने अवसर पड़े पर मुझे छोड़दिया। वायोला ने सिवाश्चियन का नाम सुन कर समझा कि कहीं इसने मुझे मेरे भाई के धोखे में सिवाश्चियन न जाना हो। परन्तु पुलिसवाले कैदी को इतनी जल्दी पकड़ ले गये कि उसे बातचीत करने का समय न मिला। हाँ, अब वायोला को यह आशा तो हो गई कि मेरा भाई जीता है।

इस कैदी की कहानी इस प्रकार से है—वायोला का भाई सिवाश्चियन जब मस्तूल से बँधा हुआ समुद्र में बहा जा रहा था तब वह इतना थक गया कि अब तैरने की शक्ति नहीं रही। इतने में ईश्वर ने करुणा की और वहाँ पर एक जहाज आगया। इस जहाजवाले ने जिसका नाम एण्टोनियो था सिवाश्चियन को समुद्र से निकाल लिया। अब एण्टोनियो और सिवाश्चियन की बड़ी मित्रता होगई और वे दोनों एक साथ रहने लगे। सिवाश्चियन ने इलोरिया की सैर करने का इरादा किया, इसलिए एण्टोनियो भी अपने मित्र से पृथक् न रह सका, यद्यपि वह जानता था कि इलोरिया पहुँचते ही मैं पकड़ा जाऊँगा। क्योंकि एकबार जल-युद्ध में इस एण्टोनियो ने इलोरिया के राजा

आर्नीनो के भतीजे को मार डाला था। इसी अपराध में पुलिस के लोगों ने एण्टोनियो को पकड़ लिया और एण्टोनियो ने वायोला को धोखे से सिवाश्चियन समझ लिया क्योंकि वायोला के वस्त्र भी उसके भाई के वस्त्रों के ही समान थे। एण्टोनियो ने सिवाश्चियन को थोड़ी देर पहले एक थैली दी थी और कह दिया था कि जब तक मैं सराय में ठहरा हूँ, तुम जाकर नगर की सैर कर आओ। जब सिवाश्चियन को बहुत देर होगई और वह नियत समय पर न पहुँचा तब एण्टोनियो को चिन्ता हुई और वह हथेली पर सिर रखकर उसे ढूँढने चल दिया। इस प्रकार जब वायोला की सहायता के लिए उसने कोशिश की तो वह सिवाश्चियन के धोखे में था।

एण्टोनियो के पुलीस के साथ जाने के पश्चात् वायोला भयभीत हो कर शीघ्र ही राजमहल को चली गई। परन्तु इसके शत्रु को मालूम हुआ कि सिसारियो फिर आरहा है। वस्तुतः यह वायोला नहीं थी किन्तु इसका भाई सिवाश्चियन था जो नगर की सैर करते करते वहाँ पर आपहुँचा था। शत्रु ने इसे सिसारियो समझ कर फिर आक्रमण किया और एक लाठी मारी। परन्तु सिवाश्चियन तो वायोला के समान कोमल न था उसने लाठी का जवाब लाठी से दिया और ऐसे जोर से चोट मारी कि शत्रु घायल हो कर भाग गया।

इतने में एक रमणी इस लड़ाई को बन्द करने वहाँ पर आगई। यह ओलीविया थी जो अपने नौकरों से अपने प्यारे सिसारियो की विपत्ति का हाल सुन कर दौड़ी आई थी। उसने सिसारियो के धोखे में सिवाश्चियन को बुलाया और इस आक्रमण पर शोक प्रकट करने लगी। सिवाश्चियन को इस रमणी

के आतिथ्य-सत्कार पर इतना ही आश्चर्य हुआ जितना कि उस शत्रु के आक्रमण पर हुआ था परन्तु उसने इस आफत के वक्त आलोविया के घर जाना ही उचित समझा।

आलोविया को भी यह देख कर बडा हर्ष हुआ कि आज सिसारियो पहिले की अपेक्षा अधिक प्रसन्न मालूम होता है क्योंकि वायोला ने आलोविया के प्रेम पर हमेशा असन्तुष्टता प्रकट की थी।

जब आलोविया ने अपने विवाह का प्रस्ताव सिवाश्चियन के सम्मुख पेश किया तब सिवाश्चियन को बडा आश्चर्य हुआ। उसकी समझ में यह बात नहीं आई कि एक रमणी बिना जानें पूछे किस प्रकार एक अजनबी आदमी से विवाह करने को तैय्यार हो सकती है। आलोविया ने सिवाश्चियन को एक मोती भी भेट दिया और कहा कि विवाह अभी हो जाना चाहिए। क्योंकि वह डरती थी, कि एक दिन पीछे कहीं सिवाश्चियन की (जिसको कि वह सिसारियो समझती थी) राय न बदल जाय। सिवाश्चियन इस स्त्री के रूप को देख कर विवाह करने पर राजी हो गया क्योंकि एक धनाढय विदुषी और रूपवती स्त्री से कौन विवाह करना नहीं चाहता और वह भी ऐसी जिसका मिलना इस प्रकार सुगम हो। आलोविया सिवाश्चियन को अपने बाग़ में छोड कर झट पुरोहित को बुलाने चली गई जिससे तुरन्त ही विवाह हो जाय। जब सिवाश्चियन अकेला रह गया तब मन में कहने लगा—

"हवा चल रही है। प्रकाशमान सूर्य्य चमक रहा है। यह मोती जो इसने दिया है, मेरे पास है। इन सब चीजों का मुझे अनुभव होता है। मैं भली प्रकार इनको देख सकता हूँ। इस

लिए यह नहीं कह सकता कि मैं पागल हूँ । परन्तु मुझे इस बात पर बडा आश्चर्य होता है। मेरी बुद्धि काम नहीं करती और इन्द्रियाँ उस मन का साथ नहीं देतीं ! क्या करूँ मेरा मित्र एण्टोनियो भी सराय में नहीं मिला। यदि होता तो उसी से सलाह लेता क्योंकि वह यहाँ के व्यवहार को जानता है। कभी मुझे यह खयाल होता है कि यह स्त्री ही पागल है। परन्तु यह भी नहीं कहा जा सकता। क्योंकि यदि वह पागल होती तो ऐसी बुद्धिमता से अपने घर का लेन देन और अन्य व्यवहार न करती। फिर क्या यह केवल मुझ से प्रेम करने मात्र में ही पागल हो गई। जान पडता है कि अवश्य कुछ न कुछ गलती हुई है।"

इतने में आलीविया पुरोहित को लेकर वहाँ पर आ गई। और सिवाश्चियन को सोच विचार करता देख कर कहने लगी।

"देखो, प्रियतम ! कोई चिन्ता की बात नहीं है। मुझे केवल इसलिए जल्दी है कि मुझे शान्ति हो जायगी। यदि आप चाहें तो किसी नियत समय तक विवाह को प्रकाशित न किया जायगा। परन्तु विवाह अभी हो जाना चाहिए।"

जब ये सब बातें हो चुकी तब सिवाश्चियन निकट के धर्म-मन्दिर में पुरोहित और आलीविया के साथ चला गया और उन दोनों के हाथ आयुभर के लिए संयुक्त हो गये। विवाह के पश्चात् सिवाश्चियन आलीविया के घर से निकल कर एण्टो-नियो की तलाश में चल दिया।

इस समय एक और विलक्षण घटना हुई। राजा आर्सीनो ने जब वायोला से सुना कि आलीविया किसी प्रकार उससे विवाह करने को राजी नहीं होती तब वह स्वयं आलीविया के



घर को चल दिया। वायोला भी सिसारियो के भेस में उसके साथ थी। जब वे दोनों आलीविया के दरवाजे पर पहुँचे उसी समय एण्टोनियो को पकडे हुए पुलिस भी वहाँ पर आ पहुँची। और राजा के सामने उसको पेश किया। एण्टोनियो वायोला को राजा के साथ देख कर गिडगिडा कर कहने लगा कि—

"महाराज! इस लडके को मैंने तीन महीने हुए समुद्र में डूबने से बचाया था क्योंकि यह एक तख्ते से बँधा हुआ बहा जा रहा था, तीन महीने से यह मेरे साथ है। मैं ही इसे खाना पानी देता हूँ। पर यह मनुष्य ऐसा कृतघ्न है कि मेरी रुपयों की थैली लेकर भाग आया है और मेरी विपत्ति के समय कहता है कि मैं तुमको नहीं जानता।"

अभी राजा ने एण्टोनियो की प्रार्थना आद्योपान्त श्रवण नहीं की थी कि इतने में आलीविया अपने घर से निकल आई और राजा का चित्त उधर को आकर्षित हो गया। एण्टोनियो को तो यह कह कर उसने टाल दिया—

"मालूम होता है कि इस मनुष्य की बुद्धि में कुछ विकार है क्योंकि जिस सिसारियो को यह अपना साथी बता रहा है वह तो तीन महीने से मेरे पास है।"

फिर आलीविया की ओर देखकर कहने लगा—

"देखो! पृथ्वी स्वर्ग हो गई जिसे ऐसी अप्सरा अपने चरणों से पवित्र कर रही है।"

वायोला बिचारी अभी एण्टोनियो के लगाये हुए कृतघ्नता के दोष से मुक्त नहीं हुई थी कि इतने में राजा ने भी उसे कृतघ्न कहना आरम्भ कर दिया क्योंकि आलीविया सिसारियो

से उसी प्रकार प्रेम की बातें करने लगी जैसे स्त्रियाँ अपने पतियों के साथ किया करती हैं । राजा को ये बातें सुन कर विश्वास हो गया कि सिसारियो ने विश्वासघात किया और मेरी प्राणों से प्यारी के प्रेम को अपनी ओर आकर्षित कर लिया। वह सिसारियो पर बड़ा क्रुद्ध हुआ, मानो अभी प्राण दण्ड देना चाहता है। उसने कहा—

"अच्छा नोकर ! मेरे साथ चल ! मेरी क्रोधाग्नि प्रज्वलित हो रही है जिसमें शीघ्र ही तू भस्म होने वाला है।"

वायोला इस विपत्ति के समय बिल्कुल न घबराई क्योंकि वह मन से उसको प्यार करती थी। वह कहने लगी, "महाराज, जो चाहें सो करें। मैं उसी में सन्तुष्ट हूँ।"

जब आलीविया ने देखा कि वायोला राजा के पीछे पीछे जा रही है तो उसने ज़ोर से पुकार कर कहा—

"स्वामिन् ! कहाँ जाते हो ?"

वायोला ने उत्तर दिया कि—"मैं उसी के पीछे जाता हूँ जो मुझे अपने प्राणों से भी प्रिय है।"

आलीविया सिसारियो को घर ले जाने के लिए आग्रह कर रही थी क्योंकि विवाह के नियम के अनुसार उसको अधिकार था। परन्तु वायोला उसके साथ जाने को तैय्यार न थी और कहती थी कि "मेरा विवाह हुआ ही नहीं।"

इस उलझन के सुलझाने के लिए पुरोहित भी बुलाया गया जिसने आलीविया का विवाह-संस्कार किया था। परन्तु उसने भी वायोला के विरुद्ध साक्षी दी और कहा कि "मैं ने आज ही इस मनुष्य का विवाह कराया है।"

अब राजा ने विचारा कि जो होना था सो हो गया। अब उसे आलीविया की प्राप्ति की कुछ भी आशा नहीं रही। इसलिए वह आलीविया और वायोला दोनों को छोड़ कर बड़े क्रोध से चला गया और कह गया कि—"सिसारियो अब कभी हमारे सामने न आवे। क्योंकि यह एक मक्कार और धोखेबाज आदमी है।"

राजा ने अभी पीठ ही फेरी थी, कि वहाँ पर एक दूसरा सिसारियो आ गया जो आलीविया को स्त्री कह कर पुकारने लगा। इन दोनों सिसारियो की आकृति एक सी थी। आयु एक थी। वस्त्र एक से पहने थे और सब से अधिक आश्चर्य यह है कि उनकी बोली में भी कुछ भेद न था। इस वैचित्र्य को देख कर सब दर्शक चकित हो गये और उनकी समझ में एक बात भी न आई। आलीविया खड़ी खड़ी विचारने लगी कि इन दोनों में मेरा कौन सा पति है।

परन्तु वायोला एक ऐसी थी जिसे कुछ आश्चर्य नहीं हुआ था। उसे एण्टोनियो के मुख से सिबाश्चियन का नाम सुनकर ही यह आशा हो गई थी कि मेरे भाई का पता लगने वाला है। इसलिए ज्यों ही वायोला ने अपने सदृश दूसरे आदमी को देखा वह पहचान गई। सिबाश्चियन को कुछ आश्चर्य जरूर हुआ क्योंकि उसे अपनी बहन को इस भेस में देखने का खयाल तक नहीं था। जब सिबाश्चियन ने वायोला से उसका नाम तथा वंश पूछा तो उसने कह दिया—"मैं तुम्हारी प्यारी बहन वायोला हूँ।"

अब तो भाई बहन मिलकर बहुत ही प्रसन्न हुए। और [illegible] की इस बात पर बड़ी हँसी हुई कि वह एक स्त्री से

विवाह करने को राजी हो गई। अब सिसारियो की इस बात का भी भेद खुल गया कि "मैं कभी किसी स्त्री से प्रीति न करूँगा।"

परन्तु आलीविया इस बात से अप्रसन्न नहीं हुई कि बहन के स्थान में भाई उसका पति हो गया।

आलीविया के विवाहिता होने की खबर सुनते ही राजा उससे प्रेम करना छोड चुका था परन्तु जब उसे मालूम हुआ कि सिसारियो जिसको वह एक रूपवान लडका जानता था एक सुन्दर स्त्री है तो वह सिसारियो को बडे ध्यान से देखने लगा और उसने कहा—

"अब मैं समझा कि तू क्यों कहता था कि मैं आप जैसी स्त्री को चाहता हूँ।"

राजा का वायोला पर अनुराग देख कर आलीविया ने उन दोनो को अपने घर निमन्त्रित किया जहाँ उसी दिन राजा और वायोला का भी विवाह हो गया और वायोला इलीरिया की रानी हुई।

इस आनन्द के समय में एएटोनियो के भी उच्च के ग्रह आगये और उसका अपराध क्षमा कर दिया गया।

जैसे को तैसा।

MEASURE FOR MEASURE

बहुत दिन हुए कि वियना नगर में एक ऐसा नम्र और दयालु राजा शासन करता था जिसकी प्रजा राजनियमों का उल्लङ्घन करके भी दण्ड नहीं पाती थी। इसलिए लोग प्राय: राजनियमों को भूल ही गये थे। इनमें से एक नियम यह था कि यदि कोई मनुष्य अपनी विवाहिता स्त्री के सिवाय अन्य किसी स्त्री से अनुचित प्रेम करे तो उसको प्राणदण्ड दिया जाय परन्तु इस कोमल-हृदय राजा ने इस नियम के अनुसार अपनी आयु में कभी किसी को दण्ड नहीं दिया था। इसका परिणाम यह हुआ कि लोग विवाह की पवित्र संस्था को बिल्कुल भूल गये और स्त्री-पुरुष का सम्बन्ध बहुत ही असन्तोष जनक हो गया। नित्य प्रति युवती स्त्रियों के माता पिता की यह शिकायत आने लगी कि इस नियम के भूल जाने से लोगों के आचार व्यवहार बहुत ही दूषित होने लगे हैं।

राजा को यह देख कर बड़ा कष्ट हुआ कि हमारी प्रजा में रोज बरोज पाप की उन्नति और धर्म की अवनति होती जाती है। परन्तु उसने विचार किया कि यदि मैं शीघ्र ही अपने इस नम्रभाव को बदल कर कठोरता से नियमपालन में संलग्न हूँगा तो समस्त प्रजा, जिसको बहुत दिनों से कोमल व्यवहार की आदत हो रही है और जो मुझ से बहुत प्यार करती है, झट

मेरे विरुद्ध हो जायगी और मुझे क्रूर समझने लगेगी। इस कठिनाई का उसने यह उपाय सोचा कि थोड़े दिनों के लिए किसी अन्य देश में भ्रमण के लिए चला जाऊँ और अपने स्थान में उस समय के लिए किसी अन्य मन्त्री आदि को शासक बना के उसे हुक्म दे जाऊँ कि तुम व्यभिचारसम्बन्धी नियम का बड़ी सख़्ती से पालन करो जिससे ये लोग अपनी दुष्टता से बच सकें और लोग मुझसे भी अप्रसन्न न हों।

राजा ने अपनी अनुपस्थिति में राजप्रबन्ध करने के लिए पेंजोलो नामक मनुष्य को नियत किया। यह पेंजोलो वियना भर में शुभ कर्म और धार्मिक जीवन के लिए प्रसिद्ध था और सब लोग उसे सन्त समझते थे। जब राजा ने अपने मन्त्री एस्केलस से अपना विचार प्रकट किया तो उसने कहा, "महाराज! वियना भर में अगर कोई आदमी है जो इस असाधारण कार्य्य अथवा मान के योग्य हो तो यह पेंजोलो है।"

इस प्रकार राज्यप्रबन्ध पेंजोलो को सुपुर्द करके राजा पोलेण्ड की सैर करने के लिए वियना से चल दिया। परन्तु यह परदेश-यात्रा केवल कहने के लिए थी। वास्तव में राजा बहुत जल्दी अपने देश को लौट आया और साधु के भेस में रह कर गुप्त रीति से पेंजोलो के प्रबन्ध का निरीक्षण करने लगा।

जिस समय पेंजोलो को यह प्रबन्ध दिया गया था उसके थोड़े ही दिनों बाद क्लौडियो नामी एक प्रतिष्ठित पुरुष पर यह अभियोग चलाया गया कि वह एक स्त्री को अपने माँ बाप के घर से फुसला लाया है। इस नये शासक ने पहले तो क्लौडियो को कैद कर लिया फिर उस प्राचीन नियम के अनुसार जिसको लोग प्राय भूल गये थे उसको प्राण दण्ड देने का हुक्म दिया।

अब तो नगर में शोर पड गया और सारी प्रजा भयभीत हो गई। क्योंकि उन्होंने कभी अपनी याद में इस प्रकार का दण्ड नहीं सुना था। बहुत से लोग क्लौडियो की सिफारिश करने आये जिन में एक मनुष्य राजमन्त्री एस्केलस भी था।

पैंजीलो ने उत्तर दिया—

"राजनियम कोई विभीषिका तो है ही नहीं जिस से पक्षी गण डर तो जॉय परन्तु उससे उनको कुछ हानि न पहुँच सके। नियमों में परिवर्त्तन होना ठीक नहीं है। लोगों को बिल्कुल इनके अनुकूल आचरण करना चाहिए।"

एस्केलस—यह तो सत्य है। मैं नहीं कहता कि बिल्कुल छोड दीजिए। परन्तु प्राणदण्ड देना ठीक नहीं है। इस क्लौडियो का पिता एक सज्जन पुरुष था। उसी के लिए आप इसको क्षमा कर दीजिए। मनुष्य से भूल हो ही जाती है। केवल देशकाल का भेद है। आप से भी कभी न कभी ऐसी भूल हो ही गई होगी।

पैंजीलो—एस्केलस! देखो! किसी पाप कर्म्म की इच्छा करना और बात है और उस काम को कर डालना और बात! यह सम्भव है कि उस पञ्चायत में भी जो किसी चोर को दण्ड देने के लिए बैठी है एक दो चोर हों। परन्तु जो मनुष्य स्पष्टतया नियमों का उल्लङ्घन करता है, उसको पूरा दण्ड देना ही उचित है। देखो यदि कोई रत्न पडा हो और हमको ज्ञात न हो तो हम बिना देखे उसको पैरों से कुचलते हुए चले जाते हैं। पर यदि हमें मालूम हो जाय कि यह रत्न है तो अवश्य ही उसको उठाने के लिए खड़े हो जायँगे। "तुम से भी

ऐसी ही भूल हो गई। इसलिए इस मनुष्य को छोड़ दो।" यह कहना तुमको उचित नहीं है। हाँ यों कह सकते हो कि 'यदि तुम से यही भूल हो तो तुमको भी प्राणदण्ड भोगना पड़ेगा'। इसलिए एस्कैलस! मैं इसको क्षमा नहीं कर सकता। अब क्लौडियो का बचना असम्भव है।"

क्लौडियो का मित्र लूसियो उसे कारागृह में देखने आया तो क्लौडियो ने कहा—

"लूसियो! मित्र लूसियो! एक कृपा कीजिए। आप मेरी बहन इज़ाबिला के पास जाइए। वह आज सेंटक्लेयर के मन्दिर में महन्तिन होना चाहती है। उससे जा कर मेरा हाल कह दीजिए और यह भी जता दीजिए कि मुझे अवश्य प्राणदण्ड मिलेगा। इसलिए यदि वह इस नये शासक के पास जाकर विनती करे तो सम्भव है कि मेरी जान बच जाय। क्योंकि युवतियों के दुःख पर सभी लोग तरस खाते हैं। दूसरे यह कि मेरी बहन में वाक्पटुता इस प्रकार की है कि लोग उसके कहने को प्रायः टाल नहीं सकते।"

इज़ाबिला उसी दिन मठ में दाखिल हुई थी और अभी नियमानुसार महन्तिन नहीं बनी थी। लूसियो ने जब मठ का द्वार खटखटाया तो वहाँ की पुजारिन ने इज़ाबिला से कहा—

"यह किसी पुरुष की बोली मालूम होती है। इज़ाबिला! द्वार खोल दो और इस मनुष्य से पूछ लो कि क्या कहना चाहता है। तुम अभी महन्तिन नहीं हुई हो। इसलिए तुम पुरुषों से बातचीत कर सकती हो। मठ के नियमानुसार मैं ऐसा करने से वर्जित हूँ। पर बात करते समय घूँघट डाल लेना।"

लूसियो ने इज़ाबिला को देख कर कहा—

"कुमारी ! आप मुझे अभागे क्लौडियो की बहन इज़ाबिला से मिला सकती हो ?"

इज़ाबिला—क्यों ? क्लौडियो क्यों अभागा है ? मैं ही इज़ाबिला हूँ।

लूसियो—तुम्हारा भाई क़ैद में है। उसने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।

इज़ाबिला—क्यों ?

लूसियो ने कहा कि उस पर एक स्त्री को फुसलाने का दोष लगाया गया है। इज़ाबिला समझ गई कि यह बहन जूलियट होगी। जूलियट और इज़ाबिला बहनें नहीं थीं किन्तु वे एकही शाला में पढ़ी थीं इसलिए एक दूसरी को बहन कह के पुकारा करती थीं। इज़ाबिला को यह भी मालूम था कि जूलियट क्लौडियो से बहुत प्रेम किया करती थी उसने समझा कि यही दोष मेरे भाई पर लगाया गया है। जब लूसियो ने इज़ाबिला से कहा कि आप जाकर ऐंजेलो से अपने भाई की सिफारिश कीजिए तो वह कहने लगी—"हाय ! मुझमें क्या शक्ति है कि उसको कुछ लाभ पहुँचा सकूँ"

लूसियो—अपने भरसक यत्न करो।

इज़ाबिला—मुझे अपनी शक्ति पर विश्वास नहीं है।

लूसियो—अविश्वास ही विष है। अविश्वासी लोग बहुधा उन कर्म्मों के करने से भी रह जाते हैं जिनको वह भली प्रकार कर सकते थे। लार्ड ऐंजेलो की सेवा में जाओ क्योंकि कुमारियों के वचनों को लोग टाल नहीं सकते

जब कुमारियाँ रोती चिल्लाती हैं तो उनकी प्रार्थना स्वीकृत ही हो जाती है।

इज़ाबिला—अच्छा देखूँ मैं क्या कर सकती हूँ।

लूसियो—जल्दी करो।

इजाबिला—मैं अभी जाती हूँ। केवल माता जी (मठ की स्वामिनी) को सूचना दे दूँ। आपने मेरे ऊपर बड़ा अनुग्रह किया। अब जाइए और मेरे भाई को तसल्ली दे दीजिए। मैं इसी रात को अपने साफल्य का हाल भेजूँगी।

इजाबिला ने उसी समय राजमहल को प्रस्थान किया और थोड़ी देर पीछे, एक नोकर ने लार्ड पैंजोलो से इत्तला की—

"महाराज! जिस मनुष्य को फाँसी का दण्ड दिया गया है उसकी बहन आप से प्रार्थना करना चाहती है।"

पैंजोलो—क्या उसके कोई बहन भी है?

आदमी—हाँ! श्रीमहाराज! उसकी बहन बड़ी सुशीला है।

पैंजोलो—अच्छा बुला लाओ।

थोड़ी देर में लूसियो और इजाबिला दोनों राजमहल में दाखिल हुए और इजाबिला ने कहा—

"धर्मावतार! यह दीन अबला आप से कुछ निवेदन किया चाहती है। यदि अनुमति हो तो कहूँ?"

पैंजोलो—क्या कहना चाहती हो? कहो!

इजाबिला—व्यभिचार एक ऐसा पाप है जिससे मुझे अत्यन्त घृणा है और चाहती हूँ कि इसका अवश्य ही दण्ड दिया

जाय। परन्तु अपनी इच्छा के विरुद्ध मैं सिफारिश करने पर मजबूर हूँ।

एँजीलो—अच्छा! क्या है?

इजाबिला—मेरे भाई को फाँसी का हुक्म हुआ है। मेरी प्रार्थना है कि उसके दोष को दण्ड दिया जाय न कि उसको!

एँजीलो—क्या बिना पापी को सजा दिये पाप को सजा मिल सकती है? पाप तो होने से पहले ही निन्दनीय है। अगर पाप करने वाले को छोड दिया जाय तो मेरा फिर क्या काम?

इजाबिला—हाय! बडे कठोर नियम हैं। तो मेरे एक भाई था—ईश्वर आप को सत्य पर दृढ रक्खे!

यह कह कर इजाबिला चलने लगी परन्तु लूसियो ने फिर कहा—

"इजाबिला! अभी निराश मत हो! फिर रोओ! चिल्लाओ! इसके पीछे पड जाओ! तुम को तो कुछ भी प्रेम नहीं है?"

इजाबिला ने साहस करके कहा—

"क्या इसको फाँसी ही मिलेगी?"

एँजीलो—कुमारि! अब कुछ नहीं हो सकता।

इजाबिला—मैं तो यह समझती हूँ कि यदि आप क्षमा कर देंगे तो न ईश्वर आप से अप्रसन्न होगा और न आदमी!

एँजीलो—मैं क्षमा न करूँगा—

इजाबिला—लेकिन क्या आप चाहें तो क्षमा कर सकते हैं?

पैंजीलो—जिस बात को मैं चाहता नहीं उसको कर भी नहीं सकता।

इजाबिला—लेकिन अगर आप को भी ऐसा ही दर्द होता जैसा मुझ को है तो आप भी उसे क्षमा कर सकते थे। इस से देश का कुछ अहित न होता।

पैंजीलो—अब तो बहुत देर हो गई। हुक्म हो चुका।

इजाबिला—बहुत देर? नहीं नहीं! मैं जो शब्द कह रही हूँ वह लौट सकता है। आप को स्मरण रहे कि राज मुकुट या अन्य बाहिरी चिह्न राजा के लिए इतने आवश्यक नहीं है, जितनी दया! अगर आप ने उसका सा अपराध किया होता और आप भागते। और वह न्यायाधीश होता तो मैं समझती हूँ कि वह आप से ऐसा कठोरता का व्यवहार न करता।

पैंजीलो—चली जाओ।

इजाबिला—अगर ईश्वर मुझे पैंजीलो कर देता और आप इजाबिला होते तो क्या यह दशा होती? तब मैं आप को बता देती कि कैदी क्या होता है और न्यायाधीश क्या?

पैंजीलो—तुम्हारे भाई को सजा मिल चुकी। तुम व्यर्थ समय खोती हो!

इजाबिला—हाय! जितने जीवात्मा संसार में हैं वे सब दण्डनीय हैं। परन्तु परमात्मा दया करता है। क्या आप चाहते हैं कि ईश्वर आप के साथ ऐसा ही दयारहित न्याय करे जैसा आप औरों के साथ करते हैं। इस पर विचार कीजिए। तब आप दया का लाभ समझेंगे।

पॅंजोलो—युवति ! सन्तोष करो मैंने उसे दण्ड नहीं दिया किन्तु राजनियमों ने दिया है। अगर वह मेरा लड़का या भाई होता तो उसके साथ भी यही व्यवहार होता। कल सवेरे उसको फॉसी दी जायगी।

इजाविला—कल ? कल ? यह तो बहुत जल्दी है। देखो उसे क्षमा करो ! क्षमा करो ! वह अभी मरने के लिये तैय्यार नहीं है। भला इस अपराध में कितने मनुष्यों को फॉसी लगी है ? क्योंकि किया तो बहुतों ने है।

पॅंजीलो—यह नियम नियमावलि से निकला तो था ही नहीं केवल शिथिल हो गया था। इतने लोग कभी अपराध न करते अगर पहले आदमी को दण्ड दे दिया जाता। अब नियम फिर जाग उठा है और हर एक बात की खबर रखता है। उसे मालूम है कि अगर अपराधियों को दण्ड न दिया जायगा तो अपराध बढते जायँगे।

इजाविला—कुछ तो दया कीजिए !

पॅंजोलो—न्याय करना ही दया है। ऐसा करने में मैं उन अज्ञात लोगों पर दया करता हूँ जिनको अपराधी के छोड़ देने पर कष्ट होगा। मैं अपराधी पर भी दया करता हूँ। क्योंकि अब वह अपराध करके अपने आत्मा को खराब न करेगा ! सन्तोष करो ! तुम्हारे भाई को कल फॉसी लगेगी।

इजाविला—तो सब से पहले इस आज्ञा के देने वाले आप ही हैं और सब से पहला दण्ड पाने वाला भी यही है ! राक्षस के समान बलिष्ठ होना तो उत्तम बात है पर उस बल को राक्षस के समान व्यवहार में लाना ठीक

नहीं है। हे ईश्वर! तू अपनी विजली को वडे वडे वृक्षों पर गिराता है। छोटे मेंहदी के पौधों पर उसका असर नहीं होता लेकिन अभिमानी मनुष्य थोड़ा सा भी अधिकार पाकर अपने आप को भूल जाता है और एक वन्दर के समान ईश्वर की साक्षी में वह वह खेल खेलता है कि स्वर्ग के देवगण भी उस पर रुदन करते हैं।

एँजीलो—तुम मुझ से ये वातें क्यों कहती हो?

इजाविला—इसलिए कि अधिकारी पुरुष चाहे स्वयं पाप करें परन्तु दूसरों को दण्ड देने में वाल की खाल निकालते हैं। जरा अपने मन से पूछिए। अगर वह कहे कि इस प्रकार का अपराध जैसा कि मेरे भाई ने किया है स्वाभाविक हो तो आप मेरे भाई को दण्ड देने का विचार तक भी न कीजिए।

इजाविला के आखिरी शब्दों का एँजीलो के ऊपर सव से अधिक प्रभाव पडा। क्योंकि इजाविला के सौन्दर्य ने एँजीलो के मन में पाप के भाव उत्पन्न कर दिये थे। और वह क्लौडियो के अपराध के समान स्वय भी अपराध करने के विषय में सोच रहा था। इस सोच विचार में वह वहाँ से उठ खडा हुआ और इजाबिला के पास से चल दिया परन्तु इजाविला ने फिर पुकारा और कहा—

"महाराज! लौटिए! अभी सुनिए।"

एँजीलो—अच्छा मैं खयाल करूंगा। कल आओ।

इजाविला—दीनदयालु! लौटिए देखिए। मैं आपको भेंट दूँगी।

एँजीलो—(गुस्सा होकर) अरे क्या रिशवत् देगी?

इजाबिला—ऐसी भेंट जिसमें ईश्वर भी प्रसन्न हो! मैं रुपया पैसा नहीं दूँगी और न रत्न और मणि आदि दे सकती हूँ। मै आप को दुआयें दूँगी जिनसे ईश्वर भी प्रसन्न हो जाय।

ऐंजीलो—अच्छा! जाओ! कल आना।

इजाबिला—ईश्वर आप को धर्मपथ पर दृढ रक्खे।

इजाबिला तो चली गई परन्तु ऐंजीलो के मन में पाप की तरङ्गें उठने लगी। और वह अपने दुष्ट विचारों की ओर ध्यान करके कहने लगा—

"ओहो! यह क्या है? यह क्या है? क्या मेरा मन इस पर मोहित हो गया है जो मै इसे देखना चाहता हूँ? अरे! इस रमणी से बातचीत करने को मेरा क्यो जी चाहता है। क्या मै स्वप्न देख रहा हूँ। अरे क्या विषय-वासना मुझ पर आक्रमण करने लगी? किसी स्वैरिणी स्त्री ने अब तक मेरे धर्म को नही डिगाया परन्तु आज इस साध्वी ने मुझे आकर्षित कर लिया। क्या कामदेव साधुओं को जीतने के लिये साध्वी स्त्रियो द्वारा आक्रमण करता है"।

इस प्रकार रात भर ऐंजीलो अपने पापों का अनुभव करके पश्चाताप करता रहा और उसकी रात क्लौडियो से भी अधिक शोक मे कटी। कभी तो उसको यह इच्छा होती कि इजाबिला को सत्य मार्ग से हटा कर फुसला लो। कभी यह कहता कि देखो मै कितना दुष्ट हूँ, जो एक साध्वी रमणी को इस प्रकार बहकाना चाहता हूँ। सारांश यह है कि रात भर यही सोच विचार करते करते अन्त में ऐंजीलो अपने व्रत से डिग गया और उसने इरादा कर

लिया कि कल होते ही मैं इजाबिला को उसके भाई की जान बचाने की प्रतिज्ञा करके फुसला लूँगा ।

हम ऊपर कह चुके हैं कि वियना नरेश वास्तव में देशाटन करने नहीं गया था किन्तु एक साधु के भेष में अपने देश में फिरता था । वह उसी रात जिसका कि हम यहाँ वर्णन कर रहे हैं जेलखाने में गया और जेलर से कहा कहने लगा कि मैं अपराधी मनुष्यों को स्वर्ग का मार्ग दिखलाने के लिये यत्न करता फिरता हूँ । इसलिए तुम मुझे कैदियों के पास ले चलो जिससे मैं उनको प्रायश्चित्त करने की विधि सिखला सकूँ ।

जेलर राजा को क्लौडियो के पास ले गया और राजा उसे समझाने लगा । जब क्लौडियो ने अपने अपराध का सारा हाल कहा तो राजा ने पूछा—

"अच्छा ! क्या तुमको आशा है कि लार्ड ऐंजीलो क्षमा कर देगा ।"

क्लौडियो—अभागे मनुष्य को आशा के अतिरिक्त सहारा ही क्या है । मुझे जीने की आशा है । पर मैं मरने के लिए उद्यत हूँ ।

राजा—मृत्यु के लिए तैयार रहो । इससे मौत और जीवन दोनों ही अच्छे मालूम होंगे । जीवन के लिए इस प्रकार खयाल करो कि अगर जीवन जाता रहा तो एक ऐसी चीज जाती रही जिसके लिए प्रयत्न करना केवल मूर्खों का काम है । जिन्दगी एक साँस है । जिसे मौत आकर नष्ट कर देती है । हमारा जीवन क्षणिक है । इसके लिए क्या कोशिश करनी चाहिए ।

क्लौडियो—साधु जी ! आप ठीक कहते हैं । मैं अब मौत से नहीं डरता ।

क्लौडियो तो इस प्रकार धर्मोपदेश सुनता रहा । दूसरे दिन प्रातःकाल इजाविला ऐंजीलो के महल में गई । ऐंजीलो ने उसे अकेले में बुला लिया और कहा—

"तुम्हारा भाई नहीं बच सकता ।" इजाबिला इस उत्तर को सुनकर चलने लगी परन्तु ऐंजीलो ने कहा—

"लेकिन थोड़ी देर बच सकता है । शायद इतनी देर जितनी मैं या तुम रह सकती हो । पर उसे मरना पड़ेगा ।"

इजाविला—क्या आप के हुक्म से ?

ऐंजीलो—हाँ ।

इजाविला—कब ?

ऐंजीलो—नियमानुसार तो तुम्हारे भाई की जान जाती है । पर यदि तुम भी उसी काम के करने को राजी हो जिसके लिए तुम्हारा भाई फाँसा गया है तो उसकी जान बच सकती है ।

इजाविला—मैं अपने सतीत्व को भ्रष्ट न करूँगी ।

ऐंजीलो—मैं सतीत्व के विषय में नहीं कहता । जो पाप मजबूरी से किए जाते हैं वे क्षन्तव्य हैं ।

इजाबिला—आप ऐसी बातें कैसे कर रहे हैं ?

ऐंजीलो—मैं भी ऐसी बातों के विरुद्ध कह सकता हूँ पर देखो, तुम्हारे भाई की जान बचाने के लिये यह पाप करना क्या धर्म नहीं है ?

इजाबिला—अगर अपने भाई के प्राणों की रक्षा के लिए प्रार्थना करना पाप है तो ईश्वर मुझे दण्ड दे । यदि आप का

उसको क्षमा कर देना पाप है तो मैं इस पाप को दूर करने के लिए रात दिन दुआ करूँगी। और कुछ नहीं हो सकता।

एँजीलो—अरे सुनो! या तो तुम बेसमझ हो या मक्कारी से बेसमझ बनती हो। यह बात ठीक नहीं है। मैं साफ साफ कहता हूँ कि तुम्हारे भाई को फाँसी लगेगी।

इज़ाविला—अच्छा।

एँजीलो—उसने फाँसी के योग्य ही काम किया है।

इज़ाविला—सच है।

एँजीलो—हाँ तो उसके बचने का एक ही उपाय है अर्थात् तुम अपना सतीत्व खोओ।

इजाविला—मैं अपने भाई के लिए उतना ही कर सकती हूँ जितना अपने लिए। आज यदि मुझे प्राण दण्ड दिया जाता तो मैं कोड़ों की चोट को आभूषणों से अधिक उत्तम समझती परन्तु किसी अनुचित व्यवहार के लिए तैय्यार न होती।

एँजीलो—तो तुम्हारे भाई को अवश्य फाँसी लगेगी।

इजाविला—यह तो सच्ची बात है। एक भाई का एकबार मर जाना अच्छा है पर उसकी बहन का हमेशा के लिए मरना अच्छा नहीं।

एँजीलो—तो क्या तुम इतनी ही कठोर नहीं हो जितना वह नियम है जिसे तुम कल से बुरा कह रही हो।

इजाविला—दया से क्षमा कर देना और बात है और दुराचार करके छुड़ाना और बात।

एँजीलो—हम सब निर्बल आत्मा के हैं और विषयों का मुकाबिला नहीं कर सकते।

इजाबिला—इसीलिए तो मेरे भाई को क्षमा करना चाहिए।

एँजीलो—स्त्रियाँ भी ऐसी ही हैं।

इजाबिला—हाँ। ये तो दर्पण के समान हैं जो जल्दी से टूट जाता है। पुरुष अपने लाभ के लिए स्त्रियों को बिगाड़ते हैं।

एँजीलो—साफ बात यह है कि मुझे तुमसे प्रेम है।

इजाबिला—और मेरे भाई को जूलियट से प्रेम था परन्तु आप कहते है कि उसको फाँसी लगेगी।

एँजीलो—अगर तुम मुझ से प्रेम करो तो उसको फाँसी न लगेगी।

इजाबिला—दुष्ट एँजीलो! जल्दी से मेरे भाई को क्षमा कर दे। नहीं तो ससार में प्रसिद्ध कर दूँगी कि तू कैसा पुरुष है।

एँजीलो—तेरी कौन सुनेगा? सब मेरे पवित्र जीवन से अभिज्ञ हैं। इस समय मैं ऐसे पद पर नियत हूँ कि कोई तेरा कहना नहीं मान सकता। देख, या तो मेरी बात मान, नहीं तो तेरे भाई को फाँसी लगेगी और बड़ी बुरी तरह फाँसी लगेगी।

बिचारी इजाबिला वहाँ से चली आई और कहने लगी, "अब मैं किस से कहूँ। कौन मेरा विश्वास करेगा?" जब वह जेलखाने की ओर आई तब राजा साधु के भेस में उसके भाई को धर्मोपदेश कह रहा था। उसने जूलियट को भी बहुत समझाया था और वह लज्जा के मारे अपने अपराध पर पश्चात्ताप कर रही थी और कहती थी कि "क्लाडियो का इतना अपराध नहीं है जितना मेरा है।"

इजाबिला ने जेलखाने में जाकर कहा, "मैं क्लाडियो से कुछ कहना चाहती हूँ।"

जेलर—हाँ, आ जाओ!

क्लौडियो—बहन! क्या कुछ आशा है?

इजाबिला—बहुत आशा। लार्ड एँजोलो को स्वर्ग में कुछ काम है सो वह तुमको अपना दूत बनाना चाहता है। वहाँ तुम हमेशा रहोगे। इसलिए तैय्यारी कर लो। कल तुमको जाना होगा।

क्लौडियो—क्या कोई उपाय नहीं?

इजाबिला—बस ऐसा उपाय है जिससे शरीर तो बच जाय पर आत्मा की मृत्यु हो जाय!

क्लौडियो—कोई है भी?

इजाबिला—हाँ भाई! एँजोलो पिशाच है। वह तुमको मौत से बचा सकता है। पर आयुभर तुमको कैद रक्खेगा।

क्लौडियो—आयुभर?

इजाबिला—भाई! मुझे तुमसे भय होता है। सम्भव है कि तुम छ सात साल अधिक जीने को अपने धर्म से अधिक प्रिय समझो। मृत्यु का भय बड़ा भारी होता है परन्तु एक कीड़ा जो हमारे पैरों तले कुचल जाता है उसे इतना ही कष्ट होता है जितना हमको।

क्लौडियो—मुझसे क्यों डरती है। अगर मरना ही है तो मैं खुशी से मरूँगा।

इजाबिला—मेरे बाप का आत्मा अपने पुत्र के इस वीरतायुक्त उत्तर को सुनकर खुश होगा। तुम अब मरने के लिए तैय्यार रहो। यह शासक जो आज साधु बना फिरता है, एक पिशाच है।

क्लौडियो—कौन? लार्ड एँजोलो?

इजाबिला—हाँ वही पापिष्ठ! भाई, क्या तुम समझते हो

कि अगर में उसके साथ अपना सतीत्व नष्ट कर दूँ तो तुम बच जाओगे।

क्लौडियो—नहीं ऐसा नहीं हो सकता।

इजाबिला—हाँ, वह यही कहता है। आज की रात उसने सोचने को दी है। नहीं तो कल तुमको फाँसी लगेगी!

क्लौडियो—तुम ऐसा मत करो।

इज़ाबिला—अगर मेरे प्राण जाते होते तो मैं कुछ परवाह न करती और तुमको बचा लेती। कल मरने के लिए तैय्यार रहो।

क्लौडियो—मौत से डर लगता है।

इज़ाबिला—पापिष्ठ जीवन भी घृणा के योग्य है।

अब क्लौडियो का आत्मा मृत्यु के भय से आच्छादित हो गया क्योंकि पापी मनुष्यों को मौत बड़ी भयानक प्रतीत होती है। अब उसकी सब वीरता जाती रही। वह कहने लगा—"प्यारी बहन! मुझे जीने दो। जो पाप तुम करती हो वह भाई के प्राण बचाने के लिए है। इसलिए ईश्वर तुमको क्षमा करेगा!"

इजाबिला—हे पशु! हे कायर! हे निर्लज्ज! क्या तुम अपनी बहन का सतीत्व नष्ट करके जीवित रहना चाहते हो! तुमको धिक्कार है। मैं समझती थी कि मेरा भाई दस-बार भी खुशी से मर जाता और अपनी बहन का धर्म रखता!

यह कहकर इजाबिला वहाँ से चल दी और साधु ने क्लौडियो से कहा—"क्लौडियो! एंजीलो ऐसा नहीं है उसने तो केवल तुम्हारी बहन की परीक्षा करने के लिए ऐसा कहा था। तुम्हारे

बचने की कोई आशा नहीं है। इसलिए मृत्यु के लिए तैय्यार रहो।"

तब तो क्लौडियो की आँखें खुलीं। वह अपने कायरपन पर पछताने लगा और उसने कहा—"मैं अपनी बहन से क्षमा का प्रार्थी हूँगा। मुझे अब जीना अच्छा नहीं लगता।"

जब क्लौडियो जेल के भीतर चला गया तब साधु और इज़ाबिला अकेले रह गये। साधु ने कहा, "जिस हाथ ने तुमको रूप दिया है उसने तुम्हें सतीत्व भी दिया है।"

इज़ाबिला—हाय! राजा को एँजीलो पर कितना धोखा हुआ है। अगर वह देशाटन से लौट आवे और मुझे कहने का अवसर मिले तो मैं सब हाल कह दूँगी।

साधु—यह तो ठीक है। पर एँजीलो इसको नहीं मानेगा। इसलिए जो मैं कहूँ सो करो। मुझे आशा है कि अगर राजा लौट आया तो तुम से बहुत खुश होगा। अगर तुम एक अबला दीन स्त्री की सहायता करो, अपने भाई का जान बचालो और अपना भी सतीत्व रखलो।

इज़ाबिला—मैं सब कुछ कर सकती हूँ, अगर अधर्म न हो।

साधु—क्या तुमने मेरीना का नाम सुना है जो फ्रेडरिक नामी सिपाही की बहन है?

इज़ाबिला—हाँ सुना है। वह बड़ी साध्वी है।

साधु—यह एँजीलो की स्त्री है। इसका दहेज उसी जहाज में था जिसके डूब जाने से दूसरे भाई का मृत्यु हो गई। इस धन की अनुपस्थिति में दुष्ट एँजीलो ने अपनी स्त्री को भी छोड़ दिया और यह प्रसिद्ध कर दिया कि वह कुटिला है। वास्तव में यह सब रुपये के लिए ढोंग था। मेरीना अपने पति पर अब तक वैसा ही प्रेम

करती है। इसलिए आज तुम ऐंजीलो के पास जाकर आधी रात के समय आने की प्रतिज्ञा कर आओ और अपने भाई के लिए क्षमापत्र लिखवा लाओ। रात के समय अपने भेस में मैरीना को उसके पास भेज देना क्योंकि वह उसकी विवाहिता स्त्री है। उसका वहाँ जाना पाप नहीं है।

इज़ाबिला राज़ी हो गई और मैरीना से सब बातें निश्चय करली।

जब इज़ाबिला ऐंजीलो के पास से लौट कर मैरीना के घर आई तब साधु भी वहीं था। उसने कहा, "कहो क्या कर आई?"

इजाबिला ने सब हाल कह सुनाया और वह स्थान भी बतलाया जहाँ रात को मिलने की उसने प्रतिज्ञा की थी। उसने कहा "ऐंजीलो का एक बाग है जिसके चारों ओर दीवार है। पश्चिमी ओर अंगूर के खेत हैं जिनका एक दरवाज़ा है। पहले इस कुंजी से पहले फाटक को खोलना फिर दूसरी से एक छोटे से गुप्त दरवाजे को खोल सकती हो। ऐंजीलो ने दो बार मुझे रास्ता बता दिया और मेरे भाई के लिए क्षमापत्र लिखने का वायदा भी कर दिया है।"

साधु ने पूछा—"क्या और कोई बात नहीं है।"

इजाबिला—"नहीं! मैंने कह दिया है कि मैं थोड़ी देर को आऊँगी और साथ एक नौकर भी होगा जो मेरे साथ इसलिए आवेगा कि लोग जानें कि मैं अपने भाई की सिफारिश को आई हूँ।"

फिर इज़ाबिला ने मैरीना से कहा—"ऐंजीलो से मिलते

समय कुछ कहना मत। लेकिन मेरे भाई का ख़याल रखना।"

इज़ाबिला खुशी खुशी उस रात को मैरीना को उसी स्थान पर ले गई जिसे एँजीलो ने नियत कर दिया था। उसे अब विश्वास था कि मेरा भाई बच गया। परन्तु वियना नरेश को जो साधु के भेस में सब बातों का निरीक्षण कर रहा था क्लौडियो के बचने की आशा न थी। वह उसी रात को जेलखाने पहुँचा और वहाँ जाकर देखा कि एँजीलो ने उसको फाँसी देने के लिये एक सख्त हुक्म जेलर के पास भेज दिया है। उस कागज में यह भी लिखा था कि पाँच बजे सबेरे तक क्लौडियो का सिर काट कर मेरे पास भेज दो।

राजा ने जेलर से कहा कि तुम क्लौडियो को फाँसी मत दो और एँजीलो की शान्ति के लिए एक दूसरे आदमी का सिर भेज दो जो स्वयं ही मर गया है। जेलर साधु की इस बात को मानने के लिए तैय्यार नहीं था परन्तु राजा ने अपने हाथ की मुहर करके एक पत्र उसे दिया जो राजा की ओर से था। इससे जेलर ने समझा कि यह साधु राजा के पास से आया है। इस प्रकार क्लौडियो की मौत टल गई और जेलर ने दूसरे आदमी का सिर काट कर एँजीलो के पास भेज दिया!

उसी समय राजा ने एक अन्य मनुष्य के हाथ एँजीलो को अपनी ओर से एक पत्र लिखा कि कई कारणों से मैं अब देशाटन करने नहीं जा सकता और प्रातःकाल तक वियना में वापिस आजाऊँगा इसलिए तुम नगर के बाहर हमको मिलो और सब प्रजा में यह ढंढोरा कर दो कि जिस किसी को किसी बात की शिकायत करनी हो वह मुझसे करे और उसी समय फाटक के ऊपर अपने प्रार्थना पत्र पेश करे।

दूसरे दिन प्रातःकाल इजाबिला जेलखाने में आई और राजा ने जो साधु के भेस में वहाँ था कहा कि क्लौडियो मारा गया। जब इजाबिला अपने भाई की मृत्यु पर शोक करने लगी और ऐंजीलो को उसकी दुष्टता पर कोसने लगी तो साधु ने उसे ढारस बधाया और कहा कि कल राजा आनेवाला है उससे इस प्रकार प्रार्थना करना और अगर कोई बात तुम्हारे विरुद्ध भी हो तो भी मत डरना। इजाबिला को समझा कर साधु मैरीना के पास पहुँचा और उसे भी आवश्यक उपदेश कर दिया।

अब राजा ने साधु का भेस उतार दिया और राजवस्त्र पहन कर बड़े ठाठ से नगर के फाटक पर पहुँचा जहाँ बहुत से नागरिक गण ऐंजीलो सहित उसका स्वागत करने के लिए एकत्रित हुए थे। उसी स्थान पर इजाबिला और मैरीना भी अपनी अपनी प्रार्थना करने के लिए वहाँ आई हुई थी। राजा ने कहा, "मित्रो, मुझे आप से मिल कर बड़ी खुशी हुई है।"

ऐंजीलो और एस्केलस }—हम आपका स्वागत करते हैं।

राजा—मैं आपका बड़ा कृतज्ञ हूँ। मैंने सुना है कि आपने बड़े न्याय से राजप्रबन्ध किया है।

इजाबिला—महाराज! न्याय कीजिए। महाराज! न्याय कीजिए! एक दुखिया का दुःख दूर कीजिए। महाराज! मैं एक कुमारी थी। परन्तु मेरे साथ अन्याय किया गया है। श्रीमन् रक्षा कीजिए।

राजा—कहो! जल्दी कहो और संक्षेप से कहो! लार्ड ऐंजीलो तुम्हारे साथ न्याय करेगा। उससे अपना दुःख कहो!

इजाबिला—महाराज! आप तो एक पिशाच से न्याय की

आशा रखते हैं। आप ही सुनिए। क्योंकि जो कुछ मैं कहूँगी उसका अगर आपको विश्वास होगा तो न्याय करेंगे नहीं तो मुझको दण्ड देंगे।

पैंजीलो—महाराज! यह पागल हो गई है। इसके भाई को राजनियम के अनुसार फाँसी लगी थी।

इजाबिला—नियम के अनुसार!

पैंजीलो—और यह बड़ी आश्चर्यजनक और अविश्वसनीय बातें कहती है।

इजाबिला—आश्चर्यजनक! परन्तु सच्ची! क्या मेरा यह कहना आश्चर्यजनक नहीं है कि पैंजीलो झूठा है। पैंजीलो घातक है। पैंजीलो व्यभिचारी है। पैंजीलो मक्कार है। क्या यह आश्चर्यजनक नहीं है?

राजा—दशगुणा आश्चर्यजनक!

इजाबिला—यह सब इतना ही सत्य है जितना यह कहना कि यह पैंजीलो है। यह दशगुणा सत्य है। क्योंकि सत्य तो सत्य ही है।

राजा—इसे यहाँ से ले जाओ। यह पागल मालूम होती है।

इजाबिला—राजन्! मुझे निराश मत करो! मैं पागल नहीं हूँ। जो मैं कहती हूँ वह असम्भव नहीं है, आश्चर्यजनक है। यह बहुत सम्भव है कि एक मनुष्य वास्तव में पिशाच हो परन्तु देखने में साधु प्रतीत होता हो। भीतर भीतर व्यभिचार करे और बाहर से ब्रह्मचारी बने। भीतर भीतर पाप करे और बाहर न्यायाधीश बने। यही दशा पैंजीलो की है। यह बड़ा दुष्ट है।

राजा—यह मालूम तो पागल होती है परन्तु बातें समझ की करती है। मन ऐसे पागल नहीं देखे।

इजाबिला—महाराज ! न्याय कीजिए, और दूध का दूध और पानी का पानी कर दीजिए।

राजा—तुम क्या कहती हो?

इजाबिला—मैं क्लौडियो की बहन हूँ जिसे व्यभिचार के दोष में फाँसी मिली है। मैं लूसियो के साथ क्षमा मांगने के लिये ऐंजीला के पास भेजी गई थी।

लूसियो—जी हाँ ! मैं इसके साथ गया था।

इजाबिला—हाँ। यही लूसियो है।

राजा—तुमसे किसने पूछा?

लूसियो—मुझसे चुप नहीं रहा गया।

इजाबिला—मैं इस दुष्ट के पास गई।

राजा—यह पागलपन है।

इजाबिला—क्षमा कीजिए यही विशेषण उपयुक्त है।

राजा—सम्भल कर कहो।

इजाबिला—सारांश यह है कि ऐंजीलो ने मुझे फुसलाया और सतीत्व नष्ट करने पर मेरे भाई को छोड़ने का वायदा किया। बहुत सोच विचार के बाद अपने भाई के प्राण बचाने के लिए मैं अपने सन्मार्ग से डिग गई। परन्तु जब इस दुष्ट का काम निकल गया तब इसने मेरे भाई को फाँसी दिला दी।

राजा—सम्भव है।

इजाबिला—सम्भव ही नहीं किन्तु सत्य है।

राजा—लड़की तू नहीं समझती कि तू क्या कह रही है? प्रथम तो ऐंजीलो अपनी साधुता के लिए प्रसिद्ध है। दूसरे यह कि अगर उससे यह अपराध हो भी गया तो

वह अवश्य तेरे भाई को क्षमा कर देता। मालूम होता है कि किसी ने तुझे बहका दिया है।

इजाबिला—हाय! क्या यही होना था। हे ईश्वर मेरी रक्षा करो।

राजा—कोई आदमी इसे जेल को ले जावे। हम नहीं चाहते कि हमारे प्रतिष्ठित पुरुषों पर दोष लगाये जायें। क्या कोई इसका साक्षी है?

इजाबिला—*लोडोविक नामी साधु!

राजा—लोडोविक नामी साधु को कोई जानता भी है?

लूसियो—मैं जानता हूँ। वह एक झगड़ालू साधु था अगर वह साधु न होता तो मैं उसे खूब मारता। क्योंकि मुझे इसकी बातें पसन्द नहीं थीं। वह आपके भी विरुद्ध कहता था।

राजा—मेरे विरुद्ध! उसी ने इस स्त्री को बहकाया होगा! कोई जाकर उस साधु को बुला लाओ।

लूसियो—रात मैंने इजाबिला और साधु को जेल के पास देखा था।

इस समय लोग इजाबिला को पकड़ कर जेलखाने ले गये। और मैरीना ने बढ़कर अपनी शिकायत शुरू की।

"महाराज! बिना अपने पति की अनुमति के मैं अपना मुँह भी नहीं दिखला सकती।"

राजा—क्या तुम विवाहिता हो!

मैरीना—नहीं।

राजा—क्या कुमारी हो?

---

*राजा ने अपना यह नाम रख लिया था जब वह साधु के भेस में था।

मैरीना—नहीं।

राजा—क्या विधवा हो!

मैरीना—नही!

राजा—क्या कुछ नहीं! न कुमारी न सधवा, न विधवा!

मैरीना—महाराज! मेरा विवाह नहीं हुआ। पर मैं कुमारी भी नहीं हूँ क्योंकि मैंने अपने पति का मुख देखा है। परन्तु मेरा पति नहीं जानता कि उसने मेरा मुँह देखा है

राजा—अच्छा!

मैरीना—महाराज! जो स्त्री पैंजीलो पर व्यभिचार का दोष लगाती है वह मेरे पति पर दोष लगाती है। यह दोष मिथ्या है क्योंकि जो समय बताया जाता है उस समय मेरा पति मेरे पास था?

पैंजीलो—क्या इजाबिला ने मेरे अतिरिक्त किसी और पर भी दोष लगाया है?

मैरीना—मुझे नहीं मालूम।

राजा—नहीं, तुम अपने पति को भी तो बताती हो!

मैरीना—यह मेरा पति पैंजीलो है। यह नहीं जानता कि इसने मेरे शरीर को स्पर्श किया। यह समझता है कि इसने इजाबिला का अङ्ग स्पर्श किया।

पैंजीलो—यह तो बड़ा आश्चर्यजनक दोष है। देखूँ तेरा मुँह!

मैरीना—अपने पति की अनुमति से मैं अपना घूँघट उघाड़ती हूँ। (मुँह उघाड़ कर)। यही मुँह है जिसको देखकर कठोर पैंजीलो एक दिन खुश होता था। यही हाथ है जिसको पकड़ कर इसने एक दिन प्रेम करने की प्रतिज्ञा

की थी। यही शरीर है जो इजाबिला के धोखे से आधी रात के समय इसके बाग़ में गया था।

राजा—क्या तुम इस स्त्री को जानते हो?

एँजीलो—राजन्! मुझे याद पड़ता है कि मैं इसे जानता हूँ। पाँच वर्ष हुए कि इसके और मेरे बीच में कुछ विवाह की बातचीत हुई थी। परन्तु यह विवाह हो नहीं सका। कुछ तो इस वजह से कि इसका जहेज नियत धन से कम था। परन्तु विशेष कर इस कारण कि इसके आचार व्यवहार में लोग शङ्का करने लगे। पर पाँच वर्ष से मैंने न तो कभी इसे देखा, न बातचीत की और न कभी पत्रव्यवहार ही किया।

मैरीना—महाराज! जिस प्रकार कि आकाश से प्रकाश होता है और मुँह से शब्द निकलते हैं उसी प्रकार यह मनुष्य मेरा पति है। और मंगल की रात को मैं इसके पास बाग़ में गई थी।

एँजीलो—महाराज! अब तक तो मैं हँसता था। परन्तु अब आज्ञा चाहता हूँ कि न्याय के अनुसार इनको दण्ड दिया जाय। मुझे प्रतीत होता है कि साधारण स्त्रियों द्वारा किसी बड़े मनुष्य ने मुझे मिथ्या दोष लगाने की ठान ली है।

राजा—हाँ हाँ, जितना चाहिए उतना दण्ड दीजिए। आपको अधिकार है। ऐस्केलस, आप भी एँजीलो को सहायता दीजिए मैंने उस साधु को भी बुलाया है। जिसने इनको भड़का दिया है। आप मुकद्दमा कीजिए। मैं थोड़ी देर के लिए जाता हूँ।

राजा वहाँ से यह कहकर चला गया और एँजीलो को

बड़ी ख़ुशी हुई कि अपने मुकद्दमे में आप ही न्यायाधीश बना था परन्तु राजा थोड़ी देर में साधु का भेस धारण करके आ गया। एस्केलस ने जिसका खयाल यह था कि ऐंजीलो पर झूँठा दोष लगाया गया है साधु से कहा—"क्या आपने इन स्त्रियों को भड़का दिया है? साधु ने उत्तर दिया, "राजा कहाँ है हम उसी को उत्तर दे सकते हैं।"

एस्केलस—इस समय हमी राजा हैं ठीक ठीक कहो। हमी सुनेंगे।

साधु—हे अनाथो! क्या तुम लोमड़ियों से यह आशा रखते हो कि मैमने को बचा देंगी। राजा चला गया तो न्याय भी चला गया! राजा बड़ा अन्यायी है कि अपनी प्रजा को ऐसे लोगों के हाथ में छोड़ जाता है। जिस पर दोष लगाया जाय उसी को न्यायाधीश कर देना अन्याय नहीं तो क्या है।

ऐस्केलस—अरे क्या पागल हुआ है जो ऐसे श्रेष्ठ पुरुष पर दोष लगाता है और फिर राजा को अन्यायी बतलाता है। इसे यहाँ से पकड़ ले जाओ। बच्चा! ख़ूब सज़ा पावेंगे!

साधु—गर्म न हूजिए। राजा मेरी अँगुली भी नहीं दुखा सकता। मैं उसकी प्रजा नहीं हूँ। मैं एक काम से यहाँ आया था। उस समय मैंने वियना के राज-प्रबन्ध की गड़बड़ ख़ूब देखी है।

एस्केलस—इसे जेल को ले जाओ। यह राजा को दोष लगाता है।

जेलर ने साधु को पकड़ना चाहा परन्तु राजा ने झट साधु के कपड़े उतार डाले और राजा बन गया। राजा को देखते ही सब के छक्के छूट गये। राजा ने पहले इज़ाबिला से कहा,

"वह साधु तुम्हारा राजा ही था। यद्यपि उसने अपना भेस बदल दिया परन्तु उसका मन वैसा ही है। कहो तुम्हारी क्या सेवा की जाय?"

इजाबिला—क्षमा कीजिए। क्षमा कीजिए। मैंने आपको बहुत कष्ट दिया।

राजा—मैं आपसे क्षमा माँगता हूँ कि मैंने जानते हुए आपके भाई को नहीं बचाया।

अब तो एँजीलो समझ गया कि राजा ने गुप्त रीति से सब बात जान ली है और उसने कहा—

"महाराज! मेरा सब से बड़ा अपराध यह है कि मैं समझता था कि मुझे कोई नहीं देखता। मैं नहीं जानता था कि ईश्वर की तरह आप भी सर्वज्ञ हैं। इसलिए महाराज! मैं बड़ा लज्जित हूँ। मुझे यथार्थ दण्ड दीजिए। और वह दण्ड यही हो सकता है कि आप मुझे इस घृणित और पापिष्ठ शरीर से मुक्त कीजिए।

राजा ने उत्तर दिया—"एँजीलो! तुम्हारा दोष तो स्पष्ट ही है। इसलिए तुमको उसी स्थान पर सूली दी जायगी। जहाँ क्लौडियो मारा गया था! (मेरीना से) मेरीना, इसकी सम्पत्ति तुमको दी जाती है कि विधवा होकर तुम इससे उत्तम पति को ग्रहण करो।"

मेरीना ने कहा—"महाराज! मैं इसी पति को चाहती हूँ, इससे उत्तम पति मुझे नहीं चाहिए"। फिर उसने हाथ जोड़ और पैरों पकड़ कर राजा की उसी प्रकार विनती की जैसे इजाबिला ने अपने भाई के बचाने के लिए एँजीलो से की थी। फिर उसने इजाबिला से कहा—

"प्यारी इजाबिला, मेरे पति की रक्षा के लिए आप भी कोशिश कीजिए। मैं आपका जन्मभर उपकार मानूँगी।"

राजा—तुम व्यर्थ उससे प्रार्थना करती हो। अगर वह प्रार्थना करने लगे तो उसके भाई का आत्मा भी कबर से निकल कर आ जायगा और उसको ले जायगा।

मैरीना—इजाबिला! प्यारी इजाबिला! मेरे साथ हाथ जोडो—कुछ कहो—चुपचाप हाथ जोडे खडी रहो। मैं सब कुछ कहलूँगी। लोग कहा करते हैं कि अपराधी मनुष्य भी पीछे अच्छे हो जाते हैं शायद मेरा पति भी ऐसाही हो जाय। इजाबिला! क्या तुम इसकी रक्षा के लिए प्रार्थना न करोगी।

राजा—नहीं! इसको तो क्लौडियस के बदले में फाँसी लगेगी! क्लौडियस के बदले में ऐंजीलो! मौत के बदले मौत! जैसे को तैसा!

इजाबिला—(पैरों पडकर) अन्नदाता! इस अपराधी पर दया कीजिए। मैं समझती हूँ कि इसने केवल न्याय के लिए ही मेरे भाई को प्राण दण्ड दिया। जब तक इसने मुझे नहीं देखा, इसके अन्तःकरण में कोई बुरा भाव नहीं उठा था। श्रीमन् कृपा कीजिए। मैं समझूँगी कि यह मेरा भाई ही है। मेरे भाई के साथ न्याय किया गया क्योंकि उसने अपने अपराध की ही सज़ा पाई। ऐंजीलो अपने पाप करने में सफल न हो सका। इसलिए जो हुआ सो हुआ। अब जाने दीजिए।

राजा—सब परिश्रम व्यर्थ है। मैं एक बात भी नहीं मानने का। ऐंजीलो ने एक और अपराध किया है। यह क्या कारण

है कि ऐसे असाधारण समय पर क्लौडियस को फाँसी लगाई गई ?

जेलर—मुझे तो हुक्म मिला था।

राजा—क्या वारण्ट था ?

जेलर—नहीं एक गुप्त चिट्ठी थी।

राजा—अच्छा हम तुमको पदच्युत (बरख़ास्त) करते हैं। जेल की कुञ्जियाँ दे दो।

जेलर—क्षमा कीजिए। मैंने जाना नहीं था। पर अब पछताता हूँ। मैंने एक अन्य मनुष्य की जान बचा ली है जिसको मारने की भी गुप्त आज्ञा थी।

राजा—वह कौन है ?

जेलर—बरनरडीयन।

राजा—अच्छा लाओ !

एस्केलस—एँजीलो ! मुझे आश्चर्य है कि आप जैसे बुद्धिमान और धर्मात्मा पुरुष ने ऐसी मूर्खता और अन्याय से काम लिया।

एँजीलो—मुझे अपने किये पर बड़ा पश्चाताप है। मैं ऐसा शोकातुर हो रहा हूँ कि क्षमा की अपेक्षा प्राणदण्ड मुझे भला मालूम होता है। मैं इसी के योग्य हूँ।

जिस समय जेलर क़ैदी को पकड़ कर लाया उस समय सब ने मालूम किया कि यह बरनार्डीयन नहीं किन्तु इज़ाबिला का भाई क्लौडियो है। यह देखकर सब को बड़ी ख़ुशी हुई और राजा ने इज़ाबिला से कहा—

"प्यारी इज़ाबिला ! तुम्हारे लिए मैं तुम्हारे भाई को क्षमा करता हूँ। यदि तुम कृपापूर्वक इस हाथ को स्वीकार करो तो मेरी समस्त सम्पत्ति तुम्हारी हो जाय।" एँजीलो ने राजा

की आँखें देखकर समझ लिया कि अब मेरे प्राण बच गये। राजा ने उससे कहा—

'देखो, मैं तुमको क्षमा करता हूँ। पर अब सदा अपनी प्यारी स्त्री से प्रेम रखना। मुझे मालूम है कि यह एक सती स्त्री है।"

क्लौडियो का विवाह भी जूलियट के साथ हो गया। और कई बार प्रार्थना करने पर इज़ाबिला ने राजा की रानी होना भी स्वीकार कर लिया क्योंकि वह अभी महन्तिन नहीं बनी थी। इज़ाबिला के धार्मिक जीवन ने नगर के लोगों पर ऐसा प्रभाव डाला कि फिर कभी क्लौडियो की भाँति किसी ने अपराध नहीं किया और नगर में बिना दण्ड के ही शान्ति और धर्म का राज हो गया। एँजीलो को अब मालूम हुआ कि थोड़ा सा अधिकार पाकर उसका हृदय कितना कठोर हो गया था और यह कि दण्ड की अपेक्षा क्षमा करने में कितनी शक्ति है।

चतुर्थ हनरी

प्रथम भाग

(HENRY IV. PART I)

चतुर्थ हनरी सन् १३६६ में इङ्गलैण्ड की गद्दी पर बैठा परन्तु अभी राज के दो और अधिकारी जीवित थे जिनके पक्ष में इधर उधर बहुत से लोगो ने विद्रोह मचाया। हम "द्वितीय रिचार्ड" में बता चुके हैं कि किस प्रकार उनमें से एक अर्थात् द्वितीय रिचार्ड हनरी की इच्छानुसार मार डाला गया और जिस समय तक लोगों ने उसके मृतक शरीर को देख नहीं लिया, वे लडाई झगडा मचाते ही रहे। बहुतों को तो उसके शव को देख कर भी विश्वास नहीं हुआ कि रिचार्ड मर गया है।

दूसरा राज्याधिकारी और इसलिए हनरी का शत्रु मार्टीमर था जो जौन आफ गाएट के बडे भाई लायनल आफ क्लैरेंस के वश से था। मार्टीमर के जीवन में हनरी को राज्य का कुछ भी अधिकार नहीं था। क्योंकि हनरी का पिता गाएट, मार्टीमर के पितामह लायनल से छोटा था। परन्तु पार्लियामेएट रिचार्ड के जीवन से यह शिक्षा ग्रहण कर चुकी थी कि जहाँ तक हो सके एक बालक को राजा बनाना ठीक नहीं है क्योंकि बालक के राज-समय में बहुत से लोग प्रबन्ध करने के बहाने अत्याचार करने लगते है। इसलिए मार्टीमर के बालक होने के कारण हनरी को ही गद्दी मिली। और मिलती क्यों न, हनरी

का तो ज़ोर ही था। लोकोक्ति है कि "जिसकी लाठी उसकी भैंस।"

राज्य मिलने पर भी शत्रुओं के जीते जी हनरी को शान्ति मिलना दुर्लभ था। इसलिए उसने मार्टीमर को वेल्स के एक वीर ग्लैण्डोवर के विरुद्ध भेजा। वहाँ वह हार गया और क़ैद हो गया। हनरी ने निस्तार-मूल्य (Ransom) देकर उसको छुडाना स्वीकार न किया।

दैवगति से मार्टीमर के सम्बन्धी बडे वीर पुरुष थे। इसकी शादी ग्लैण्डोवर की पुत्री से हो गई और उसकी बहिन का विवाह नार्थम्बरलैण्ड के पुत्र पर्सी हौटस्पर * के साथ हुआ था।

नार्थम्बरलैण्ड का हाल तो आप रिचार्ड के इतिहास में पढ ही चुके हैं। यह नार्थम्बरलैण्ड ही था जिसने मुख्य कर हनरी को गद्दी दिलवाई और जिससे चलते समय रिचार्ड ने कह दिया था कि एक दिन हनरी तुमको भी शत्रु से अधिक न मानेगा। ऐसा ही हुआ, क्योंकि रिचार्ड की हत्या और मार्टीमर की क़ैद से यह लोग हनरी के विरुद्ध हो गये।

एक कारण इस विरोध का यह भी हुआ कि नार्थम्बरलैण्ड का देश स्काटलैण्ड और इङ्गलैण्ड की सीमा पर है। इसलिए अधिकतर नार्थम्बरलैण्ड के रईस ही इङ्गलैण्ड को स्काट लोगों के आक्रमण से बचाया करते थे, हनरी के राजा बनने के थोडे ही दिन पीछे स्काटलैण्ड के एक रईस

---

* अँगरेजी भाषा में 'स्पर' घोडे को एड़ को कहते हैं और 'हौट' का अर्थ 'गर्म' है। पर्सी को हौटस्पर इसलिए कहते थे कि वह युद्ध कार्य्य में बडा तीव्र था।

डौगलस ने इङ्गलैण्ड पर चढ़ाई की परन्तु पर्सी हौटस्पर ने उसे हरा कर बहुत से प्रतिष्ठित पुरुषों को कैद कर लिया। चतुर्थ हनरी की इच्छा यह थी कि इन सब कैदियों को लण्डन में भेज दिया जाय। पर्सी हौटस्पर चाहता था कि इन कैदियों के निस्तार मूल्य से स्वयं लाभ उठाकर इनको छोड़ देवे।

एक दिन इस लड़ाई से पहले हनरी ने विचारा कि अब अपने देश के लोगों का आपस में रक्त बहाना उचित नहीं है। इसलिए चलकर पवित्र*भूमि को नास्तिकों से मुक्त कराने का यत्न करना चाहिए। ऐसा करने से उसका एक प्रयोजन और भी था। वह समझता था कि अगर देशवासियों का ध्यान विदेशी युद्धों की ओर बट जायगा तो वह अपने देश में विद्रोह मचाकर उसे गद्दी से उतारने का यत्न न करेंगे। उसी समय हनरी ने पर्सी हौटस्पर के विजय के समाचार सुने। चतुर्थ हनरी का बड़ा लड़का राजकुमार हनरी इस समय खेल कूद और नाच रंग में अपना समय व्यतीत करता था। राजकार्य्य में उसे कुछ भी रुचि नहीं थी। कुटिल आदमियों को साथ लेकर वह रात दिन शराब पिया करता था। चलते हुए पथिकों को लूट कर उनका धन छीन लेता था। राजदरबार में आये बिना उसे महीनों गुजर जाते थे और जिस प्रकार के कामों में राजकुमार हिस्सा लिया करते हैं उनसे उसे घृणा थी। इस अनुचित व्यवहार पर उसका पिता चतुर्थ हनरी बहुत कुढ़ा करता

---

*पवित्र भूमि (पैलिस्टायन) जिसमें ईसा की कबर है मुसलमानों के हाथ में है। यह लोग ईसाई यात्रियों को कष्ट दिया करते थे। इसलिए यूरोप के राजों ने बहुत दिनों तक इसको लेने के लिए युद्ध किया परन्तु ये कृतकार्य्य नहीं हुए। ऐसे युद्धों को क्रूसेड कहते हैं।

था। भला कौन सा बाप है जो अपनी कुपुत सन्तान को देखकर दुखित नहीं होता और ऐसा कौन सा पिता है जो अपने लड़कों के पराक्रमों पर फूला नहीं समाता।

जब हनरी ने हॉटस्पर की विजय का हाल सुना वह अपनी तुलना हॉटस्पर के पिता नार्थम्बरलैण्ड से करने लगा और वेस्टमोरलैण्ड से जो इस खबर को लाया था कहने लगा।'

"आपके इस कथन से मुझे रंज होता है। हॉटस्पर के पराक्रमों को देखकर मेरे मन में डाह हो रहा है कि लार्ड नार्थम्बरलैण्ड की सन्तान ऐसी पराक्रमी है जिसका यश चारों ओर फैल रहा है। मेरे हनरी का समय अत्याचार और अनुचित व्यवहारों में ही कटता है। चारों ओर उसका अपयश हो रहा है। आज अगर यह सिद्ध हो जाय कि जन्म के समय किसी देवी देवता ने चुरा कर हनरी को पर्सी की जगह और पर्सी को हनरी की जगह रख दिया तो मुझे बड़ी खुशी हो और मैं हनरी को नार्थम्बरलैण्ड को देकर उसके बदले अपना पर्सी ले लूँ।'

परन्तु जब हनरी ने सुना कि पर्सी को अपनी विजय पर बड़ा घमण्ड है और वह अपने कैदियों को राजदर्बार में भेजना नहीं चाहता तो उसकी प्रशंसा क्रोध में बदल गई और उसने पवित्र-भूमि के आक्रमण का ध्यान छोड़कर नार्थम्बरलैण्ड और पर्सी को उत्तर देने के लिए लन्दन में बुलाया।

हनरी के आज्ञानुसार नार्थम्बरलैण्ड, उसका बेटा हॉटस्पर और उसका भाई वोर्सेस्टर राजदरबार में उपस्थित हुए और राजा ने उन्हें देख कर कहा।

"अब तक मैं शान्ति का व्यवहार करता था परन्तु मृदुता से काम नहीं चलता। अब मैं कठोर बनना सीखूँगा। तुम लोग मेरे

नम्रभाव से लाभ उठाते हो। परन्तु ध्यान रक्खो [illegible]
अपनी शक्ति प्रकाशित करूँगा । अब तक मैं [illegible]
स्निग्ध और रुई के समान कोमल था। इसीलिए [illegible]
अपना सिर उठाने लगे।"

वोर्सेस्टर—श्रीमहाराज ! हमारे वंश ने तो कोई [illegible]
अपराध नहीं किया कि आपकी शक्ति इस प्रकार [illegible]
जाय ! और विशेष कर यह शक्ति जिसने हमारे ही [illegible]
सहायता से यह उन्नति पाई है।

नार्थम्बर०—श्रीमहाराज ।

राजा—वोर्सेस्टर, यहाँ से निकल जा! हम ऐसे [illegible]
मनुष्य की उजड्डता का सहन नहीं कर सकते।

वोर्सेस्टर तो दरबार से निकल गया। अब नार्थम्बरलैण्ड [illegible]
कहा—

"महाराज ! होमडन की लड़ाई में पकड़े हुए [illegible]
से पर्सी ने इस प्रकार निषेध नहीं किया जिस प्रकार आप [illegible]
कहा गया है। इसमें मेरे पुत्र का दोष नहीं है [illegible]
या ईर्ष्या से आप से बातें बना दी है।"

हॉटस्पर—"राजन् ! मैंने कैदी देने में निषेध नहीं किया।
हाँ, मुझे इतनी याद है कि जब लड़ाई हो चुकी और [illegible]
और मेहनत के मारे मेरा गला सूख रहा था, मैं अपनी
तलवार के सहारे झुका हुआ खड़ा था। इतने में एक
लार्ड आया जो बना ठना दूल्हा मालूम होता था। वह
हँस हँस कर बातें करने लगा। और जो आदमी लाशें ले
को लिये जा रहे थे उनको बुरा भला कहने लगा। [illegible] उस
समय उसने यह भी कहा [illegible]
है। मेरे घाव सूखते जाते थे [illegible]

बड़ी

रही थी। इसलिए क्रोध में मैंने जाने क्या कह दिया। याद नहीं है। परन्तु मुझे युद्ध के समय चिकनी चुपड़ी बातें सुनकर बहुत क्रोध आ गया। इससे आपको यह नहीं समझना चाहिये कि हमारी राजभक्ति में कुछ न्यूनता हो गई है।

राजा—अरे यह तो अब भी कैदियों के देने से इनकार करता है। और कहता है कि मार्टीमर*को हम निस्तार-मूल्य देकर वेल्स से छुड़ा लें। यह वही मार्टीमर है जिसने हमें धोखा दिया और ग्लैण्डोवर की कन्या से विवाह कर लिया। क्या हमारा रुपया ऐसे दुष्टों को छुड़ाने के लिए है? अच्छा है कि वह वहीं वेल्स की पहाड़ियों पर सड़ सड़ कर मर जाय। जो मार्टीमर के लिए एक पैसा भी मुझसे माँगेगा वह मेरा शत्रु है।

हॉटस्पर—महाराज! मार्टीमर ने आपको धोखा नहीं दिया। युद्ध का परिणाम कौन जानता है? वह अकस्मात् हार गया। उसके बहुत से घाव लगे। क्या यह धोखा है?

राजा—पर्सी! तू झूठ बोलता है। उसने ग्लैण्डोवर से कभी युद्ध नहीं किया! अब देख! तू जलदी से सब कैदियों को भेज दे। नहीं तो हम वह बात करेंगे जिससे तुम सब नाराज़ हो जाओगे।

ये लोग नाराज तो इसी समय हो गये थे। इसलिए शीघ्र ही एक बहुत भयानक राज-द्रोह करने की ठान ली।

---

*मार्टीमर को हनरी ने ग्लैण्डोवर के विरुद्ध भेजा था। वहाँ यह हार गया और वेल्स में क़ैद हो गया! इसी कैद में उसका विवाह ग्लैण्डोवर की पुत्री से हो गया और ये दोनों परस्पर मिल गये!

उपर्युक्त भेंट के पश्चात् जब पर्सी, वोर्सेस्टर, और नार्थम्बरलैण्ड आपस में मिले तो हौटस्पर क्रुद्ध होकर कहने लगा।

"क्या मैं कैदी दे सकता हूँ। कदापि नहीं! मार्टीमर की सिफारिश। अगर राजा को मार्टीमर का नाम ऐसा बुरा लगता है तो देखो किस प्रकार मैं उसके कान में "मार्टीमर!" "मार्टीमर!" पुकारूँगा। मैं तो एक तोते को "मार्टीमर" कहना सिखाऊँगा और उसे राजा की भेंट करूँगा। चाहे प्राण रहें या जायँ। मार्टीमर को बचाना अत्यावश्यक है, इस कृतघ्न *बोलिङ्ग्ब्रोक को अवश्य दण्ड दिया जायगा! यह वही हनरी बोलिङ्ग-ब्रोक है जिसको राज देने के लिए हमने इतनी बदनामी सही। विचारा निर्दोष रिचार्ड इसी दुष्ट के लिए मारा गया। कोई हमको हत्यारा कहता है। कोई अन्य अपशब्दों से याद करता है। मैंने तो इस बोलिङ्ग-ब्रोक को बर्कले दुर्ग में देखा था तब वह कैसी खुशामदें करता था। "प्यारे पर्सी"! "भाई पर्सी," यही शब्द थे। हाय! आज यह दुष्ट उन सब बातों को भूल गया।

वोर्सेस्टर—मैं एक अच्छी सलाह बताता हूँ।

हौटस्पर—कहिए।

वोर्सेस्टर—इन कैदियों को डौग्लस के सुपुर्द कर दो और डौग्लस से सन्धि करलो। फिर यह भी हमारा साथ देगा।

हौटस्पर—ठीक ठीक! खूब बताई। अब ऐसा ही होगा। यार्क का बिशप भी हमारा अवश्य साथ देगा। जब से उसके भाई स्क्रूप को बोलिङ्ग्ब्रोक ने मरवाया है वह बदला लेने के लिए ही सोच रहा है। मार्टीमर, ग्लेण्डोवर,

*बोलिङ्ग-ब्रोक चतुर्थ हनरी का नाम था।

डौग्लस और हम सब मिल कर ऐसा युद्ध करें, ऐसा युद्ध करे, कि हनरी को भी मालूम हो जाय !

वोर्सेस्टर—हमको ऐसा ही करना चाहिए।

हौटस्पर—उपाय तो बहुत ही अच्छा है।

वोर्सेस्टर—हाँ ! अगर हमको अपने सिर बचाने हैं तो विना सिर उठाये नहीं बचा सकते। चाहे हम कितना ही दबना चाहें। राजा हमेशा यही समझता रहेगा कि वह हमारा ऋणी है। और हम उससे असन्तुष्ट हैं ! इस ऋण को चुकाने का वह अवसर ढूँढ रहा है और जब उसे समय मिल गया हम सब को स्वर्ग पहुँचा देगा।

हौटस्पर—अवश्य पहुँचावेगा। हम जरूर बदला लेंगे।

यह कहकर वे सब एक दूसरे से अलग हुए और थोड़े दिनों तक लड़ाई की तैयारी करते रहे। जब सब कुछ निश्चय हो चुका तब एक दिन वेङ्गर में यह सब साथी मिले और आपस में बाँट होने लगा। हौटस्पर, वोर्सेस्टर, मार्टीमर और ग्लैएडोवर ये चारों आदमी बातचीत करने लगे।

मार्टीमर—सब ने दृढ़ प्रतिज्ञा की है। साथी विश्वासपात्र हैं और हमको अपने काम में सफलता की आशा है।

हौटस्पर—लार्ड मार्टीमर, लार्ड ग्लैएडोवर ! आप लोग बैठ जाइए। चचा वोर्सेस्टर ! मैं नकशा (देश का) तो भूल ही आया। बाँट कैसे करेंगे।

ग्लैएडोवर—प्यारे पर्सी बैठ जाओ। नकशा मेरे पास मौजूद है। प्यारे हौटस्पर, बैठ जाओ। क्योंकि तुम्हारे इस नाम को जब जब हनरी सुनता है उसका मुँह पीला पड़ जाता है और आह भर कर वह यही चाहता है कि आप स्वर्ग में होते।

हौटस्पर—और जब जब वह ग्लैण्डोवर का नाम सुनता है आप को नरक में चाहता है।

ग्लैण्डोवर—यह उसका दोष नहीं है। मेरे जन्म के समय आकाश रुधिरवत् लाल हो गया था और पृथ्वी कायर पुरुष के समान काँपने लगी थी।

हौटस्पर—वाह वाह! उस समय यदि आपकी मा की बिल्ली भी बच्चा देती तो भी आकाश और पृथ्वी की यही दशा होती।

ग्लैण्डोवर—अजी मेरे जन्म के समय भूकम्प आया था।

हौटस्पर—अगर आपका ख्याल है कि पृथ्वी आपके डर से काँप उठी तो वह मुझ जैसी नहीं है।

ग्लैण्डोवर—आकाश लाल हो गया और जमीन थरथराने लगी।

हौटस्पर—तो जमीन आकाश की लाली देख कर थरथराई होगी आपके जन्म को देख कर नहीं। जब पृथ्वी में कुछ विकार हो जाता है और हवा भीतर ही भीतर घुमड जाती है तो काँपने लगती है। आपके जन्म पर पृथ्वी इसी लिए काँपी होगी।

ग्लैण्डोवर (कुछ गुस्सा होकर)—प्यारे हौटस्पर, मैं बहुत से लोगों को इस प्रकार की बातें नहीं सुन सकता! मैं फिर कहता हूँ कि मेरे जन्म पर भूकम्प आ गया। आकाश अग्नि समान लाल हो गया। बकरियाँ पहाडों से भागने लगीं और पशु जंगलों में चिल्लाने लगे। यह सब चिह्न इस बात के सूचक हैं कि मैं एक असाधारण पुरुष हूँ। मेरा जीवन यही बतलाता है कि मैं सर्वसाधारण की संख्या में नहीं हूँ। इस देश में कोई ऐसा मनुष्य

नहीं है जो मुझको अपना शिष्य कह सके या जिसने मुझे पढ़ाया हो।

हौटस्पर—परन्तु आप से अच्छी वेल्स भाषा कोई नहीं बोल सकता।

मार्टीमर—भाई पर्सी, चुप रहो। क्यों इनको क्रोध दिलाते हो।

ग्लैण्डोवर—मैं समुद्र की * देवियों को बुला सकता हूँ!

हौटस्पर—मैं भी बुला सकता हूँ। और हर आदमी बुला सकता है। परन्तु क्या वे तुम्हारे बुलाने से आ जायँगी?

ग्लैण्डोवर—तीन बार बोलिङ्ग ब्रोक ने मेरी सेना का सामना किया और तीन बार मैंने सीवर्न नदी से उसे मार भगाया!

मार्टीमर—व्यर्थ समय न खोइए। काम की बातें होने दीजिये!

ग्लैण्डोवर—नकशा यह रहा अपना अपना भाग बाँट लो!

मार्टीमर—तीन भाग तो इसके हो ही चुके। दक्षिण पूर्व की ओर ट्रैंट और सीवर्न नदी से यहाँ तक इङ्गलैण्ड मेरे हिस्से में है। सीवर्न के इस पार सब पश्चिमी देश वेल्स सहित ग्लैण्डोवर का है। और पर्सी! ट्रैंट से लेकर समस्त उत्तरी भाग आपके हिस्से में है। आज सन्धिपत्र लिख कर हस्ताक्षर हो जाने चाहिये। कल मैं, आप और लार्ड वोर्सेस्टर, आपके पिता तथा स्काटलैण्ड वालों के साथ मिलने के लिए श्रुसबरी को चल देंगे। अभी ग्लैण्डोवर तैयार नहीं है और न अभी चौदह दिन तक इनकी

---

* कहा जाता है कि समुद्र में देवियाँ या अप्सरा रहा करती हैं।

ज़रूरत है। इस समय में ये अपनी सेना को इकट्ठा कर लेंगे।

ग्लैएडोवर—मैं इससे भी जल्द आपके पास आ जाऊँगा और आपकी महिलागण भी मेरे साथ आवेंगी। इस समय आप उनसे विना भेंट किये जा रहे हैं।

हौटस्पर—मैं समझता हूँ कि वर्टन के उत्तर में मेरा भाग आपके भाग से न्यून है। (नकशे में दिखा कर) देखो यह नदी मेरे देश को अर्धचन्द्र की तरह काट रही है। मैं यहाँ ट्रेंएट को बन्द कर दूँगा और उसका बहाव इस तरफ़ को झुक जायगा। जिससे कुछ उपजाऊ ज़मीन मुझे मिल जाय।

ग्लैएडोवर ने हौटस्पर के इस प्रस्ताव का पहले तो विरोध किया परन्तु जब पर्सी आग्रह करने लगा तब ग्लैएडोवर मान गया और मार्टीमर तथा पर्सी के उसी रात चल देने का विचार हुआ। इतने में ग्लैएडोवर की लड़की जो मार्टीमर की स्त्री थी अपनी ननद लेडी पर्सी के सहित वहाँ पर आ गई। विलक्षण बात यह थी कि मार्टीमर वेल्सभाषा बोलना नहीं जानता था और उसकी स्त्री अँगरेज़ी बोलना नहीं जानती थी। इस प्रकार वह दोनों स्त्री पुरुष परस्पर सभाषण नहीं कर सकते थे। इसलिए ग्लैएडोवर के द्वारा बातचीत हुई। लेडी मार्टीमर ने मार्टीमर के अकेले जाने का बड़ा विरोध किया और अपने पति के साथ रणक्षेत्र में जाने पर आग्रह करती रही। परन्तु अन्त में सब मान गये और पर्सी, मार्टीमर, और वार्मस्टर ने श्रूसबरी की ओर प्रस्थान कर दिया जहाँ चतुर्थ हनरी की सेना से युद्ध होना निश्चित हो चुका था। अब थोड़ा सा हाल हनरी का सुनिए!

हम ऊपर कह चुके है कि राजकुमार हनरी बहुत दिनों से कुसंगति में पड गया था और राजदरबार को छोड कर उन सरायों में अपना समय व्यतीत करता था जहाँ बुरे बुरे मनुष्य एकत्रित होकर मद्यपान किया करते थे। उसके परम मित्र फाल्स्टाफ और बार्डाल्फ थे जो नित्य प्रति द्वन्द्व मचाया करते थे। कहीं पथिकों को पकड कर उनका माल छीन लेते, कहीं दूसरे मनुष्यों के साथ अत्याचार किया करते। एक दिन फाल्स्टाफ और बार्डाल्फ दोनों ने मिल कर, किसी मनुष्य का माल लूट लिया। कोतवाल ने इनका पीछा किया। फाल्स्टाफ दौड कर सराय में राजकुमार के पास आया। हनरी ने उसे कहीं छिपा दिया। जब कोतवाल ने हनरी से प्रार्थना की उसने यह कह कर टाल दिया कि जिस मनुष्य की तलाश में तुम फिर रहे हो उसको हमने कहीं भेजा है। जब आवेगा भेज दिया जायगा। कोतवाल विचारा राजकुमार से क्या कह सकता था अपना सा मुँह लेकर चला गया। इस प्रकार की बाते रोज ही हुआ करती थी और इनकी शिकायत राजा के पास पहुँचा करती थी। राजा अपने लडके की यह दशा देखकर मन ही मन कुढा करता था। एक दिन उसने राजकुमार को बुलाया और कहा।

"न जाने मैंने ईश्वर का क्या बिगाडा है कि वह मेरे वंश को इस प्रकार बिगाड कर मुझे दण्ड दिया चाहता है? राजकुमार! तेरे जीवन से तो यही प्रतीत होता है, कि ईश्वर ने तुझे मेरे दुष्कर्मों का दण्ड देने के लिए बनाया है। बता तो सही, यह विषयासक्ति, यह उन्माद, यह कुसंगति, यह अत्याचार, जिनमें तेरा समय व्यतीत होता है, क्या तेरे वंश के योग्य है?"

राजकुमार—"श्रीपिताजी, बहुत सी बाते जो मेरे विरुद्ध आ

से कही गई है। केवल आपको भड़काने के लिए मेरे शत्रुओं ने कह दी है जिनका कुछ भी आधार नहीं है। हाँ, जो कुछ त्रुटियाँ मुझसे मेरी इस अवस्था के कारण हो गई है उनके लिए मैं महाराज से क्षमा का प्रार्थी हूँ।

राजा—ईश्वर तुझे क्षमा करे। मुझे आश्चर्य है कि तुझ में अपने पूर्वजों के समान गुण क्यों नहीं हैं। कौंसिल (राजसभा) में तुझे अपनी मूर्खता से अपना स्थान छोड़ना पड़ा जिसे तेरे छोटे भाई ने पूरित किया है। तू अपने समस्त वंशजों से पृथक् है। सब यही कहते हैं कि तू अवश्य नष्ट हो जायगा। अगर मेरी यह दशा होती, यदि मुझे लोग इस प्रकार बुरा समझते, तो आज विदेश से बुला कर कोई मुझे राजगद्दी पर बैठने न देता। जहाँ कहीं मैं निकल जाता था लोग चकित होकर मेरी ओर संकेत किया करते और कहा करते कि देखो यह बोलिङ्ग्ब्रोक है। और मैं इस प्रकार उनके साथ व्यवहार करता था कि चाहे शत्रु से शत्रु हो वह भी मेरा मित्र हो जाता था। यहाँ तक कि राजा की उपस्थिति में भी लोग मेरा नाम ले जयकार बोलते थे। उसी वंश का तू है जिसने कुसंगति में बैठे बैठ कर अपने को बदनाम कर रक्खा है। जो देखता है तुझसे घृणा करता है।

राजकुमार—श्रीमहाराज! अब से मैं अनुचित व्यवहार न करूँगा।

राजा—इस समय तेरी वही हालत है जो रिचार्ड की थी जब मैंने फ्रान्स से आकर रेवेन्सबर्ग में अपना पग अड़ाया था। जो उस समय मेरी दशा थी वह इस समय पर्सी

की दशा है। सत्य बात तो यह है कि यद्यपि युवराज तू ही है परन्तु पर्सी तुझसे अधिक राज्य के योग्य है। पर्सी की आयु तुझसे अधिक नहीं है। परन्तु वह रणक्षेत्र में कैसे कैसे पराक्रम दिखलाता है। डौग्लस को पराजय करके जो यश उसे प्राप्त हुआ है, वह एक प्रकार से अमर ही है। डौग्लस के सामने से बड़े बड़े वीर भाग जाते हैं। परन्तु वीर पर्सी ने उसे तीन बार भगा दिया। अब उससे मित्रता करली है और हमारे राज में भङ्ग करना चाहता है। पर्सी, नार्थम्बरलैण्ड, आर्क विशप यार्क,*डौग्लस, मार्टीमर, सब हमारे विरुद्ध हैं। इसमें तेरी क्या सम्मति है? हाय! हाय! मैं तुझे ये सब बातें क्यों सुना रहा हूँ। इससे क्या लाभ होगा। तुझसे क्या आशा हो सकती है? हाँ यह तो सम्भव है कि तू हमारे शत्रुओं से मिल जाय और हमारा विरोध करे।

राजकुमार—आप ऐसा खयाल न करें। कभी ऐसा न होगा। ईश्वर उन लोगों को क्षमा करे जिन्होंने आप से मनमानी बातें मिला दीं। मैं पर्सी का सिर-भङ्ग करके इस बात को सिद्ध करूँगा। युद्ध के दिन आपको ज्ञात हो जायगा कि मैं आपका ही पुत्र हूँ। युद्ध से आते हुए जब आप मेरे वस्त्रों को रक्त-मय देखेंगे उस समय इन सब दोषों से उत्पन्न हुई लज्जा धुल जायगी। यह यशस्वी पर्सी और यह आपका हनरी दोनों जिस समय रणक्षेत्र में मिलेंगे तब संसार जान जायगा कि बोलिङ्ग ब्रोक का पुत्र यह

---

*सब से ऊँचा पुरोहित।

काम कर सकता है, यही पर्सी मेरे यश का कारण होगा।

इस प्रकार चतुर्थ हनरी ने अपने पुत्र को उत्साहित करके लड़ाई के लिए तैय्यार किया और लार्ड ब्लण्ट, लार्ड वेस्टमोरलेण्ड, युवराज हनरी और छोटा राजकुमार जोन ये सब मिल कर विद्रोहियों से लडने के लिए श्रूसबरी को चल दिये।

जब हॉटस्पर, डॉग्लस, और वोर्सेस्टर श्रूसबरी में पडे हुए अपने अन्य साथियों की प्रतीक्षा कर रहे थे, उस समय एक दूत ने आकर हॉटस्पर से कहा :—

"यह आपके पिता का पत्र है"।

हॉटस्पर—क्या पत्र ही है? वे स्वयं नहीं आये?

दूत—भगवन्, वे बीमार हैं। अतएव आने में अशक्त हैं।

हॉटस्पर—ऐसे समय में उन्हें बीमार होने का कैसे अवकाश मिला? उनकी सेना कहाँ है और किसके आधिपत्य में है?

दूत—मैं नहीं जानता। पत्र में लिखा है।

वोर्सेस्टर—क्या वे रोगशय्या पर पडे हुए हैं?

दूत—मेरे आने के चार दिन पहले से वे बीमार थे और मेरे आने के समय तो वैद्यों ने उन्हें बहुत डरा दिया था।

वोर्सेस्टर—पहले देश की हालत अच्छी हो जाती तब वे बीमार पडते। उनके स्वास्थ्य की ऐसी आवश्यकता पहले कभी नहीं थी।

हॉटस्पर—बीमार! रोगी! इस रोग ने हमारे सब काम बिगाड़ दिये। वे लिखते हैं कि रोग भयङ्कर है। और उनके साथी किसी अन्य मनुष्य के प्रबन्ध से एकत्रित नहीं हो सकते। परन्तु उनकी सम्मति यह है कि जिस प्रकार

हो सके हमको अपना कार्य्य करना चाहिए। कार्य्य अवश्य करना होगा। अब विद्रोह से रुकना व्यर्थ है क्योंकि राजा को सब बातें मालूम ही हो चुकीं।

वोर्सेस्टर—आप के पिता की बीमारी ने हमें लुंजा कर दिया!

हौटस्पर—नहीं नहीं! ऐसा घाव लगा जिसका कुछ उपाय ही नहीं है। परन्तु कुछ चिन्ता नहीं है। सम्पूर्ण धन को एक साथ ही दाव पर रख देना बुद्धिमत्ता नहीं है।

डौग्लस—हाँ यह बात ठीक है। ऐसे समय में यही बात उचित है।

वोर्सस्टर—फिर भी मेरी तो यही इच्छा है कि तुम्हारे पिता यहाँ होते। क्योंकि हमारे बहुत से मूर्ख साथी यह समझते हैं कि नार्थम्बरलेण्ड हमारे साथ सहमत नहीं हैं और राज-भक्ति के कारण वे नहीं आये।

हौटस्पर—आप तो अन्त की कहते हैं। लोगों को यह क्यों न समझना चाहिए कि जब हम थोड़े से आदमी इतने बड़े राजा का सामना कर सकते हैं तो यदि पिता जी होते तो शायद हम समस्त राज को उलट पलट सकते थे। जाने दीजिए! इस समय तो काम करना ही है।

उसी समय हौटस्पर का एक और साथी वर्नन नामी अपनी सेना सहित आ पहुँचा और उसने सूचना दी कि वेस्ट-मोर्लेण्ड और राजकुमार जौन सात हजार सेना के साथ राजा की ओर से लड़ने आ रहे हैं।

हौटस्पर—कुछ चिन्ता नहीं। और क्या समाचार है?

वर्नन—मैंने यह भी सुना है कि राजा स्वयं बहुत बड़ी सेना के साथ बड़ी शीघ्रता से आ रहा है।

हौटस्पर—यह भी अच्छी बात है। भला राजकुमार हनरी कहाँ है जो किसी घटना से आकर्षित नहीं होता ?

वर्नन—वह भी अस्त्र शस्त्र धारण किये हुए बड़ी वीरता से आप लोगों का सामना करने आ रहा है। मैंने उसे घोड़े पर सवार देखा था। वह एक बड़ा योद्धा मालूम होता था।

हौटस्पर—बहुत प्रशंसा न कीजिए। आने दीजिए। हम एक एक का बलिदान करेंगे। जाने ग्लैण्डोवर कब आयेगा ?

वर्नन—मैंने सुना है कि वह १४ दिन तक नहीं आ सकता।

डौग्लस—यह तो बहुत बुरी बात है।

वोर्सेस्टर—मैं तो इस से घबरा गया।

हौटस्पर—राजा की सेना कितनी होगी ?

वर्नन—तीस हजार।

हौटस्पर—तीस नहीं चालीस सही। पिताजी नहीं, ग्लैण्डोवर नहीं। इसलिए हमारी अकेली सेना ही इस भीषण युद्ध को लड़ेगी। प्रलय निकट है। हमको हर्षपूर्वक मरना चाहिए।

डौग्लस—मरने का नाम न लीजिए। मुझे मृत्यु का कुछ भी भय नहीं है।

हौटस्पर—हम आज रात को ही लड़ेंगे।

वोर्सेस्टर—ऐसा मत करो।

डौग्लस—इस से तो हनरी का ही लाभ होगा।

वर्नन—नहीं।

हौटस्पर—आप ऐसा क्यों कहते हैं ? इस समय हनरी सहायता के लिए प्रतीक्षा कर रहा है।

वर्नन—हम भी तो कर रहे हैं।

हौटस्पर—उसकी सहायता निश्चित है, हमारी अनिश्चित।

वोर्सेस्टर—हमारी बात मान जाओ। आज मत लड़ो।

वर्नन—हाँ मत लड़ो।

डौग्लस—तुम तो व्यर्थ डरते हो।

वर्नन—डौग्लस! गालियाँ न दो, मुझे किसी का डर नहीं है। मुझे आश्चर्य है कि आप जैसे बुद्धिमान् और विद्वान् अपनी निर्बलता को नहीं जानते। अभी हमारे भाई के सवार नहीं आये। वोर्सेस्टर के आज ही आये हैं और थक गये हैं।

हौटस्पर—शत्रु की सेना भी तो आजही आई है और थकी हुई है।

वोर्सेस्टर—राजा की सेना हमारी सेना से अधिक है।

जब विद्रोहियों की सेना में यह विचार हो रहा था। लार्ड ब्लण्ट राजा की ओर से हौटस्पर से बातचीत करने आया और हौटस्पर ने कहा—

"सर वाल्टर ब्लण्ट! हमको आपके शुभागमन की खुशी है। ईश्वर करे आप भी हम से सहमत हो जायँ हमारे साथी आपसे बहुत स्नेह रखते हैं। बहुतों को आप के गुणों पर असूया है कि आप जैसा गुणी मनुष्य हमारे विरुद्ध है।

ब्लण्ट—ईश्वर रक्षा करे। जब तक आप अपने राजा के विरुद्ध हैं मैं भी आपका शत्रु हूँ। राजा ने पूछा है कि आप को किन कारणों से इस प्रकार शान्ति भङ्ग करनी पड़ी, और आप क्यों अपने स्वामी के विरुद्ध हो गये? यदि राजा ने आपकी पिछली सेवा को विस्मृत कर दिया है तो बताइये, महाराज अवश्य आपको क्षमा कर देंगे और जो कुछ आप चाहेंगे वह आपको देंगे।

हौटस्पर—राजा बड़ा दयालु है। हम जानते हैं कि उसे यह बात भले प्रकार ज्ञात है कि प्रतिज्ञायें कब करनी चाहिए और उन्हें पूरा कब करना चाहिए। महाराज जो मुकुट आज पहने हुए हैं मेरे, मेरे पिता के और मेरे चचा के द्वारा ही प्राप्त हुआ है। जिस समय वह मारा मारा विदेश में फिर रहा था उस समय मेरे पिताजी ने उसकी बाँह पकड़ी। और जब उसने शपथ खाई कि मैं केवल अपने पिता गाण्ट की सम्पत्ति चाहता हूँ तब मेरे पिता ने सहायता की प्रतिज्ञा की। और उसका पालन किया। जब देशवालों ने देखा कि नार्थम्बरलेण्ड सहायता दे रहा है तब वे भी झुक पड़े और गाँव के गाँव तथा नगर के नगर हनरी बोलिङ्ग्ब्रोक की ओर हो गये। जब राजा रेवेन्सबर्ग में आया तब बड़ी बड़ी प्रतिज्ञायें कीं। लोगों का कर कम करने का वादा किया और बहुत सी त्रुटियों को दूर करने का भी। उस समय यही तुम्हारा राजा देश की दुर्दशा को देख कर रोता था मानों यह बड़ा देशहितकारी है।

ब्लण्ट—बस! मैं यह सुनने नहीं आया।

हौटस्पर—अच्छा लो—इसने रिचार्ड को गद्दी से उतार दिया। फिर शीघ्र ही उसे मरवा डाला और मार्टीमर मार्च को वेल्स में कैद रहने दिया। मैंने विजय प्राप्त की। उसमें मुझे बदनाम किया। मेरे चचा को दरबार से निकाल दिया। मेरे पिताजी से अपशब्द कहे। शपथ-भङ्ग किया। प्रतिज्ञायें तोड़ीं। अत्याचार किये।

ब्लण्ट—क्या मैं राजा से यही कह दूँ?

हौटस्पर—नहीं! यह न कहिए। राजा के पास जाइए और

यह निश्चय करा दीजिए कि हम यहाँ से कुशलपूर्वक लौट आयेंगे, तो कल प्रातःकाल हमारे चचा राजा की सेवा में उपस्थित होंगे।

दूसरे दिन प्रातःकाल वर्नन और वोर्सेस्टर हनरी की सेवा में उपस्थित हुए। और राजा ने उन्हें देखकर कहा,

"लार्ड वोर्सेस्टर यह उचित नहीं है कि हमारा और तुम्हारा इस प्रकार मिलाप हो जैसा आज हो रहा है। आपने विश्वासघात किया और हमारी शान्ति में बाधा डाल दी। हमें आज इस वृद्धावस्था में शस्त्रधारण करने पड़े। यह अच्छा नहीं मालूम होता। आप क्या कहते हैं? क्या आप इस युद्ध-रूपी ग्रन्थि को छुड़ा देंगे? और हमारा स्वत्व फिर स्वीकार करेंगे।

वोर्सेस्टर—श्रीमहाराज! अपने लिए तो मैं कहता हूँ कि इस अन्तिम अवस्था में मुझे शान्ति ही प्रिय है। परन्तु मैं इस अशान्ति का कारण नहीं हूँ।

राजा—यदि आप कारण नहीं हैं तो यह अशान्ति हुई कैसे?

फाल्स्टाफ—अशान्ति इनको रास्ते में पड़ी मिल गई और इन्होंने उठा ली!

राजकुमार हनरी—(फाल्स्टाफ़ से) चुप! चुप! चुप!

वोर्सेस्टर—श्रीमहाराज ने मुझ और मेरे वंश से दयादृष्टि उठाली। हम ही आपके पहले और दृढ़ मित्र थे। रिचार्ड के समय में आपके ही हित के लिए मैंने अपना पद त्याग कर आपकी सेवा की। जब आप मेरे समान शक्तिवान् नहीं थे। उस समय मैंने आपका स्वत्व स्वीकार किया! यह मैं, मेरा भाई और उसका लड़का ही था जिन्होंने समस्त आपत्तियों का सामना करके आपको विदेश से बुलाया। आपने डाङ्कास्टर में शपथ खाई थी कि

आप राजा के विरुद्ध कुछ न करेंगे और कि आप केवल अपने पिता की सम्पत्ति लेना चाहते हैं परन्तु थोड़े दिनों में आपका ऐसा भाग उदय हुआ कि आप डाङ्कास्टर की शपथ को भूल गये। कुछ हमारी सहायता ! कुछ रिचार्ड की अनुपस्थिति ! कुछ आइरिश समुद्र का प्रतिकूल वायु ! कुछ लोगों का रिचार्ड की मृत्यु की झूठी खबर उड़ा देना ! सारांश यह है कि इन सब बातों ने आपको उस पद पर पहुँचा दिया जिसपर आप आज विराजमान हैं। परन्तु अब आप ने हमारे साथ यह व्यवहार किया जो कोयल कौओं के बच्चों के साथ किया करती है। अब आप हमारा मुँह देखना भी पसन्द नहीं करते। अब आपको हमसे घृणा है। यही कारण है कि हम इस प्रकार से यहाँ आये हैं। इस अशान्ति का कारण आप हैं न कि हम ! क्योंकि शपथ-भङ्ग आपने किया है न कि हमने।

राजा—यह सत्य है कि तुम लोग इसी तरह की विद्रोह-उत्पादक बातें बाजारों में, गिरजों में और सर्वसाधारण मनुष्यों के बीच में फैलाते रहते हो जिससे मूर्ख आदमी सच समझ कर तुम्हारा साथ दें और देश की शान्ति में बाधा डालें।

राजकुमार हनरी—वोर्सेस्टर ! मेरी ओर से अपने भतीजे से कह दो कि मैं उसकी बहुत प्रशंसा करता हूँ। आज के समय में ऐसा वीर पुरुष कोई दूसरा नहीं है। वह समझता है कि मैं अभी खेल कूद में हो रहा हूँ। परन्तु मैं कहता हूँ कि यदि युद्ध होगा तो मैं उससे अकेला लड़ने के लिए तैय्यार हूँ।

राजा—हाँ, चाहे कुछ भी हो। हम राजकुमार को अकेले युद्ध करने की आज्ञा दे देंगे। परन्तु नहीं नहीं, वोर्सेस्टर! हमको अपनी प्रजा से प्रेम है। जिन लोगों ने अशान्ति फैलाई है। वे भी हमारी प्रजा हैं। और राजा को प्रजा से हित करना चाहिए। इसलिए उनसे भी हमको स्नेह है। यदि वे फिर ठीक तौर से रहें और उत्पात करना छोड दें तो वे फिर हमारे प्रेम पात्र हो सकते हैं। अगर नहीं तो फिर दण्ड बना बनाया है।

राजा को यह आशा नहीं थी कि हॉटस्पर सन्धि करने के लिए तैय्यार होगा क्योंकि उसको अपने बल का बडा अभिमान था। इसलिए हनरी ने युद्ध की तैयारियाँ की और सेनाध्यक्षों को आदेश दे दिया कि सिपाही लोग तैय्यार हो जायँ। वोर्सेस्टर और वर्नन राजा के पास से लौट कर अपने कैंप में चले आये और हॉटस्पर को राजा की सन्धि करने का समाचार नहीं सुनाया क्योंकि वोर्सेस्टर ने कहा कि अगर हॉटस्पर को राजा की मित्रता पर विश्वास हो गया तो अवश्य ही सर्वनाश हो जायगा। चाहे कैसी ही सन्धि क्यों न हो जाय, राजा अब हमसे प्रेम नहीं कर सकता। एक न एक दिन वह फिर अवसर पाकर हमको दु:ख देगा। अब उसे हम पर शङ्का हो गई है। इस लिए वह हमारी ओर से निश्चिन्त नहीं हो सकता।

हॉटस्पर ने डौग्लस के द्वारा हनरी को युद्ध का सदेसा भेज दिया और दोनो ओर से आकर दलों में मुठभेड शुरू हुई। बडा भयङ्कर युद्ध हुआ। लाशों पर लाशें लग गईं और लोहू की नदियाँ बहने लगीं। रणक्षेत्र में एक स्थान पर डौग्लस और ब्लएट की गुत्थम गुत्था हो गई। ब्लएट का कवच राजा के कवच के सदृश था इसलिए डौग्लस ने समझा कि यही

हनरी है। और उसका नाम पूछा। ब्लएट ने उत्तर दिया।

"अरे तेरा क्या नाम है। तू कौन है जो इस प्रकार मुझसे भिड़ना है ?"

डौग्लस—मेरा नाम डौग्लस है। लोग कहते हैं कि राजा तुही है। इसलिए तेरे पीछे पड़ रहा हूँ।

ब्लएट—यह सच है।

डौग्लस—मैंने स्टेफर्ड को यही समझ कर मार डाला कि यह हनरी है। अब तुझपर मेरी चोट है। या तो कैद होना स्वीकार कर या प्राण दे।

ब्लएट ने यह कह कर कि "मैंने कैद होने के लिए जन्म नहीं लिया," लड़ाई शुरू की और थोड़ी देर में डौग्लस की तलवार से खेत रहा। डौग्लस की यह वीरता देखकर हौटस्पर वहाँ पर आगया और कहने लगा।

"डौग्लस! अगर आप होमडन के युद्ध में ऐसी वीरता से लड़ते तो मुझे कभी स्काटलेण्डवालों पर विजय प्राप्त न होती।"

डौग्लस—अब सब कुछ जीत लिया। लड़ाई हो चुकी। देखो राजा मरा पड़ा है।

हौटस्पर—कहाँ!

डौग्लस—यह रहा।

हौटस्पर—क्या यह ? नहीं नहीं! यह राजा नहीं है, मैं इसे पहचानता हूँ। यह भी बड़ा वीर पुरुष था। इसे ब्लएट कहते हैं।

डौग्लस—मूर्ख! मूर्ख! नरक में पड़। अरे तूने क्यों कह दिया कि मैं राजा हूँ।

हौटस्पर तो वहाँ से दूसरी ओर बढ़ गया और थोड़ी देर

में डौग्लस और हनरी की मुठभेड हो गई। डौग्लस ने राजा हनरी के ऊपर ऐसी चोटे की कि हनरी घबरा गया और निकट था कि उसकी मृत्यु हो जाती। परन्तु उसी समय राजकुमार हनरी लडता लडता वहाँ पर आ पहुँचा और अपने पिता को विपत्ति में देखकर डौग्लस के ऊपर ऐसा झपटा कि डौग्लस को वहाँ से भागना पडा। राजा अपने उसी युवराज की ऐसी वीरता देखकर जिसकी समस्त आयु सराय और मद्यपान में कटी थी बडा खुश हुआ और कहने लगा कि आज तूने अपने सब कुकर्मों का प्रायश्चित्त कर लिया! अभी राजा हनरी उधर से हटा ही था कि राजकुमार हनरी और हौटस्पर की भेंट हो गई और हौटस्पर बोला "अगर मैं भूल नहीं करता तो तू राजकुमार हनरी है।"

राजकुमार हनरी—तू तो ऐसा पूछता है मानो मैं अपना नाम न बताऊँगा।

हौटस्पर—मेरा नाम पर्सी हौटस्पर है।

राजकुमार—मैं युवराज हूँ, पर्सी मुझसे जीतने की आशा न रख! एक नक्षत्र में दो ग्रह नहीं रह सकते। और न एक इङ्गलैण्ड में पर्सी और हनरी दो योद्धा रह सकते हैं।

हौटस्पर—और न रहेंगे! हम में से एक का अन्त आ गया है।

अब हनरी और हौटस्पर में लड़ाई होने लगी और अन्त में हौटस्पर यह कहता हुआ मारा गया।

"हनरी! मुझे अपनी मृत्यु का दुःख नहीं। परन्तु खेद तो इस बात का है कि तूने मेरे उस नाम को छीन लिया जो मैं बड़े कष्ट से प्राप्त कर सका था।"

हौटस्पर के मरते ही विद्रोहियों की सेना में खलबली पड गई। डौग्लस तो भाग ही चुका था। सेनाध्यक्ष के मरते

सिपाही कब ठहर सकते थे? जिसका जिधर को मुँह उठा उसने उसी ओर का रास्ता लिया। वर्नन और वोर्सेस्टर कैद कर लिए गये। डौग्लस रण से भाग कर एक पहाड़ी पर से कूद रहा था कि उसके चोट लग गई और उठ न सका। राजा की सेना ने उसे देख लिया और कैद कर लिया।

राजकुमार हनरी अपनी वीरता दिखा चुका था डौग्लस के हाथ से अपने पिता के प्राण बचाने के अतिरिक्त सब से वीर शत्रु हौटस्पर को मार चुका था। अब वीरता के साथ ही साथ उसने उदारता भी दिखाई और अपने पिता की आज्ञा ले कर बिना किसी निस्तार-मूल्य के डौग्लस को छोड़ दिया।

इस प्रकार इस बड़े भारी विद्रोह-दमन से चतुर्थ हनरी का राज भली भाँति स्थापित हो गया।

इसका शेष वृत्तान्त दूसरे भाग में लिखा हुआ है।

में डौग्लस और हनरी की मुठभेड हो गई। डौग्लस ने राजा हनरी के ऊपर ऐसी चोटें की कि हनरी घबरा गया और निकट था कि उसकी मृत्यु हो जाती। परन्तु उसी समय राजकुमार हनरी लडता लडता वहाँ पर आ पहुँचा और अपने पिता को विपत्ति में देखकर डौग्लस के ऊपर ऐसा झपटा कि डौग्लस को वहाँ से भागना पडा। राजा अपने उसी युवराज की ऐसी वीरता देखकर जिसकी समस्त आयु सराय और मद्यपान में कटी थी बडा खुश हुआ और कहने लगा कि आज तूने अपने सब कुकर्मों का प्रायश्चित्त कर लिया! अभी राजा हनरी उधर से हटा ही था कि राजकुमार हनरी और हौटस्पर की भेंट हो गई और हौटस्पर बोला "अगर मैं भूल नहीं करता तो तू राजकुमार हनरी है।"

राजकुमार हनरी—तू तो ऐसा पूछता है मानो मैं अपना नाम न बताऊँगा।

हौटस्पर—मेरा नाम पर्सी हौटस्पर है।

राजकुमार—मैं युवराज हूँ, पर्सी मुझसे जीतने की आशा न रख! एक नक्षत्र में दो ग्रह नहीं रह सकते। और न एक इङ्गलैण्ड में पर्सी और हनरी दो योद्धा रह सकते हैं।

हौटस्पर—और न रहेंगे! हम में से एक का अन्त आ गया है।

अब हनरी और हौटस्पर में लडाई होने लगी और अन्त में हौटस्पर यह कहता हुआ मारा गया!

"हनरी! मुझे अपनी मृत्यु का दुःख नहीं। परन्तु खेद तो इस बात का है कि तूने मेरे उस नाम को छीन लिया जो मैं बडे कष्ट से प्राप्त कर सका था।"

हौटस्पर के मरते ही विद्रोहियों की सेना में खलबली पड गई। डौग्लस तो भाग ही चुका था। सेनाध्यक्ष के मरते

सिपाही कब ठहर सकते थे? जिसका जिधर को मुँह उठा उसने उसी ओर का रास्ता लिया। वर्नन और वोर्सेस्टर कैद कर लिए गये। डौग्लस रण से भाग कर एक पहाड़ी पर से कूद रहा था कि उसके चोट लग गई और उठ न सका। राजा की सेना ने उसे देख लिया और क़ैद कर लिया।

राजकुमार हनरी अपनी वीरता दिखा चुका था डौग्लस के हाथ से अपने पिता के प्राण बचाने के अतिरिक्त सब से घोर शत्रु हौटस्पर को मार चुका था। अब वीरता के साथ ही साथ उसने उदारता भी दिखाई और अपने पिता की आज्ञा ले कर बिना किसी निस्तार मूल्य के डौग्लस को छोड़ दिया।

इस प्रकार इस बड़े भारी विद्रोह-दमन से चतुर्थ हनरी का राज भली भाँति स्थापित हो गया।

इसका शेष वृत्तान्त दूसरे भाग में लिखा हुआ है।



चतुर्थ हनरी

द्वितीय भाग

(HENRY IV—PART II)

श्रूसबरी के रणक्षेत्र में राजकुमार हनरी ने हॉटस्पर को मार कर उसके साथियों को भगा दिया। और इस वजह से विद्रोहियों के दल में खलबली मच गई। जिसके जिधर सींग समाये भाग निकला। परन्तु श्रूसबरी के निकटस्थ ग्रामों में एक निर्मूल जन-प्रवाद फैल गया कि हॉटस्पर जीत गया, राजकुमार हनरी भाग गया, डौग्लस ने चतुर्थ हनरी को घायल कर दिया इत्यादि। यही झूठी खबरें नार्थम्बरलेण्ड में पहुँचने लगीं और हॉटस्पर का पिता इस युद्ध के यथार्थ परिणाम को न जान सका।

जब नार्थम्बरलेण्ड का एक साथी लार्ड बार्डाल्फ उसके पास गया तो नार्थम्बरलेण्ड ने पूछा—

"कहो लार्ड बार्डाल्फ! क्या समाचार हैं। इस कुसमय में पल पल पर नये नये समाचार मेरे पास आ रहे हैं।"

बार्डाल्फ—श्रीमन्! मैं श्रूसबरी के शुभ समाचार लाया हूँ।

नार्थम्बरलेण्ड—शुभ समाचार! यदि ईश्वर की इच्छा हो!

बार्डाल्फ—ऐसे शुभ जैसे तुम चाहो! राजा तो बिल्कुल घायल पड़ा है। आपके सुपुत्र ने राजकुमार हनरी को मार डाला! राजकुमार जौन, वेस्टमोर्लैण्ड और

स्टैफर्ड भाग गये। राजकुमार हनरी का साथी फाल्स्टाफ कैद हो गया। ऐसी जीत सीजर की विजय के पश्चात् आज तक नहीं हुई थी।

नार्थम्बर०—तुमको यह समाचार कैसे मिले ? क्या तुम श्रूसबरी गये थे ? क्या तुम रणक्षेत्र से आ रहे हो ?

लार्ड बार्डो०—मुझसे एक आदमी कहता था जो श्रूसबरी से आया था। वह एक योग्य पुरुष प्रतीत होता था।

नार्थम्बर०—मैंने अपने एक सेवक ट्रेवर्स को भेजा था वह कुछ समाचार लाता होगा।

लार्ड बार्डो०—मैं उससे जल्दी आगया हूँ। उसे कोई निश्चित बात नहीं मालूम हुई। मैंने ही तो उससे भी कहा था। इतने में ट्रेवर्स वहाँ पर आगया और कहने लगा।

"महाराज! लार्ड बार्डोल्फ मुझे शुभसमाचार सुनाकर बीच से ही लौटा लाये। परन्तु मुझे एक और आदमी मिला जो चेस्टर को जा रहा था। उसने थोड़ी देर घोड़े को थाम कर मुझसे कहा कि हौटस्पर (गर्म एड़वाला) की एड़ ठण्डी पड़ गई। यह कह कर वह अपने घोड़े को भगा ले गया। और मेरे किसी प्रश्न का उत्तर नहीं दिया।

नार्थम्बर०—क्या! क्या! क्या वह कहता था कि पुत्री की एड़ ठंडी पड़ गई ? क्या हौटस्पर कोल्डस्पर (ठंडी एड़-वाला) होगया ? क्या विद्रोह सफल नहीं हुआ ?

लार्ड बार्डो०—श्रीमन्, मैं कहता हूँ, अगर आपके लड़के की विजय न हुई हो तो मैं अपना समस्त राज दे डालूँ। आप निराशा का नाम भी न लीजिए।

नार्थम्बर०—फिर उस घुड़सवार ने यह विपरीत बात क्यों कही ?

लार्ड बार्डो०—अरे! वह कोई घुडचोर होगा जो जल्दी से घोडा भगा कर ले गया!

इतने में एक और मनुष्य जिसका नाम मार्टन था वहाँ पर आ गया। नार्थम्बरलेण्ड ने उसका चेहरा देख कर ही कहा।

"इस आदमी के मुख से ही जानपडता है कि कोई भयानक खबर है। जब बडी भारी रौ आकर नदी के तटस्थ देशों को विनष्ट कर जाती है तो उस समय तट की दशा ऐसी ही दिखाई पडती है। कहो मार्टन! क्या तुम श्रूसबरी से आ रहे हो?

मार्टन—महाराज! मैं श्रूसबरी से आ रहा हूँ जहाँ गर्हित मृत्यु का रूप हमारे साथियों के लिए बडा भयङ्कर हो गया!

नार्थम्बर०—अरे तू काँपता क्यों है? बता मेरे भाई और लडके का क्या हाल है! तेरी कातर दृष्टि उस बात को बता रही है जिसको तेरी वाणी कहना नहीं चाहती। ऐसे ही दु खित और कातर मनुष्य ने आधी रात के समय प्रियम* का द्वार खोल कर उसे सूचना दी होगी कि तुम्हारा आधा ट्रोय जल गया। और प्रियम ने उसकी वाणी द्वारा सुनने से पूर्व ही आग को देख लिया होगा। तेरे कहने से पहले ही मैं समझ गया कि मेरा पर्सी मारा गया! अरे तू यही कहना चाहता है कि मेरे लडके ने यह किया वह किया। मेरे भाई ने यों मारा। डोग्लस ने यह वीरता दिखाई। परन्तु अन्त में तू ठढी साँस भर कर यही कहेगा कि सब के सब मारे गये।

---

*प्रियम ट्रोय का राजा था जिसका वर्णन महाकवि होमर ने इलियड और ओडीसी नामक पुस्तकों में किया है। प्रियम का इस युद्ध में सर्वनाश हो गया।

मार्टन—आपके भाई जीवित हैं। और डोग्लस भी। लेकिन आपके पुत्र——

नार्थम्बर०—हाँ हाँ—मर गया। जो मनुष्य ऐसी बात के सुनने से डरता है जिसको वह नहीं चाहता उसे दूसरों की आँखें देखकर मालूम हो जाता है, कि जिस बात से वह डरता था वह ठीक हुई। क्या मैं झूठ कहता हूँ?

मार्टन—नहीं महाराज! आप सच कहते हैं।

नार्थम्बर०—तो स्पष्ट क्यों नहीं कहता कि पर्सी मर गया! सच बात के कहने में क्या दोष है? दोष तो उसी का है जो झूठ बोलता है।

ला० बार्डाल्फ—श्रीमहाराज! मैं नहीं कह सकता कि आपका पुत्र मारा गया।

मार्टन—मुझे शोक है कि मैं अब आपको उस बात का निश्चय दिलाना चाहता हूँ कि जिसे मैं कभी देखना नहीं चाहता था। मेरी इन आँखों ने उसे घायल और मरा हुआ देखा है। राजकुमार हनरी की तलवार से ऐसा हुआ! जिसका आत्मा एक समय कायर से कायर आदमी में भी जान डाल देता था वही पर्सी निर्जीव हो गया। उसी की अग्नि उसके साथियों को उत्तेजित कर रही थी। जब वह ठंडा पड़ा तब सब ठंडे पड़ गये। और जिस प्रकार भारी वस्तु धक्का देने से और तेज भागती है इसी प्रकार हॉटस्पर की मृत्यु के शोक से मारी होकर हमारी सेना भाग निकली। तीर उनके पीछे इतने वेग से नहीं भागते थे जितने वेग से हमारे सिपाही रण से भाग रहे थे। फिर वोर्सेस्टर क़ैद हो गया और वीर डोग्लस भी, जिससे कभी यह आशा नहीं हो सकती

थी, रण से भाग निकला, यहाँ तक कि वह पकड़ा गया! सारांश यह है कि राजा की जीत हुई। अब उसने राजकुमार जोन और वेस्टमोर्लैण्ड को आपके दमन के लिए भेजा है। यही खबर है।

नार्थम्बर०—शोक मनाने के लिए मुझे बहुत समय मिलेगा। विष की विष ही औषधि है। मैं बीमार था पर अब इस शोकसमाचार को सुन कर अच्छा हो गया हूँ। जिस प्रकार ज्वर से पीडित दुर्बल मनुष्य को ज्वर चढ़ता है तो उसमें दुगनी शक्ति आ जाती है। इसी प्रकार मुझे इस समय जोश आ रहा है। अब इस निर्बल शरीर में फिर कवच धारण करूँगा। शान्ति! अब तू यहाँ से भाग। अशान्ति! तेरा राज हो! संसार युद्ध से पूरित हो! अब मैं लड़ूँगा। अब मैं लड़ूँगा।

ट्रैवर्स—महाराज! इस आकस्मिक उत्तेजना से आप के स्वास्थ्य को हानि पहुँचेगी!

मार्टन—आप के साथियों का आश्रय ही आपके स्वास्थ्य पर है। यदि आप इस प्रकार उत्तेजित होंगे तो स्वास्थ्य अवश्य बिगड़ेगा। लोगों को पहले ही यह शङ्का थी कि आपका पुत्र खेत रहेगा, इसलिए वही हुआ जो होना था।

ला० बार्डाल्फ—हम तो युद्ध से पूर्व ही जानते थे कि बीस बिस्वे में १६ बिस्वे हमारी हार है। एक बिस्वे जीत भले हो! अब हम घिर गये हैं इसलिए यथाशक्ति प्रयत्न करना चाहिए।

मार्टन—महाराज! मैं ने निश्चय करके सुना है कि यार्क का आर्क बिशप (लाट पादरी) बहुत सी सेना लेकर हमारा साथ देने की तैयारियाँ कर रहा है। वह एक

ऐसा पुरुष है जिसके साथी दो कारणों से फन्दे हैं। पर्सी हौटस्पर के साथी जो तोडकर नहीं लड सकते थे। क्योंकि विद्रोह का शब्द ही कुछ अपमान-सूचक है। विद्रोही अपने मन में समझता है कि मैं पाप कर रहा हूँ। अतएव उसका मन इतना उत्साहित नहीं होता। लाट पादरी के साथी धर्म के लिए लड रहे हैं। उसने लोगों को निश्चय करा दिया है कि हनरी का राज धर्म-विरुद्ध है। इसलिए इनका उत्साह निसन्देह बहुत ही बढा हुआ होना चाहिए। उसने कह दिया है कि मनुष्यों को रिचार्ड की हत्या का बदला लेना चाहिए। मुझे पूर्ण आशा है कि यार्क का लाट पादरी अवश्य ही अपने परिश्रम में सफलता प्राप्त करेगा।

नार्थम्बरलेण्ड—मुझे यह बात पहले भी ज्ञात थी। अब हम यथाशक्ति कोशिश करेंगे।

लार्ड बार्डाल्फ नार्थम्बरलेण्ड से चल कर यार्क पहुँचा और वहाँ लाट पादरी के साथ विचार होने लगा। हम ऊपर कह चुके हैं कि लाट पादरी बहुत दिनों पहले से हनरी को गद्दी से उतारने की कोशिश कर रहा था। इस समय लार्ड बार्डल्फ, लार्ड मौबरे, और लार्ड हेस्टिंग्ज लाट पादरी के घर पर एकत्रित थे। लाट पादरी ने कहा—

"अब आप लोग सुन चुके कि हम क्यों लडना चाहते हैं और हमारे पास युद्ध की कितनी सामग्री है। योग्य मित्रगण! मेरी आप से प्रार्थना है कि कृपा करके स्पष्टता के साथ अपनी अपनी सम्मति दीजिए।"

ला० मौबरे—मैं युद्ध के होने में तो सहमत हूँ। परन्तु मैं यह जानना चाहता हूँ कि हमारे पास सेना कितनी है क्योंकि

राजा की सेना से हमारी सेना बहुत ज्यादा होनी चाहिए।

हेस्टिंग्ज—हमारे पास इस समय २५ हजार चुने हुए आदमी मौजूद हैं। और हमको पूरी आशा है कि नार्थम्बरलेण्ड से बहुत बड़ी सहायता मिलेगी क्योंकि अपने पुत्र की मृत्यु सुन कर वृद्ध नार्थम्बरलेण्ड क्रोधानल में सतप्त हो रहा है।

ला० बार्डाल्फ—फिर प्रश्न यह उठता है कि क्या केवल २५ सहस्र पुरुष युद्ध के लिए काफी होंगे। क्योंकि नार्थम्बरलेण्ड पर भरोसा करना व्यर्थ है। न जाने उसने सेना भेजी या न भेजी।

हेस्टिंग्ज—नार्थम्बरलेण्ड के साथ मिल कर तो हम जीत सकते हैं।

ला० बार्डाल्फ—प्रश्न तो यह है कि क्या बिना उसके भी तुम जीत सकते हो? अगर उसके बिना हम निर्बल हैं तो आगे बढ़ना ही व्यर्थ है जब तक कि सहायता आ न जाय। क्योंकि ऐसे कठिन अवसर पर केवल आशा पर कमर बाँधनी उचित नहीं है।

लाट पादरी—लार्ड बार्डाल्फ! तुम सच कहते हो। क्योंकि श्रूसबरी में हौटस्पर का यही हाल हुआ।

ला० बार्डाल्फ—हाँ! महाराज! वह केवल आशा पर काम करता रहा और उसके पास बहुत ही कम सेना थी। उसने देखते हुए जानजोखो में डाल दी।

हेस्टिंग्ज—परन्तु आशा करना व्यर्थ तो नहीं होता?

ला० बार्डाल्फ—होता है। ऐसी आपत्ति के समय में केवल आशा पर काम करना ऐसा ही है जैसे वसन्त ऋतु में एक

कली को देख कर उस से फल की आशा करना। क्योंकि उस समय इतनी फल की आशा नहीं होती जितना पाला गिरने का भय होता है। जब कोई मकान बनाना चाहते हैं तो पहले हम स्थान देखते हैं फिर एक चित्र खींचते हैं। जब मकान का रूप हमारे आँख के सामने आ जाता है तो फिर खर्च का हिसाब लगाते हैं। अगर खर्च हमारे पास काफी नहीं होता तो दूसरा चित्र खींचते हैं जो कम खर्च में बन सके। या बनाना ही बन्द कर देते हैं। यह तो एक साधारण मकान का हाल है। परन्तु हम एक राज बनाना चाहते हैं। इस में इन सब बातों का और भी अधिक विचार कर लेना चाहिए। हमको अपनी निश्चित सामग्री पर भरोसा करना चाहिए। नहीं तो कागज पर केवल नाम लिखने से काम नहीं चलता। लड़ने के लिए आदमी चाहिए। उनके नाम तो लड़ नहीं सकेंगे। जो मनुष्य मकान का चित्र नहीं बना सकता है वह मकान नहीं बना सकता।

हेस्टिंग्ज—अच्छा यदि यह भी मान लिया जाय कि जिस सहायता की हम आशा कर रहे हैं वह फलीभूत न होगी। तो भी हमारे पास राजा की सेना से लड़ने के लिए काफी आदमी हैं।

ला० वार्डाल्फ—क्या राजा के पास केवल २५ हजार ही आदमी हैं?

हेस्टिंग्ज— हमारे लिए तो इतने ही हैं। या इस से भी कम। क्योंकि उसकी सेना के तीन भाग हो रहे हैं। एक फ्रांसवालों से लड़ रहा है। दूसरा ग्लेण्डोवर से लड़ने गया है। तीसरा भाग हमारे विरुद्ध आ सकता

है। इस प्रकार एक राजा के तीन हिस्से हो रहे हैं। और उसका कोश बिलकुल ख़ाली है।

लाट पादरी—तो क्या इस बात का भी डर नहीं है कि वह तीनों भागों को संयुक्त करके लड़ने आवे?

हेस्टिंग्ज़—इसका तो कुछ भी डर नहीं है। क्योंकि यदि वह ऐसा करेगा तो उसकी पीठ कमज़ोर हो जायगी। फ्रान्स और वेल्स दोनों उसके पीछे आ रहे हैं।

ला० बार्डाल्फ—राजकीय सेना का अध्यक्ष कौन है?

हेस्टिंग्ज—जौन आफ लङ्कास्टर और वैस्टमोर्लैण्ड। वेल्स के विरुद्ध वह राजकुमार हनरी को लेकर स्वयं गया है। मुझे यह पता नहीं कि फ्रान्स से लड़ने कौन गया है?

लाट पादरी—अच्छा चलने दो! अब हमको अपने शस्त्र धारण करने के कारण प्रकट कर देने चाहियें। सर्वसाधारण अपने चुनाव पर असन्तुष्ट है। उन्होंने भूल की कि बोलिङ्ग ब्रोक को राजा चुन लिया। जो मनुष्य सर्वसाधारण की इच्छा के अनुसार कार्य्य करता है वह सुख नहीं पाता क्योंकि इनमें बहुत से लोग मूर्ख होते हैं। इनका भरोसा ही क्या है? वे लोग जो रिचार्ड के जीवन में उसको मरा चाहते थे वे अब उसकी कबर पर रो रहे हैं। जिन लोगों ने एक दिन रिचार्ड के सिर पर धूल डाली थी और बोलिङ्ग ब्रोक की प्रशंसा करते थे वे आज कह रहे हैं कि हे पृथ्वी! तू आज रिचार्ड को अपने में से निकाल कर जीवित कर दे और इसको ले ले। हाय! मनुष्य भूतकाल को अच्छा समझता है और वर्त्तमान से घृणा करता है।

सब लोग एक दूसरे से पृथक् होकर अपने अपने काम में

लगे। परन्तु जो कुछ लार्ड वार्डाल्फ ने कहा था वही सच हुआ क्योंकि लार्ड नार्थम्बरलेण्ड जिसकी सहायता के भरोसे ये सब लोग युद्ध की तैयारियाँ कर रहे थे उनका साथ न दे सका। हम ऊपर कह चुके हैं कि लार्ड नार्थम्बरलेण्ड वृद्ध पुरुष था। वृद्धावस्था के कारण उसका शरीर इतना बलिष्ठ नहीं रहा था जितना युवक लोगों का हुआ करता है। इसके ऊपर शरीर की निर्बलता के अतिरिक्त मानसिक शोक ने भी उसे निराश कर रक्खा था। उसका इकलौता पुत्र हौटस्पर, जिसकी वीरता की धूम देश भर में फैली हुई थी और जिसका नाम ही वीरों को कायर बनाने के लिए काफी था, श्रूसबरी के युद्ध में हत हो चुका था। पुत्र का शोक पिता को किसी काम का नहीं छोड़ता। इसलिए नार्थम्बरलेण्ड ने यद्यपि बहुत ही कोशिश की कि लाट पादरी तथा अन्य विद्रोहियों का साथ दे परन्तु अन्त में उसे यह विचार छोड़ देना पड़ा। उसकी स्त्री लेडी नार्थम्बरलेण्ड तथा उसकी पुतोहू लेडी पर्सी दोनों ने इसी बात पर आग्रह किया कि आप लड़ाई पर न जाइए। जब नार्थम्बरलेण्ड ने अपनी स्त्री से कहा कि—

"जब मैंने प्रतिज्ञा की है तो मेरा धर्म है कि रणक्षेत्र में जाऊँ। धर्म का पालन करना उचित ही है। नहीं तो यश में धब्बा लग जायगा।"

तब लेडी पर्सी कहने लगी—"पिता जी! ईश्वर के लिए आप युद्ध में न जाइए। एक समय था जब आपकी बहुत बड़ी आवश्यकता थी। जिस समय आपका पर्सी, मेरा प्यारा पर्सी, उत्तर की ओर टिकटिकी लगाये आपकी सेना की प्रतीक्षा करता रहा परन्तु उस समय आप न जा सके। तब आप से किसने कहा था कि घर में पड़े रहें। उस समय आपका और

आपके पुत्र का दोनों का यश नष्ट हो गया। सम्भव है कि आपका यश फिर बढ़ जाय परन्तु पर्सी का यश तो हमेशा के लिए ही संसार से उठ गया। वह एक ऐसा मनुष्य था जिस को देखकर लोग वीरता की शिक्षा लेते थे। योद्धाओं के लिए तो वह एक दर्पण मात्र था जिसको देखकर वह यह जान सकते थे कि हममें कितनी वीरता है। ऐसे मनुष्य को आप ने युद्ध में अकेला छोड़ दिया, जहाँ सिवा अपने नाम के और कोई उसको सहायता करने के लिए नहीं था। ईश्वर के लिए आप दूसरों के साथ उससे अधिक कर्त्तव्य न पालिए जितना अपने पुत्र के साथ पाला है। लार्ड पादरी और मौवरे दोनों बड़े बलवान् हैं। अगर मेरे स्वामी के पास इनका फ़ौज से आधी भी होती तो आज मैं अपने प्यारे पति से हँस हँस कर राजकुमार हनरी की मृत्यु की बातें कर रही होती।

नार्थम्बर०—प्यारी बेटी! तुम मुझे मेरी पुरानी त्रुटियाँ बताकर क्यों दुःख देती हो? आज यदि मैं युद्ध में न जाऊँगा, तो कल मुझे ऐसे समय युद्ध में जाना पड़ेगा जब मुझ में इतनी भी शक्ति न होगी।

लेडी नार्थम्बर०—"मेरी राय में यह अच्छा है कि तुम स्काटलैण्ड को भाग जाओ और देखो कि लार्ड पादरी और उनके साथी क्या करते हैं।"

लेडी पर्सी—यह ठीक है। अगर इन लोगों ने राजा पर विजय पा ली तो आप भी उनमें मिल जाइए। लेकिन हमारे सब के कल्याण के लिए पहले इन लोगों को देख लीजिए। मेरा पति विना विचारे चला गया और आज मैं विधवा बैठी हुई हूँ। अब उम्र भर मैं बड़े बोल न बोल सकूँगी।

अपनी स्त्री तथा पुतोहू के बहुत समझाने पर नार्थम्बरलेण्ड का मन विचलित हो गया और वह स्काटलेण्ड को भाग गया।

चतुर्थ हनरी इस समय बीमार पड़ गया परन्तु विद्रोह-दमन के लिए उसने बहुत कुछ प्रबन्ध कर दिया था। राजकुमार हनरी ने यद्यपि श्रूसबरी के युद्ध में बड़े पराक्रम दिखाये थे। परन्तु वहाँ से आते ही वह फिर अपनी पुरानी कुसंगति में पड़ गया था। रात दिन नाच-रंग और मद्यपान में ही कटते थे। परन्तु उसके जीवन में एक विचित्रता थी। कुसंगति उसके आन्तरिक भावों पर बहुत बुरा प्रभाव नहीं डाल सकती थी। विषयासक्ति के भीतर भीतर उसका उत्तम स्वभाव भी विद्यमान था और जिस प्रकार वाह्य वायु समुद्र के ऊपरी भाग को ही विचलित कर सकती है और उसकी तह में कुछ भी हलचल उत्पन्न नहीं कर सकती, इसी प्रकार दुष्ट साथियों का संग हनरी के ऊपरी व्यवहार पर ही असर डाल सकता था। अभी उसने अपने पुराने साथियों को छोड़ा न था परन्तु श्रूसबरी के युद्ध के पश्चात् उसके जीवन में बहुत बड़ा परिवर्त्तन होने लगा था। वीरता की वह चिनगारी जिसके ऊपर कुसंग रूपी राख आ गई थी अब फिर भीतर ही भीतर सुलगने लगी। इसका पता हमको नीचे लिखे वार्तालाप से मिलेगा जो उसमें और उसके एक साथी पोइन्स में हुआ था:—

हनरी—ईश्वर की शपथ! मैं बहुत थक गया हूँ।

पोइन्स—क्या ऐसा भी होता है? मैं तो समझता था कि उच्चकुल के लोगों को थकावट नहीं होती!

हनरी—मुझे तो होती है। इससे मेरा सब उत्तम फीका पड़ गया है! क्या यह मेरा नीचपन नहीं है कि मुझे कुछ बियर (शराब) की इच्छा है।

पौइन्स—एक राजकुमार को ऐसी नीच वस्तु की सहायता नहीं लेनी चाहिए।

हनरी—मेरी इच्छाये तो इतनी उच्च नहीं हैं जितना मेरा कुल है। और मुझे लज्जा आती है।

पौइन्स—कितने राजकुमार ऐसे हैं जो अपने पिता की बीमारी में ऐसी बाते करेंगे ? जैसा कि तुम करते हो।

हनरी—पौइन्स ! क्या मैं एक बात कह दूँ ?

पौइन्स— हाँ, कोई अच्छी बात !

हनरी—तुझ जैसे लोगों के लिए अच्छी है।

पौइन्स—जाओ भी। मैं समझ गया !

हनरी—देख, कहता हूँ ! मेरे पिताजी बीमार हैं। इसलिए मुझे दु खी होना उचित नहीं है। परन्तु चाहे उचित हो या अनुचित, मुझे तो बहुत बडा दुःख है !

पौइन्स—क्या इसी कारण से ?

हनरी—अरे क्या तू यह समझता है कि मैं ऐसा ही अत्याचारी हूँ जैसा तू या फाल्स्टाफ * है। हर एक मनुष्य के अन्त को देखकर उसके सदाचार का पता लगाना चाहिए। मैं सच कहता हूँ कि पिताजी की बीमारी से मुझे बहुत बडा दु.ख है। और तुझ जैसे नीचों की सगति के कारण मैं इस योग्य नहीं रहा कि शोक का प्रकाश करूँ।'

पौइन्स—कारण ?

हनरी—अगर मैं रोऊँ तो तू क्या समझेगा ?

पौइन्स—मैं समझूँगा कि तुम अन्य राजकुमारों की भाँति कपट

*हनरी का एक साथी।

करते हो और तुम्हारा शोक केवल दिखलाने का है।

हेनरी—सब यही समझेंगे। और तू भी यही समझता है। हर मनुष्य मुझे कपटी ही कहेगा। परन्तु क्यों?

पौइन्स—इसलिए कि आप ऐसी कुसंगति में रहे।

राजकुमार हनरी यद्यपि अपनी कुरीतियों पर बहुत पछताता था और उनको छोड़ने का प्रयत्न करता था। परन्तु राजा हनरी को उसकी दशा से कुछ सन्तोष नहीं था। वह रोग तथा विद्रोह की वृद्धि के कारण क्षीण होता चला जाता था। उसे रातें जागते जागते कट जाती थीं। एक पल को भी आँख लगाना कठिन था। राज की चिन्तायें बड़ी होती हैं। इनके समान भयानक और दुखदायी संसार में और कोई चिन्ता नहीं होती। चतुर्थ हनरी इन्हीं चिन्ताओं में घुला जाता था। एक दिन रात के समय अकेला बैठा हुआ वह अपने मन में कह रहा था—

"मेरी हजारों प्रजा इस समय सो रही है। परन्तु हे नींद! हे मीठी नींद! तू मुझसे इतना क्यों डरती है कि इन पलकों को बन्द नहीं करती। और आकर मेरी इन्द्रियों को अचेत नहीं करती! तू टूटी खटियों, धुँए के घरों और बुरे वस्त्रों में तो ऐसी उत्तमता से जाती है। परन्तु सुगन्धयुक्त कमरों, बड़े आदमियों के बहुमूल्य बिस्तरों और सुरीले राग के मध्य में क्यों नहीं आती? दरिद्र आदमियों के मैले कुचैले वस्त्रों में तो तुझे इतना अच्छा लगता है परन्तु राजाओं के महल तुझे प्यारे नहीं हैं। हे नींद! तूफान के समय समुद्र के बीच में तू मल्लाह के लड़के की आँखों में मस्तूल के सिरे पर बैठे हुए भी शीघ्र आ जाती है। हे नींद! तू ऐसी आपत्ति के समय दरिद्रों को झट आनन्ददायक हो जाती है परन्तु एक राजा को अच्छे

महल में आकर भी नहीं सुला सकती। शान्त दरिद्र लोग चैन से सोते हैं और मुकुटमय सिर बिना नींद के बेचैन है।

इस अशान्ति के समय में वारिक और सरे दो भद्र पुरुष वहाँ पर आये और प्रणाम किया। राजा ने पूछा, "क्या समय है?"

वारिक—एक बज चुका।

राजा—क्या आपने हमारे पत्र पढ़े?

वारिक—हाँ पढ़ लिये।

राजा—तो तुमने देखा? हमारे राज्य का शरीर कैसा पीडित है। कैसे कैसे रोग इसे लग रहे हैं और कैसे भयानक रोग हैं?

वारिक—इस शरीर में रोग अभी उत्पन्न हो गया है और इसकी चिकित्सा हो सकती है, यदि औषध दी जाय। लार्ड नार्थम्बरलेण्ड तो ठंडा हो जायगा।

राजा—हे ईश्वर! अगर हम अपने कर्मों की पुस्तक को पढ़ सकते! और समय का परिवर्त्तन देख सकते। एक समय ऊँचे से ऊँचे और कठोर से कठोर पर्वत भी पिघलकर समुद्र में मिल जाते हैं। दूसरे समय इसके विपरीत होता है। हाय! यह समय एक सा नहीं रहता। अगर हम जवानी में जान सकते कि हमको किस प्रकार क्या क्या सफलतायें होंगी और फिर क्या क्या दुःख भोगने पड़ेंगे? क्या क्या आपत्तियाँ पड़ेंगी। तो हम अपने जीवन रूपी ग्रन्थ को उसी समय बन्द कर देते और समाप्त हो जाते। अभी दस वर्ष की बात है कि रिचार्ड और नार्थम्बरलेण्ड में बड़ी मित्रता थी और सहभोज में सम्मिलित होते थे। दो वर्ष पीछे उन दोनों में लड़ाई

हो गई। आठ वर्ष हुए कि पर्सी हॉटस्पर मुझे बड़ा प्यारा था। उसने भाई के समान मेरी सेवा की और अपना धनधान्य मेरे पगों पर रख दिया। केवल मेरे ही हित के लिए रिचार्ड का सामना किया। वारिक! उस समय तुम में से कौन निकट था जब नार्थम्बरलेण्ड को गालियों पर आँसू भर कर रिचार्ड ने भविष्यद्वाणी कही थी जो आज सच हो गई कि "नार्थम्बरलेण्ड तू सिड़ी है जिसके द्वारा बोलिङ्ब्रोक मेरी गद्दी तक पहुँचा है। परन्तु समय आवेगा जब पाप बढ़ता बढ़ता फूट निकलेगा।" उसने जो कुछ कहा था वह आज सब ठीक निकला।

वारिक—महाराज! यह तो हुआ ही करता है। लोग अपने चारों ओर की दशा को देखकर कह बैठते हैं। यही रिचार्ड ने भी कहा। वह जानता था कि जब नार्थम्बरलेण्ट ने मुझसे कपट किया है तो दूसरों के साथ भी करेगा।

राजा—क्या यह ऐसे ही हुआ करता है? अच्छा तो हमको इसका सामना करना चाहिए। सुना जाता है कि लाट पादरी और नार्थम्बरलेण्ड की सेना मिलकर पचास हजार है।

वारिक—ऐसा नहीं हो सकता। लोग झूठमूठ उड़ा देते हैं। मुझे तो विश्वास है कि जो सेना आपने भेजी है वह विजय पायेगी। आपको एक सन्तोषजनक बात सुनाता हूँ कि ग्लेण्डोवर की मृत्यु हो गई। अब आप से हम आज्ञा चाहते हैं। आपको १४ दिन बीमार हुए हो गये और इस समय बड़ा कष्ट हुआ होगा।

राजा—अगर एक वार यह झगडे देश से मिट गये होते तो हम पवित्र भूमि (फलस्तीन) को चले गये होते।

राजा तो रोग में अपने दिन काटता रहा परन्तु उसकी सेना जौन आफ लंकास्टर और लार्ड वैस्टमोर्लैण्ड के आधिपत्य में विद्रोहियो को दण्ड देने के लिए यार्क की ओर बढ़ी। यहाँ लाट पादरी, मौवरे और हेस्टिंग्ज अपनी अपनी सेना को लेकर आये हुए थे और लार्ड नार्थम्बरलेण्ड की प्रतीक्षा कर रहे थे। उनको मालूम नहीं था कि नार्थम्बरलेण्ड स्काटलेण्ड को भाग जायगा। यदि नार्थम्बरलेण्ड आ जाता तो शायद विद्रोहीगण अपने प्रयोजन की सिद्धि में सफल हो जाते क्योंकि नार्थम्बरलेण्ड एक वीर पुरुष था। परन्तु जब उन्होंने सुना कि उनका वीर साथी अपने निज दु:खों से दु:खित होकर स्काटलेण्ड भाग गया है तब उनकी बाँह टूट गई और वे निराश हो गये। परन्तु रणक्षेत्र में आकर लडे विना हो ही क्या सकता था। यह बात सम्भव न थी कि भाग जाने से बच सकते। न यह हो सकता था कि राजा से सन्धि कर सके। इसलिए मजबूर होकर फिर लडाई पर कमर बाँधी।

थोडी देर पीछे लार्ड वैस्टमोर्लैण्ड बातचीत करने के लिए लाटपादरी के पास आया और कहा—

"भगवन्, मुझे, आपके समीप राजकुमार जौन ने भेजा है।"

लाट पादरी—कहिए आप क्या चाहते हैं?

वैस्टमोर्लैण्ड—भगवन्! सरांश यह है कि यदि मूर्ख छोकरे ही अपनी दुष्टता तथा अविद्या के कारण इस विद्रोह के उत्पादक होते तो आप जैसे महात्मा और लार्ड हेस्टिंग्ज जैसे योग्य पुरुष इस प्रकार सेना-युक्त होकर शान्ति-भङ्ग में सम्मिलित न होते। लाट पादरीजी महाराज! आपके

प्रान्त में सब प्रकार कुशल है। आप शान्तिपूर्वक इस वृद्धावस्था को पहुँच गये हैं। आपके श्वेत वस्त्रों से पूर्ण शान्ति का प्रकाश होता है। आपकी विद्या और बुद्धि शान्ति के द्योतक हैं। फिर समझ में नहीं आता कि आप जैसे सज्जन महात्मा ने अपने शान्ति-सूचक चिह्नों को अशान्तिद्योतक वस्तुओं में क्यों बदल दिया है। धर्मग्रन्थों की जगह कवच, स्याही की जगह रक्त, लेखनी की जगह कृपाण, और धर्मोपदेश के स्थान में युद्ध की तुरही लेने से आपका न जाने क्या प्रयोजन है?

लाट पादरी—मैंने ऐसा क्यों किया? इसका स्पष्ट उत्तर यह है हम सब रोगग्रसित हैं और एक बड़े भयङ्कर ज्वर में सतप्त हो रहे हैं इसलिए आवश्यकता यह है कि हमारा रक्त-मोचन (फ़सद) किया जाय। इसी रोग से पीड़ित होकर हमारा योग्य राजा रिचार्ड मर गया। हमने भले प्रकार विचार लिया है कि हमारे शस्त्र क्या कर सकते हैं अथवा हमको क्या हानि पहुँच सकती है। जब हम अपने दोषों और अपने दुःखों की तुलना करते हैं तो हमको दोषों की अपेक्षा दुःख अधिक प्रतीत होते हैं। हम देख रहे हैं कि कालचक्र किस प्रकार फिर रहा है। हम शस्त्र धारण करने के लिए मजबूर हो गये हैं। क्या करें? हम शिकायत करते हैं तो सुनी नहीं जाती। हम को सताया जाता है और फिर हमारी वाणी बन्द की जाती है। हम यहाँ शान्ति-भङ्ग के लिए नहीं आये किन्तु शान्ति-स्थापन के लिए आये हैं। क्योंकि हम देखते हैं कि चारों ओर शान्ति-भङ्ग हो रहा है।

वैस्टमो०—महाराज ने आपकी अपील कब नहीं सुनी जो आज आपने विद्रोह मचाया ?

लाट पादरी—सर्वसाधारण को कष्ट पहुँच रहा है !

वैस्ट०—इससे आप का क्या सम्बन्ध है ?

मावर०—क्यों नहीं ? यह हमारा कर्तव्य है।

वैस्ट०—लार्ड मौवरे, यदि आप विचार करेंगे तो मालूम होगा कि इन कष्टों का कारण समय है न कि राजा। रहे आप, आप को तो किसी तरह विद्रोह करने का अवसर नहीं है। क्योंकि राज की ओर से आपको नार्फाक* की सब जागीर मिल चुकी है जो आप के पिता के अधिकार में थी।

मौवरे—मेरे पिता ने कौन सी चीज नष्ट कर दी थी जो मुझे मिल गई ? राजा रिचार्ड मेरे पिता को बड़ा प्यार करता था। यह तो समय की बात थी कि उसे देश से निकलना पड़ा। अगर रिचार्ड उनको लड़ने से न रोक देता तो बोलिङ्ग ब्रोक और मेरे पिता के युद्ध में सब बात निश्चित हो चुकी थी।

वैस्टमोर०—लार्ड मौवरे ! आप बेसमझे बूझे कह रहे हैं। बोलिङ्ग ब्रोक को उस समय भी सब लोग स्नेह की दृष्टि से देखते थे। परन्तु मैं क्या कहने आया था और क्या कह रहा हूँ ? राजकुमार जौन ने मुझे यहाँ इसलिए भेजा है कि आपको क्या क्या शिकायतें हैं। यदि वे उचित हुईं तो अवश्य सुनी जायँगी और उनके दूर करने का उपाय किया जायगा !

---

* मौवरे उस लार्ड नार्फाक का लड़का था जिसे द्वितीय रिचार्ड ने बोलिङ्ग ब्रोक के साथ देश से निकाल दिया था।

मौवरे—परन्तु यह राजकुमार की नीतिज्ञता है। इससे प्रेम प्रतीत नहीं होता।

वैस्ट०—यह बात नहीं है। राजकुमार ने यह बात भय से नहीं कही किन्तु दयाभाव ने उसे प्रेरित किया है। हमारी सेना आपकी सेना से अधिक बलवती है। हमारे सैन्य-गण आपके सिपाहियों से अधिक सुशिक्षित हैं। इन सब के अतिरिक्त हमारा उद्देश बड़ा उत्तम है।

मौवरे—चाहे कुछ हो, हम सन्धि करने के लिए उद्यत नहीं हैं।

वैस्ट०—इसी से तो आपका दोष मालूम होता है।

हैस्टिंग्ज़—क्या राजकुमार को उसके पिता ने पूर्ण अधिकार दे दिया है कि जो कुछ वह निश्चय करेंगे वही स्वीकृत होगा?

वैस्ट०—यह तो स्पष्ट ही है। न जाने आप ऐसे तुच्छ प्रश्न क्यों करते हैं?

लार्ड पादरी—अच्छा लार्ड वैस्टमोरलैण्ड, आप यह नियमावली ले जाइए। यदि राजकुमार इन नियमों को अङ्गीकार करले तो हम शान्त हो जायँगे।

लार्ड वैस्टमोरलैण्ड तो नियमावली को लेकर चला गया। अब मौवरे कहने लगा।

"मेरा अन्तःकरण कह रहा है कि सन्धि नहीं हो सकती।"

हैस्टिंग्ज—अगर इन नियमों को मान लिया गया तो हमारी सन्धि अटूट है।

मौवरे०—नहीं नहीं! अगर इस समय मेल भी हो गया तो क्या? राजा छोटी छोटी बातों पर फिर छेड़छाड़ करेगा और हमारे स्नेह से भी शत्रुता समझी जायगी।

लार्ड पादरी—यह बात नहीं है। राजा अब तंग आ गया है।

अगर वह एक शत्रु को मारता है तो उसके स्थान में दो खडे हो जाते हैं, मित्र और शत्रु। कुछ इस प्रकार मिले-जुले हैं कि यदि एक शत्रु को दण्ड दिया जाता है तो मित्र भी शत्रु हो जाते हैं।

हेस्टिंग्ज़—इसके अतिरिक्त एक यह भी बात है कि पुराने विद्रोहियों को दण्ड देते देते उसमें शक्ति इतनी नहीं रही है।

लाट पादरी—इसलिए मुझे आशा है कि हमारे नियम मान लिए जायँगे।

जिस समय ये बातें हो रही थीं लार्ड वेस्टमोर्लैण्ड और राजकुमार जोन बातचीत करने के लिए वहाँ पर आ गये। और आपस में प्रणाम आदि शिष्टाचार होने के पश्चात् जौन ने कहा—

"लाट पादरीजी! आप तो उस समय अच्छे मालूम होते थे, जब घण्टा बजते ही लोग चारों ओर से गिरजे में इकट्ठे होते थे और आप उनको ऐश्वरीय ग्रन्थों से धर्मोपदेश करते थे। आपको शास्त्र के स्थान में शस्त्र और जीवन के स्थान में मृत्यु को धारण करना शोभा नहीं देता। कौन नहीं जानता कि आप धर्मशास्त्रों में बड़े निपुण थे? आप हमारे पापों और परमात्मा के सम्बन्ध का एक द्वार थे। आप से ही हम लोग धर्मोपदेश ग्रहण करते थे। आप उसी शक्ति का अब अनुचित व्यवहार कर रहे हैं और अपने धार्मिक नाम [illegible] रहे हैं। आप ईश्वर के [illegible] अर्थात् [illegible] की प्रजा को झूठमूठ [illegible] पर [illegible] और उनकी शान्ति को [illegible]

लाट पादरी—लार्ड [illegible]

भङ्ग के लिए [illegible]

करता है कि हम अपनी रक्षा के लिए यत्न करें। मैंने वैस्टमोर्लैण्ड के हाथ आपके पास अपनी शिकायतें भेजी थीं जिनके कारण यह झगडा मचा हुआ है। आप हमारी शिकायतें दूर कीजिए और हम मानते हैं।

मौबरे—अगर नहीं तो फिर युद्ध ही निश्चय करेगा।

हेस्टिंग्ज—और चाहे हमारे प्राण ही क्यों न जायँ हम कोशिश करेंगे। अगर हम मर गये तो हमारे साथी लडेंगे। अगर वे भी मर गये तो उनके साथी लडेंगे और इस प्रकार वैफल्य द्वारा सफलता प्राप्त होगी। और जब तक इस देश में वंश स्थित रहेंगे यह झगडा चला जायगा।

जौन०—हेस्टिंग्ज! तुम तो बडे उथले हो। फिर भविष्यत् की गम्भीर बातें कैसे जान सकते हो?

वैस्ट०—महाराज! नियमों को निश्चय कीजिए। क्या आपको स्वीकृत हैं?

जौन०—ये सब मुझको स्वीकृत हैं। ये सब अच्छे हैं। मैं इनको मानता हूँ। मैं बलपूर्वक कहता हूँ कि पिताजी का आशय समझने में भूल हुई है। जो शिकायतें आपने प्रजा की ओर से की हैं वे सब दूर की जायँगी। मैं धर्म-पूर्वक कहता हूँ। मैं सत्य कहता हूँ। मैं ईश्वर को साक्षी देकर प्रतिज्ञा करता हूँ।

राजकुमार की यह प्रतिज्ञा सुन कर सब राजी हो गये। लाट पादरी, मौबरे, हेस्टिंग्ज आदि ने राजकुमार का हस्त-चुम्बन किया और सब लोग मित्र की भाँति बातचीत करने लगे। लाट पादरी की आज्ञा पाकर हेस्टिंग्ज ने अपनी सेना को अपने अपने घर भेज दिया और यह निश्चय हुआ कि उस रात राजकुमार के साथ मिलकर सब लोग सहभोज करेंगे।

परन्तु राजकुमार के आत्मा में कपट की छुरी चल रही थी। वह इन लोगों को फाँसना चाहता था। ज्यों ही उसने देखा कि मौबरे आदि की सेना रणक्षेत्र में नहीं है, वेस्टमोलैंण्ड से कह कर उसने लाट पादरी, लार्ड मौबरे और लार्ड हेस्टिंग्ज़ तीनों को कैद कर लिया। कैद होते ही इन लोगों की आँखें खुलीं। उस समय उन को मालूम हुआ कि मौबरे ने जिस बात की ओर ऊपर संकेत किया था वह ठीक निकली और मेल करने में धोखा होगया। मौबरे कहने लगा, "क्या यह धार्मिक व्यवहार है?"

वेस्टमोलैंण्ड ने उत्तर दिया, "क्या तुम्हारा धार्मिक समुदाय है?"

लाटपादरी ने कहा, "तुम अपनी प्रतिज्ञा का भङ्ग करते हो?" इस पर राजकुमार ने उत्तर दिया :—

"जो प्रतिज्ञाएं मैंने की हैं उनका अवश्य पालन होगा। मैंने तुम से कोई प्रतिज्ञा नहीं की। मैंने प्रजा के दुःख दूर करने की प्रतिज्ञा की है सो वे दूर किये जायँगे। परन्तु तुमको राजविद्रोह के अपराध में पकड़ा गया है। उसका दण्ड तुम्हें अवश्य भोगना है।"

अब कहने से क्या होता था लोकोक्ति है कि 'अब पछताये कहा होत जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत'। जो जो मुखिया विद्रोही थे वे सब के सब पकड़ कर लन्दन भेज दिये गये और उन में से एक भी न बचा।

इधर यार्क के लाट पादरी का तो यह हाल हुआ। उधर लार्ड नार्थम्बरलैण्ड और लार्ड वार्डाल्फ की भी राजकीय सेना से मुठभेड हो ही गई और वहाँ ये अकेले पराजय के सिवा और कुछ प्राप्त न कर सके। लार्ड नार्थम्बरलैण्ड मारा गया।

इस तरफ राजकुमार विद्रोह-दमन में लगे हुए थे। उस तरफ राजा हनरी का रोग उन्नति कर रहा था। परन्तु उसके मन में पवित्रभूमि के जीतने की अभिलाषा विद्यमान थी। वह एक दिन वैस्टमिनिष्टर के महल में बैठा हुआ कई भद्रपुरुषों के साथ इसी विषय पर वार्तालाप कर रहा था कि ज्यों ही विद्रोह मिट जाय वह फलस्तीन जाने की तैय्यारियाँ कर सके। इस उद्देश की पूर्त्ति के लिए उसने जहाज बनवा लिये थे। सेना भी एकत्रित हो रही थी। उसी समय युवराज हनरी के विषय में भी राजा कुछ विचार प्रकट कर रहा था। जब उसे मालूम हुआ कि हनरी अपने दुष्ट साथियों के सहित लन्दन की सैर कर रहा है तब उसे बहुत खेद हुआ और वह कहने लगा, "देखो! मेरा पुत्र इस प्रकार अपना जीवन व्यतीत कर रहा है, और राजवंशी कार्य्यों को छोड़ कुचालों में फँस रहा है।" उसी समय वैस्टमोलेण्ड ने आकर निवेदन किया कि मौबरे, हेस्टिंग्ज और यार्क का लार्ड पादरी सब के सब कैद कर लिये गये।

यह सुन कर उसे बड़ी खुशी हुई परन्तु पूर्ण रीति से अभी इसका प्रकाश भी न होने पाया था कि हार्कोर्ट ने आकर सूचना दी कि "महाराज! नार्थम्बरलेण्ड भी मारा गया!"

अब क्या था? चतुर्थ हनरी के लिए चारों ओर हर्ष ही हर्ष था। आँख उठा कर देखने से उसे देश भर में अपना शत्रु दिखाई नहीं पड़ता था। अब उसके लिए संसार आनन्द से पूर्ण दृष्ट पड़ने लगा। परन्तु राजा का स्वास्थ्य इस योग्य न था कि इतने आनन्द के भार को सहन कर सके। वह ऐसी हर्षसूचक खबरों को सुनते ही मूर्छा खा कर गिर पड़ा। अन्य राजकुमार जो उस समय वहाँ पर उपस्थित थे घबरा गये। इतने में युवराज हनरी आ गया और राजा

को इस दशा में देख कर उसके पास बैठ गया। दूसरे लोगों ने समझा कि शायद राजा को नींद आ गई है। इसलिए वे युवराज को राजा के पास छोड़ कर चले गये।

युवराज हनरी ने अपने पिता के राजमुकुट को उसके बिस्तर के पास रक्खा हुआ देख कर उठा लिया और उसको सम्बोधित कर के मन में कहने लगा।

"मुकुट! तू यहाँ क्यों रक्खा है? तू एक रोगी मनुष्य का बड़ा दु:खदायी साथी है। हे स्वर्णरूपचिन्ता तेरे ही कारण लोग रातों जागते हैं। तेरे साथी को दरिद्र पुरुष के बराबर भी मीठी नींद नहीं आती।"

फिर उसने राजा को पुकारा "पिताजी! पिताजी!"

जब राजा ने कुछ भी उत्तर नहीं दिया तब उसने समझा कि राजा मर गया और राजमुकुट को अपने सिर पर रख कर वहाँ से चल दिया।

युवराज के कमरा छोड़ते ही राजा की आँख खुल गई। वह कुछ होश में आ गया और अपना राजमुकुट को पास न देखकर बड़ा दुखी हुआ। उसने लोगों को बुलाया और इसका हाल पूछा। उन्होंने उत्तर दिया कि "महाराज! हम युवराज को यहाँ छोड़ गये थे।"

यह सुनकर राजा कहने लगा, "वही ले गया है, वही ले गया है। देखो देखो, उसे लाओ। क्या उसे इतनी जल्दी है कि उसने नींद को मृत्यु समझ लिया। हाय! यह दु:ख रोग के साथ मिलकर मुझे शीघ्र ही समाप्त कर देगा। देखो, लड़को! तुम क्या हो? तुम्हारी आँख कितनी जल्दी बदल जाती है? स्वर्ण को देखकर तुम कैसे ललचाते हो? इसी स्वर्ण के लिए मूर्ख पिता इतनी चिन्ता किया करते हैं और इसके

उपार्जन में इतना परिश्रम करते हैं। इसीलिए वे अपने पुत्रों को विद्या पढ़ाते और शिक्षा देते हैं। हम शहद की मक्खियों की तरह परिश्रम करते हैं और उन्हीं की तरह मारे जाते हैं।"

उस समय एक मनुष्य ने आ कर कहा—

"महाराज! राजकुमार दूसरे कमरे में रो रहा है।"

राजा—तो यह मुकुट क्यों उठा ले गया था?

इतने में युवराज आ गया। राजा ने सब को अपने पास से हटा दिया और जब बाप बेटे इकट्ठे हुए तब राजकुमार ने कहा, "महाराज! मैं समझता था कि आप अब कभी न बोल सकेंगे।"

राजा—तुम्हारी अभिलाषा तो यही थी। बेटा! मैं बहुत जिया, बहुत जिया! मैंने तुझे थका दिया! क्या तू मेरी कुर्सी पर बैठने का ऐसा इच्छुक है कि अपना समय आने से पहले ही बैठना चाहता है। मूर्ख युवक! तू अभी से उस भार को लेना चाहता है जिसका सहन करना तेरे लिए कठिन होगा। थोड़ी देर ठहर क्योंकि मेरे दिन पूरे हो चुके। तूने ऐसी चीज चुरा ली जो थोड़ी देर पीछे तेरी ही थी। तेरे जीवन से प्रकट होता था कि तू मुझसे स्नेह नहीं करता अब क्या तू अन्त समय इसका अधिक निश्चय कराना चाहता है? न जाने तेरे हृदय में कितनी तलवारें छिपी हुई थीं जिनको मार कर तूने आध घण्टे के लिए मेरा प्राणान्त कर दिया। ऐसा ही है तो जा और मेरी कबर तैयार करा! अपने राजा होने की ख़बर मेरे मरने से पहिले ही मशहूर कर दे! जिस शरीर ने तुझे जीवन दिया था उसे राख में मिला दे। मेरे नौकरों को हटा दे। मेरे नियमों को तोड़ दे। क्योंकि अब पंचम हनरी राजा हो गया।"

युवराज ने पैरों पड़कर रोते हुए कहा—

"पिताजी! क्षमा कीजिए। क्षमा कीजिए। शोक के मारे मेरी वाणी रुक गई है। मैं कह नहीं सकता, नहीं तो आपको इतना कुपित न होने देता। आपका मुकुट यह है। वह सर्वशक्तिमान् जो सदा के लिए राजमुकुट पहिनता है, इस मुकुट को बहुत दिनों तक आप के सिर पर रक्खे! यदि मैं इसको आप से अधिक चाहता हूँ तो ईश्वर मुझे नष्ट करे। श्रीमन्, जब मैं यहाँ आया और आपको मृत देखा तो इस मुकुट को देख कर मैं यह कहने लगा, 'तेरी चिन्ता ही पिताजी के देहान्त का कारण हुई। इसलिए उत्तम धात का होते हुए भी तू निकृष्ट है। ऐसा उत्तम, ऐसा प्रसिद्ध, ऐसा शुभ होते हुए भी तू अपने ओढनेवाले को खा जाता है।' इस प्रकार कहते हुए, पिता जी, मैंने इसे अपने सिर पर रख लिया। मैंने उस समय उसे अपना शत्रु और पिता का घातक समझा। अगर मुझे इस को पहिनते हुए नाममात्र भी हर्ष हुआ हो तो ईश्वर मुझे कभी राज न दे।"

इस विनयमूलक निवेदन को सुनकर पिता का हृदय पिघल गया। और जो कोप अब तक उसके चेहरे से प्रकाशित होता था जाता रहा। वह कहने लगा—

"बेटे, शायद ईश्वर ने मुकुट ओढने की प्रेरणा तेरे हृदय में इसीलिए की हो कि तेरी ओर से मेरे हृदय में अधिक प्रेम उत्पन्न हो गया। अब मेरे पास आ और मुझ से एक शिक्षा ग्रहण कर। ईश्वर जानता है कि किस किस छल कपट से मैंने राजमुकुट को प्राप्त किया और मै ही जानता हूँ कि इसकी रक्षा में मुझे क्या क्या कठिनाइयाँ उठानी पड़ीं। तुझे इतनी मुश्किलें न होंगी, क्योंकि मेरा दोष मेरे साथ जाता है। तू

युवराज है इसलिए तुझे तो यह प्राप्त ही है। तेरा बाप राजा था इसलिए तू उसका उत्तराधिकारी है। मेरा बाप राजा नहीं था इसलिए मेरा अधिकार राज के ऊपर कुछ भी नहीं था। परन्तु यद्यपि तू राज का अधिकारी है लेकिन अभी तक हमारे राज की जड़ मजबूत नहीं हुई है। मेरे वे सब मित्र, जो तेरे भी मित्र हैं, अभी निर्बल नहीं हुए हैं, और उन से हम को बहुत डर है। मैंने चाहा था कि पवित्र भूमि का युद्ध छेड़ कर उनका चित्त उधर को आकर्षित कर दूँ, क्योंकि मैं जानता हूँ कि यदि वह लोग खाली रहेंगे तो अवश्य हमारे उतारने की कोशिश करेंगे। इसलिए हनरी, तुझे उचित है कि इन चिन्तामग्न मनों को विदेश के युद्ध की ओर लगा देना चाहिए। क्योंकि जब ये लोग अन्य देशीय विजय-पराजय में लगे रहेंगे तब प्राचीन राजद्वेष को भूल जायँगे। इसके अतिरिक्त मैं और भी बहुत कुछ कहना चाहता हूँ, परन्तु अब मेरी शक्ति क्षीण हो रही है।"

यह कहते कहते उसकी ज़ुबान बन्द हो गई और कुछ काल पीछे उसका देहान्त हो गया।

चतुर्थ हनरी की मृत्यु पर उसका लड़का पञ्चम हनरी गद्दी पर बैठा। उसने राजमुकुट धारण करते ही अपने जीवन में बहुत बड़ा परिवर्तन कर दिया। जितने उसके दुष्ट और अत्याचारी साथी थे उनका साथ उसने छोड़ दिया और उनको इतना धन दे दिया जिससे वह अपना साधारण रीति से निर्वाह कर सकें और लूट मार न करें।

पञ्चम हनरी अपने समय का बड़ा शक्तिशाली और न्यायकारी राजा हुआ है। उसके बचपन की अवस्था से कोई यह

नहीं जानता था कि वह इस उत्तमता से राज करेगा। उसके पिता को मरण-पर्य्यन्त अपने पुत्र की ओर से चिन्ता ही रही। उसके साथियों की दुष्टता से देश भर को घृणा थी। परन्तु उसके महत्त्व का सूर्य्य खेल कूद के बादलों में छिपा हुआ था और कभी कभी उसकी झलक दिखाई पड जाती थी जैसा कि श्रूसबरी के युद्ध से विदित होता है। परन्तु जब उसको राजगद्दी मिली तब उसके साथ ही उसमें गम्भीरता भी आ गई और इस सूर्य की किरणें बडे तेज के साथ चमकने लगीं।

इस महत्त्व का एक दृष्टान्त यहाँ दिया जाता है। अपने पिता के जीवनसमय में हनरी ने एक जज के किसी तुच्छ बात पर एक थप्पड मारा। जज ने बिना युवराज के पद पर विचार किये हुए नियमानुसार उसे कैद कर दिया। चतुर्थ हनरी इस बात से बडा प्रसन्न हुआ। और कहा, "मैं धन्य हूँ, कि मेरा एक नौकर अपने नियम का इस उत्तमता से पालन करता है।"

जब पञ्चम हनरी गद्दी पर बैठा तब इस जज को बहुत भय मालूम होने लगा कि कहीं राजा मेरे इस व्यवहार पर मुझे दण्ड न दे। जब राजा ने पूछा—

"मैं समझता हूँ कि तुमको इस बात का निश्चय हो गया है कि मैं तुमको नहीं चाहता।"

जज—जहाँ तक मैं जानता हूँ, कोई ऐसा उचित कारण नहीं है कि आप मुझसे घृणा करें।

राजा—हाँ! क्या मुझे अपने उस अपमान का खयाल नहीं है? क्या एक राजकुमार इस प्रकार के अनुचित व्यवहार को भूल सकता है?

जज—उस समय मैंने वही किया था जो मुझे कर्त्तव्य था। मैं आपके पिताजी का स्थानापन्न था। इसलिए आपने मेरा

अपमान करने में अपने पिता का अपमान किया इसलिए मैंने दण्ड दिया। इसमें कोई अनुचित बात नहीं है। आज आप राजा हैं। यदि आपका पुत्र ऐसा ही अनुचित व्यवहार करे तो आप मुझे क्या करने की आज्ञा देंगे?

राजा इस उत्तर से बहुत प्रसन्न हुआ और उसको अच्छे पद पर नियत किया। शेक्सपियर ने पञ्चम हनरी नामक नाटक में उसकी वीरता का हाल लिखा है जिसका वर्णन दूसरी कहानी में किया जायगा।

पञ्चम हनरी

(HENRY V.)

पञ्चम हनरी अपने पिता चतुर्थ हनरी की मृत्यु के उपरान्त १४१३ ई० में इङ्गलैण्ड का राजा हुआ। चौथे हनरी का वर्णन करते हुए हम लिख चुके हैं कि बचपन में यह किस प्रकार अनुचित व्यवहार में अपना जीवन व्यतीत करता था और अपने पिता के मरते ही उसने किस प्रकार अपना ढङ्ग बदल दिया। परन्तु उसके शत्रुओं को यह विदित नहीं था कि हनरी इतनी जल्दी सुधर जायगा। समस्त इग्लैण्डनिवासियों को यह देख कर बड़ा आश्चर्य होता था कि राजा ने अपने जीवन में आशातीत उन्नति कर डाली। उसकी वीरता से उसके शत्रु दंग रह गये। उसके गौरव से उसके मित्रों को आश्चर्य होने लगा। साराश यह है कि जो काम उसने किया विचित्र ही किया।

हनरी के गद्दी पर बैठने के थोड़े ही दिनों पश्चात् पार्लियामेण्ट का ऐसा विचार हुआ कि धर्ममन्दिरों से लगी हुई जायदाद को लेलेना चाहिए। उस पर एली के लाट पादरी और कैण्टरबरी के लाट पादरी में परस्पर विचार हुआ कि किस प्रकार राजा को ऐसा करने से रोकना चाहिए। कैण्टरबरी ने कहा—

"श्रीमन्! अब फिर वही नियम राजसभा में प्रविष्ट हुआ है जो पिछले महाराज के राज्य के ग्यारहवें वर्ष में हमारे

विरुद्ध पास हुआ था। परन्तु लड़ाई झगड़े के कारण उसका पालन न हो सका।"

ऐली०—परन्तु अब क्या करना चाहिए?

कैण्टरबरी—इसका कुछ उपाय सोचना चाहिए। अगर यह नियम पास हो गया तो हमारी आधी से अधिक जायदाद हाथ से निकल जायगी। क्योंकि जो जो जायदाद लोगों ने धर्म से प्रेरित हो कर दान कर दी है वह सब हम से चली जायगी। राजा के हाथ इस नियम के अनुसार इतना रुपया लग जायगा जो ५ जागीरदारों तथा १५०० सरदारों के रखने के लिए काफी होगा। इसके अतिरिक्त १५००० रुपया साल राजा को और मिलेगा।

ऐली०—इस से तो हम सब का सर्वनाश ही हो जायगा। परन्तु अब क्या करना चाहिए?

कैण्टरबरी—राजा बड़ा योग्य और दयालु है।

ऐली०—और धर्म का श्रद्धालु भी।

कैण्टर०—उसके लड़कपन से तो यह नहीं मालूम होता था। ज्योंही उसके पिता के प्राण शरीर से बाहर हुए त्योंही उसका उजड्डपन नष्ट हो गया। उसी समय समस्त दोष जाते रहे और उसका शरीर दोष निर्मुक्त आत्मा के लिए स्वर्गधाम हो गया।

ऐली०—यह परिवर्त्तन तो बहुत ही अच्छा हुआ।

कैण्टर०—जब वह धर्म की बातें करता है तब मालूम होता है कि कोई पादरी है। जब राजनीति पर विचार करता है तब जान पड़ता है कि यह आयुभर यही करता रहा है। युद्ध की बातें करने से विदित होता है कि यह एक बड़ा

वीर पुरुष है। जो कोई कठिन से कठिन बात कहिए वह झट उसे सरल कर देता है।

ऐली०—बहुधा ऐसा देखने में आता है कि बेर काँटों में उत्पन्न होते हैं और अनेक उत्तम फल बुरे फलों के साथ साथ उगते हैं। इसी प्रकार राजा की विचारशक्ति अब तक उजड्डता के नीचे छिपी हुई थी जो ग्रीष्म ऋतु की घास के समान छिपे छिपे रात के समय अधिक बढ़ रही थी।

कैण्टरबरी—हाँ ऐसा ही होगा।

ऐली०—पर, भगवन्! इस नियम के रोकने का क्या उपाय करना चाहिए? क्या महाराज इसकी ओर झुके हुए हैं?

कैण्टरबरी—नहीं! वह तो हमारे पक्ष में मालूम होते हैं। क्योंकि हमने धर्म*संस्था (Church) की ओर से बहुत बड़ा धन फ्रान्स विजय के लिए भेंट करना चाहा था।

ऐली०—क्या राजा ने वह भेंट स्वीकार करली?

कैण्टरबरी—स्वीकार करने की तो उनकी इच्छा थी। परन्तु उस समय फ्रान्स देश के एलची आ गये और अधिक बातें करने का अवसर नहीं मिला।

फ्रान्स के दूतों की ओर जो संकेत लार्ड कैण्टरबरी के कथन में किया गया है, उसकी कथा इस प्रकार से है कि चौथे हेनरी के पितामह तीसरे एडवर्ड ने छठे फिलिप के समय में

*इंग्लैण्ड में धर्म संस्था अर्थात् ईसाई चर्च राजसभा से बिलकुल अलग है। उसमें उसी प्रकार कार्य्यकर्ता नियत होते हैं जिस प्रकार अन्य राज-पुरुष, जैसे कमिश्नर, कलक्टर आदि। धर्मसंस्था की जायदाद भी अलग होती है।

फ़ान्स देश के राज्य का दावा किया था। क्योंकि तीसरे एडवर्ड की माता इजाविला फ्रान्स नरेश तीसरे फिलिप की पोती थी और इजाविला का पिता चौथा फिलिप, छठे फिलिप के पिता चार्लस का बडा भाई था। इसलिए इग्लैएड के राजनियमानुसार बडे भाई की सन्तान के जीते जी छोटे भाई की सन्तान राज्य नहीं कर सकती। यह बात नीचे की वशावली से मालूम होगी।—

फ्रान्स नरेश तीसरा फिलिप

४-था फिलिप — चार्लस वलोइस

(४-था फिलिप की सन्तान:) लूइ १०-वा, फ़िलिप ५-वा, चार्लस ४-था, इजाविला

(चार्लस वलोइस की सन्तान:) फ्रान्स का ६ ठा फिलिप

(इजाविला की सन्तान:) इङ्गलैएड का ३-रा एडवर्ड

फ्रान्स वाले एडवर्ड के इस अधिकार को स्वीकार नहीं करते थे। क्योंकि सैलिक नियम के अनुसार उनके यहाँ राज्य लडकी या उसके लडकों को नहीं मिल सकता था। तीसरा एडवर्ड यह तो मान गया था कि फ्रान्स की राजगद्दी लडकी को प्राप्त नहीं हो सकती परन्तु वह यह नहीं मानता था कि लडकी की सतान भी उस अधिकार से वञ्चित है। इसलिए एक वडा भारी युद्ध फ्रान्स और इग्लैएड में हुआ जो शतवर्षीय-युद्ध के नाम से प्रसिद्ध है। तीसरे एडवर्ड के मरने के पीछे यह युद्ध बन्द हो गया था क्योंकि दूसरे रिचार्ड और चौथे हनरी के समय में घरेलू झगड़े ही क्या कम थे जो विदेश जाने को अवकाश मिलता?

जब पञ्चम हनरी राजा हुए तब अपने पिता की शिक्षा के अनुसार उन्होंने अपने देश के वीरों का चित्त अपने घर के युद्ध से हटा कर विदेशदमन की ओर आकर्षित किया और अपने प्रपितामह के अधिकार को पुनर्जीवित करने के लिए फ्रान्स नरेश छठे चार्लस से कहला भेजा कि तुम फ्रान्स का राज हम को दे दो नहीं तो युद्ध करना होगा। यही कारण था कि फ्रान्स के एलची इंग्लैण्ड में आये हुए थे।

उपर्युक्त वार्तालाप के थोड़े समय पीछे महाराज ने कैण्टरबरी और येली के लाट पादरी को इसी विषय पर विचार करने के लिए बुलाया और कैण्टरबरी को सम्बोधित करके कहा—

"भगवन्! आप विद्वान् और धर्मज्ञ हैं। इसलिए स्पष्टतया बतलाइए, कि फ्रान्स के सैलिक धर्मशास्त्र के अनुसार मुझे वहाँ का राज्य मिल सकता है या नहीं। ईश्वर को साक्षी करके किसी नियम का अनर्थ न कीजिए और न मेरे प्रसन्न करने के लिए किसी शब्द की खींचतान कीजिए। क्योंकि ईश्वर जानता है कि कितने पुरुषों का रक्तपात केवल आपके ही विचार पर निर्भर है। सब सोच समझ कर आप बतलाइए और हम उसी पर विश्वास करेंगे।

कैण्टरबरी—महाराज! और सभ्यगण! सुनिए। कोई कारण ऐसा नहीं है जो श्रीमान् के फ्रान्स-अधिकार में बाधित हो सके। फ्रान्सवाले जो सैलिक धर्मशास्त्र का प्रमाण देते हैं यह उनकी खींचतान है। क्योंकि उन्हीं के ग्रन्थों में स्पष्ट लिखा हुआ है कि सैलिक-भूमि जर्मनी में सला और एल्व नदी के मध्य में है, जहाँ बड़े चार्ल्स ने सेक्सन लोगों को पराजित किया था।

वहाँ पर कुछ फ्रांसीसी लोग बस गये। इनको जर्मन स्त्रियों से बड़ी घृणा थी और इसलिए उन्होंने एक नियम बना दिया था कि कोई स्त्री अपने पिता की जायदाद की अधिकारिणी नहीं है। इससे सैलिक भूमि को आज कल मीसिन कहते हैं। उसी भूमि के लिए सैलिक धर्मशास्त्र बनाया गया था। फ्रान्स देश में उसका पालन नहीं हो सकता। इस नियम का सस्थापक फरमण्ड बतलाया जाता है। परन्तु फ्रांसीसियों ने सैलिक-भूमि को फरमण्ड की मृत्यु के ४२१ वर्ष पीछे लिया था। फरमण्ड ४२६ ई० में मरा और बड़े चार्ल्स ने ८०५ में सैक्सन लोगों पर विजय प्राप्त की। फिर इन्हीं फ्रान्स देश के ग्रन्थकारों से यह भी मालूम होता है कि पेपिन बादशाह ने चिल्डरिक को इसलिए गद्दी से उतार दिया था कि पेपिन की माता ब्लिथिल्ड, फ्रान्स नरेश क्लोथर की पुत्री थी और इसलिए पेपिन उसका उत्तराधिकारी था। और लीजिए, बड़े चार्ल्स के लड़के लूइस की पोती लिगर का पुत्र होने के कारण हफकपिट ने फ्रान्स की राजगद्दी पर स्वत्व प्राप्त कर लिया था। दसवें लूइस की दादा इजाबिला, चार्ल्स की लड़की अरमिङ्गर की सन्तान थी। इन सब दृष्टान्तों से ज्ञात होता है कि फ्रान्स के राज्यपर लड़कियों की सन्तान राज करती रही है। चाहे आज फ्रान्स वाले आपके लिए सैलिक नियम की मन गढ़न्त बातें भले ही बनावें।

राजा—क्या धर्म के अनुसार मैं इस राज्य का अधिकारी हो सकता हूँ?

कैण्टरबरी—अवश्यमेव। यदि इसमें कुछ पाप हो तो मेरे सिर। गिनती की पुस्तक में लिखा है कि अगर आदमी मर जाय तो उसकी जायदाद पुत्री को मिले। महाराज! अपने स्वत्व पर दृढ़ रहिए। अपने झण्डे खोल दीजिए और अपने पूर्वजों के पराक्रमों का स्मरण कीजिए। देखिए, आपके प्रपितामह तीसरे एडवर्ड के समय में आप के दादा ब्लैकप्रिन्स ने किस प्रकार फ़्रान्स दल में हलचल मचा दी थी, जब उनका पिता पहाड़ी पर चढ़ा हुआ फ़्रान्स के घायल सिपाहियों को देख देखकर ख़ुश हो रहा था। आपके सेनाध्यक्षों और अँगरेज-वीरों में अभी अपने पूर्वजों का रुधिर मौजूद है और उनमें से केवल आधे ही इस योग्य हैं कि फ़्रान्स के वीरों की वीरता को मिट्टी में मिला दें और दूसरे आधे खड़े खड़े तमाशा देखते रहें।

हनरी को इस प्रकार समझा दिया गया कि फ़्रान्स राज्य पर दावा करने में उसने कोई अनुचित अथवा धर्म-विरुद्ध काम नहीं किया। और युद्ध के लिए उत्तेजित होकर उसने फ़्रान्स के एलचियों को राजदरबार में बुलाया। एक एलची ने आकर कहा—

"श्रीमन्! हमको आज्ञा दीजिए कि जो कुछ कहना है उसे साफ़ साफ़ आपकी सेवा में निवेदन कर दें। नहीं तो हमारा ठीक ठीक आशय आप पर विदित न होगा।"

हनरी—देखो। हम ईसाई राजा हैं। हमारा क्रोध हमारे इतने ही वश में है जितने वे क़ैदी जो हमारे बन्दीगृहों में पड़े हुए हैं। इसलिए बिना किसी भय या सकोंच के

जो कुछ कहना है उसे साफ साफ कह दो। बताओ डौफिन*का क्या आदेश है।

एलची—महाराज! आपके एलची फ्रान्स गये हुए थे। आपने अपने पितामह तीसरे एडवर्ड के अधिकारानुसार कुछ देश फ्रान्स का माँगा है। इसके उत्तर में हमारे स्वामी ने कहला भेजा है कि अभी आप लड़के हैं। फ्रान्स में इस समय कोई ऐसा नहीं है जिसे छोकरे जीत सके। आप वहाँ का राज्य नहीं ले सकते। इसलिए डौफिन ने आपके खेलने के लिए यह गेंदों का सन्दूक भेजा है। इन से आप का जी बहला रहेगा। भला आप राज्य को लेकर क्या करेंगे?

राजा—हमें खुशी है कि डौफिन हमारे ऊपर इतने प्रसन्न हैं। हम उनकी भेंट और आप लोगों के परिश्रम पर साधुवाद कहते हैं। जब हम अपने बल्लों से इन फरांसीसी गेंदों को मारेंगे तो ऐसा विचित्र खेल होगा कि डौफिन के पिता का राजमुकुट मारा मारा फिरेगा। उन से कह दो कि उन्होंने ऐसे आदमी के साथ बखेड़ा उठाया है जिससे भिड़ कर फ्रान्स के समस्त वीरों को पछताना पड़ेगा। हम समझते हैं कि गेंदें भेज कर उन्होंने हमारे बालकपन की ओर सङ्केत किया है। परन्तु हमने इङ्गलैण्ड के राज्य की कभी परवा नहीं की इसलिए इधर उधर भ्रमण किया परन्तु फ्रान्स के राज्य पर हम अवश्य स्वत्व प्राप्त करेंगे और उसी समय हमारा महत्त्व मालूम होगा। फ्रान्स में मैं ऐसे तेज के

*डौफिन फ्रान्स के युवराज को कहते थे जैसे इङ्गलैण्ड के युवराज का नाम प्रिन्स आफ वेल्स है।

साथ प्रकाशित होऊँगा कि डौफिन की आँखें चौंधिया जायँगी और वह मेरी ओर न देख सकेंगे। युवराज से कह दो कि यही गेंद उनके लिए तोप के गोलों से कम न होगी। उनकी यह हँसी उन्हीं के लिए हानिकारक होगी। इसी हँसी के द्वारा सैकड़ों विधवायें अपने पतियों से रहित हो जायँगी, माताओं के लाल उनकी गोद से उठा लिये जायँगे और सैकड़ों दुर्ग रसातल में मिल जायँगे। बहुत से बालक जो अभी पैदा नहीं हुए बड़े होकर डाफिन की जान को कोसेंगे कि उनको परतंत्र बना दिया! परन्तु यह सब ईश्वर परमात्मा के अधीन है जिसकी सेवा में मैं प्रार्थना कर रहा हूँ। ईश्वर मेरी प्रार्थना स्वीकार करे। तुम यहाँ से कुशलपूर्वक चले जाओ और डौफ़िन से कह दो कि उसने गेंदें भेजकर जो मेरे साथ हँसी की है उसका मज़ा चखाने के लिए मैं अभी उपस्थित होता हूँ। इतने आदमियों को इस उपहास पर हँसी न आई होगी जितने इसी के कारण रोवेंगे।

एलची तो इङ्गलैण्ड से चले गये और हनरी युद्ध की तैय्यारियाँ करने लगा। उस समय अँगरेज लोग युद्ध को बहुत पसन्द करते थे और फ्रान्स का युद्ध छिड़ते ही समस्त देश में ऐसा जोश फैल गया कि सब छोटे बड़े फ्रान्स जाने के लिए तैय्यार हो गये। कहा जाता है कि उन बुड्ढों अथवा बच्चों के सिवा जिनके लड़ने के दिन या तो बीत गये या अभी नहीं आये, सब ही ने शस्त्र धारण कर लिये थे और इङ्गलैण्ड भर में कोई मूछों वाला युवक ऐसा नहीं था जिसने अपना नाम सेना में न लिखाया हो। प्रसिद्ध है कि जिन मनुष्यों के

पास घोडा नहीं था उन्होंने अपनी जायदाद बेच बेच कर घोड़ा खरीदा और थोड़े ही दिनों में हनरी की सेना इंग्लिश चेनल के समुद्र में जहाजों पर चल पड़ी।

परन्तु फ्रान्स को प्रस्थान करने से पूर्व हनरी के भाग्य वश एक और दुर्घटना का भी नाश हो गया, अर्थात् कुछ लोगों ने गुप्त रीति से लार्ड कैम्ब्रिज, लार्ड स्क्रूप और लार्ड ग्रे की सहायता से छिपे छिपे महाराज को मार डालने का उपजाप किया। यह भी कहा जाता है कि कुछ लोगों ने इस विषय में फ्रान्स वालों से कुछ धन भी ले लिया था। अगर थोड़े दिनों इनका पता न लगता तो हनरी को अपने उद्देश में कभी सफलता प्राप्त न होती और वह अवश्य मारा जाता। परन्तु राजा के चचा ड्यूक आफ ऐक्सीटर ने इस का पता लगा लिया और बादशाह ने बड़े चातुर्य से इन लोगों को गिरफ्तार कर लिया!

जब फ्रान्स जाने के लिए राजा तैय्यारियाँ कर रहा था तब लार्ड कैम्ब्रिज, ग्रे और स्क्रूप राजसभा में बैठे हुए थे। राजा ने कहा—

"लार्ड कैम्ब्रिज, क्या आप समझते हैं कि फ्रान्स में हमारी विजय होगी?"

स्क्रूप—हाँ भगवन्! अगर प्रत्येक मनुष्य ने अपना कर्त्तव्य पालन किया!

राजा—इसमें तो संशय नहीं कि इस समय हमारे राज्य में कोई मनुष्य ऐसा नहीं है जो हमारे साथ [illegible] न रखता हो और जिसका हृदय राज [illegible] हो। सब यही चाहते हैं कि हमारी जय हो।

कैम्ब्रिज—श्रीमहाराज! किसी राजा को [illegible]

से इतनी भक्ति नहीं करती जितनी आपकी प्रजा आप से।

राजा—(अपने चचा एक्सीटर से)—चचा, उस मनुष्य को बताइए जिसने कल हमको बुरा भला कहा था। हम समझते है कि उसने जानबूझ कर ऐसा नहीं किया। शायद वह उस समय शराब के नशे में हो। इसलिए हम उसको क्षमा कर देंगे।

स्कूप—दया तो यही चाहती है। परन्तु, महाराज! उचित बात यही है कि उसको यथार्थ दण्ड दिया जाय, नहीं तो उसकी देखा देखी और लोग भी ऐसा ही करेंगे।

हनरी—दया ही करनी उचित है।

कैम्ब्रिज—महाराज! दया के साथ दण्ड भी चाहिए।

ग्रे—भगवन्, यदि दण्डदे कर आप उसका दोष दूर करदे तो यही बहुत बडी दया है।

हनरी—शोक है कि मेरी भक्ति और प्रेम के वश होकर आप लोग इस विचारे पर ऐसी कठोरता करते हैं। अगर तुच्छ बातों पर हम क्षमा न करेंगे और इतना दण्ड देंगे तो बड़े बड़े विद्रोही जनों को क्या दण्ड देना पड़ेगा।

यह कह कर राजा ने गुप्त चिट्ठियाँ जो पकड़ी गई थीं कैम्ब्रिज, स्कूप और ग्रे को दिखाई। इनके पढते ही उनका मुँह सूख गया और अपने अपराध को स्वीकार करके वह राजा से क्षमा माँगने लगे। परन्तु राजा ने उत्तर दिया—

"जो दया हमारे हृदय में अभी मौजूद थी वह आप लोगों के उपदेश से जाती रही। अब आप लोगों को क्षमा माँगने में क्यों लज्जा नहीं आती? मै तो तुम्हारे ही उपदेश का

पालन करूँगा। उसी प्रकार तुम्हारे सिद्धान्तने तुम्ही को मार डाला। लार्ड कैम्ब्रिज! तू जानता है कि हमें तेरे साथ कितना प्रेम था और जो कुछ पदवियाँ अथवा उपाधियाँ तुझे मिल सकतीं थीं सभी हमने तुझे प्रदान कीं। और तूने थोड़े से रुपये के लोभ में आकर हमको हैम्पटन में मार डालने का विचार किया! लार्ड स्कूप! तुझसे तो मैं कहूँ ही क्या? हे कृतघ्नी और विश्वासघाती! तू मेरे सब विचारों से अभिज्ञ था। मैं अपने भीतरी हृदय की बात तुझसे कह दिया करता था! हाय! विदेशी जन क्या कहेंगे और किस प्रकार अँगरेजों का विश्वास करेंगे? क्या लोग यह नहीं कहते होंगे की अँगरेजों को लोभ दिलाना कौनसी मुश्किल बात है? अब भक्त और विश्वासपात्रों की क्या पहिचान है? क्योंकि तू विश्वासपात्र मालूम होता था। अगर कहा जाय कि विद्यानिधान ही विश्वासपात्र हो सकता है तो तू भी विद्वान था! अगर कहा जाय कि उच्चवंशीय लोगों पर विश्वास करना चाहिए तो तू भी कुलीन था। अगर विश्वासपात्र लोग धार्मिक मालूम होते हैं तो धार्मिक तू भी मालूम होता था। आज तेरे विश्वासघात ने धर्मात्मा से धर्मात्मा मनुष्य को सन्दिग्ध अवस्था में डाल दिया।"

इस बड़े प्रभावशाली व्याख्यान के पश्चात्, जिसके भय से सभा के सब सभ्यगण काँप उठे, इन तीनों विद्रोहियों को पकड़ लिया गया और यद्यपि इन लोगों ने बहुत ही हाहाकार मचाई और ये क्षमा के प्रार्थी हुए परन्तु सब का राजनियमानुसार फाँसी का दण्ड दिया गया।

इस प्रकार अपने घर के काँटों को दूर करता हुआ भाग्यवान् हनरी फ्रान्स को चल दिया।

से इतनी भक्ति नहीं करतीं जितनी आपकी प्रजा आप से।

राजा—(अपने चचा एक्सीटर से)—चचा, उस मनुष्य को बताइए जिसने कल हमको बुरा भला कहा था। हम समझते हैं कि उसने जानबूझ कर ऐसा नहीं किया। शायद वह उस समय शराब के नशे में हो। इसलिए हम उसको क्षमा कर देंगे।

स्क्रूप—दया तो यही चाहती है। परन्तु, महाराज! उचित बात यही है कि उसको यथार्थ दण्ड दिया जाय, नहीं तो उसकी देखा देखी और लोग भी वैसा ही करेंगे!

हनरी—दया ही करनी उचित है।

कैम्ब्रिज—महाराज! दया के साथ दण्ड भी चाहिए।

ग्रे—भगवन्, यदि दण्डदे कर आप उसका दोष दूर करदें तो यही बहुत बड़ी दया है।

हनरी—शोक है कि मेरी भक्ति और प्रेम के वश होकर आप लोग इस विचारे पर ऐसी कठोरता करते हैं। अगर तुच्छ बातों पर हम क्षमा न करेंगे और इतना दण्ड देंगे तो बड़े बड़े विद्रोही जनों को क्या दण्ड देना पड़ेगा।

यह कह कर राजा ने गुप्त चिट्ठियाँ जो पकड़ी गई थीं कैम्ब्रिज, स्क्रूप और ग्रे को दिखाईं। इनके पढ़ते ही उनका मुँह सूख गया और अपने अपराध को स्वीकार करके वह राजा से क्षमा माँगने लगे। परन्तु राजा ने उत्तर दिया—

"जो दया हमारे हृदय में अभी मौजूद थी वह आप लोगों के उपदेश से जाती रही। अब आप लोगों को क्षमा माँगने में क्यों लज्जा नहीं आती? मैं तो तुम्हारे ही उपदेश का

राजा ने जिसे आप छोकरा बताते हैं किस गौरव के साथ उनसे बातचीत की और किस गम्भीरता से उनको आप के प्रश्नों का उत्तर दिया। मालूम होता है कि हनरी की योग्यता पहले उसी प्रकार छिपी हुई थी जिस प्रकार माली होनहार और मुलायम जड को मिट्टी से छिपा देता है।

डौफिन—नहीं! यह बात नहीं है। परन्तु ऐसा विचार कर लेने से भी कुछ हानि नहीं है। क्योंकि शत्रु चून का भी बुरा होता है। हमेशा शत्रु को अधिक समझ कर तैयारियाँ करनी चाहियें जिससे अवसर पडने पर किसी प्रकार की कमी न पडे।

फ्रान्सनरेश—हमारा तो यह विचार है कि हनरी बडा बलवान है। इसलिए आप सब लोगों को बहुत बडी तेय्यारियाँ करनी चाहियें। इसके दादे परदादे हमारे देश का रास्ता देख गये हैं। *क्रेसी का युद्ध अभी लोगों के हृदयों से गया नहीं है। ब्लैक प्रिन्स और उसके साथियों ने उस समय यहाँ के उन सब स्थानों तथा सामग्री को विनष्ट कर दिया था जिनको ईश्वर तथा फ्रान्स के योग्य पुरुषों ने बीसियों वर्षों में बनाया था। यह हनरी भी उसी वृक्ष की शाखा है और उससे डरना चाहिए।

उसी समय अगरेजी एलची फ्रान्स के राजदरबार में उपस्थित हुए और राजा की आज्ञा से भीतर बुलाये गये। राजा ने पूछा—

---

*क्रेसी में तृतीय एडवर्ड और फरासीसियों में लडाई हुई थी।

फ्रान्स नरेश ने अपने एलचियों से हनरी के आगमन के समाचार सुन ही लिये थे। वह अपने युवराज डौफिन और मुख्य सेनाध्यक्ष कांस्टेविल तथा वैरी, व्रीटेन, व्रवएट, और ओर्लियन्स ड्यूकों के साथ बैठा हुआ युद्ध के प्रवन्ध पर बातचीत कर रहा था। उसने डौफिन को आज्ञा दी कि जाकर जल्दी से अपने सब दुर्गों को मज़बूत कर लो और सेना को इकट्ठा करो क्योंकि पहले हमने अँगरेजों की परवाह न कर के बहुत बडा धोखा खाया है और उनकी विजय के चिह्न अभी तक शेष हैं।

परन्तु डौफिन अभी अँगरेजों को तुच्छ ही समझता था। उसका पेरिस की गेंदों को हनरी के पास भेजना ही प्रकट करता है कि वह इनको कितना समझता था। इसलिए बडे साहस के साथ वह कहने लगा।

"पिताजी! यह तो अच्छी बात है कि हम शत्रु से लडने के लिए तैय्यार हो जायें। लडाई के अभाव और शान्ति के समय में भी देश में कुछ न कुछ सेना अवश्य रहती है। फिर लडाई के समय में क्यों न रहेगी। परन्तु भय की आवश्यकता नहीं है। यद्यपि हम फ्रान्स के कमजोर स्थानों को मजबूत करने के लिए भ्रमण करेंगे पर यह समझ कर नहीं कि कोई बडा भारी युद्ध लडना है किन्तु ये तैयारियाँ तो उस समय भी की जातीं जब अँगरेज लोग युद्ध के बजाय नाच रंग में संलग्न होते। इङ्गलैण्ड का राज इस समय एक ऐसे छोकरे के हाथ में है जो खेल कूद के सिवाय और कुछ नहीं जानता। इसलिए ऐसे मनुष्य से डरना कायरता है।

कास्टेबिल—डौफिन! आप इस राजा से धोखा खा रहे हैं। क्या आपने अपने एलचियों से भी पूछा था कि इस

राजा ने जिसे आप छोकरा बताते हैं किस गौरव के साथ उनसे बातचीत की और किस गम्भीरता से उनको आप के प्रश्नों का उत्तर दिया। मालूम होता है कि हनरी की योग्यता पहले उसी प्रकार छिपी हुई थी जिस प्रकार माली होनहार और मुलायम जड़ को मिट्टी से छिपा देता है।

डौफिन—नहीं! यह बात नहीं है। परन्तु ऐसा विचार कर लेने से भी कुछ हानि नहीं है। क्योंकि शत्रु चूक का भी बुरा होता है। हमेशा शत्रु को अधिक समझ कर तैयारियाँ करनी चाहिएँ जिससे अवसर पड़ने पर किसी प्रकार की कमी न पड़े।

फ्रान्सनरेश—हमारा तो यह विचार है कि हनरी बड़ा बलवान है। इसलिए आप सब लोगों को बहुत बड़ी तैय्यारियाँ करनी चाहिएँ। इसके दादे परदादे हमारे देश का रास्ता देख गये हैं। *क्रेसी का युद्ध अभी लोगों के हृदयों से गया नहीं है। ब्लैक प्रिन्स और उसके साथियों ने उस समय यहाँ के उन सब स्थानों तथा स्मारकों को विनष्ट कर दिया था जिनको ईश्वर तथा फ्रान्स के योग्य पुरुषों ने बीसियों वर्षों में बनाया था। यह हनरी भी उसी वृक्ष की शाखा है और उससे डरना चाहिए।

उसी समय अंगरेजी एलची फ्रान्स के राजदरबार में उपस्थित हुए और राजा की आज्ञा से भीतर बुलाये गये। राजा ने पूछा—

---

*क्रेसी में तृतीय एडवर्ड और फरासीसियों में लड़ाई हुई थी।

'क्या हमारे भाई इङ्गलैण्ड-नरेश के पास से आये हो ?"

एलची—जी हाँ! हमारे स्वामी का यह सँदेसा है कि आप ईश्वर के नाम पर फ्रान्स के राज्य को उनके लिए छोड़ दीजिए। क्योंकि इस पर उनका और उनकी सन्तान का अधिकार है और आप बलात्कार से इसपर राज्य कर रहे हैं। इस कागज पर वंशावलि लिखी हुई है, जिसके पढ़ने से विदित होगा कि हमारे स्वामी की इच्छा अनुचित नहीं है।

फ्रान्सनरेश—अगर हम ऐसा न करें तो क्या?

एलची—घोर संग्राम! क्योंकि अगर आप अपने राजमुकुट को अपने पेट में छिपालें तो भी हमारे राजा इसको निकाल लेंगे। इसलिए बड़े उद्वेग के साथ वे चले आ रहे हैं। अगर आपको उन बेचारों पर दया हो जिनके निगलने के लिए युद्ध अपना मुँह फैलाये हुए है तो आप राज्य से अलग हो जाइए। नहीं तो विधवाओं की हाहाकार, अनाथों की पुकार, मृत पुरुषों का रक्त और देश के अन्य दुःख सब आपके सिर पर होंगे। मुझे कुछ डौफिन से भी कहना है।

डौफिन—डौफिन से? अच्छा कहो। डौफिन यह रहा, उसके लिए क्या है?

एलची—अनादर और घृणा! मेरे स्वामी ने कहला भेजा है कि अगर आप के पिताजी उन सब बातों को स्वीकार करके जो मैं कहता हूँ, मुझे प्रसन्न न करेंगे तो मैं उस असभ्य उपहास के बदले जो आपने मेरे साथ किया है समस्त फ्रान्स को विनष्ट कर दूँगा।

डौफिन—यदि मेरे पिताजी स्वीकार करलें तो यह बात मेरे

बिलकुल विरुद्ध होगी। मैं तो यही चाहता हूँ कि अँग-
रेजों से लड़ाई हो।

हम ऊपर कह चुके हैं कि फ्रान्स नरेश अँगरेजों से डरता था। उसने डौफिन के समान उजड्डुता का उत्तर नहीं दिया किन्तु सन्धि करनी चाही। एलची द्वारा उसने कहला भेजा कि हम अपनी बेटी कैथराइन का विवाह हनरी के साथ कर देंगे और उसके यौतुक में फ्रान्स के कुछ प्रान्त भी भेंट करेंगे यदि हनरी सन्धि करके इङ्गलैण्ड को लौट जाय। परन्तु इङ्गलैण्ड नरेश इस थोड़े से राज को लेने पर राजी नहीं हुआ और अगरेजों और फरासीसियों में युद्ध आरम्भ हो गया।

पहले हनरी ने हार्फ्लूर के दुर्ग पर चढ़ाई की। और उसे चारों ओर से घेर लिया। किले वालों ने बड़ी वीरता से शत्रु का सामना किया और कई दिन तक लड़ते रहे। परन्तु हनरी ने सुरंग लगा कर दीवारों को उड़ाना आरम्भ किया और डौफिन की सहायता न पहुँचने के कारण हार्फ्लूर का गवर्नर घबरा गया। उसने जब डौफिन के पास सेना के लिए आदमी भेजा तो डौफिन ने अपनी अशक्तता प्रकट की यह देखकर अन्त में हार्फ्लूर वालों के छक्के छूट गये। और वे किले की दीवारों पर इसलिए चढ़ आये कि हनरी से कुछ निवेदन करें। हनरी ने उत्तर दिया—

"गवर्नर! तुम्हारी क्या राय है? इसके पश्चात् हम फिर तुम्हारी बात न सुनेंगे। या तो सर्वथा हमारे आश्रित हो जाओ या लड़कर मरो। मैं एक योद्धा हूँ। अगर फिर मैंने तोपें छोड़ दीं तो तुम्हारे नगर को बिना राख में मिलाये न रहूँगा। फिर दया का दरवाजा बन्द हो जायगा और हमारे कोप भरे सिपाही तुम्हारे साथ अनेक प्रकार के अत्याचार करेंगे, छोटे

"क्या हमारे भाई इङ्गलैण्ड-नरेश के पास से आये हो?"

एलची—जी हाँ! हमारे स्वामी का यह सदेसा है कि आप ईश्वर के नाम पर फ्रान्स के राज्य को उनके लिए छोड दीजिए। क्योंकि इस पर उनका और उनकी सन्तान का अधिकार है और आप बलात्कार से इसपर राज्य कर रहे हैं। इस कागज पर वशावलि लिखी हुई है, जिसके पढने से विदित होगा कि हमारे स्वामी की इच्छा अनुचित नहीं है।

फ्रान्सनरेश—अगर हम ऐसा न करें तो क्या?

एलची—घोर सग्राम! क्योंकि अगर आप अपने राजमुकुट को अपने पेट में छिपालें तो भी हमारे राजा इसको निकाल लेंगे। इसलिए बडे उद्वेग के साथ वे चले आ रहे हैं। अगर आपको उन बेचारों पर दया हो जिनके निगलने के लिए युद्ध अपना मुँह फैलाये हुए है तो आप राज्य से अलग हो जाइए। नहीं तो विधवाओं की हाहाकार, अनाथो की पुकार, मृत पुरुषों का रक्त और देश के अन्य दु ख सब आपके सिर पर होंगे। मुझे कुछ डौफिन से भी कहना है।

डौफिन—डौफिन से? अच्छा कहो। डौफिन-यह रहा, उसके लिए क्या है?

एलची—अनादर और घृणा! मेरे स्वामी ने कहला भेजा है कि अगर आप के पिताजी उन सब बातों को स्वीकार करके जो मैं कहता हूँ, मुझे प्रसन्न न करेंगे तो मैं उस असभ्य उपहास के बदले जो आपने मेरे साथ किया है समस्त फ्रान्स को विनष्ट कर दूँगा।

डौफिन—यदि मेरे पिताजी स्वीकार करलें तो यह बात मेरे

बिलकुल विरुद्ध होगी। मैं तो यही चाहता हूँ कि अँग-रेजों से लड़ाई हो।

हम ऊपर कह चुके हैं कि फ्रान्स नरेश अँगरेजों से डरता था। उसने डौफिन के समान उजड्डता का उत्तर नहीं दिया किन्तु सन्धि करनी चाही। एलचों द्वारा उसने कहला भेजा कि हम अपनी बेटी कैथराइन का विवाह हनरी के साथ कर दगे और उसके यौतुक में फ्रान्स के कुछ प्रान्त भी भेंट करेंगे यदि हनरी सन्धि करके इङ्गलैण्ड को लौट जाय। परन्तु इङ्गलैण्ड नरेश इस थोड़े से राज को लेने पर राजी नहीं हुआ और अगरेजों और फरासीसियों में युद्ध आरम्भ हो गया।

पहले हनरी ने हार्फ्लर के दुर्ग पर चढ़ाई की। और उसे चारों ओर से घेर लिया। किले वालों ने बड़ी वीरता से शत्रु का सामना किया और कई दिन तक लड़ते रहे। परन्तु हनरी ने सुरंग लगा कर दीवारों को उड़ाना आरम्भ किया और डौफिन की सहायता न पहुँचने के कारण हार्फ्लर का गवर्नर घबरा गया। उसने जब डौफिन के पास सेना के लिए आदमी भेजा तो डौफिन ने अपनी अशक्तता प्रकट की यह देखकर अन्त में हार्फ्लर वालों के छक्के छूट गये। और वे किले की दीवारों पर इसलिए चढ़ आये कि हनरी से कुछ निवेदन करें। हनरी न उत्तर दिया—

"गवर्नर! तुम्हारी क्या राय है? इसके पश्चात् हम फिर तुम्हारी बात न सुनेंगे। या तो सर्वथा हमारे आश्रित हो जाओ या लड़कर मरो। मैं एक योद्धा हूँ। अगर फिर मैंने तोपें छोड़ दीं तो तुम्हारे नगर को बिना राख में मिलाये न रहूँगा। फिर दया का दरवाजा बन्द हो जायगा और हमारे कोप भरे सिपाही तुम्हारे साथ अनेक प्रकार के अत्याचार करेंगे, छोटे

बच्चों के सिर पत्थरों पर पटक दिये जायँगे और तुम्हारे पूज्य वृद्ध पुरुषों की डाढियाँ नोच ली जायँगी। फिर मेरे सिपाहियों को कौन रोक सकता है जब वे राक्षस क्रोध के वशीभूत होकर तुम्हारी लूटमार करेंगे, तुम्हारी स्त्रियों को नष्ट करेंगे। इसलिए उचित यही है कि जब तक मुझे रोष नहीं आता तुम लोग मेरे अधीन हो जाओ।"

गवर्नर ने लाचार होकर नगर की कुंजियाँ फेंक दीं। फाटक खोल दिये गये और हनरी का स्वत्व हार्फ्लर पर हो गया। एक रात वहाँ रह कर हनरी ने हार्फ्लर को तो अपने चाचा एक्सीटर के आधिपत्य में छोड़ा और स्वयं कैले को चला गया, क्योंकि जाड़ा बहुत पड़ने लगा था और उस की सेना रोग-ग्रसित होती जाती थी।

थोड़े दिनों पीछे हनरी आकर आगे बढ़ा और जब उसने सौम नदी को पार कर लिया तब फ्रान्स के राजदरबार में खलबली मच गई। रूएँ के महल में फ्रान्सनरेश, डौफिन, कांस्टेबिल और ड्यूक आफ बार्बन सब बैठकर विचार करने लगे। फ्रान्सनरेश ने कहा—

"यह तो निश्चय है कि राजा ने सौम नदी को पार कर लिया।"

कांस्टेबिल—अगर अब उसको रोका न गया तो हमको अवश्य देश छोड़ना पड़ेगा और हमारे बागों में विदेशी जन विहार करेंगे।

डौफिन—हे परमात्मा! क्या हमारे प्रचीन पूर्वजों की एक छोटी

सी *शाखा इतनी बढ़ गई है कि अपने असली वृक्ष का भी नाश करना चाहती है।

वार्बन—जारज† नार्मन जारज†! कैसी शर्म की बात है कि ये लोग बिना रोक टोक के चले आवें।

कांस्टेबिल—अरे इन लोगों में यह शक्ति कहाँ से आगई? इनके देश का तो जलवायु भी इतना उत्तम नहीं है। वहाँ कुहरा हमेशा छाया रहता है और हमारे देश के समान फल फूल भी नहीं उग सकते। हमको इनके परास्त करने का अवश्य साहस करना चाहिए।

डौफिन—हमारी स्त्रियाँ हमको घृणा से देख रही हैं और कहती हैं कि हम केवल भागने के ही वीर हैं।

फ्रान्स नरेश—एलची को हनरी के पास भेज दो। लड़ाई का निमन्त्रण दे दो! और ओर्लियन्स, वार्बन, बैरी, अलेङ्कन, ब्रावण्ट, बार, वरगण्डी, चैटालन, रमवर्स, बौडमण्ट, बोमण्ट, ग्राण्डप्री, रौसी, फाकन्वर्ग, फोइक्स, लेस्टरेल, बोसीकाल्ट, केरोलोइस, अन्य योद्धाओं सहित अपनी अपनी सेना लेकर आवें और हनरी को पकड़ कर मेरे सामने लावें।

---

*विजयी विलियम (William the Conqueror) जो हनरी और वर्त्तमान इङ्गलैण्ड नरेशों का पूर्वज था, पहले फ्रान्स के नार्मण्डी नामक प्रान्त से आया था और फ्रान्स तथा इङ्गलैण्ड दोनों देशों के राजे वास्तव में एक ही वंश से हैं।

†विजयी विलियम को जारज विलियम (William the bastard) भी कहते हैं क्योंकि वह अपने माता पिता के धार्मिक सम्बन्ध से उत्पन्न नहीं हुआ था। यहाँ वार्बन का (bastard) "जारज" शब्द घृणा-सूचक है।

कास्टेबल—श्रीमहाराज को ऐसा कहना ही शोभा देता है। मुझे शोक है कि हनरी की सेना इतनी कम है और वह भी रोग-ग्रसित और थकी है कि ज्योंही वह हमारी सेना को देखेगा डर जायगा और निस्तार धन देने को राजी हो जायगा।

फ्रान्सनरेश—अच्छा कांस्टेबिल, एलची द्वारा पूछो कि वह क्या निस्तार मूल्य देना स्वीकार करता है।

हनरी की सेना उस समय पीकार्डी में पड़ी हुई थी। अपने स्वामी के आज्ञानुसार फरासीसी एलची उसके पास पहुँचा और कहने लगा—

"मेरे स्वामी ने आप की सेवा में कहला भेजा है कि यद्यपि हम इस समय तक मृत मालूम होते थे परन्तु वास्तव में हम सो रहे थे। योद्धा वीरों के लिए उजड्डता इतनी अच्छी नहीं है जितनी नीतिज्ञता। सम्भव था कि हार्फ्लेर में ही हम तुमको हरा देते परन्तु यह हमारी इच्छा के विरुद्ध था। क्योंकि तुच्छ घावों में हाथ डालना ठीक नहीं है। अब हम सत्य कहते हैं कि इङ्गलैण्ड को तुम्हारी मूर्खता पर पछताना पड़ेगा। अब तुम अपने निस्तार-मूल्य का प्रबन्ध कर रक्खो। क्योंकि जितना तुमने हमको नुकसान पहुँचाया है उसी हिसाब से निस्तार-मूल्य भी लिया जायगा। तुमको यह जानना चाहिए कि इङ्गलैण्ड के कोष में इतना रुपया भी नहीं है जो हमारे नुकसान का प्रतिफल दिया जा सके। तुमने जो हमारा अनादर किया है उसके बदले में अगर तुम हमारे पैरों पड़ो और हाथ जोड़ो, तो भी पर्य्याप्त नहीं है।"

हनरी ने उत्तर दिया कि—

"इस समय हम लड़ना नहीं चाहते और कैले जाने का इरादा कर रहे हैं। यद्यपि शत्रु को अपना हाल बतलाना ठीक

नहीं है परन्तु हम बताये देते हैं कि हमारी सेना में रोग फैल रहा है। अगर ऐसा न होता तो मेरा एक एक आदमी तीन तीन फरासीसियों को मारने के लिए काफ़ी था। ईश्वर कृपा करें और मेरी इस आत्मश्लाघा को क्षमा करें। मेरा निस्तार-धन मेरा शरीर है। अपने स्वामी से कहदो कि मैं आऊँगा और फिर आऊँगा; चाहे एक नहीं दो फ्रान्स मुझे रोकने के लिए क्यों न उद्यत हों। अगर हमको किसी ने रोका तो हमारे रक्त से पृथ्वी लाल हो जायगी।"

हनरी के इस उत्तर को सुन कर दोनों ओर से तैयारियाँ हो गईं। और अजीन कूर के रणक्षेत्र में दोनों दल आ एकत्रित हुए। अँगरेजों की सेना बहुत कम थी और जो कुछ थी वह भी बीमार थी। इसलिए हनरी मन में घबराया हुआ था और साधारण आदमी का भेस धारण किये हुए अपनी सेना में फिर रहा था और अपने उत्साह-जनक शब्दों से सेना को उत्तेजित कर रहा था। पहले उसने अपने दो साथियों—ग्लोस्टर और बैडफर्ड—से कहा—

"यह सच है कि हम बड़े संकट में हैं, परन्तु बड़े संकट के लिए साहस भी बड़ा ही चाहिए। हे ईश्वर परमात्मन्! बुराई में भी कुछ भलाई अवश्य है, अगर आदमी उसको जान सके। अगर हमारे पड़ोसी दुष्ट हैं तो हम अवश्य जल्दी उठेंगे और जल्दी उठने से हमारे स्वास्थ्य तथा अन्य कामों को लाभ पहुँचेगा।"

इतने में एक वृद्ध सरदार अर्पिङ्घम वहाँ पर आ गया। जिसको देख कर राजा कहने लगा।

"सर टामस अर्पिङ्घम! इस पूज्य श्वेत सिर के लिए तो नर्म तकिया चाहिए था न कि फ्रान्स की कठोर भूमि!'

अर्पिंह्म—नहीं स्वामिन्! नहीं, मुझे तो यही भूमि अच्छी लगती है। क्योंकि ऐसी दशा में मैं कह सकता हूँ कि मैं राजा के समान सो रहा हूँ।

राजा—यह अच्छी बात है। इससे लोगों के मनको दुःख के समय भी कुछ तसल्ली हो जाती है। जहाँ मन में उत्साह हुआ वहाँ दुर्बल से दुर्बल शरीर भी उत्तेजना-पूर्ण हो जाता है।

यह कह कर राजा वहाँ से चला गया और अन्य सिपाहियों के साथ बातचीत करने लगा। कुछ देर पीछे उसे तीन सिपाही आपस में बातें करते हुए मिले जिन्होंने राजा को नहीं पहचाना। एक सिपाही बोला—

"भाई! अब तो पौ फट रही है।"

दूसरा सिपाही—हाँ, मैं भी देखता हूँ। परन्तु दिन निकल आना हमारे लिए कोई अच्छी बात नहीं है।

तीसरा सिपाही - सूर्य्योदय तो हम को दिखाई दे रहा है। परन्तु सूर्य्यास्त के कभी दर्शन न होंगे! देखो यह कौन आ रहा है?

राजा—एक मित्र।

तीसरा सिपाही—तुम किस सरदार के नीचे हो?

राजा—सर टामस अर्पिंह्म के।

तीसरा सिपाही—वह तो बड़े योग्य योद्धा हैं। भला बताओ हमारी वर्तमान दशाके विषय में उनका क्या विचार है?

राजा—जैसा उस आदमी का जो समुद्र के किनारे बालू के ढेर पर बैठा हो और डर रहा हो कि कहीं वह न जाय!

दूसरा सिपाही—क्या यह विचार राजा पर भी प्रकट कर दिया गया है ?

राजा—नहीं ! ऐसा करना उचित नहीं है । क्योंकि राजा आदमी ही तो है । सूघने में फूल जैसा मुझे मालूम होता है वैसा ही राजा को ! उसकी इन्द्रियाँ उसी प्रकार काम करती हैं जैसे अन्य मनुष्यों की । राजचिह्नों को अलग कर दो तो राजा एक साधारण मनुष्य ही मालूम पडेगा । इसलिए अगर वह भय का कारण मालूम करेगा तो हमारी भाँति अवश्य भय खायगा और उसके भयभीत होने से समस्त सेना भयभीत हो जायगी ।

दूसरा सि०—चाहे वह कितना ही साहस क्यों न दिखलावे । मुझे तो विश्वास है कि वह इस समय टेम्स नदी के तीर होना चाहता है, न कि फ्रान्स में । और मेरी भी यही इच्छा है कि मैं उसके साथ होऊँ ।

राजा—मैं समझता हूँ कि वह जहाँ है वहीं होना चाहता है ।

दूसरा सि०—तो मैं चाहता हूँ कि वह यहाँ अकेला रहे । क्योंकि उसको तो निस्तार-धन देकर छुडा लिया जायगा और दूसरे सैकडों की जानें बच जायें !

राजा—तो तुम राजा से प्रेम नहीं करते । मैं तो राजा के साथ मरने से खुश हूँ । क्योंकि राजा धर्म के लिए लड रहा है ।

तीसरा सि०—यह तो हम नहीं जान सकते ।

दूसरा सि०—अगर उसका लडना अनुचित हो तो भी राजा की प्रजा होने से हमारा कर्तव्य है कि उसकी आज्ञा

पालन करें और जो कुछ पाप होगा वह हमारे सिर नहीं है।

तीसरा सि०—अगर लड़ना धर्म-विरुद्ध हुआ तो राजा का सिर पापों के भार से नीचा हो जायगा। क्योंकि जब लोगों का अङ्ग-भङ्ग होगा, सिर कटेंगे, जब हम मारे जायँगे। और कोई रोते हुए, कोई कोसते हुए, कोई अपने बालबच्चों की याद करते हुए प्राण देंगे तब इन सब का शाप राजा के ही ऊपर होगा। मैं समझता हूँ कि जो लड़ाई में मारे जाते हैं उनका अन्त अच्छा नहीं होता। और अगर इनका अन्त अच्छा नहीं होता तो इसमें उसी का दोष है जो इनको युद्ध की प्रेरणा करता है।

राजा—तो तुम्हारे सिद्धान्त के अनुकूल अगर कोई पिता अपने पुत्र को व्यापार करने भेजे और वह पुत्र कोई पाप करने लगे तो उस पाप का दोष उसके बाप पर होगा जो उसको भेजता है। और अगर कोई स्वामी अपने भृत्य को रुपया लेकर कहीं भेजे और वह भृत्य रास्ते में लूट लिया जाय तो क्या उसका दोष भेजने वाले पर होगा? ऐसा तो नहीं होता। राजा कभी सिपाहियों के अन्त का उत्तरदाता नहीं है। और न ऊपर के उदाहरणों में पिता और स्वामी ही उत्तरदाता है। दूसरी बात यह है कि चाहे कितना ही धार्मिक राजा क्यों न हो, उसकी सेना के सब सिपाही निर्दोषी और पापरहित नहीं हो सकते। कोई ऐसे हैं जिन्होंने किसी की हत्या की है या किसी को मारना चाहा है। कोई व्यभिचार के दोषी हैं। कोई अन्य पापों के भागी हैं।

अब अगर ये पापीजन राजदण्ड से बच गये तो ईश्वर के दण्ड से कदापि नहीं बच सकते। यह दण्ड उनको युद्ध में मिलता है। अगर ये यहाँ मारे जावें तो उनकी मृत्यु का कारण राजा नहीं है किन्तु वे पाप हैं जो उन्होंने इस समय के पूर्व किये हैं। प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य राजा का कर्तव्य है। परन्तु उसका आत्मा राजा का आत्मा नहीं है। इसलिए अगर हर एक सिपाही उसी प्रकार मरने की तैयारी करे जैसे वह रोग के समय करता है अर्थात् अनुताप करे और अपने पापों के लिए ईश्वर से क्षमा मांगे तो वह अच्छी मौत मरेगा। और अगर बच भी जायगा तो समझना चाहिए कि जिस समय ऐसे उत्तम विचार रहे वह समय अच्छी तरह कट गया।

तीसरा सिपाही—यह तो ठीक है कि अगर कोई बुरी मौत मरता है तो इसका कारण राजा नहीं है किन्तु स्वयं वही है। राजा इसका उत्तरदाता नहीं हो सकता।

राजा—मैंने राजा को यह कहते हुए सुना था कि मैं निस्तार-धन देकर न छूटूँगा।

तीसरा सिपाही—यह तो वह इसलिए कहता है कि हम लोग उत्साह के साथ लड़ें। जब हमारे गले कट चुकेंगे तब उसको निस्तार-धन देकर छुड़ा लिया जायगा और मूर्ख हम ही ठहरेंगे।

राजा—अगर मैंने उसे ऐसा करते देखा तो मैं कभी उसका विश्वास न करूँगा।

तीसरा सिपाही—भला साधारण सिपाही राजा का क्या कर

सकता है ? यह कहना तो ऐसा ही है जैसे परे से सूर्य्य को ठंडा करना।

यह कह कर सिपाही तो चले गये और राजा अकेला रह गया। वह अपने मन में इस वार्तालाप के विषय में सोचने लगा कि "क्या इन सब के जीवन, इन के आत्मा, इनके ऋण, इनकी स्त्रियाँ, इनके बच्चे और इनके पाप, सब के सब राजा के सिर हैं? क्या मैं इन सबका भार उठा सकता हूँ? हाय महत्त्व के साथ ऐसी ही चिन्तायें लगी रहती हैं। जिस आनन्द को साधारण लोग भोगते हैं वह राजों के भाग्य में नहीं होता। साधारण लोगों के पास कौन सी ऐसी चीज नहीं है जा राजों के पास है? सिवाय नाम के। और नाम क्या है? और इससे क्या लाभ है? अगर बड़ा आदमी बीमार हो तो क्या वह नाम के कारण चंगा हो सकता है? क्या पदवियों और उपाधियों से ज्वर दूर हो जायगा? नाम तो स्वप्न मात्र है। मैं राजा हूँ। मैं जानता हूँ कि तलवार, राजमुकुट, राजकोष, सेना, राजगद्दी और अन्य राजचिह्न राजा को वह मीठी नींद नहीं दे सकते जो एक गरीब आदमी रूखी सूखी खाकर प्राप्त करता है। इस आदमी को सिवाय नाम के और सब आनन्द हैं परन्तु राजा को एक भी नहीं।"

फिर वह ईश्वर से प्रार्थना करने लगा कि "हे सर्वशक्तिमन्! हे परमात्मन्! आज मेरे सिपाहियों के हृदय पाषाणवत् बना दो जिससे वे भयभीत न हो सकें। हे ईश्वर! हे दयानिधे! ऐसी प्रेरणा करो कि वह अपने शत्रु की संख्या से न डरें। हे प्रभो! आज मुझे दण्ड न दो! आज मुझे दण्ड न दो! जगदीश! आज बचा लो! हे जगन्नाथ! आज उन पापों

पर विचार न करो जिनके द्वारा मेरे पिता ने राज्य-प्राप्ति की थी। प्रभो! मैंने रिचार्ड की लाश को फिर से सम्मान के साथ समाधिस्थ कर दिया है। और उस की मृत्यु पर इतने आँसू बहा चुका हूँ जितनी लोहू की बूँदे भी उसके शरीर से नहीं निकलीं थीं। पाँच सौ दरिद्र और दीन आदमियो को नित्य खाना देता हूँ कि वे रिचार्ड की आत्मा के लिए रात दिन ईश्वर से प्रार्थना करते रहें। मैंने दो धर्ममन्दिर बना दिये हैं जहाँ पुरोहित रिचार्ड की शान्ति के लिए भजन गाते रहते है। इतना मैंने किया है। और और भी करूँगा परन्तु जो कुछ मै करता हूँ वह उस हत्या के सम्मुख कुछ भी नहीं है और हे परम प्रभो! मैं आप से क्षमा चाहता हूँ! क्षमा चाहता हूँ!"

इधर इङ्गलैण्डनरेश की सारी रात सेना में घूमने और ईश्वर से प्रार्थना करने में कटी, उधर डौफिन, कान्स्टेबिल, लार्ड रोमवर्स और ड्यूक आफ ओर्लियन्स आत्मश्लाघा और डींगें मारने में लगे रह। कोई अपने घोड़ो की प्रशंसा करता कोई कोई कवच को अच्छा बताता, कोई शस्त्र सभालता, कोई हँसता, कोई गाता! सारांश यह है कि यद्यपि दोनों दलों की रात प्रात-काल की बाट हेरते देखते कटी परन्तु दोनों के भाव एक दूसरे से भिन्न थे। एक डर डर कर ईश्वर से सहायता चाहता था और अपने पापों पर अनुताप कर रहा था। दूसरा अपनी सख्या तथा बल पर अभिमान करके अपने शत्रु को गाजर मूली समझ रहा था। कैदियो को पकड़ने के लिए शर्ते बदी जा रही थीं। हँसी ठट्ठे और नाच रग हो रहे थे। ओर्लियन्स ने कहा—

"डौफिन को प्रात काल की तलाश है।"

रोम्बस—इस लिए कि अँगरेजों को रा जाय।

कांस्टेबिल—जितने मारेगा उतने खा जायगा !*

ओर्लियन्स—डोफिन बडा चालाक है।

कांस्टेबिल—जो चले सो चालाक ! डौफिन चलेगा तो अवश्य ही !

औलियन्स—उसने कभी किसी को हानि नहीं पहुँचाई।

कांस्टेबिल—और न कल पहुँचावेगा।

ओर्लियन्स—यह इङ्गलैण्डनरेश कैसा मूर्ख है कि बिना जाने बूझे चला आ रहा है।

कांस्टेबिल—अँगरेजों को ज्ञान होता तो अवश्य भाग जाते।

आर्लियन्स—ज्ञान तो उन में है ही नहीं, उनके सिरों में जो समझ होती तो वे इतना भारी कवच धारण न करते !

रौम्बर्स—इङ्गलैण्ड द्वीप में बडे बडे वीर उत्पन्न होते हैं। इन कुत्तों से कोई नहीं लड सकता !

ओर्लियन्स—पागल कुत्ते ! जो बिना समझे सोचे रूसी रीछ के मुहँ में आरहे हैं और अपने सिरों को सेव की तरह कुचलवा रहे हैं। वह मक्खी भी बडी बहादुर है जो शेर की मूँछ पर बैठती है।

इसी हँसी ठट्ठे में थोडी रात कटी। जब प्रातःकाल हुआ तब हनरी ने लडाई की तैयारियाँ करदी और बिगुल बज गया। फरासीसी लोग भी घोडे पर सवार होकर आगे बढे। हम ऊपर बता चुके हैं कि अँगरेजी सिपाही बीमार पडे हुए थे। इसलिए उनके पतले दुबले शरीरों को देख कर फरासीसी लोग और भी बेपरवाह हो गये और समझने लगे कि अँगरेज हमारे हाथ से जीते न बचेंगे।

परन्तु हनरी अब भी डर रहा था और अपनी सम्पूर्ण आशा ईश्वर परमात्मा पर बाँध रहा था। जब उसके एक साथी वैस्टमोरलैण्ड ने कहा कि अगर हमारी सहायता को यह एक

*अर्थात् इससे कोई अँगरेज भी न मरेगा !

हज़ार आदमी भी होते जो आज इङ्गलैण्ड मे बेकार बैठे हैं तो अच्छा होता, तब हनरी ने बडी दृढता से उत्तर दिया, "नहीं भाई! ऐसी इच्छा मत करो! अगर मरना है तो इतने ही काफी है। अगर जीना है तो जितने थोडे आदमी होंगे उतना अधिक यश होगा। ईश्वर की इच्छा पूर्ण हो। अब एक भी आदमी की जरूरत नही है। मुझे रुपया नहीं चाहिए। न मुझे इस बात का सोच है कि मेरे धन को कौन खा रहे हैं। परन्तु यदि यश चाहना पाप है तो मैं सब से बडा पापी हूँ। ईश्वर जानता है कि मैं अपने साथ इस सेना से अधिक एक आदमी भी लेना नहीं चाहता, नहीं तो वह मेरे यश को बाँट ले जायगा! वेस्ट-मारलैण्ड! मेरी सेना से कह दो कि जो कोई मनुष्य आज के दिन लडना न चाहे वह कुशलपूर्वक लौट कर घर को जा सकता है। हम उसे मार्ग व्यय देंगे। हम उसके साथ मरना नहीं चाहते, जो हमारे साथ मरते हुए डरता है। आज क्रिस्पियन त्यौहार है। जो आज जीवित बचेगा वह आज के दिन हर साल इस युद्ध को याद किया करेगा और अलाउ पर बैठ कर बडे अभिमान के साथ अपने साथियो को अपने घाव दिखाया करेगा कि इस वीरता से हम लोग लडे थे। हमारे पराक्रमों के गीत हमेशा गाये जाया करेंगे और भद्र पुरुष अपने बालको को हमारी कथाये सुनाया करेंगे। सब लोग मिट जायँगे परन्तु जो आज के दिन रणक्षेत्र में प्राण देंगे उनका नाम प्रलय तक जीवित रहेगा। और जो लोग आज की रात इङ्गलैण्ड में सो रहे है वे पछतायँगे कि हाय हम न हुए नहीं तो हमारा भी नाम होता।"

जब हनरी ने इस प्रकार अपने वीरों को सेना में आगे बढ़ाया तो फरासीसी दूत आया और कहने लगा—

"महाराज! वीर कांस्टेबिल ने कहला भेजा है कि अब आप के परास्त होने में कुछ भी सन्देह नहीं है इसलिए एकबार आपसे और पूछा जाता है कि आप अपने छुड़ाने के लिए क्या निस्तार-धन देना चाहते हैं। दूसरी बात यह है कि कृपा करके अपने सिपाहियों को आज्ञा दे दीजिए कि लड़ने से पहले ईश्वर का ध्यान करले जिससे उनके आत्मा स्वर्ग को जा सकें, क्योंकि आज वह जीने न बच सकेंगे।"

हनरी—अब के तुझे किसने भेजा है?

दूत—फ्रान्स के कांस्टेबिल * ने।

हनरी—जो उत्तर मैंने पहले दिया था वह अब भी देता हूँ। पहले वह मुझे जीत ले फिर मेरी हड्डियों को बेचलें। हे ईश्वर! वे बिचारे सिपाहियों को क्यों चिड़ाते हैं? एक आदमी ने शेर के जीते हुए ही उसका चमड़ा बेच लिया था परन्तु उसका शिकार करते हुए मारा गया। हम में से बहुत से तो अपने ही देश में मरेंगे और उनकी कबरों पर पीतल के पट्टों पर उनके पराक्रम लिखे जायँगे। परन्तु अगर कोई फ्रान्स में भी मर गये तो क्या हानि! सूर्य्य देव उनकी हड्डियों पर अपना प्रकाश करेंगे और उनके वीर आत्मा स्वर्ग पहुँचेंगे उनके भौतिक शरीर सड़ सड़ कर तुम्हारे देश की जल वायु को बिगाड़ेंगे। हमारे अँगरेजी सिपाहियों की वीरता तो देखो। अगर जीते न मारा तो मर कर रोगद्वारा मारेंगे। तुम जाकर उनसे कह दो कि सिवा इन हड्डियों के मेरा निस्तार-धन और कुछ नहीं मिल सकता।

*मुख्य सेनाध्यक्ष।

दूत तो चला गया और अब दोनों सेनायें लड़ने लगीं। थोड़ी सी देर में फरासीसी सिपाही तितर बितर हो गये। और हनरी की फौज ने शत्रु के दल में हलचल मचादी। एक एक अँगरेज ने दस दस को मारा और वार्वन, डौफिन, कास्टेविल तथा ओर्लियन्स सब के सब मारे गये। हनरी ने बहुत से सिपाहियों को कैद कर लिया। उसकी ओर से ड्यूक आफ यार्क और ड्यूक आफ सफोक मारे गये। परन्तु अपने मरने से पहले उन्होंने बहुत से शत्रुओं का आघात किया। थोड़ी देर पीछे जब हनरी ने देखा कि फरासीसी लोगों ने बची हुई सेना फिर इकट्ठी की है और अभी रणक्षेत्र छोड़ना नहीं चाहते तो उसने आज्ञा देकर अपने सब फरासीसी कैदियों को मरवा डाला।

अब तो फरासीसियों के पैर न जमे और जिसका जिस ओर को मुँह उठा वह उसी ओर को भाग निकला। अन्त में फरासीसी दूत फिर आया और हनरी ने उसे देखकर कहा—

"कहो जी! निस्तार-धन के लिए फिर आये हो?"

दूत ने उत्तर दिया—

"नहीं! नराधिप! हम आप से आज्ञा लेने आये हैं कि अपने सेनाध्यक्षों की लाशों को उठालें और यथानियम उनका मृतक-संस्कार कर दें। इस समय सरदार और सिपाही सब एक में मिले पड़े हुए हैं और उनके घायल घोड़े अपने ही मृत सवारों को दुबारा मार रहे हैं। हे राजन्, हमको आज्ञा दीजिए कि इन लाशों को ठीक लगा दें।"

हनरी—"हम नहीं जानते कि जीत किसकी हुई क्योंकि अभी तुम्हारे सवार क्षेत्र में फिर रहे हैं।"

दूत—महाराज, आप की ही विजय है।

हनरी—ईश्वर परमात्मा की जय हो न कि हमारे बल की!
यह अजीनकूर की विजय कहलायेगी!

हनरी ने जब मृत पुरुषों की गणना कराई तब इसमें फ्रान्स की ओर के १२६ जागीरदार और राजकुमार, ८,४०० सरदार, और अन्य लोग मारे गये। इनमें प्रसिद्ध पुरुषों के नाम यह हैं चार्लस डीलाब्रट (कांस्टेबिल) लार्ड रैम्बर्स, डौफिन, ड्यूक आफ एलेङ्कन, ड्यूक आफ ब्रबएट, ड्यूक आफ बरगएडी का भाई, ड्यूक आफ बार, अर्ल आफ आएडपरी, रोसी, फौकनबर्ग, फोइक्स, बोमएट, मार्ले, बोडमएट और लेस्ट्रेल। अंगरेजों के मृत पुरुषों की संख्या केवल २५ ही थी जिसमें यार्क, सफोक, रिचार्ड केटली, और डैवी गैम ही प्रसिद्ध पुरुष थे। इस अपूर्व और आशातीत विजय को सुनकर हनरी उछल पड़ा और कहने लगा—

"परमात्मन्, यह आपका ही हाथ था! यह आपका ही हाथ था! यह विजय आपकी है न कि हमारी! कभी किसी युद्ध में विजयी दल के इतने कम पुरुष नहीं मरे। ईश्वर आपकी जय हो! क्योंकि यह जीत आप की ही कृपा का फल है।"

फिर उसने अपनी सेना को आज्ञा दे दी कि कोई मनुष्य इस जीत पर डींग न मारे और इसे अपनी जीत न बतावे क्योंकि यह यश सब परमात्मा का है। उस दिन ईश्वर की प्रार्थना के भजन गाये जाते रहे। फिर हनरी कैले होता हुआ इङ्गलैएड को वापिस आया। अँगरेजों ने अपने सम्राट् की इस असाधारण विजय को सुन कर बड़े समारोह से उसका स्वागत किया। लन्दन नगर के सब नर नारी टेम्स नदी के तीर आ इकट्ठे हुए और बड़े आदर सत्कार से जय जयकार बोलते हुए उसे ले गये।

थोड़े दिनों के पश्चात् फ्रान्सनरेश ने मेल करना चाहा और ट्रोइस नामक नगर में दोनों सम्राट् अपने मुख्य मुख्य मंत्रियों सहित उपस्थित हुए। हनरी ने पहुँच कर कहा—

"हमारा फ्रान्सनरेश से यह मिलाप कल्याणकारी हो! महारानी जी और राजकुमारी कैथरायन ! हम आप को प्रणाम करते है। ईश्वर आपको दीर्घजीविनी करे। ड्यूक आफ वरगण्डी को हमारा प्रणाम हो !

फ्रान्सनरेश—योग्य इङ्गलैण्डनरेश ! हमको आपके दर्शनों से बड़ा हर्ष हुआ है ।

फ्रान्स की महारानी—हमको यह दिन बड़े भाग्य से मिला है। ईश्वर इसका परिणाम अच्छा करे ! आप की आँखों से जो क्रोध अब तक हमारे देश के लिए प्रकट होता रहा है वह नष्ट हो जाय और आपकी दृष्टि हमारे लिए हितकारिणी हो !

हनरी—एवमस्तु !

ड्यूक आफ वरगण्डी—इङ्गलैण्ड और फ्रान्स के योग्य सम्राट् ! अपनी शक्ति तथा बुद्धि के अनुसार मैं ने इस मेल के कराने का परिश्रम किया है। अब मैं सविनय आप से पूछता हूँ कि इस हमारे देश से शान्ति का अभाव क्यों हो गया है ? अब हमारे फ्रान्सदेश में अशान्ति ही अशान्ति क्यों फैलती जाती है और इसके सहचारी अकाल और रोग क्यों घेरे हुए हैं। मेरी प्रार्थना यह है कि जिस प्रकार होसके ऐसा उपाय कीजिए जिस से फिर शान्ति का राज्य हो और प्रजा आनन्द से रहे।

हनरी—ड्यूक आफ वरगण्डी। अगर आप कल्याण चाहते हैं तो जो शर्तें हमने नियत करदी हैं उनका निश्चय होजाना चाहिए ।

बरगण्डी—महाराज ने उनको सुन लिया है और अब विचार किया जायगा।

इस के पश्चात् इन शर्तों पर विचार करने के लिए एक उप-सभा नियत की गई जिसमें फ्रान्सनरेश, महारानी इजाबिला (फ्रान्स की), ड्यूक आफ बरगण्डी और हनरी के प्रतिनिधि एक्सीटर, क्लैरेंस, ग्लोस्टर, वारिक और हण्टिंग्टन थे। इन शर्तों में से मुख्य शर्त यह थी कि फ्रान्स की राजकुमारी कैथरायन का विवाह हनरी के साथ किया जाय। ये सभासद तो विचार करने के लिए चले गये और कैथरायन और हनरी रह गये। हनरी ने कहा—

रूपवती कैथरायन! क्या आप कृपा करके मुझ जैसे सिपाही को सिखावेंगी कि आप से किस प्रकार प्रेम प्रकट करना चाहिए?

कैथरायन—श्रीमान् मेरी हँसी करेंगे। क्योंकि मैं आपकी भाषा (अँगरेजी) नहीं बोल सकती।

हनरी—प्यारी! अगर आप अपने फ्रांसीसी हृदय से मुझे चाहने लगें तो मैं खुश हूँगा कि आप इसका प्रकाश टूटी फूटी अँगरेजी में कर दें। क्या आप मुझे चाहती हैं?

कैथरायन—क्या यह सम्भव है कि मैं फ्रान्स के शत्रु को चाह सकूँ?

हनरी—नहीं। यह सम्भव नहीं है कि आप फ्रान्स के शत्रु को चाह सकें। परन्तु मैं तो फ्रान्स का मित्र हूँ और ऐसा मित्र कि इसके एक गाँव को भी छोड़ना नहीं चाहता। मैं चाहता हूँ कि फ्रान्स सब मेरा हो जाय और कैथरायन! जब फ्रान्स मेरा है और मैं तुम्हारा हूँ तो फ्रान्स तुम्हारा है और तुम मेरी हो। क्या तुम मुझे चाहती हो?

कैथरायन—मैं नहीं कह सकती।

हनरी—फिर कौन कह सकता है? क्या तुम्हारे पड़ोसी? आओ! आओ। मैं जान गया तुम मुझे चाहती हो। चाहे तुम कितना ही इनकार करो तुम्हारा हृदय कहता है कि तुम मुझे प्यार करती हो। प्यारी केट* ! भली केट! मुझे प्यार करो। हमारे तुम्हारे सम्बन्ध से ऐसा वीर पुत्र उत्पन्न होगा—आधा अँगरेज और आधा फरासीसी कि वह कुस्तुन्तुनिया पहुँचकर पवित्र-भूमि को तुर्कों के हाथ से छुड़ा लेगा। प्यारी केट! क्या कहती हो?

कैथरायन—मैं नहीं जानती।

हनरी—जानना फिर! प्रतिज्ञा अभी करदो। क्या तुम मुझे ग्रहण करती हो?

कैथरायन—जैसी पिताजी की इच्छा हो?

हनरी—उनकी यही इच्छा है। केट! उनकी यही इच्छा है।

कैथरायन—तो मैं भी सन्तुष्ट हूँ।

हनरी—फिर तुम मेरी महारानी हो! आओ मुखचुम्बन करूँ।

कैथरायन—फ्रान्स की स्त्रियों में यह रीति नहीं है।

हनरी—क्या यह कहती हो कि फ्रान्स में विवाह से पहले मुख चुम्बन नहीं होता।

कैथरायन—हाँ।

हनरी—प्यारी केट! हम साधारण आदमी नहीं हैं जो ऐसे नियमों में बद्ध हो जायँ। बड़े आदमी नये नये नियम

* प्यार का नाम।

बनाते हैं और संसार उनपर चलता है। हम जैसे मनुष्यों को कौन रोक सकता है और कौन आक्षेप कर सकता है? (चुम्बन करके) हैं केट! तुम्हारे होठों में तो इतना माधुर्य है कि इससे हनरी शीघ्र ही मान जायगा चाहे वह तुम्हारे फ्रान्स की सैकड़ों सभाओं की बात न मानता।

थोड़ी देर के पीछे फ्रान्स-नरेश भी अन्य सब लोगों के साथ आगये और जो जो शर्तें हनरी ने बताई थीं सब मान ली गईं। हनरी का विवाह कैथरायन से हो गया और यह निश्चित हुआ कि छठे चार्लस अर्थात् कैथरायन के पिता की मृत्यु के पश्चात् फ्रान्स की गद्दी हनरी को मिले। और उसकी सन्तान यथाक्रम फ्रान्स की उत्तराधिकारिणी हो।

ट्रोइस की सन्धि २१ मई सन् १४२० में हुई थी। जब हनरी अपनी फरासीसी महारानी के साथ इङ्गलैण्ड में आया तब लोग बड़े प्रसन्न हुए। ६ दिसम्बर सन् १४२१ को राजकुमार उत्पन्न हुआ जिसका नाम भी हनरी रक्खा गया। इस समय पञ्चम हनरी का स्वास्थ्य बिगड़ चला था और जब वह फ्रान्स में डौफिन के साथ लड़ाई झगड़े में संलग्न था ३१ अगस्त सन् १४२२ को विंसीनस में उसका देहान्त हो गया। इस समय इसकी अवस्था ३४ वर्ष की थी। अपने थोड़े दिनों के राज्य में अपने बाहुबल तथा बुद्धिमत्ता से हनरी सर्वप्रिय हो गया और जो कठिनाइयाँ उसके पिता को उठानी पड़ीं थी वे सब दूर हो गई।

दो महीने पीछे फ्रान्सनरेश चार्ल्स भी मर गया और १० मास का राजकुमार हनरी, छठे हनरी के नाम से फ्रान्स और

विषय-सूची ।



शेक्सपियर और स्त्री-जाति ।

इस भाग में हम यह दिखाना चाहते हैं कि अपने नाटकों में शेक्सपियर ने स्त्री-जाति को कौनसा स्थान दिया है। नाटक वास्तव में सांसारिक घटनाओं के फोटो होते हैं जहाँ तक उन घटनाओं का सम्बन्ध मनुष्य-जीवन से है। इसलिए हमारे विचार में यह जानना किसी प्रकार से लाभ शून्य न होगा कि स्त्रियो ने इन मानवी घटनाओ में कहाँ तक हिस्सा लिया है। इस अन्वेषण से दो बातो का पता लगेगा एक तो यह कि शेक्सपियर या उसके सहकालीन पाश्चात्य मनुष्य स्त्रियों को क्या समझते थे। दूसरे यह कि शेक्सपियर-लिखित ग्रन्थों के अवलोकन से मनुष्य-जीवन को कहाँ तक लाभ पहुँचेगा या दूसरे शब्दों में जो स्थान इस महा कवि ने स्त्रियों को दे रक्खा है वह कहाँ तक उचित है।

यहाँ यह प्रश्न हो सकता है कि हम मनुष्य-जीवन में से केवल स्त्रियो के विषय में यह विचार क्यों उठाते हैं और पुरुषों को क्यों छोड देते हैं, क्योंकि मनुष्य-जीवन में स्त्रियाँ और पुरुष दोनो ही सम्मिलित हैं। इसका स्पष्ट उत्तर यह है कि आज कल हमारे भारतवर्ष में स्त्रियों को बहुत ही तुच्छ स्थान दिया जाता है और उनके अधिकार पद-दलित हो रहे हैं। ये आज कल ... में प्रायः उस स्थान पर बैठी हुई दिखाई पडती हैं जहाँ ... भी बैठना पसन्द न करेगा। प्राय ... को मनुष्यों

ही है और उसका सताना कोई वीरता का काम नहीं है परन्तु न जाने हमारे बडे से बड़े कविगण इस के ऊपर क्यों कुपित रहे हैं। यदि श्रृङ्गार-रस का वर्णन करते हुए इन्होंने स्त्रियो का लोहा माना है तो केवल इतना ही कि इनको विषय-भोग का साधन ठहरा दिया है। इस से अधिक उनको किसी मानवी घटना में सम्मिलित नहीं किया। हां यह ठीक है कि कहीं कहीं उनके पातिव्रत तथा अन्य प्रशसनीय गुणो को बड़ी प्रबलता से दिखाया है परन्तु पुरुषों और स्त्रियो के सम्बन्ध में बहुत सी अरोचक बाते लिखी गई हैं। अनेक-पत्नीभाव भारतवर्षीय कवियो में बडा प्रबल है। कालिदास की शकुन्तला को ही लीजिए। उसकी माता मेनका किस प्रकार तपोभङ्ग करती है। शकुन्तला को सपत्नीभाव से कितना कष्ट पहुँचता है। और दुष्यन्त किस प्रकार अन्य स्त्रियो के प्रेम में शकुन्तला को भूल जाता है। 'विक्रमोर्वशी में काशीराज—पुत्री की उर्वशी के दर्शनानन्तर क्या दशा होती है और पुरूरवा किस प्रकार एक अप्सरा को देखकर निज स्त्री को त्याग देता है' जहां कहीं राम-सीता के सम्बन्ध का वर्णन आता है वहां अवश्य बड़े बड़े उच्च भाव दिखाये गये हैं परन्तु यह एक असाधारण बात है। गोस्वामी तुलसीदास जी की कविता का अनादर किये बिना भी हम यह कहने से नहीं रुक सकते कि उन्हों ने स्त्रियो को अनेक प्रकार के भोगों में सम्मिलित कर दिया है। वह एक स्थान पर लिखते हैं "स्त्रक् चन्दन वनितादिक भोगा" अर्थात् स्त्रियां भी एक प्रकार का भोग हैं। स्त्री-जाति के लिए यह बडा अपमानसूचक है और जिस जाति के उदर से हमने जन्म लिया है और जिसके स्तनों से हमारा पालन पोषण हुआ है तथा जिसको प्राचीन ऋषियो ने 'मातृदेव' के नाम से पुकारा है उसी जाति का ऐसा अपमान

के पैर की जूती कहा जाता है और यद्यपि इस समय हमारी चमडे की जूतियो का मान अधिक हो गया है परन्तु इन कल्पित जूतियों को अभी उसी स्थान पर छोड़ दिया गया है।

इस से यह नहीं समझना चाहिए कि प्राचीन भारतवर्ष में भी स्त्रियों की यही दशा थी। क्योंकि प्राचीन वेद शास्त्रों के अवलोकन से ज्ञात होता है कि मनुष्य-जाति के दो बराबर के खण्ड करके आधे को पुरुष और आधे को स्त्री कहते थे। अर्धाङ्गिनी शब्द समानत्व की यथार्थ सूचना देता है। मानसिक, आत्मिक, शारीरिक तथा अन्य सब अधिकार उनके तुल्य थे। परन्तु यह अधिकार हमारे देश में शेक्सपियर के समय से बहुत पहले छिन चुके थे। यूरोप में भी इस से पहले स्त्रियो को नीच समझा जाता था और शेक्सपियर के पश्चात् भी दो एक कवियो ने इनको आदर की दृष्टि से नहीं देखा। उदाहरण के लिए मिल्टन ने अपने महाकाव्य 'स्वर्गविछोह' (The Paradise Lost) में 'हवा' (Eve) का बहुत बुरा चित्र खींचा है और आदिम मनुष्य के स्वर्ग विछोह का कारण उसी को ठहराया है। निज जीवन में भी मिल्टन का यही विचार था और जब वह अन्धा होने के कारण अपनी लडकियो से लैटिन के ग्रन्थ सुना करता था तो केवल स्त्री-जाति की तुच्छता और अयोग्यता का विचार करके उसने उनको इतनी शिक्षा प्रदान नहीं की थी जिस से वह उन ग्रन्थो को समझ सकतीं या उन में किसी प्रकार की रुचि प्राप्त कर सकतीं।

भारतवर्ष के आधुनिक कवियों ने प्राय- स्त्रियो के अधिकार की रक्षा नहीं की और इनको उस उच्चश्रेणी से गिरा दिया है जो उन्हें वास्तव में ईश्वर से मिली थी। अबला बिचारी अबला

श्री है और उसका सताना कोई वीरता का काम नहीं है परन्तु न जाने हमारे बडे से बड़े कविगण इस के ऊपर क्यों कुपित रहे हैं। यदि शृङ्गार-रस का वर्णन करते हुए इन्होंने स्त्रियो का लोहा माना है तो केवल इतना ही कि इनको विषय-भोग का साधन ठहरा दिया है। इस से अधिक उनको किसी मानवी घटना में सम्मिलित नहीं किया। हाँ यह ठीक है कि कहीं कहीं उनके पातिव्रत तथा अन्य प्रशसनीय गुणो को बड़ी प्रबलता से दिखाया है परन्तु पुरुषों और स्त्रियो के सम्बन्ध में बहुत सी अरोचक बातें लिखी गई हैं। अनेक-पत्नीभाव भारतवर्षीय कवियो में बड़ा प्रबल है। कालिदास की शकुन्तला को ही लीजिए। उसकी माता मैनका किस प्रकार तपोभङ्ग करती है। शकुन्तला को सपत्नीभाव से कितना कष्ट पहुँचता है। और दुष्यन्त किस प्रकार अन्य स्त्रियो के प्रेम में शकुन्तला को भूल जाता है। 'विक्रमोर्वशी में काशीराज—पुत्री की उर्वशी के दर्शनानन्तर क्या दशा होती है और पुरूरवा किस प्रकार एक अप्सरा को देखकर निज स्त्री को त्याग देता है' जहाँ कहीं राम-सीता के सम्बन्ध का वर्णन आता है वहाँ अवश्य बड़े बड़े उच्च भाव दिखाये गये हैं परन्तु यह एक असाधारण बात है। गोस्वामी तुलसीदास जी की कविता का अनादर किये बिना भी हम यह कहने से नहीं रुक सकते कि उन्हों ने स्त्रियो को अनेक प्रकार के भोगो में सम्मिलित कर दिया है। वह एक स्थान पर लिखते हैं "स्रक् चन्दन बनितादिक भोगा" अर्थात् स्त्रियाँ भी एक प्रकार का भोग हैं। स्त्री-जाति के लिए यह बड़ा अपमानसूचक है और जिस जाति के उदर से हमने जन्म लिया है और जिसके स्तनों से हमारा पालन पोषण हुआ है तथा जिसको प्राचीन ऋषियो ने 'मातृदेव' के नाम से पुकारा है उसी जाति का ऐसा अपमान

करना बड़ा अनुचित है। जहाँ हमारा यह विचार नहीं है कि स्त्रियां पुरुषों की शिरोमणि हैं और पुरुष उनके दास हैं वहाँ हम इस को भी उचित नहीं समझते कि इनको पुरुषों की दासी समझा जावे।

इस विषय में हम Ruskin रस्किन की सम्मति लिखते हैं। उनका कथन है:—

We hear of the "Mission" and of the "rights" of woman, as if these could ever be separate from the Mission and the rights of man——as if she and her lord were creatures of independent kind and of irreconcilable claim This, at least is wrong And not less wrong——perhaps even more foolishly wrong is the idea that woman is only the shadow and attendant image of her lord, owing him a thoughtless and servile obedience, and supported altogether in her weakness by the pre-eminence of his fortitude

This, I say, is the most foolish of all errors respecting her who was made to be the helpmate of man As if he could be helped effectively by a shadow or worthily by a slave

अर्थ— हम स्त्री जाति के उद्देश और अधिकारों के विषय में बहुत सुना करते हैं माना यह पुरुषों के उद्देश और अधिकारों से भिन्न हैं—माना स्त्री और उसका पति एक दूसरे से स्वतन्त्र और भिन्न हैं। कम से कम यह तो अनुचित है। और यह विचार इससे कम अनुचित नहीं या शायद और भी अनुचित है कि स्त्री अपने स्वामी की एक छाया मात्र दासी है जिसका कर्त्तव्य है कि बिना किसी सकोच के अपने पति की हर प्रकार की सेवा किया करे। और अशक्त अवस्था में उसके अपूर्व साहस द्वारा सुरक्षित हो।

मेरा विचार है कि उस स्त्री-जाति के विषय में जिसको पुरुष की सहायता के लिए बनाया गया था यह बड़े अनर्थ

की बात है। माना उसको एक छाया या दासी से पूर्ण सहायता मिल सकती है।

जो विचार रस्किन ने ऊपर लिखे वाक्यों में दिखलाये हैं उनसे हम सर्वथा सहमत हैं और शेक्सपियर के नाटकों में भी इन्हीं की झलक पाई जाती है।

शेक्सपियर के नाटकों में प्राय. नायक प्रसिद्ध नहीं हैं किन्तु नायिकायें हीं प्रसिद्ध हैं। सिवा पंचम हनरी और (वैरोना के दो भद्र पुरुषों में से एक) वैलिण्टायन के और किसी पुरुष को उसने इतनी उत्तमता से नहीं वर्णन किया। औथेलो शायद बहुत अच्छा नायक सिद्ध होता अगर अपने सरल स्वभाव के कारण वह हर प्रकार के धोखे में न आजाता और नीच कार्य्य न कर बैठता। कोरियोलेनस, सीजर, एण्टनी यह सब यद्यपि वीर थे परन्तु अपने अभिमान के कारण नष्ट हो गये।

हैम्लिट केवल उदास और काल्पनिक युवक था। रूमियो सन्तोषहीन था। वेनिस का व्यापारी अपनी दरिद्रता से ही मुक्त न हो सका। राजा लियर का मित्र केण्ट वास्तव में बडा भद्र पुरुष था परन्तु उसके उजड्डपन ने उसे कृतकार्य्य होने न दिया। और लेण्डो को टेग्निप तो यद्यपि उसके भाव बडे उच्च प्रतीत होते हैं परन्तु वह भाग्य के हाथ में एक प्रकार का खिलोना है जिसके जीवन को सहारा देनेवाली केवल रोजालिन है।

'हनरी पचम' का आरम्भ ही सालिक नियम-सम्बन्धी वादविवाद से होता है जिसमें स्त्रियों के अधिकार पर आलोचना की गई है और हनरी की विजय एक प्रकार से

स्त्री-अधिकार की विजय है। 'राजा लियर' की कनिष्ठा पुत्री कौर्डीलिया का चरित्र कैसा प्रशंसनीय है। उसकी सत्य-प्रियता, पितृभक्ति, धर्मपरायणता सबही विचित्र हैं। देशदिमोना के पातिव्रत का तो कुछ कहना ही नहीं। सिम्बेलिन की पुत्री इमोजिन किस प्रकार अपने धर्म की रक्षा करती है, हनरी अष्टम की महारानी कैथरायन किस सन्तोष के साथ अपने पति से बिछुड़ती है, सिलिविया, वायोला, वर्जीलिया किस प्रकार मनुष्यत्व के उच्च से उच्च भाव से पूरित हैं। इन सब का विचार ही हम को एक नई दुनिया में ले जाता है और मानवी आदर्श को बहुत ऊँचा कर देता है।

शेक्सपियर के नाटकों में जहाँ कोई दुर्घटना होती है उसका कारण कभी किसी स्त्री को नहीं ठहराया किन्तु किसी न किसी पुरुष की मूर्खता या निर्बलता ही इसका हेतु है। जब कभी इस दुर्घटना का प्रतीकार हुआ है तो उसका साधन कोई न कोई स्त्री है और यदि वह स्त्री अपने काम में सफल नहीं होती तो परिणाम बुरा होता है।

शरद ऋतु की कहानी में लियोन्टीज़ व्यर्थ अपनी पतिव्रता स्त्री के सतीत्व पर शङ्का करता है और इसी के कारण अनेक प्रकार के कष्ट भोगने पड़ते हैं। अब इनका उद्धार किसके द्वारा होता है? क्या किसी पुरुष का यह साहस होता है कि लियोण्टीज को समझा सके, कदापि नहीं। एण्टीगोनस और अन्य पुरुष राजा की हाँ में हाँ मिलाने लग जाते हैं। अब ऐसे विकट समय में केवल एक अबला पौलीना उठती है और समस्त कहानी को शोकजनक से हर्षप्रद बनादेती है। पौलीना के बिना लियोण्टीज़ का जीवन अन्धकारमय था।

राजा लियर की दुर्गति अपनी मूर्खता और बुद्धिहीनता के कारण हुई। वह यह न समझ सका कि सत्य क्या और अनृत क्या? यदि ऐसे समय में स्वार्थरहित कौर्डीलिया पर वह विश्वास करता तो अवश्य बचजाता। कौर्डीलिया ने प्रयत्न भी यथाशक्ति किया परन्तु लियर का पागलपन उसको भी ले डूबा।

ओथेलो का तो कहनाही क्या है। इतनी प्रबल प्रेम-शक्ति होते हुए उसकी सरलता ने न केवल उसका ही नाश किया किन्तु सर्वस्व नष्ट हो गया।

'रूमियो और जूलियट' में जूलियट ने रूमियो के बचाने की कितनी कोशिश की और किस प्रकार अपने प्राणों की परवा न करते हुए अपने सतीत्व को रक्खा। परन्तु नाश किसके द्वारा हुआ केवल रूमियो के सन्तोषाभाव से। "जैसे को तैसा" में न्यायाधीश एंजीलो और इजाबिला का भाई क्लौडियो किस प्रकार अपने धर्म से पतित हो जाते हैं। परन्तु इनके धर्म की रक्षा करने वाली देवी इजाबिला ही है। 'कोरियो लेनस' में यदि मातृ-शिक्षा पर यथोचित काम किया जाता तो माता का प्रिय पुत्र नष्ट होने से बच जाता। परन्तु इस शिक्षा के विस्मरण से ही वह आपत्ति में फँस गया और माता की ईश्वर प्रार्थना द्वारा उसका उद्धार हुआ। और यद्यपि वह अपनी मृत्यु से न बच सका तथापि देश अहितरूपी कलङ्क का टीका उसके माथे से मिट गया।

प्रोथियस किस प्रकार अनेक स्त्रियों को देखकर उनके रूप से मुग्ध हो गया और अपने धर्म से पतित हो गया। प्रतिज्ञाओं को भूल गया। मित्र को निकलवा दिया। परन्तु दृढ़ जूलिया

अपने सत्य पथ से न डिगी। 'ग्रीष्म रात्रि के स्वप्न' में आपने पढ़ा कि किस प्रकार डिमेट्रियस ने हैलीना को कष्ट दिया।

इन सबसे विचित्र बुद्धि उस पोर्शिया की है जिस ने एण्टोनियो को दुष्ट यहूदी के आघातो से बचाया और जिससे सिद्ध होता है कि स्त्रियाँ न केवल अपने पतियो को रिझाना ही जानती हैं किन्तु वे बुद्धिमत्ता के बडे से बडे और सूक्ष्म से सूक्ष्म कार्य्य कर सकती हैं। जो बात मनुष्यों को आयु भर में नहीं सूझती वह इनको तुरत सूझ जाती है। जिस परोपकार के करने का मनुष्यो को साहस नहीं होता उन्हें यह करके दिखा देती हैं।

शेक्सपियर ने केवल तीन स्त्रियो को कुरूप में दिखलाया है। लेडी मैकबिथ, गानरिल और रीगन। लेडी मैकबिथ भीषण से भीषण कार्य्य करने से नहीं चूकती। रीगन और गानरिल अपने अत्याचारों में चुडेलो से भी बढ जाती हैं। परन्तु ऊपर लिखित अनेक स्त्रियों के प्रकाश-मण्डल के सम्मुख ये तीन स्त्रियाँ भयानक अपवाद मात्र हैं। और इनसे केवल इसी बात की सूचना मिलती है कि काबुल में भी गधे होते हैं। अन्यथा प्राय: स्त्रियाँ कोमल, धर्मपरायण, सती और पतिसहायिनी ही होती हैं।

शेक्सपियर ने जो फोटो स्त्री-जाति का खींचा है वह वस्तुत: हर एक काल और हर एक देश की स्त्रियो में संघटित हो सकता है। अधिकतर स्त्रियाँ पुरुषों को बहकाने वाली नहीं होतीं किन्तु पुरुष ही स्त्रियों को बहकाते हैं। और वे अपने सरल स्वभाव के कारण पुरुषो पर विश्वास करलेती हैं।

हिन्दी-शेक्सपियर

पाँचवाँ भाग

बात का बतङ्गड

(MUCH ADO ABOUT NOTHING)



सीना के महल में हीरो और बीटरिस नाम की दो युवतियाँ रहती थीं। हीरो का बाप लियोनेटो मैसीना का राजा था। बीटरिस लियोनेटो की भतीजी थी।

हीरो एक गम्भीर स्त्री थी परन्तु उसकी बहन बीटरिस हँसमुख और चचल थी। वह नित्यप्रति अपनी बहन को अपने हास्य प्रहसन द्वारा खुश किया करती थी। ससार में छोटी स छोटी भी घटना ऐसी न थी जो बीटरिस के हास्य का विषय न हो सकता हो।

जिस समय का इतिहास हम वर्णन कर रहे हैं उस वक्त कुछ उच्च श्रेणी के वीर पुरुष किसी युद्ध से लौट कर लियोनेटो से मिलने के लिए मसीना में आये। इनमें आरागन (हस्पानिया) का राजा डोन पेडरो और उसका मित्र क्लौडियो भी था जो फ्लोरेंस का शासक था। इन दोनों के साथ एक रसिक मनुष्य बैनीडिक भी था जो पैडुआ का राजा था। इस युद्ध में इन सब ने बडी वीरता दिखाई थी, और विजय पाकर खुशी

मनाने के लिए वे मेसीना में आये थे जहाँ कुछ दिनों रहने का उनका विचार था।

ये लोग पहले भी मेसीना में आये थे और हीरो तथा बीटरिस से उनका परिचय हो चुका था।

जिस समय डौन पीडरो और उसके साथी लियोनेटो के समीप आये उसने कहा—

"महाशय लियोनेटो। फिर आपको कष्ट उठाना पड़ा। संसार चाहता है कि ख़र्च से बचता रहे। परन्तु आप नहीं बच सकते।"

लियोनेटो—आपके शुभागमनरूपी कष्ट मुझको नित्य हुआ करें। क्योंकि ऐसी दशा में कष्ट के अभाव से शान्ति ही शेष रह जाती है। जब आप यहाँ से चले जाते हैं तब दुःख ही रह जाता है क्योंकि आनन्द तो चला ही गया।

डौनपीडरो—(हीरो की ओर संकेत करके) क्या यह आपकी लड़की है?

लियोनेटो—इसकी माता ने कई बार मुझसे यही कहा था।

बैनीडिक—क्या आपको इस बात में सन्देह था कि इनकी माता से पूछना पड़ा?

बैनीडिक की इसी प्रकार की हास्यप्रद बातें सुनकर बीटरिस बोल उठी—

"बैनीडिक! तुम अभी कह ही रहे हो! भला कोई सुनता भी है कि वैसे ही कहे जाते हो"

बैनीडिक—आहा! घृणादेवी! आप अभी जीवित हैं।

बीटरिस—क्या घृणा कभी मर भी सकती है जब उसके भोजन के लिए बैनीडिक जैसे मनुष्य मौजूद हों। यदि आप-

उसके सामने जायँ तो आदर सत्कार भी घृणा में परिवर्तित हो जायगा।

वैनीडिक—सिवा तुम्हारे और सब स्त्रियाँ मुझे चाहती हैं। परन्तु मुझे किसी से स्नेह नहीं है।

बीटरिस—यह तो स्त्रियों का भाग्य है। नहीं तो आप जैसे हानिकारक जीव उनको अपने प्रेमालाप से बडा कष्ट दिया करते। मुझे यह पसन्द है कि कुत्ता भौंकता रहे परन्तु यह पसन्द नहीं कि कोई मुझसे प्रेमालाप करे।

वैनीडिक—ईश्वर करे आपका ऐसा ही स्वभाव रहे नहीं तो किसी के मुँह को नोच खाओ।

बीटरिस—तुम जैसों का मुँह तो नोचने से भी अधिक भद्दा न मालूम होगा।

वैनीडिक को एक स्त्री के मुख से ऐसी हँसी की बातें सुनने से क्रोध आ गया। क्योंकि जो मनुष्य हँसी किया करते हैं वे दूसरों की हँसी सुनने से चिढ़ भी बड़ी जल्दी जाते हैं। वैनी-डिक जब पहले मैसीना में आया था तब भी देख चुका था कि बीटरिस उसको खूब चिढाया करती थी। इस प्रकार जब कभी यह दोनों कहीं मिल जाते और परस्पर वार्तालाप हो जाता तो इन सब बातों का यही परिणाम होता कि अन्त में वे एक दूसरे से अप्रसन्न होकर ही पृथक् होते थे। परन्तु इन दोनों का वाग्युद्ध कभी बन्द नहीं होता था।

बीटरिस युद्ध का समाचार पूछते समय कहा करती थी कि महाशय वैनीडिक इतने वीर हैं कि उनके मारे हुए पुरुषों को मैं खा सकती हूँ। अर्थात् इनसे एक मनुष्य भी न मर सका होगा। वैनीडिक इस बात से तो अप्रसन्न न हुआ क्योंकि वह वास्तव में एक वीर पुरुष था और बीटरिस के कथन मात्र

से कायर सिद्ध नहीं हो सकता था। परन्तु जब बीट्रिस ने उससे एक ऐसी बात कह दी जो उस पर फबती थी तो वह नाराज हो गया। क्योंकि काने को काना कह देने से वह चिढ़ ही जाता है। बीट्रिस ने कहा—"तुम तो राजा के भाँड हो"। भाँडपना बैनीडिक में था ही। इसलिए उसे यह बात बुरी मालूम हुई कि एक स्त्री मेरे दोषों को इस प्रकार प्रकाशित करे।

सुशीला हीरो पाहुनों के सन्मुख बड़ी शान्ति से बैठी रहा करती थी। राजा क्लौडियो उसको बड़े ध्यान से देखा करता था। और उसके रूप तथा लावण्य पर मोहित हो गया था। परन्तु डौन पीडरो को बीट्रिस और बैनीडिक की बातें सुन सुन कर बड़ी हँसी आती थी और एक दिन उसने लियोनेटो से कहा—

"यह तो बड़ी चचल स्त्री है क्या ही अच्छा हो अगर इसका बैनीडिक से विवाह हो जाय।" लियोनेटो ने उत्तर दिया—

"महाशय! अगर इन दोनों का सम्बन्ध हो जाय तो एक सप्ताह में ही वह बकते बकते पागल हो जायंगे।"

यद्यपि लियोनेटो के विचार से इन दोनों का जोड़ा मिलाने के योग्य नहीं था परन्तु डोन पीडरो के मन में अभी यह बात बनी रही कि किसी न किसी प्रकार इनका विवाह हो जाना चाहिए।

जब पीडरो क्लौडियस के साथ राजमहल से चला तब उसे मालूम हुआ कि बीट्रिस और बैनीडिक के विवाह के अतिरिक्त एक और विवाह होने वाला है। क्योंकि जब क्लौडियस महल से बाहर आया तो उसने हीरो की इतनी प्रशंसा

को कि पीडरो को यह निश्चय हो गया कि वह हीरो को चाहता है। उसने क्लौडियो से पूछा—

"क्या आप का हीरो पर प्रेम है।"

क्लौडियो—महाराज ! जब मैं पहले मसीना में आया था उस समय में युद्ध पर जारहा था और स्नेह करने का अवकाश नहीं था। परन्तु अब शान्ति के समय में वीररस की जगह शृङ्गार रस ने लेली है। और अब जो मैं हीरो को देखता हूँ तो उसकी ओर मेरा मन आकर्षित हुआ जाता है।

पीडरो को क्लौडियस ओर हीरो का सम्बन्ध ऐसा उचित मालूम हुआ कि उसने लियोनेटो से प्रार्थना करके यह विवाह स्वीकार करा लिया। और हीरो भी उस से विवाह करने पर राजी हो गई क्योंकि क्लौडियस बडा वीर और गुणी पुरुष था। जब ये सब बातें निश्चय हो गई तब विवाह सस्कार के लिए एक तिथि नियत कर दी गई।

यद्यपि विवाह के दिन निकटस्थ ही थे परन्तु क्लौडियस को एक एक घडी भी वर्षो की बराबर बीतती थी। क्योंकि युवक मनुष्य जिस बात को करना चाहते है उसको जल्दी ही करना चाहते हैं और चाहे उसके होने में थोडाही समय क्यों न हो, उनको बहुत बडा मालूम होता है। इस समय में क्लौडियस का जी बहलाने के लिए पीडरो ने एक और उपाय सोचा वह यह था कि किसी प्रकार ऐसी बात करनी चाहिए जिस से बेनीडिक बीटरिस से प्रेम करने लगे और बीटरिस भी बेनीडिक को चाहने लगे। इसी के लिए लियोनेटो ने भी यह बात मान ली। और वो और सुशीला हीरो भी क्लौडियस के कहने से

इस बात पर राज़ी हो गई कि जो कुछ मुझ से बन सकेगा, मैं भी इस सम्बन्ध में यथाशक्ति कोशिश करूँगी।

अब सवाल यह था कि किस प्रकार इस काम को करना चाहिए। पीडरो की समझ में एक बात आई कि सब लोग बैनीडिक को झूठ मूठ यह बात निश्चय करा दें कि बीटरिस उस से प्यार करती है। और हीरो बीटरिस को यह विश्वास दिलादे कि बैनीडिक उस के प्रेमरोग से पीडित है।

पहले पीडरो, क्लॉडियस और लियोनेटो ने अपना कार्य्य आरम्भ किया। जब बैनीडिक बाग की एक कुंज में बैठा हुआ कुछ पढ़ रहा था उस समय वे सब लोग एक निकट की कुंज में जाकर टहलने लगे, जिस से उन की सब बातें बैनीडिक को सुनाई दे सकें। पर उसे यह बात मालूम न हो कि यह बातें मुझे सुनाने के लिए कही जा रही हैं। पीडरो लियोनटो से कहने लगा—

"लियोनेटो! आपने आज मुझ से यह क्या बात कही कि तुम्हारी भतीजी बीटरिस बैनीडिक से प्रेम करती है!

क्लॉडियस—चुप! बैनीडिक सुनता होगा! मुझे तो यह आशा न थी कि बीटरिस किसी मनुष्य को भी चाहती हो।

लियोनेटो—मुझे भी यही ख़याल था। परन्तु यह बड़ी विचित्र बात है कि बीटरिस बैनीडिक से इतना प्रेम करती है। दिखलाने को तो वह उससे बहुत लड़ती है और उसे खूब ही चिढाती है।

बैनीडिक ने दूर से जो यह बात सुनी तो मन में आश्चर्य

। परन्तु लियोनेटो ने फिर कहा—

बताऊँ, कुछ समझ में नहीं आता। परन्तु इसमें

कुछ भी सन्देह नहीं कि बीटरिस का वैनीडिक के लिए अगाध प्रेम है।

पीडरो—वह बहाना तो नहीं करती ?

क्लौडियस—हाँ, शायद यही बात हो।

लियोनेटो—नहीं नहीं, ऐसा बहाना कोई नहीं करता। यह तो सच ही प्रतीत होता है।

पीडरो—अच्छा, उसका प्रेम आपको किस प्रकार जान पड़ा ?

क्लाडियो—हाँ यह तो बताओ—

लियोनेटो—मेरी लड़की ने यह कहा था क्या आपने नहीं सुना।

क्लौडियस—हाँ ये तो मुझसे भी कहती थी।

पीडरो—मुझे बड़ा आश्चर्य होता है मैं तो यही समझता था कि बीटरिस का हृदय कभी इस योग्य नहीं है जिसमें किसी का प्रेम समा सके।

लियोनेटो—हाँ, और विशेष कर वैनीडिक का जिसको वह साफ साफ गालियाँ देती है।

वैनीडिक इस बात को सुन कर मनमें कहने लगा कि इसमें कुछ कपट छल मालूम होता है परन्तु एक बातसे छल प्रकट नहीं होता क्योंकि यदि कोई छल होता तो सफेद डाढी वाला वृद्ध लियोनेटो इसमें सम्मिलित न होता।

पीडरो ने फिर पूछा—

"क्या बीटरिस ने अपने प्रेम की कथा वैनीडिक को सुना दी है ?"

लियोनेटो—नहीं नहीं। वह कहती है कि मैं कभी यह बात प्रकट न करूँगी।

क्लौडियस—आपकी पुत्री ने भी यही कहा था। बीटरिस कहती है कि मैं सब के सामने उसकी हँसी कर चुकी हूँ।

इसलिए अब किस मुँह से,कहूँ, कि मैं तुमको प्यार करती हूँ।

लियोनेटो—वह कहती ही कहती है। मुझे निश्चय है कि वह बीस बार रात में सोते से उठेगी और सफे के सफ़े लिख डालेगी। प्रेम बड़ा प्रबल है।

क्लौडियस—हाँ! हाँ! मैं आप को बताता हूँ। आपकी लड़की कहती थी। बीटरिस ने एक पत्र लिखा।

लियोनेटो—फिर क्या?

क्लौडियस—जब देने का समय आया तो अपने निलर्ज्जपन पर लज्जित होगई और फाड़ डाला। कहने लगी, 'मुझे विश्वास है कि बैनीडिक सुनते ही मुझसे हँसी करने लगेगा।"

फिर वह कहने लगी—

"बैनीडिक! बैनीडिक! क्या करूं।"

लियोनेटो—मेरी लड़की ने तो बहुत सी बातें बताई हैं। वह कहती है कि अगर बैनीडिक ने उसकी प्रार्थना स्वीकार न की तो वह आत्मघात कर लेगी!

पीडरो—फिर यह अच्छा होगा कि बैनीडिक से हमी लोग इस बात को कहदें।

क्लौडियस—कहने से प्रयोजन? बैनीडिक ऐसा कठोर है कि बिचारी रमणी को सुन ही कष्ट देगा।

पीडरो—यह बैनीडिक की दुष्टता है। क्योंकि वह बड़ी अच्छी स्त्री है। और उसका चालचलन भी निस्सन्देह है।

क्लौडियस—और वह बुद्धिमती भी है।

पीडरो—सिवा इस बात के कि वह बैनीडिक को चाहती है और सब बातो से उसकी बुद्धिमता प्रतीत होती है।

लियोनेटो—जब बुद्धि और प्रेम में लड़ाई होती है तब प्रेम ही की जय होती है। मुझे बीट्रिस के लिए शोक है। क्योंकि वह मेरी भतीजी है और मैं उसका संरक्षक हूँ।

पीडरो—जो वह मुझसे इतना हित प्रकट करती तो मैं अवश्य उसे अपनी अर्धांङ्गिनी बना लेता। मेरी तो यही राय है कि बैनीडिक को इस बात की सूचना दे दी जाय। देखें वह क्या कहता है?

लियोनेटो—क्या इससे कुछ लाभ होगा?

क्लौडियस—हीरो तो यही कहती है कि वह मर जायगी और कभी बेनीडिक से न कहेगी। क्योंकि हँसी कराने से मर जाना अच्छा है।

पीडरो—हाँ उसका विचार ठीक है क्योंकि अगर उसने अपने प्रेम का प्रकाश किया तो बैनीडिक अवश्य उससे घृणा करेगा। क्योंकि वह बड़ा दुष्ट है।

क्लौडियस—आदमी तो भला है!

पीडरो—बाहर से तो भला ही जान पड़ता है।

क्लौडियस—मैं तो उसे बुद्धिमान् समझता हूँ।

पीडरो—बात तो अच्छी कहता है।

क्लौडियस—बहादुर भी है।

पीडरो—झगड़ा भी नहीं करता। परन्तु लियोनेटो! मुझे तुम्हारी भतीजी के लिए शोक है। चलो बैनीडिक के पास चलें और उसे इस बात से सूचित करदें।

क्लौडियस—नहीं नहीं! महाराज! इस समय न कहिए।

पीडरो—अच्छा जाने दो! हीरो से सब बातें मालूम हो जायँगी! बैनीडिक मेरा मित्र है। मैं चाहता हूँ कि

वह यह बात जान ले कि वह इस युवती के योग्य नहीं है।

ये बातें करके वे लोग बाग से भोजनशाला की ओर चले गये। वैनीडिक कुंज से निकला और अपने मनमें सोचने लगा :—

"यह बात हँसी की नहीं है। क्योंकि वे बड़ी गम्भीरता से बात-चीत कर रहे थे। उन्होंने यह सब हीरो से सुना होगा। उनको वीटरिस पर तरस आता है। इससे जान पड़ता है कि उसकी अवस्था शोचनीय हो गई है। ये लोग मुझे बुरा भला कहते हैं और समझते हैं कि अगर मुझे वीटरिस के प्रेम का पता चल गया तो मैं उसकी हँसी करूँगा। इनका यह भी खयाल है कि वीटरिस बिना प्रेम का प्रकाश किये ही मर जायगी। वे कहते हैं कि स्त्री तो रूपवती है। इसको मैं भी मानता हूँ। बुद्धिमती भी है। सदाचारिणी भी है। ये लोग कहते हैं कि मुझसे प्रेम करना उसकी मूर्खता है। पर मैं तो इसको मूर्खता नहीं कहता। अगर वह मुझसे प्रेम करती है तो क्या मैं उससे न करूँगा। मुझे कभी विवाह करने की इच्छा नहीं थी और मैं विवाह का बड़ा विरोधी था। पर क्या इच्छाओं में परिवर्तन नहीं होता? जो खाना मनुष्य को जवानी में अच्छा लगता है वह बुढ़ापे में नहीं भाता। जब मैंने कहा था कि मैं क्वारा ही मर जाऊँगा तब मुझे यह क्या मालूम था कि मेरा विवाह हो जायगा।"

जब वैनीडिक महाशय विचार कर रहे थे तब वहाँ पर वीटरिस भी आ गई और कहने लगी :—

"अपनी इच्छा के विरुद्ध मैं आपको भोजन का निमन्त्रण देने आई हूँ।"

वैनीडिक—सुन्दरी, मैं आपका अनुगृहीत हूँ। आपने बडा कष्ट किया।

बीटरिस—इस धन्यवाद के लिए मैंने इतना ही कष्ट किया है जितना आपने धन्यवाद देने में। अगर मुझे कष्ट होता तो मैं न आती।

वैनीडिक—तो यहाँ आने में आपको हर्ष हुआ है?

बीटरिस—हाँ, उतना ही हर्ष हुआ जितना आपको भोजन खाने में होगा।

वैनीडिक का अभी से यह खयाल होने लगा कि जो कुछ पीडरो और क्लौडियस ने कहा वह सब ठीक है। उसे बीटरिस के मुँह पर प्रेम के चिह्न दिखाई देने लगे क्योंकि जो कुछ मनुष्य के मन में होता है उसी के अनुकूल बाहर भी दिखाई देता है। अब उसने कहा कि "मैं अवश्य बीटरिस को प्यार करूँगा, अभी जाकर उसकी तसवीर लिये आता हूँ।"

वैनीडिक को जाल में फँसाने के बाद अब इन लोगों ने बीटरिस के फाँसने का यत्न किया और हीरो ने अपनी दो सहेलियां मारगरेट और अर्सला को साथ लेकर वही काम करना आरम्भ किया जो क्लौडियो आदि ने किया था। जिस समय बीटरिस पीडरो और क्लौडियो से बातें कर रही थी उस समय मारगरेट ने जाकर उससे कहा :—

"श्रीमती जी! हीरो और अर्सला आपके विषय में चुपचाप कुछ बातें कर रही हैं। अगर तुम चाहो तो बाग की कुंज में जाकर इस को सुन सकती हो।"

यह वही कुंज थी जहाँ वैनीडिक पहले दिन बैठा पुस्तकावलोकन कर रहा था।

कल विवाह न करूँगा। बल्कि कल समस्त सभा में इसे बदनाम करूँगा।

पीडरो—यदि मुझे विश्वास हो गया कि हीरो असती है तो मैं भी कल इसको बदनाम करने में तुम्हारा साथ दूँगा।

सच बात यह है कि हीरो असती नहीं थी किन्तु जोन एक दुष्ट आदमी था। वह पीडरो और क्लौडियस से शत्रुता रखता था। इसके अतिरिक्त उस में स्वाभाविक नीचता भी थी। उसे यह बात पसन्द न आई कि क्लौडियस का विवाह ऐसी योग्य स्त्री के साथ हो जाय। इसलिए उसने पीडरो और उसके मित्र को कष्ट देने के लिए हीरो को बदनाम करने की ठान ली और उस कार्य्य को पूरा करने के लिए ब्रोकियो नामी एक दुष्ट आदमी को कुछ रुपया देने का वादा करके कहा कि कोई ऐसा उपाय करना चाहिए जिस से यह विवाह न हो सके। ब्रोकियो ने उत्तर दिया कि मैं अवश्य इस कामको कर सकता हूँ।"

जौन—किस प्रकार?

ब्रोकियो—मैं ने आप से कहा था कि हीरो की सहेली मारगरेट मुझसे प्रेम करती है।

जौन—हाँ! मुझे याद है।

ब्रोकियो—मैं उस से कहदूँगा कि रात्रि के समय वह हीरो की खिड़की से हो कर मुझ से बात चीत करले। मारगरेट अवश्य मुझ से बात करने आवेगी। और हीरो के वस्त्र भी धारण कर सकती है, यदि मैं उस से कहदूँ।

जौन—हाँ यह तो अच्छा उपाय है।

ब्रोकियो—परन्तु आप की कोशिश चाहिए। आप उसी समय क्लौडियस को लेकर दूर से दिखला दीजिए कि हीरो किसी अन्य पुरुष से रात के समय बातें कर रही है।

क्लौडियस इसके असतीत्व को देख कर झट अपना मन फेर लेगा। कहो कैसी कही।

जौन—बहुत अच्छी! बहुत अच्छी! हर्रा लगे न फिटकरी, रंग आवे चोखा! पर देखो अपनी बात से मत हटजाना, नहीं तो मुझे बड़ी लज्जा उठानी पड़ेगी।

इस प्रकार जब जौन, क्लौडियस और पीडरो को साथ लेकर हीरो के मकान की ओर आया तो हीरो की सहेली मारगरेट अपनी स्वामिनी के वस्त्र पहने हुए खिडकी में होकर ब्रोकियो से बातें कर रही थी।

क्लौडियस को यह चाल मालूम न थी। उसे निश्वास हो गया कि यह हीरो ही है। इसलिए यह देखकर उसका बड़ा क्रोध आया और जितना प्रेम वह हीरो से करता था उतनी ही उस से घृणा करने लगा। अब उसने दृढ़ प्रतिज्ञा करली कि दूसरे दिन धर्ममन्दिर में जाकर हीरो की कलई खोलूँगा। राजा पीडरो ने भी यह बात स्वीकार करली। क्योंकि उसे यह बहुत बुरा मालूम हुआ। निस्सन्देह किसी स्त्री का इससे अधिक दोष नहीं हो सकता कि विवाह की रात को अपनी खिड़की में होकर वह एक अजनबी आदमी से 'बात करती पकड़ी जाय।

दूसरे दिन प्रातःकाल जब विवाहसंस्कार का समय आया और सब लोग धर्ममन्दिर में एकत्रित हुए, उस समय क्लौडियस ने बड़े जोर से क्रोध में आकर हीरो के दोष वर्णन करना शुरू किया। निर्दोष हीरो खड़ी खड़ी सुन रही थी और कहती थी—'क्या मेरे स्वामी का स्वास्थ्य अच्छा है? आप इतना क्रुद्ध क्यों होते हैं?"

क्लौडियस ने पीडरो से कहा—

दुष्ट ने निर्लज्ज होकर साफ साफ कह दिया कि सहस्रों बार हमसे बात चीत हुई है।

जोन—धिक् ! धिक् ! धिक् ! महाशय ! रहने दीजिए ! ये बातें कहने योग्य नहीं हैं। हीरो ! मुझे आपके इस असत्यत्व पर शोक है।

हीरो को इन बातों के सुनने से इतना दुःख हुआ कि वह मूर्छा खाकर गिर पड़ी और सबने यही जाना कि हीरो मर गई। पीडरो और क्लोडियस दोनों धर्ममन्दिर से चले गये और उन्होंने यह भी न देखा कि हीरो और उसके पिता लियोनेटो को कितना दुःख है। क्योंकि क्रोध के मारे उनका हृदय पाषाण से भी कठोर हो गया था।

बैनीडिक वहीं रह गया था। उसने बीटरिस की सहायता से हीरो को मूर्छा से जगाया। बीटरिस को अपनी बहन की इस आपदा पर बड़ा दुःख हुआ, क्योंकि उसको भली प्रकार ज्ञात था कि हीरो बड़ी सदाचारिणी स्त्री है। उसको इस दोषारोपण पर बिलकुल ही विश्वास नहीं आया। वह अपने मनमें कहने लगी कि लोग झूठ बोलते हैं।

परन्तु हीरो का बाप लियोनेटो सन्दिग्ध-आत्मा का पुरुष था। वह डौन जौन जैसे सज्जन की साक्षी को झूठा नहीं मान सका। जिस समय हीरो मूर्छित पड़ी हुई थी वह लज्जा के मारे चिल्लाने लगा। वह कहने लगा—"मौत ! मौत ! आज मेरी लाज रख ले। हे हीरो, तू अब आँखें मत खोलना। क्योंकि ऐसा लज्जा का काम करके मर जाना ही उचित है।"

जब बीटरिस के परिश्रम से हीरो ने कुछ आँखें खोलीं तो लियोनेटो ने फिर कहा—

"हाय ! यह तो जीवित है। अरी क्यों उठी है ? धिक्,

धिक्! समस्त संसार धिक् धिक् कर रहा है। भला यह इस बात का कैसे निषेध कर सकती है। हीरो आँखें मत खोल! हीरो, अब तेरा जीवन व्यर्थ है। जो मैं जानता कि तू इस लज्जा के होने पर भी जीवित रहेगी तो तुझे चुपके चुपके मार डालता! मैंने कभी इस बात पर रंज नहीं किया कि ईश्वर ने मुझे केवल एक ही लड़की दी। हाय! तू मेरे क्यों पैदा हुई? और मैंने तुझे स्नेह से क्यों पाला? अगर मैं किसी फकीर की लड़की को गोद ले लेता और वह आज ऐसी निर्लज्ज हो जाती तो मैं यह कह सकता था कि यह मेरे वंश की नहीं है। परन्तु क्या किया जाय। मैं अपनी लड़की के ऊपर अभिमान करता था। मैं अपनी लड़की की प्रशंसा किया करता था। हाय! आज वह डूब गई। स्याही के गड्ढे में डूब गई। उसके माथे पर कलंक का टीका लग गया, जिसके धोने के लिए सात समुद्रों का पानी भी काफी नहीं है।

बैनीडिक—श्रीमन्! सन्तोष कीजिए। मुझे तो इतना आश्चर्य हुआ है कि कुछ कह ही नहीं सकता।

बीटरिस—अपने जीवन की सौगन्ध, मेरी बहन को झूठा दोष लगाया गया है।

बैनीडिक—क्या कल तुम हीरो के साथ सोई थी?

बीटरिस—नहीं नहीं। कल तो नहीं। लेकिन साल भर से रोज साथ सोती रही हूँ।

लियोनेटो—ठीक! ठीक! क्या दो राजे झूठ बोलेंगे। क्या क्लौडियस झूठ बोल सकता है? वह तो इसे प्राणों से भी अधिक चाहता था। इसको यहाँसे ले जाओ। और मर जाने दो।

पुरोहित जो अब तक चुपका खड़ा यह भग—

रहा था, एक बुद्धिमान् मनुष्य था। उसने बहुत से आदमियों की आँखें देखी थीं, वह सच और झूठ की पहचान कर सकता था। वह कहने लगा—

"कुछ मेरी भी सुनो। मैं बड़ी देर से चुपका खड़ा हूँ और हीरो के मुँह की ओर ताक रहा हूँ। मैंने देखा है कि पहले तो लज्जा के मारे इसका मुँह लाल हो गया, परन्तु फिर थोड़ी देर में वह सब लाली जाती रही, जिससे प्रकट होता है कि यह लड़की निर्दोष है। इसकी आँखों में एक प्रकार की चमक है, जो अपराधियों की आँखों में नहीं होती। मुझे तो यही जान पड़ता है कि कुछ धोका हो गया है। अगर ऐसा न हो तो कह देना कि मैंने धूप में बाल श्वेत किये हैं।"

लियोनेटो—पुरोहित जी! यह नहीं हो सकता। भला झूठ बोल कर एक अपराध की जगह दो अपराध करना कौन सी अच्छी बात है।

पुरोहित—देवि! वह कौन मनुष्य है जिसके साथ रहने का तुम पर दोष लगाया गया है?

हीरो—यह तो वेही जान सकते हैं जो दोष लगाते हैं। मुझे क्या मालूम? अगर मैंने किसी पुरुष के दर्शन भी किये हों तो ईश्वर मुझ पर दया न करे। पिताजी! अगर आपको सिद्ध हो जाय कि कल रात को मैं किसी पुरुष से बात करती थी तो कुत्तों की मौत मार डालना!

पुरोहित—इन राजों का स्वभाव कैसा है?

बेनीडिक—दो तो बड़े धर्मात्मा हैं। तीसरा जोन, जो जारज है, दुष्ट है और दुष्टतायें किया करता है।

लियोनेटो—मेरी समझ में कुछ नहीं आता। अगर यह सच कहते हैं तो इन्हीं हाथों से मैं इसके टुकड़े टुकड़े किये

डालता हूँ। यदि उनका कहना झूठ है तो अभी मेरी भुजाओं में बल है, मैं उनको इसका मजा चखा दूँगा।

पुरोहित—अच्छा मेरी बात मान लीजिये। वे सब देख गये हैं कि हीरो मर गई। अब यही प्रसिद्ध कर दो और समाधि बनवा दो।

लियोनेटो—इससे क्या होगा?

पुरोहित—इससे यह होगा कि जो क्रोध करते हैं वे तरस खायँगे। इससे कुछ लाभ होगा। लोग शोक मनावेंगे और अपने किये पर पछतायँगे। जब क्लौडियो सुनेगा कि हीरो मर गई तो उसका क्रोध शान्त हो जायगा और उसे अपनी प्यारी की फिर याद आवेगी। इससे बहुत बड़ा लाभ होगा। परन्तु यदि मेरा यह सब कथन मिथ्या हुआ तो कम से कम एक बात तो हो ही जायगी, अर्थात् हीरो बदनामी से बच जायगी। अगर तुम चाहो तो उसको किसी मन्दिर में रहने दो।

वैनीडिक के समझाने से लियोनेटो ने यह बात मानली और हीरो को छिपा लिया। वह कहने लगा—

"डूबते को तिनके का सहारा भी बहुत है।"

अब बीटरिस और वैनीडिक वहाँ रह गये। वैनीडिक ने कहा—

"प्यारी बीटरिस! क्या तुम उस समय से रोती ही हो?"

बीटरिस—अभी तो और रोऊँगी।

वैनीडिक—मैं समझता हूँ कि तुम्हारी बहन पर झूठा दोष लगाया गया है।

बीटरिस—मैं उस पुरुष को कितना चाहूँगी जो इसको झूठा सिद्ध कर दे।

वैनीडिक—क्या तुमको निश्चय है कि यह क्लौडियो का दोष है?
बीटरिस—हाँ ।
वैनीडिक—अच्छा लो, जाता हूँ। आज वह अपने कियेका फल पावेगा ।

इधर तो बीटरिस के कहने से वैनीडिक ने क्लौडियो को युद्ध करने के लिये बुलाया, उधर वृद्ध लियोनेटो ने भी पीडरो और क्लौडियो दोनों से युद्ध की इच्छा की*। क्लौडियो ने लियोनेटो को तो वृद्ध पुरुष समझ कर टाल दिया, परन्तु वह वैनीडिक से युद्ध करने पर राजी हो गया और यदि ईश्वर की सहायता न आ जाती तो अवश्य एक न एक मारा जाता !

जब यहाँ युद्ध की तैयारियाँ हो रही थीं उसी समय एक मजिष्ट्रेट ब्रोकियो को पकड़े हुए लाया । उसने ब्रोकियो को किसी अन्य मनुष्य से वे सब बातें कहते सुना था जो उसके और डौन जौन के बीच में हुई थीं और जिनके कारण हीरो और उसके सम्बन्धियों की यह गति हुई ।

ब्रोकियो ने क्लौडियो के सामने पीडरो से वर्णन किया कि रात के समय जो स्त्री खिड़की में उससे बातें कर रही थी वह हीरो की सहचरी मारगरेट थी जो हीरो के कपड़े पहने हुए थी । अब तो हीरो के विषय में क्लौडियो और पीडरो को कुछ भी शङ्का नहीं रही । यदि कुछ रही होगी तो वह इस वजह से दूर हो गई कि ब्रोकियो के पकड़े जाने की खबर सुनते ही डौन जौन वहाँ से भाग गया, जिससे सब लोग जान गये कि जौन का इस दुष्टता में अवश्य कुछ मेल है ।

*यूरोप में पहले यह नियम था कि यदि किसी बात में दो पुरुषों को सन्देह होता था तो उसका लड़ के निश्चय कर लेते थे, जो जीतता था उसीकी बात सच्ची समझी जाती थी ।

जब क्लौडियो को मालूम हुआ कि मैंने अपनी प्यारी के अकारण प्राण ले लिये तो उसे बड़ा दुःख हुआ। वह हीरो को याद करके चिल्लाने लगा। वह कहने लगा कि जब मैं बोरकियो की बातें सुन रहा था तो मेरे शरीर में विष जैसा फैलता जाता था।

अब क्लौडियो ने लियोनेटो के पैरों पर सिर रख कर क्षमा चाही और कहा कि आप जो कुछ दण्ड मुझे देना चाहें उसे सहन करने के लिए मैं तैयार हूँ। क्योंकि मैंने अपनी प्यारी पर दोषारोपण करके बड़ा भारी अपराध किया है।

लियोनेटो ने कहा कि मैं तुम्हारे लिए एक प्रायश्चित्त बतलाता हूँ, उसे करना स्वीकार करो। हीरो की एक चचेरी बहन और है, जो रूप में बिलकुल हीरो के समान है। उससे तुम विवाह कर लो। क्लौडियो ने कहा कि "मैं तैयार हूँ, चाहे वह काली कलूटी ही क्यों न हो।"

परन्तु उसको उस रात बड़ा रंज रहा और वह रात भर हीरो की कल्पित समाधि के पास जाकर रोता रहा।

दूसरे दिन प्रातःकाल क्लौडियो अपने इष्ट मित्रों सहित विवाह के लिए धर्ममन्दिर में गया और लियोनेटो ने एक लड़की को लाकर, जिसके मुँह पर घूँघट पड़ा हुआ था, कहा—"लो यह लड़की हीरो की चचेरी बहन है।"

क्लौडियो ने बिना देखे हुए उस लड़की का हाथ पकड़ कर कहा—"अगर तुम चाहो तो मैं तुमको अपनी स्त्री बनाना अङ्गीकार करता हूँ।"

लड़की ने घूँघट उतार कर कहा—"मैं तो जीवन भर तुम्हारी ही स्त्री थी।"

अब तो सब ने पहचान लिया कि यह लड़की जिसका क्लौडियो से विवाह होने वाला था, हीरो की चचेरी बहन नहीं, किन्तु हीरो ही थी। क्लौडियो ख़ुशी के मारे फूला न समाया और पीडरो ने कहा—

"अरे यह क्या हीरो नहीं है? वही हीरो जो मर गई थी।"

लियोनेटो ने उत्तर दिया—

"हीरो तो उसी समय तक मरी थी जब तक उसका अपयश जीवित था।"

पुरोहित ने कहा कि विवाहसंस्कार के बाद हम आपको ये सब बातें समझा देंगे, और संस्कार की कार्य्यवाही आरम्भ की। परन्तु उसी समय बैनीडिक और बीट्रिस दोनों ने अपने विवाह की इच्छा प्रकट की। लियोनेटो, क्लौडियो आदि ने उनको अब बतला दिया कि किस प्रकार धोका देकर बैनीडिक और बीट्रिस का आपस में स्नेह कराया गया था। उस समय उनको ज्ञात हुआ कि एक दूसरे के प्रेम की कथा केवल जी के लुभाने के लिए थी। परन्तु अब वे दोनों विवाह का इरादा कर चुके थे। इसलिए इस सम्बन्ध पर अप्रसन्न न हुए और क्लाडियो का हीरो से तथा बैनीडिक का बीट्रिस से विवाह कर दिया गया।

उसी समय एक दूत ने आकर ख़बर दी कि दुष्ट डौन जौन मैसीना से भागते हुए पकड़ा गया। इसका सबसे उचित दण्ड यही समझा गया कि वह विवाह के आनन्दों को देखकर डाह की अग्नि में भस्म हो।

वही भला जिसका अन्त भला

ALL'S WELL THAT ENDS WELL)

रो सिलन देश में एक राजा था जिसकी मृत्यु के उपरान्त उसका पुत्र ब्रतराम उसकी गद्दी पर बैठा। फ्रान्स के महाराज को ब्रतराम के पिता से बड़ा स्नेह था। इसलिए जब उसने इस मृत्यु की खबर पाई तो उसी समय ब्रतराम को पेरिस की राजसभा में उपस्थित होने की आज्ञा दी जिससे वह अपने प्रिय मित्र के पुत्र के साथ दया का व्यवहार करके उसको उत्साहित कर सके।

ब्रतराम अपनी विधवा माता के साथ रोसिलन में था, जब कि फ्रान्स की राजसभा से लेफ़ू नामक एक सभ्य उसे महाराज के पास ले चलने के लिए आया। फ्रान्स में उस समय राजतन्त्र राज्य था और सभा का निमन्त्रण आज्ञा के रूप में था, जिसका उल्लङ्घन करना किसी मनुष्य के अधिकार में न था, चाहे वह कितना ही प्रतिष्ठित क्यों न हो। इसलिए यद्यपि ब्रतराम की माता को अपने पुत्र के वियोग से बड़ा दुःख हुआ, क्योंकि वह अभी विधवा हुई थी, परन्तु राजनिमन्त्रण को अस्वीकार करना उसकी शक्ति के बाहर था। इसलिए लेफ़ू के आते ही उसने लड़के के भेजने की तैयारियाँ कर दीं। लेफ़ू ने रानी को बहुत ढारस बँधाया और कहा कि फ्रान्स-नरेश बड़े दयालु हैं, वे आपके साथ पतिवत् व्यवहार करेंगे और आपके पुत्र के साथ पितृवत्। लेफ़ू ने यह भी कहा कि महाराज थोड़े

दिनों से बीमार है और वैद्यों ने कह दिया है कि रोग असाध्य है। रानी को महाराज के रोग की बात मालूम करके बड़ा खेद हुआ और उसने कहा—

"शोक है कि इस समय जिराड-डी-नार्बन जीवित नहीं है, नहीं तो वह अवश्य महाराज को नीरोग कर देता। क्योंकि वह एक बड़ा वैद्य था और भयानक से भयानक रोगों की चिकित्सा कर सकता था। अगर आज जिराड जीवित होता तो महाराज के रोग की अवश्य मृत्यु हो जाती।"

लेफ़्—हाँ महारानी! महाराज के मुँह से भी मैंने उसकी बड़ी प्रशंसा सुनी है। उन्होंने उसको बहुत याद किया था। अगर मौत की कोई दवा हो सकती तो जिराड अवश्य आज जीवित होता!

रानी के पास एक लड़की थी, जिसका नाम हैलीना था। लेफ़ ने हैलीना की ओर देखकर पूछा "क्या यह जिराड-डी नार्बन की कन्या है?"

रानी—जी हाँ! यह अपने बाप की इकलौती बेटी है। इसका पिता मरते समय इसे मेरी देखरेख में छोड़ गया था। यह एक सुशील और सुशिक्षित लड़की है, और मुझे आशा है कि यह एक अच्छी स्त्री बनेगी। इसका बाप बड़ा योग्य पुरुष था और उसीके गुण और स्वभाव इसमें भी हैं।

हैलीना इस समय रो रही थी। इसलिए रानी ने उसे समझाया और कहा कि अपने मृत पिता के लिए इतना शोक करना उचित नहीं है।

अब बतराम अपनी माता के पास से चल दिया। रानी ने अपने पुत्र के वियोग के समय बड़ा अश्रुपात किया और बहुत

कुछ अशीस देकर लेफ़ू से प्रार्थना की कि "महाराज! आप इसको उपदेश करते रहना, क्योंकि अभी यह अशिक्षित है और राज-सभा के योग्य नहीं है।"

चलते समय व्रतराम हेलीना से भी मिला और कहा कि ईश्वर तुमको ख़ुश रक्खे! मेरी माता जी की सेवा किया करना और सर्वदा उसका मान करना।

हेलीना को छिपे छिपे बहुत दिनों से व्रतराम से प्रेम था, जिस की इस राजकुमार को ख़बर तक न थी। इसलिए इस समय जो अश्रुपात वह कर रही थी वह अपने मृत पिता के लिए नहीं था, किन्तु व्रतराम के लिए था, जिसका अब उससे वियोग हो रहा था। यद्यपि हेलीना अपने पिता पर बड़ी भक्ति करती थी, परन्तु इस समय उसे अपने मृत पिता का किञ्चित् भी ध्यान नहीं रहा था, किन्तु अपने प्यारे के वियोग में शोकातुर हो रही थी।

यद्यपि हेलीना बहुत दिनों से व्रतराम के प्रेम में आसक्त थी, परन्तु वह जानती थी कि व्रतराम रोसिलन का राजा है और देश के एक कुलीन तथा प्राचीन कुल में उत्पन्न हुआ है। उसके सब पूर्वज बड़े प्रतिष्ठित और माननीय पुरुष थे। परन्तु मैं एक साधारण वंश की लड़की हूँ। मेरा पिता कोई प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध पुरुष नहीं था। ऐसा ख़याल कर के वह समझती थी कि हम दोनों का किसी प्रकार का सम्बन्ध होना सम्भव नहीं है। इसलिए यद्यपि उसे विवाह की आशा न थी किन्तु वह अपने प्यारे की ओर प्रेम की दृष्टि से देखा करती, और कहा करती थी कि व्रतराम मुझ से इतना ऊँचा है कि उससे स्नेह करना किसी ऊँचे चमकते हुए ग्रह से प्रेम करने के समान है, जिस की प्राप्ति की कुछ भी आशा नहीं है।

व्रतराम के वियोग से उसका हृदय बड़ा व्याकुल हुआ, क्योंकि यद्यपि उसे विवाह की आशा न भी हो, तथापि एक शान्ति उस के लिए बहुत काफी अर्थात् वह नित्य प्रति सोते जागते, चलते फिरते, अपने प्यारे के दर्शन कर सकती थी। वह बैठ जाती और उसके मनोहर मुँह की तसवीर अपने हृदयरूपी पट पर इस प्रकार खींच लेती कि उसकी एक एक रेखा उसकी स्मृति पर अंकित हो गई थी।

हैलीना के पिता जिराई-डी नार्बन ने मरते समय अपनी बेटी के लिए सिवा थोड़ी सी ओषधियों के और कुछ नहीं छोड़ा था। ये ओषधियाँ उसने अपने आयु भर के परिश्रम से इकट्ठी की थीं और इनसे भयानक से भयानक रोगों की चिकित्सा हो सकती थी। इनमें से एक ओषधि उसी से की थी जिससे लेफू के कथनानुसार फ्रान्स-नरेश पीड़ित हो रहा था। जिस समय हैलीना ने महाराज के रोग की कथा सुनी, उस समय इस साधारण रमणी के हृदय में उत्साह उत्पन्न हो गया और उसने इरादा किया कि पेरिस चलकर राजा की चिकित्सा करनी चाहिए। यद्यपि हैलीना के पास बड़ी अच्छी अच्छी ओषधियाँ थी, परन्तु एक बड़ा भय यह था कि जब बड़े बड़े वैद्यों ने राजा के रोग को असाध्य कह कर छोड़ दिया है तब राजा इस अशिक्षित लड़की की दवाओं पर कब विश्वास करेगा। लेकिन हैलीना को इन दवाओं पर अपने पिता से भी अधिक विश्वास था और वह समझती थी कि यदि इन ओषधियों से राजा अच्छा हो जाय तो मैं अपने प्यारे व्रतराम की स्त्री हो सकूँगी।

व्रतराम के जाने के पश्चात् उसकी माता को एक नौकर द्वारा ज्ञात हुआ कि हैलीना चुपके चुपके एक कोने में बैठी हुई ऐसी

बातें कर रही थी जिन से प्रकट होता था कि उसको राजा (व्रतराम) से प्रेम है, और उसका निश्चय पेरिस को जाने का है। रानी ने नौकर से कह दिया कि हैलीना को बुला लाओ।

हैलीना—महारानी ! क्या आज्ञा है ?

रानी—हैलीना ! तुम जानती हो कि मैं तुम्हारी माता के समान हूँ।

हैलीना—आप मेरी पूज्य स्वामिनी हैं।

रानी—नहीं नहीं। माता ! माता क्यों नहीं ? जब मैंने 'माता' शब्द कहा तो तुमको इतना रंज हुआ मानों तुमने साँप देखा है। 'माता' शब्द में ऐसी कौनसी बात है जो तुम इतना चौंकती हो ! मैं कहती हूँ कि मैं तुम्हारी मा हूँ और उन्हीं के समान गिनती हूँ जिन्होंने मेरे उदर से जन्म लिया है। तुम मेरी लड़की हो।

हैलीना—मैं नहीं हूँ।

रानी—मैं कहती हूँ कि मैं तुम्हारी माता हूँ।

हैलीना—रानी ! क्षमा कीजिए, रोसिलन का राजा मेरा भाई नहीं हो सकता ! मैं एक साधारण स्त्री हूँ। वह प्रतिष्ठित पुरुष है। मेरा वंश नीच है। उसके पूर्वज प्रसिद्ध थे। वह मेरा स्वामी है। और मैं उसकी एक दासी हूँ और मरणपर्यन्त रहूँगी। वह मेरा भाई नहीं हो सकता !

रानी—और मैं तुम्हारी माता भी नहीं हो सकती ?

हैलीना—रानी ! तुम मेरी* माता हो। मेरी बड़ी अभिलाषा है कि तुम मेरी माता हो जाओ। लेकिन मेरा स्वामी मेरा भाई न हो। आप हम दोनों की मा हो जाओ, पर मैं उसकी बहिन न होऊँ।

*अंग्रेज़ी में सास को भी माता कहते हैं और बहू को बेटी।

रानी—हाँ हैलीना! तुम मेरी बेटी या पतोहू हो सकती हो। ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे। तुम्हारा यही तात्पर्य्य जान पड़ता है। मैं अब तुम्हारी बात समझ गई हूँ। अब मैं जान गई कि तुम क्यों अश्रुपात कर रही हो। तुम मेरे बेटे को चाहती हो! अब स्पष्ट कह दो कि क्या यह बात ठीक है? देखो, तुम्हारे मुँह तथा आँखों से यही प्रकट होता है।

हैलीना—महारानी! क्षमा करो।

रानी—क्या तुम मेरे बेटे को चाहती हो?

हैलीना—क्या श्रीमती जी उनको नहीं चाहतीं?

रानी—बात मत बनाओ। मैं चाहती हूँ। परन्तु मेरा चाहना और बात है। ठीक ठीक कहो, क्या तुम उसे चाहती हो?

हैलीना—तो महारानी! मैं ईश्वर और आप दोनों की साक्षी देकर कहती हूँ कि मैं आपके पुत्र से प्रेम करती हूँ। मैं एक दरिद्र वंश की हूँ। परन्तु मेरा पिता सच्चा आदमी था। ऐसा ही सच्चा मेरा प्रेम है। आप नाराज न हूजिए। आपके पुत्र की, इस बात से कुछ हानि नहीं कि मैं उससे स्नेह करती हूँ। मैं न तो उसके पीछे पड़ती हूँ और न उससे विवाह की प्रार्थना करूँगी, जब तक इसकी अधिकारिणी न बनूँ। मैं जानती हूँ कि मेरा यह प्रेम व्यर्थ है। मैं भारतवर्षियों के समान उस सूर्य्य की उपासना करती हूँ जो मुझको देखता तो है परन्तु यह नहीं जानता, कि मैं उपासिका हूँ। रानी जी कृपा कीजिए। इस मेरे प्रेम के कारण मुझसे अप्रसन्न न हूजिए।

रानी—क्या तुम्हारा पेरिस जाने का विचार नहीं है?

हैलीना—है।

रानी—क्यों ?

हैलीना—मैं सच सच कहूँगी। आप को मालूम है कि मेरे पिताजी मुझे कुछ ओषधियाँ बतला गये थे। उन में राजा के रोग की भी दवा है।

रानी—क्या पेरिस जाने का यही प्रयोजन था ?

हैलीना—आप के पुत्र के कारण मैंने यह विचार किया, नहीं तो पेरिस, फ्रांसनरेश या दवाओं का मुझे स्मरण भी नहीं था।

रानी—हैलीना! तुम समझती हो कि राजा तुम्हारी दवा करेगा। क्योंकि वैद्यों ने कह दिया है कि यह रोग असाध्य है।

हैलीना—मेरा आत्मा कहता है कि मैं अपने परिश्रम में अवश्य साफल्य प्राप्त करूँगी।

रानी—क्या तुमको विश्वास है ?

हैलीना—हाँ हाँ! मैं तो यही समझती हूँ।

रानी—अच्छा मैं तुमको आज्ञा देती हूँ। मार्गव्यय के लिए धन ले जाओ। नौकर चाकर साथ ले जाओ। मैं रौसिलन में रह कर तुम्हारे लिए ईश्वर से प्रार्थना करूँगी! तुम कल चली जाओ। मैं तुम्हारी यथाशक्ति सहायता करूँगी।

हैलीना पेरिस में जा पहुँची। उसका लेफ़ू से परिचय हो चुका था, इसलिए उसीकी सहायता से राजा के भी दर्शन हो गये। राजा ने पूछा—

"लड़की! क्या तुम मेरे पास आई हो?"

हैलीना—श्री महाराज! मेरे पिताजी का नाम जिराड-डी-नार्बन था। वे अपने काम में बड़े दक्ष थे!

रानी—हाँ हेलीना ! तुम मेरी बेटी या पतोहू हो सकती हो। ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे। तुम्हारा यही तात्पर्य्य जान पड़ता है। मैं अब तुम्हारी बात समझ गई हूँ। अब मैं जान गई कि तुम क्यों अश्रुपात कर रही हो। तुम मेरे बेटे को चाहती हो। अब स्पष्ट कह दो कि क्या यह बात ठीक है? देखो, तुम्हारे मुँह तथा आँखों से यही प्रकट होता है।

हेलीना—महारानी! क्षमा करो।

रानी—क्या तुम मेरे बेटे को चाहती हो?

हेलीना—क्या श्रीमती जी उनको नहीं चाहतीं?

रानी—बात मत बनाओ। मैं चाहती हूँ। परन्तु मेरा चाहना और बात है। ठीक ठीक कहो, क्या तुम उसे चाहती हो?

हेलीना—तो महारानी! मैं ईश्वर और आप दोनों की साक्षी देकर कहती हूँ कि मैं आपके पुत्र से प्रेम करती हूँ। मैं एक दरिद्र वंश की हूँ। परन्तु मेरा पिता सच्चा आदमी था। ऐसा ही सच्चा मेरा प्रेम है। आप नाराज न हूजिए। आपके पुत्र की, इस बात से कुछ हानि नहीं कि मैं उससे स्नेह करती हूँ। मैं न तो उसके पीछे पड़ती हूँ और न उससे विवाह की प्रार्थना करूँगी, जब तक इसकी अधिकारिणी न बनूँ। मैं जानती हूँ कि मेरा यह प्रेम व्यर्थ है। मैं भारतवर्षीयों के समान उस सूर्य्य की उपासना करती हूँ जो मुझको देखता तो है परन्तु यह नहीं जानता कि मैं उपासिका हूँ। रानी जी कृपा कीजिए। इस मेरे प्रेम के कारण मुझसे अप्रसन्न न हूजिए।

रानी—क्या तुम्हारा पेरिस जाने का विचार नहीं है?

हेलीना—है।

राजा—(हैलीना से) यदि तुम किसी अन्य को चुनना चाहो तो शायद तुम को कष्ट होगा ?

हैलीना—महाराज ! मुझे हर्ष है कि आप अच्छे हो गये। शेष बात को जाने दीजिए।

राजा—नहीं नहीं ! यहाँ मेरी प्रतिष्ठा भङ्ग हो रही है। इसलिए मैं अपनी शक्ति से काम लूंगा। हे अभिमानी लड़के ! तुझे इसको ग्रहण करना पड़ेगा ! अपनी घृणा को रोक और मेरी आज्ञा का पालन कर। अगर ऐसा नहीं करेगा तो मैं तुझे अपनी दृष्टि से गिरा दूंगा। और मैं तुझसे इस बात का बदला लूंगा !

ब्रतराम—महाराज ! क्षमा कीजिए, मैं अब आप की आज्ञा का पालन करता हूँ। जिस स्त्री से मैं घृणा करता था उसी को मैं देखता हूँ कि महाराज प्रशंसा करते हैं। इससे अधिक कुलीनता क्या हो सकती है ?

राजा—अच्छा इसे ग्रहण कर और मैं तुझे तेरे राज्य के बराबर देश और दूंगा !

ब्रतराम—मैं स्वीकार करता हूँ।

इस प्रकार उसी दिन राजा की आज्ञा से ब्रतराम और हैलीना का विवाह हो गया। परन्तु ब्रतराम को हैलीना से कुछ भी प्रेम न था। राजा उसे विवाह करने पर तो मजबूर कर सकता था, परन्तु प्रेम करने में मजबूर करना असम्भव था।

विवाह के थोड़े दिनों पीछे ही ब्रतराम ने हैलीना द्वारा पेरिस में जाने की आज्ञा चाही। जब आज्ञा मिल गई तो ब्रतराम ने उससे कहा—

"मैं इस विवाह के लिए तैयार नहीं था, इसलिए मेरा

चित्त बडा विक्षिप्त हो गया है। इस कारण अगर मैं इस समय कुछ करना चाहूँ तो आश्चर्य न करना।"

हैलीना विचारी क्या आश्चर्य करती। उसे यह जानकर बडा रञ्ज हुआ कि व्रतराम उसे त्याग कर विदेश-यात्रा करना चाहता है। व्रतराम ने हैलीना को हुक्म दिया कि मेरी माता के पास चली जाओ और उनको यह पत्र दे देना। मैं अब कभी तुमसे न मिलूँगा। हैलीना ने विनयपूर्वक उत्तर दिया कि—

"महाराज, मैं इसका क्या उत्तर दे सकती हूँ। मैं तो आपकी आज्ञाकारिणी दासी हूँ, और सदा ऐसी ही रहूँगी।" व्रतराम को हैलीना के गिडगिडाने पर कुछ भी तरस न आया और बिना किसी शिष्टाचार के वह वहाँ से चला गया।

हैलीना विचारी अब व्रतराम की माता के पास चली गई। उसने अपना कार्य्य सिद्ध कर लिया। राजा की जान बचा ली, अपने प्यारे व्रतराम से विवाह भी कर लिया, परन्तु अब वह उसी दुःख की मारी फिर निराश होकर अपनी सास के पास लौट आई। घर पहुँचते ही उसे व्रतराम का ऐसा पत्र मिला जिसको पढ़कर उसके हृदय के दो टूक हो गये। एक पत्र उसकी माँ के लिए था जिसमें लिखा था—

एक पत्र हैलीना के लिए था जिसका तात्पर्य यह था—

"यदि तुझे मेरे हाथ की अँगूठी मिल जाय जिसे मैं कभी नहीं उतारूंगा तो उस समय तू मुझे अपना पति कह सकती है परन्तु यह समय कभी नहीं आने का।"

इसके आगे लिखा था—

"जब तक मेरी स्त्री नहीं। फ्रान्स में मेरा कुछ भी नहीं।"

बतराम की माता ने हैलीना को आदर के साथ लिया और बड़े प्यार से रक्खा परन्तु हैलीना को शोक के मारे कल न पड़ी। उसकी सास ने बहुत कुछ समझाया कि "अब मेरा लड़का तो चला गया, तुम्हीं लड़के के समान हो। तुम ऐसी गुणवती हो कि ऐसे बीस लड़के तुम्हारी खुशामद करें।" परन्तु हैलीना को सन्तोष न आया। वह टकटकी लगा कर पत्र की ओर देखती और कहती "हाय! मेरा स्वामी चला गया। सदा के लिए चला गया।" फिर वह कहने लगी "हाय! मेरा स्वामी केवल मेरे कारण देश विदेश मारा मारा फिरता है। ऐसी दशा में मुझे धिक्कार है अगर मैं यहाँ रहूँ। इसलिए अब मैं यहाँ से चली जाऊँगी।"

दूसरे दिन प्रातःकाल रोसिलन की रानी जब उठी तो उसने अपनी पतोहू को घर में न पाया। थोड़ी देर पीछे उसे एक पत्र मिला जिसमें लिखा हुआ था कि मेरे इतनी जल्दी चले जाने का कारण यह है कि मुझे यह जान कर बड़ा शोक हुआ है कि मेरा पति मेरी कारण घर नहीं आ सकता। इस अपराध के प्रायश्चित्त के लिए मैं सेण्ट-ज्याक्स के मन्दिर में यात्रा करने जा रही हूँ। आप अपने पुत्र को लिख दीजिए कि जिस स्त्री से तुम इतनी घृणा करते थे वह चली गई।"

चित्त बडा विक्षिप्त हो गया है। इस कारण अगर मैं इस समय कुछ करना चाहूँ तो आश्चर्य न करना।"

हैलीना विचारी क्या आश्चर्य करती। उसे यह जानकर बड़ा रंज हुआ कि व्रतराम उसे त्याग कर विदेश-यात्रा करना चाहता है। व्रतराम ने हैलीना को हुक्म दिया कि मेरी माता के पास चली जाओ और उनको यह पत्र दे देना। मैं अब कभी तुमसे न मिलूँगा। हैलीना ने विनयपूर्वक उत्तर दिया कि—

"महाराज, मैं इसका क्या उत्तर दे सकती हूँ। मैं तो आपकी आज्ञाकारिणी दासी हूँ, और सदा ऐसी ही रहूँगी।" व्रतराम को हैलीना के गिडगिडाने पर कुछ भी तरस न आया और बिना किसी शिष्टाचार के वह वहाँ से चला गया।

हैलीना विचारी अब व्रतराम की माता के पास चली गई। उसने अपना कार्य्य सिद्ध कर लिया। राजा की जान बचा ली, अपने प्यारे व्रतराम से विवाह भी कर लिया, परन्तु अब वह उसी दु:ख की मारी फिर निराश होकर अपनी सास के पास लौट आई। घर पहुँचते ही उसे व्रतराम का ऐसा पत्र मिला जिसको पढकर उसके हृदय के दो टूक हो गये। एक पत्र उसकी माँ के लिए था जिसमें लिखा था—

"मैंने तुम्हारे पास तुम्हारी पतोहू को भेज दिया है। उसने राजा को चंगा और मुझे नष्ट कर दिया। मैंने उसके साथ विवाह तो कर लिया परन्तु पतिवत् व्यवहार नहीं किया और मैंने इससे "नहीं" को अनन्त बनाने की शपथ की है। आपको मालूम होगा कि मैं भाग गया, इसलिए मैं पहले ही से सूचना दिये देता हूँ। यदि संसार में जगह हुई तो मैं हमेशा उससे दूर रहूँगा। प्रणाम के पश्चात्

आपका अभागा पुत्र—व्रतराम।

डायना—'प्रेम न करनेवाले पति की स्त्री होने से, अधिक कौन सा दुःख है ?"

इस प्रकार यह विधवा और हैलीना व्रतराम के विषय में बातचीत करने लगीं। इसके पश्चात् उसने यह भी सुना कि व्रतराम इस विधवा की लड़की डायना को बहुत चाहता है। और रात को आकर उसकी ख़ुशामद किया करता है कि गुप्त रीति से तुम मुझको अपने कमरे में आने दो। डायना एक योग्य और सुशिक्षित लड़की थी। यद्यपि इस समय उसकी आर्थिक दशा अच्छी नहीं थी किन्तु वह एक कुलीन वंश की लड़की थी और उसकी माता ने बड़ी मेहनत करके उसे धार्मिक शिक्षा दी थी। इसलिए डायना व्रतराम के फुसलाने में नहीं आई। डायना को यह मालूम था कि व्रतराम एक विवाहित पुरुष है, ऐसे पुरुष से प्रेम करना अधर्म है। जिस रात को हैलीना इस विधवा के घर ठहरी हुई थी उस दिन व्रतराम ने डायना की बड़ी ख़ुशामद की क्योंकि वह उसके दूसरे दिन घर जा रहा था।

विधवा ने यह सब समाचार हैलीना से कह दिया और अपनी स्त्री के धार्मिक जीवन की बड़ी प्रशंसा की। अब हैलीना ने अपने पति की पुनः प्राप्ति का एक उपाय सोचा। उसने विधवा से कह दिया कि व्रतराम की स्त्री मैं ही हूँ। अपनी पुत्री से कह दो कि वह व्रतराम को अपने कमरे में आने दे। मैं डायना के भेष में उससे मिलूँगी। विधवा को ऐसा करने में संकोच हुआ। तब हैलीना ने कहा—

"अगर आपको मेरे व्रतराम की स्त्री होने में सन्देह हो तो मैं नहीं समझती कि किस प्रकार आपको निश्चय दिलाऊँ। परन्तु इससे मेरे प्रयोजन की सिद्धि न हो सकेगी।"

व्रतराम पेरिस छोड़ कर फ्लोरेंस चला गया और वहाँ के राजा की सेना में भरती हो गया। वहाँ उसने युद्ध में बड़ी वीरता दिखाई और बड़े पद पर नियुक्त होने को ही था कि उसे अपनी माता का पत्र मिला कि "अब तुम चले आओ, क्योंकि हैलीना यहाँ से चली गई।" यह देखकर व्रतराम ने घर को लौटने का विचार किया। उसी समय हैलीना एक यात्रिणी के वेष में फ्लोरेंस पहुँच गई।

सेण्ट-ग्राण्ड के मन्दिर का रास्ता फ्लोरेंस होकर था। जब हैलीना फ्लोरेंस में आई तो उसने सुना कि यहाँ एक ऐसी विधवा है जो सेण्ट-ग्राण्ड के जाने वाले यात्रियों को बड़े सत्कार से रखती है। इसलिए वह उसके पास चली गई। इस वृद्धा ने उसको आदर से लिया और कहा कि अगर तुम राजा की सेना को देखना चाहो तो मेरे घर में से देख सकती हो। एक तुम्हारे देश का आदमी भी इस सेना में है जिसका नाम व्रतराम है। हैलीना ने व्रतराम का नाम सुनकर निमन्त्रण स्वीकार कर लिया और अपने पति के दर्शन करने के लिए उसके साथ चली गई। वृद्धा ने पूछा—

"क्या यह रूपवान् नहीं है?"

हैलीना—हाँ मुझे यह पसन्द है।

इस समय इस विधवा की लड़की डायना ने कहा—

"कैसा ही हो, पर यहाँ इसने बड़ी वीरता दिखाई है। मैंने सुना है कि यह फ्रान्स से भाग आया है क्योंकि महाराजा ने उसकी इच्छा के विरुद्ध उसका विवाह कर दिया था। क्या तुमको कुछ मालूम है?"

हैलीना—हाँ यह ठीक है।

डायना—नहीं। मैं डायना हूँ।

व्रतराम—हाँ तो तुम देवी* ही हो। परन्तु तुम में प्रेम नहीं है। तुमको वैसा ही होना चाहिए जैसी तुम्हारी मा थीं जब तुमने जन्म लिया था।

डायना—वह उस समय धार्मिक थी।

व्रतराम—ऐसा ही तुमको भी होना चाहिए।

डायना—मेरी माता का कर्तव्य था जैसा कि आपका अपनी स्त्री के साथ है।

व्रतराम—यह न कहिए। मैं उसको विवाह करने पर मजबूर था। परन्तु मैं आपसे स्नेह करता हूँ, और सदा आपका सेवक रहूँगा।

डायना—हाँ, तुम उसी समय तक हमारे सेवक हो जब तक हम तुम्हारी सेवा करती हैं। पर जब तुमने हमारे फूल चुन लिये तो काँटों को हमारा ही हृदय विदीर्ण करने के लिए छोड़ जाते हो।

व्रतराम—मैं शपथ खाता हूँ।

डायना—शपथ खाने से बात सच्ची नहीं हो सकती। बुरी बातों के लिए शपथ नहीं रखना चाहिए।

व्रतराम—प्रेम करना बुरी बात नहीं है। मैं छल नहीं करता। प्यारी मुझे अपना समझ कर मेरे प्राण बचा लो, क्योंकि मैं प्रेमरोगी हूँ।

डायना—अच्छा, इस अँगूठी को दे दो।

व्रतराम—मैं दे देता परन्तु दे नहीं सकता।

डायना—क्या, दे नहीं सकते?

---

* डायना रोमन लोगों की एक देवी का नाम है।

विधवा—यद्यपि मेरी दशा इस समय सन्तोषजनक नहीं है। पर मैं एक कुलीन घर की हूँ, और ऐसी बातें नहीं जानती। इसलिए ऐसे काम नहीं कर सकती, जिससे मेरे कुल के नाम में बट्टा लगे।

हैलीना—मैं भी यह नहीं चाहती। मेरा विश्वास करो। ब्रतराम मेरा पति है। मैंने ठीक ठीक कह दिया है। आप एक काम कर सकती हो जिसमें आपकी बदनामी न होगी।

विधवा—वह क्या है?

हैलीना—ब्रतराम के पास एक अंगूठी है जो उसे अपने पूर्वजों से मिली है। इसको वह बहुमूल्य समझता है और अपने प्राणों से भी अधिक प्यार करता है। परन्तु अब उसका अनुराग आपकी पुत्री पर है। स्त्रियों के प्रेम में लोग अमूल्य से अमूल्य वस्तु दे डालते हैं। यदि डायना उस अँगूठी को ब्रतराम से ले ले और मुझे दे दे तो मैं बहुत कुछ धन तुमको दूंगा। इस समय केवल एक थैली रुपयों की देती हूँ।

विधवा ने यह बात स्वीकार कर ली और अपनी पुत्री को बतला दिया कि किस प्रकार कार्य सिद्ध किया जावे। इस समय हैलीना ने किसी के हाथ ब्रतराम से कहला भेजा कि हैलीना मर गई। क्योंकि उसने समझा कि अगर वह अपनी पहली स्त्री के मरने की खबर सुन लेगा तो अवश्य खुल्लमखुल्ला डायना से विवाह का प्रार्थी होगा और इस प्रकार उसे अँगूठी मिल जायगी।

उसी रात को ब्रतराम डायना के पास आया और प्रेम की बातें करने लगा। उसने कहा—

"तुम देवी हो!"

दूसरी बात यह है कि हेलीना को व्रतराम से ऐसा अगाध प्रेम था कि वह चुपके चुपके उसके मुँह की ओर देखा करती थी और कभी कुछ कहती नहीं थी। कहावत है कि गहरे पानी के ऊपर बुलबुले नहीं उठा करते, इसी प्रकार गहरे प्रेम में बातों की कमी हुआ करती है। यह भी एक कारण था, जिससे व्रतराम का चित्त हेलीना की ओर कभी आकर्षित न हो सका। परन्तु अब हेलीना का ज़रूरत थी कि अपने स्वामी को प्रसन्न करने के लिए यथाशक्ति उपाय करे। इसलिए उसने व्रतराम से ऐसी प्रेम की बातें कीं और चुपके चुपके ऐसा स्नेह प्रकट किया कि व्रतराम मोहित हो गया। चलते समय हेलीना ने अपनी अँगूठी दी और सबेरा होने से पहले ही वहाँ से विदा कर दिया।

हेलीना ने अब डायना और उसकी माता से पेरिस चलने को कहा। क्योंकि हेलीना के प्रयोजन की सिद्धि के लिए उन दोनों का वहाँ पर होना आवश्यक था। जब वे वहाँ पहुँचीं तो उनको मालूम हुआ कि फ्रांसनरेश व्रतराम की माता से भेंट करने के लिए रोसिलन को गया है। इसलिए उन सबने जल्दी से रोसिलन को प्रस्थान कर दिया।

महाराजा का स्वास्थ्य अब तक बहुत अच्छा था। वह हेलीना का बड़ा कृतज्ञ था और उसे याद करता था। इसलिए जब वह रोसिलन पहुँचा तो हेलीना के लुप्त होने की ख़बर सुन कर बहुत शोकातुर हुआ और कहने लगा—

"देखो, हेलीना तुम्हारे घर का एक रत्न थी, जिसे तुम्हारे [illegible] ने अपनी मूर्खता से नष्ट कर दिया। उसने हेलीना की [illegible] जानी।"

[illegible]म की माता ने महाराजा की अप्रसन्नता का ख़याल

व्रतराम—हाँ यह मेरे पूर्वजों की निशानी है। इसे खो देने से मुझे बहुत बड़ा अपयश होगा।

डायना—बस बस! मेरा आत्म-गौरव भी इस अँगूठी से कम नहीं है। मेरा सतीत्व मेरे घर का रत्न है जिसे खो देने से मेरा बड़ा अपयश होगा। यह रत्न मेरे पूर्वजों की निशानी है।

व्रतराम (अँगूठी देकर) लो! अँगूठी लो। मैं, मेरा कुल, मेरा गौरव सब तुम्हीं हो।

डायना—अच्छा, आधी रात के समय मेरा दरवाज़ा खटखटाना। मैं ऐसा प्रबन्ध रक्खूँगी कि मेरी माता को खबर न हो तुम केवल एक घण्टे मेरे पास रह सकते हो। लेकिन देखो, बातें मत करना। मैं इन सब बातों का कारण फिर बतला दूँगी। रात के समय मैं एक और अँगूठी पहन कर आऊँगी और आपको दूँगी जिससे हम दोनों का सम्बन्ध भविष्यत् में मालूम हो सके कि मैं तुम्हारी स्त्री हूँ।

व्रतराम—तुमको पाकर मैंने स्वर्ग पा लिया। ज्यों ही मेरी पहली स्त्री मर जायगी, मैं तुम्हारे साथ विवाह कर लूँगा।

डायना—अच्छा अब जाओ।

आधी रात के समय जब अँधेरा हो गया, व्रतराम डायना के कमरे में गया। वहाँ हैलीना डायना के वेष में उसका स्वागत करने को तैयार थी। व्रतराम को यह मालूम नहीं था कि हैलीना ऐसी चतुर है। इसका कारण यह मालूम होता है कि उसने कभी हैलीना के गुणों पर विचार नहीं किया था। हैलीना रूप में डायना से कुछ कम नहीं थी। परन्तु जिस चीज को मनुष्य रोज़ देखा करते हैं वह उनको साधारण प्रतीत होती है।

ब्रनराम—महाराज! आप को धोका हुआ है। यह अँगूठी कभी उसके पास नहीं थी। फ्लोरेंस में एक स्त्री ने अपने कमरे से यह अँगूठी मेरे पास फेंक दी थी। उसके चारों ओर एक कागज लिपटा हुआ था जिस पर उस स्त्री का नाम था। वह स्त्री बडी योग्य थी और उसने समझा कि मैं उससे प्रेम करूँगा। परन्तु जब मैंने अपने विवाह का हाल सुनाया तो वह स्त्री चुप हो गई और मुझ से फिर कभी अपनी अँगूठी न माँगी।

राजा—चाहे किसी ने दी हो यह मेरी अँगूठी है, यह हैलीना की अगूठी है। तुम ठीक बताओ कि तुमने उससे किस प्रकार यह अँगूठी छीनी। वह कहती थी कि या तो यह अँगूठी वह तुमको देगी, जब तुम उससे प्यार करोगे, और या वह इसे मेरे पास भेजेगी। सो बताओ तुमने यह अगूठी कहाँ पाई?

ब्रनराम—उसने इसे देखा तक नहीं।

राजा—झूठ बोलता है।

यह कहकर राजा ने अपने सिपाहियों द्वारा ब्रनराम को पकड़वा लिया क्योंकि उसे यह निश्चय हो गया कि ब्रनराम अपनी स्त्री का घातक है।

उसी समय एक नौकर राजा के पास एक पत्र लाया और कहने लगा—"महाराज! फ्लोरेंस की एक स्त्री ने आपकी सेवा में यह प्रार्थनापत्र भेजा है।"

राजा ने पढा। उसमें यह लिखा हुआ था—

"रोसिलन के अधिपति ने सैकड़ों शपथ खाईं कि जब मेरी स्त्री मर जायगी तो मैं तुम्हारे साथ विवाह कर लूँगा। मैं कहती हुई शरमाती हूँ, परन्तु कहना पड़ता है कि इसी लालच से

"महाराज! क्षमा कीजिए। वह लडका है। लडकपन में उजड्डपन होता ही है। उसने अपराध किया।"

महाराज—यद्यपि मुझे उस पर बहुत क्रोध आया। और मैं उसे मारने का अवसर खोजता रहा, परन्तु अब मैंने उसे क्षमा कर दिया है।

लेफ़्—महाराज! उस लडके ने आपके साथ, अपनी माता के साथ और अपनी स्त्री के साथ बडा अन्याय किया परन्तु सब से बडा अन्याय अपने साथ किया कि उसने ऐसे स्त्री रत्न को खो दिया जिसके रूप पर बडों बडों की आँखें मोहित हो गई, जिसकी बातों ने भले भले कानों को आकर्षित कर लिया और जिसके गुणों ने अच्छों अच्छों से प्रशंसा करा ली।

महाराज ने अब ब्रतराम को बुलाया जो अभी फलोरेंस से आया हुआ था, और उसे क्षमा कर दिया। परन्तु जिस समय यह बातें हो ही रही थीं, महाराज को फिर क्रोध आ गया, क्योंकि उन्होंने ब्रतराम के हाथ में वह अँगूठी देखी जो उसने हैलीना को दी थी। हैलीना कह गई थी कि मैं इसे अपने हाथ से कभी पृथक् न करूंगी। हाँ, जब मुझ पर कोई विपत्ति पडेगी तो अवश्य इसे किसीके हाथ आपकी सेवा में भेज दूँगी। अब वह क्रोध में आकर ब्रतराम से कहने लगा—

"अरे दुष्ट! क्या तूने हैलीना से वह चीज़ भी लेली जिसकी उसे बडी ज़रूरत थी।"

ब्रतराम—यह उसकी अंगूठी नहीं है!

रानी—बेटे! मैंने उसे इसको पहने देखा था। वह इसे बहुत प्यार करती थी।

लेफ़्—मैंने भी देखा था।

आज्ञा दीजिए कि उस जौहरी को ले आवे जिससे यह अँगूठी ली गई है।"

डायना की माता को आज्ञा दी गई और थोडी देर पीछे वह हैलीना को लेकर कमरे में आई।

राजा हेलीना को देखकर फूला न समाया और कहने लगा—

"अरे क्या मैं स्वप्न देख रहा हूँ?"

हैलीना—नहीं महाराज! नहीं! (व्रतराम से) यह आप की स्त्री की छाया मात्र है। नाम है वस्तु नहीं।

व्रतराम—दोनों। दोनों। क्षमा कीजिए,

हेलीना—स्वामिन्! जब मैं डायना के भेष में थी तो आप मुझ पर बड़े प्रसन्न थे। देखो यह अँगूठी है। और यह पत्र भी आप ही का है जिस में आपने एक बार लिखा था कि अगर तुम मेरी अँगूठी प्राप्त करलो तो तुम मुझे अपना पति कह सकती हो। यह सब हो गया।

व्रतराम—(राजा से) महाराज, अगर हैलीना मुझे समझा दे कि यह सब बातें किस प्रकार हुईं तो मैं सदा इससे प्रसन्न रहूँगा।

हेलीना के लिए अब यह बात कुछ कठिन न थी। डायना और उसकी माता इसीलिए वहाँ आई हुई थीं। जब सब कथा आद्योपान्त कही गई तो सब को बड़ा हर्ष हुआ और हेलीना अपने प्यारे व्रतराम की चहेती रानी हुई।

राजा डायना से बड़ा प्रसन्न हुआ क्योंकि उसने एक दुखिया स्त्री की सहायता की थी और उसने उसका विवाह भी एक योग्य और प्रतिष्ठित पुरुष से करा दिया।

मैने अपना सतीत्व नष्ट कर दिया। अब व्रतराम की स्त्री मर गई है। लेकिन यह पुरुष बिना मुझसे मिले हुए यहाँ चला आया है। आप कृपा करके मेरा विवाह कर दीजिए नहीं तो मेरा जीवन नष्ट हो जायगा और लोग इसी प्रकार स्त्रियों को नष्ट किया करेंगे।

आपकी आज्ञाकारिणी
डायना।

जब राजा ने व्रतराम से इसका हाल पूछा तो उसने राजा के क्रोध से डरकर इनकार कर दिया। इस पर डायना अपनी माता सहित महाराज की सेवा में उपस्थित हुई और माता ने रोकर कहा—

"महाराज! आज मेरे कुल की नाक कट गई। आप हमारे साथ न्याय कीजिए।"

फिर डायना ने एक अँगूठी दिखला कर कहा—

"महाराज! यह अँगूठी व्रतराम ने मुझे दी थी और मैंने इसके बदले एक अँगूठी दी थी। इससे प्रकट होता है कि मेरा कथन ठीक है।"

राजा ने हैलीना की अँगूठी दिखाकर कहा—

"क्या यही अँगूठी है?"

डायना ने उत्तर दिया कि "भगवन् यही अँगूठी मैंने व्रतराम को दी थी।

अब तो राजा ने समझा कि डायना भी हैलीना की अगूठी का भेद जानती है। इसलिए उसने कहा—

"सच सच बताओ कि तुमने यह अगूठी कहाँ से पाई। नहीं तो अभी एक एक को प्राणदण्ड दूँगा।"

इस पर डायना ने उत्तर दिया कि महाराज मेरी माता को

सब बड़े बड़े योद्धा मृत्यु-प्राप्त हो चुके थे। इसलिए हनरी के मरते ही राज में गड़बड़ी मच गई अभी उसका मृतक संस्कार भी न होने पाया था और लोगों के आँसू अभी सूखे तक न थे कि एक दूत ने यह कुसमाचार सुनाया कि अँगरेजी सेना परास्त होगई और गाइनी, शेम्पेन, रीम्स, ओर्लियन्स, पेरिस, गिसर्स और पोइक्टियर्स नामी प्रान्त उनके स्वत्व से निकल गये।

यह सुनकर अँगरेजी राजनेताओं को बड़ा दुःख हुआ! हनरी की मृत्यु के पश्चात् उसका २ वर्ष का पुत्र छठे हनरी के नाम से गद्दी पर बैठा और बेडफर्ड को राजकार्य्य का कर्त्ता नियत किया गया जैसी कि पंचम हनरी ने मृतक शय्या पर अपनी इच्छा प्रकट की थी।

बेडफर्ड ने जब यह दुःखमय वार्त्ता सुनी तो झट से फ्रांस को जाने की तैयारियाँ कर दीं। उसी समय दूसरे दूत ने आकर ख़बर दी कि डौफिन चार्ल्स (फ्रांस के युवराज) का रीम्स में राज्याभिषेक हो गया। और आर्लियन्स, ऐन्जू तथा एलेङ्कन के जागीरदार उस से मिल गये। परन्तु सब से बुरी बात जो सुनी गई वह यह थी कि अँगरेजों का एक बड़ा वीर योद्धा टालबट फ्रांस में कैद हो गया। यह घटना इस प्रकार हुई कि १० वीं अगस्त को जब टालबट ओर्लियन्स नामी नगर से कुछ दूर पर पड़ा हुआ था उस पर अचानक शत्रु ने आक्रमण किया और उसे अपनी सेना को ठीक करने का अवकाश न मिला। तीन घण्टे तक घोर युद्ध हुआ जिसमें टालबट ने ऐसी वीरता दिखाई कि सैकड़ों शत्रु नरकधाम को पहुँचा दिये। उसे देख कर शत्रु-दल में हलचल पड़ गई और जिस का जिधर मुँह उठा भाग निकला। अगरेज़ी-सेना अपने योद्धा का नाम ले लेकर शत्रुगण को परास्त करने लगी। उस समय ...

छठा हनरी

पहला भाग

(HENRY VI. PART I.)



चवें हनरी' में यह वर्णन हो चुका है कि उसने न केवल फ्रांस का राज्य ही ले लिया किन्तु फ्रांसकी राजकुमारी कैथरायन से भी विवाह कर लिया। इङ्गलैण्ड में उस समय वडा आनन्दोत्सव मनाया गया और समस्त प्रजा अपने अपूर्व सम्राट् पर अभिमान करने लगी। परन्तु डौफिन अर्थात् फ्रांस के युवराज ने हनरी से विरोध किया और इसलिए हनरी को फ्रांस जाना पडा। दो वर्ष तक युद्ध होता रहा। परन्तु इन युद्धों से पचम हनरी का स्वास्थ्य वहुत ही विगड गया था इस कारण ३१ अगस्त सन् १४२२ ई० को विन्सोनिस में उस का देहान्त हो गया।

हनरी का शव इङ्गलैण्ड में लाया गया और सब लोगों को इस अकाल मृत्यु पर वडा ही शोक हुआ क्योंकि पंचम हनरी से पूर्व किसी राजा ने फ्रास पर इस प्रकार विजय न पाई थी। इसके समय में इङ्गलैण्ड का यूरोप के अन्य देशों में वडा मान बढ़ गया था। परन्तु यह उन्नति केवल क्षणिक थी क्योंकि पिछले युद्धों में न केवल राजकोष ही ख़ाली हो गया था किन्तु राजसेना भी वीर पुरुषों से वंचित हो चुकी थी। प्रायः

सब बड़े बड़े योद्धा मृत्यु-प्राप्त हो चुके थे। इसलिए हनरी के मरते ही राज में गड़बड़ी मच गई अभी उसका मृतक संस्कार भी न होने पाया था और लोगों के आँसू अभी सूखे तक न थे कि एक दूत ने यह कुसमाचार सुनाया कि अंगरेजी सेना परास्त होगई और गाइनी, शेम्पेन, रीम्स, ऑर्लियन्स, पेरिस, गिसर्स और पोइक्टियर्स नामी प्रान्त उनके स्वत्व से निकल गये।

यह सुनकर अंगरेजी राजनेताओं को बड़ा दुःख हुआ! हनरी की मृत्यु के पश्चात् उसका २ वर्ष का पुत्र छठे हनरी के नाम से गद्दी पर बैठा और बैडफर्ड को राजकार्य्य का कर्त्ता नियत किया गया जैसी कि पंचम हनरी ने मृतक शय्या पर अपनी इच्छा प्रकट की थी।

बैडफर्ड ने जब यह दुःखमय वार्त्ता सुनी तो झट से फ्रांस को जाने की तैयारियाँ कर दीं। उसी समय दूसरे दूत ने आकर खबर दी कि डौफिन चार्ल्स (फ्रांस के युवराज) का रीम्स में राज्याभिषेक हो गया। और ऑर्लियन्स, ऐन्जू तथा एलेक्झन के जागीरदार उस से मिल गये। परन्तु सब से बुरी बात जो सुनी गई वह यह थी कि अंगरेजों का एक बड़ा वीर योद्धा टालबट फ्रांस में कैद हो गया। यह घटना इस प्रकार हुई कि १० वीं अगस्त को जब टालबट ऑर्लियन्स नामी नगर से कुछ दूर पर पड़ा हुआ था उस पर अचानक शत्रु ने आक्रमण किया और उसे अपनी सेना को ठीक करने का अवकाश न मिला। तीन घण्टे तक घोर युद्ध हुआ जिसमें टालबट ने ऐसी वीरता दिखाई कि सैकड़ों शत्रु नरकधाम को पहुँचा दिये। उसे देख कर शत्रु-दल में हलचल पड़ गई और जिस का जिधर मुँह उठा भाग निकला। अंगरेजी-सेना अपने योद्धा का नाम ले लेकर शत्रुगण को परास्त करने लगी। उस समय फ्रांस

के पराभव में कुछ भी कसर नहीं रही थी परन्तु सर जौन फ़ालसटाफ नामी एक ॲंगरेजी सेनापति अपना कायरता के कारण भाग निकला। और इसी अवस्था में पीछे से आकर एक फरासीसी ने टाल्वट की पीठ में धोखे से एक ऐसी तलवार मारी कि वह गिर पड़ा और पकड़ लिया गया।

टाल्वट की वीरता पर सब को बड़ा भरोसा था और उसी के आश्रय पर अब तक अंगरेज लोग निश्चिन्त बैठे हुए थे, परन्तु अब सब लोग घबड़ा उठे और वैडफर्ड ने दश सहस्र सेना के साथ फ़्रांस को प्रस्थान कर दिया।

उस समय बचे कुचे अंगरेज औलिंयन्स को लेने का प्रयत्न कर रहे थे। यद्यपि टाल्वट कैद हो चुका था परन्तु साल्सबरी अभी स्वतन्त्र था और उसने डौफिन का इस वीरता से सामना किया कि एक बार फिर उसे अपनी हार का निश्चय हो गया। साल्सबरी के सामने से भाग कर उस ने कहा—

"हाय! मेरे आदमी कैसे कायर हैं। दुष्ट! अधम! यदि यह लोग मुझे अकेला शत्रुदल में न छोड़ देते तो मैं कभी यहाँ से भाग कर पीठ न दिखाता।"

रिगनियर नामी एक दूसरे सैनिक ने :
"साल्सबरी बड़ा लड़ाकू है। वह इस प्रकार

को देखकर कौन ऐसी आशा कर सकता था कि इनमें इतना वल है। क्या यह सब सेमसन* ही है।

डौफिन चार्ल्स † इस समय निराश हो गया और उसने ओर्लियन्स छोड़ देने का इरादा किया परन्तु इस द्विविधा के समय जेन डार्क नामी एक लड़की वहाँ पर आई और कहने लगी कि मुझे स्वप्न हुआ है जिसमें मरियम ‡ ने प्रेरणा की है कि मैं रणक्षेत्र में जाकर तुम्हारी सहायता करूँ, तुम अवश्य विजय पाओगे।

चार्ल्स—मुझे तेरी बातें सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ है। परन्तु जब तक तेरे वल की जाँच न कर लूँ, तेरा विश्वास नहीं कर सकता। मैं तुझसे मल्ल-युद्ध करूँगा। यदि मैं हार गया तो तुझे अपनी सेना का सेनापति नियत कर दूँगा।

जेनडार्क—"मैं तैयार हूँ।"

अभी जेन ने दो तीन ही हाथ चलाये थे कि चार्ल्स चिल्ला उठा।

"बस कर। बस कर। तू बड़ी बुरी तरह मारती है।"

जेनडार्क—ईसा की मा मेरी सहायता कर रही है।

---

*सैमसन ज़ोरा नामक नगर में मनोह का लड़का था। जिसको ईश्वर ने इतना वल दिया था कि वह शेर को फाड़ डालता था। एक समय जब उसके शत्रुओं ने उसे पकड़ लिया तो उसने एक बड़े मकान के खम्भों को हिलाकर उन सब के ऊपर गिरा दिया और स्वय भी मर गया। (देखो बाइबिल Judges 12)

† डौफिन का नाम चार्ल्स था।

‡ मरियम ईसामसीह की मा का नाम है।

चार्ल्स—कोई तेरी सहायता करता हो। परन्तु इस में सन्देह नहीं कि तू बडी प्रवीरा है, मै तेरा राजा होना नहीं चाहता किन्तु मेरी यह इच्छा है कि तू मुझे अपना दास बनाले।

जोनडार्क—नही नहीं ! मेरा उद्देश पवित्र है। मैं तुझ से विवाह नही कर सकती। मुझे केवल विजय प्राप्ति के लिए आज्ञा हुई है।

यह कह कर उसने डौफिन और समस्त सेना को ऐसा उत्तेजित किया कि वे फिर लडने पर कटिबद्ध हो गये। और अँगरेजों से जाभिड़े।

इसी समय टाल्बट बन्दीगृह से छुटकारा पाकर साल्सबरी के पास जा पहुँचा। साल्सबरी ने बडे हर्ष के साथ उस से कहा—

"टाल्बट ! टालबट ! आप किस प्रकार छूट आये। मुझे आप को देख कर बडा हर्ष हुआ है।"

टाल्बट—बैडफर्ड के पास एक फ़रासीसी क़ैदी लार्ड पौंटन था जिस के बदले में फ़रासीसी लोगों ने मुझे मुक्त कर दिया। पहले वे मुझे एक साधारण पुरुष के बदले छोड देते थे। परन्तु मैंने इस बात को स्वीकृत नहीं किया क्योंकि इस से मेरा अपमान होता था और यश में बाधा पडती थी। मैंने कह दिया कि इस अपमान युक्त छुटकारे से तो मृत्यु ही भली है।

साल्सबरी—"आप के साथ फरासीसियों ने कैसा व्यवहार किया ?"

टाल्बट—"बहुत बुरा ! उन्होंने मुझे बाजार में निकाला, तालियाँ बजाई गईं और अनेक प्रकार से अपमान किया गया। मैंने भी क्रोध के मारे हाथों से पत्थर उठाकर भीड भाड

को भगा दिया। उन लोगों में मेरी वीरता की ऐसी धाक थी कि वह डरते थे कि कहीं मैं लोहे का शीकचा न तोड डालूँ। इसलिए उन्होंने चुने हुए सिपाही बन्दूक लिये मेरे ऊपर नियत कर दिये कि यदि मैं हाथ पैर हिलाऊँ तो वे झट मुझे मार डालें।"

सालसबरी—"मुझे आप के इन कष्टों पर बडा खेद है परन्तु हम लोग शीघ्र ही इस का बदला ले लेंगे।

अभी सालसबरी ने अपना कथन समाप्त भी नहीं किया था कि जेनडार्क से प्रेरित फरासीसियों की एक गोली सालसबरी के ऐसी लगी कि एक आँख और एक गाल बिल्कुल उड गया और वह बेहोश हो कर धरातल में गिर पडा।

इतने में जेनडार्क शस्त्र धारण किये आ पहुँची और उस के सम्मुख समस्त अँगरेजी सेना तितर बितर हो गई। यद्यपि टालबट बडी वीरता से लडा परन्तु उस का साहस व्यर्थ गया और अँगरेजों की हार हुई। वे औलियन्स को न ले सके और डौफिन चार्ल्स ने बडे समारोह से जेनडार्क की महिमा के गीत गाये। नगर में उसी के नाम के जय जयकार होने लगा। रात भर विजयोत्सव मनाया गया।

थोडी देर पीछे बेडफर्ड अपनी सेना-सहित बरगण्डी के साथ वहाँ आगया। और जब इन सब ने जेनडार्क की वार्ता सुनी तो उनको बडा आश्चर्य हुआ और उन्होंने समझा कि इस के ऊपर कोई भूत आगया है अथवा यह कोई जादूगरनी है जो एक गडरिये की लडकी होने पर भी उस में इतना बल है और ऐसे पराक्रम के साथ लडती है।

अब इन सब ने विचार किया कि रात के समय जब फरासीसी लोग उत्सव में संलग्न हो रहे हैं अचानक इन पर छापा

मारना चाहिए। इस प्रयोजन के लिए टालबट, बरगण्डी और वैडफ़र्ड नगर की दीवारों पर चढ़ गये। और थोड़ी देर में नगर को ले लिया क्योंकि फरासीसी लोगों को इस आक्रमण की कुछ भी आशा न थी।

प्रात काल को फरासीसी लोगों ने टालबट के पकड़ने का एक और उपाय किया और औवर्न की रानी ने, जो एक प्रसिद्ध रमणी थी, टालबट को सहभोज के लिए निमन्त्रित किया। टालबट को इसके छल-कपट का कुछ भी पता नहीं था इसलिए वह वहाँ चला गया परन्तु जब टालबट वहाँ पहुँचा तो उसे देखकर रानी अपने नौकर से कहने लगी—

"क्या यही टालबट है? क्या इसी ने फ्रांस का इतना नाश कर दिया है? क्या यही मनुष्य है जिसके नाम से मातायें अपने बच्चों को चुप किया करती हैं? मैं समझती थी कि वह बड़ा भारी लम्बा चौड़ा आदमी होगा। प्रतीत होता है कि किसी ने झूठ मूठ उड़ा दिया है। यह तो छोटा सा है।"

टालबट—देवि! मैंने आप को व्यर्थ कष्ट दिया। आपको अवकाश नहीं है। इसलिए मैं यहाँ से जाता हूँ।

रानी ने उस समय अपने नौकर द्वारा फाटकों में ताला डलवा दिया! और कहने लगी—

"अब तुझे मैंने कैद कर लिया।"

टालबट—कैद?

रानी—हाँ! कैद! तूने मेरे देश की बहुत हानि की है। इसीलिए मैंने तुझे यहाँ बुलाया था। बहुत दिनों से मेरे मकान में तेरी तसवीर टँगी हुई थी परन्तु अब तू स्वय आगया। अब मैं तेरे हाथ पाँव बाँध कर डाल दूँगी और तू मेरे देशवासियों को कुछ भी कष्ट न दे सकेगा।

टालवट—ओहो! ओहो!

रानी—अरे दुष्ट! तू हँस रहा है। देख तो अब तुझे रोना पड़ेगा।

टालवट—मुझे हँसी आरही है कि श्रीमतीजी ने मेरे चित्र को कुछ और समझ लिया है जिसको आप दण्ड देना चाहती हैं।

रानी—क्या तू टालवट नहीं है?

टालवट—मैं हूँ!

रानी—तो क्या इस समय टालवट मेरे वश में नहीं है?

टालवट—नहीं नहीं! यह तो मेरा चित्र है। मेरा शरीर तो कुछ और ही है। यदि आप मेरे शरीर को देखतीं तो चकित हो जातीं क्योंकि यह इतना बड़ा है कि आप के इस छोटे मकान में नहीं समा सकता।

रानी—यह तो असम्भव बात है।

टालवट ने इस समय बड़े जोर से बिगुल बजाया जिसको सुनते ही उसके साथी जो किसी गुप्त प्रदेश में छिपे खड़े थे आ उपस्थित हुए और दरवाजा तोड़ कर घर के भीतर घुस आये। अब टालवट कहने लगा—

"आप ने देखा! देवी जी! मेरे हाथ पाँव ये हैं। जो शरीर अब तक आप के सम्मुख खड़ा था वह तो केवल टालवट का चित्र है।"

रानी यह देखकर घबरा गई और टालवट से क्षमा माँगी। अन्त में उसने टालवट और उसके साथियों को सहभोज दिया। इस प्रकार अंगरेज लोग औलियन्स की लड़ाई में जीत गये।

परन्तु चार्ल्स डौफिन और जोनडार्क अभी अँगरेजों को निकालने का उद्योग कर रहे थे। अगरेज लोग उस समय रोयें नामी नगर में पडे हुए थे। चार्ल्स और जेन ने इस नगर को लेने का इरादा किया और व्यापारियों का भेष धारण करके नाज के बोरों के सहित रोयें के फाटक पर दस्तक दी। द्वारपालों ने पूछा—"तुम कौन हो ?"

इन्होने उत्तर दिया कि "हम दरिद्र व्यापारी हैं और अन्न बेचने आये हैं।" यह सुनकर फाटक खोल दिये गये। और यह लोग नगर में घुस गये। फाटक के खुलते ही फरासीसी सेना घुस पडी। और टाल्बट तथा बरगण्डी को बडी कठिनाई हो गई। दैवगति और दुर्भाग्य से उस समय वैडफर्ड रोगग्रसित होगया और उसके बचने की आशा न रही। टाल्बट आदि ने चाहा कि उसे किसी सुरक्षित स्थान में भेज दिया जाय, जहाँ वह युद्ध के कोलाहल से बच सके। परन्तु उसने न मानी और युद्ध जिस स्थान पर हो रहा था वही बैठा बैठा सिपाहियों को उत्तेजित करता रहा। अन्त में जब फ्रांसवालो को पराजय हुई और चार्ल्स तथा जोन रणक्षेत्र से भागनेलगे तो वैडफर्ड के मन को शान्ति हुई और हर्षपूर्वक यह कहते हुए उसने प्राण त्याग दिये कि "अब शत्रु को पराभूत हुआ देखकर मुझे बडा सन्तोष है। अब मैं सुखपूर्वक मरता हूँ।" युद्ध के पश्चात् अँगरेजों को अपने ऐसे वीर सेनापति की मृत्यु पर बडा शोक हुआ और रो रो कर उसका मृतक सस्कार किया गया।

अब टाल्बट और बरगण्डी ने पेरिस की ओर कूच किया जिससे वे लोग फ्रास देश की राजधानी पर स्वत्व प्राप्त कर सकें। जोन डार्क ने ऑर्लियन्स और रोयें में अपना काम बिगडा हुआ देखकर बरगण्डी को अपनी ओर मिलाने का उपाय

किया। और यह बात सम्भव भी थी। क्योंकि बरगण्डी * फ्रांस का प्रान्त है जिसका शासक ड्यूक आफ बरगण्डी अँगरेजों से जा मिला था। जोन इसे फिर अपने देश की भलाई के विषय में समझाना चाहती थी। इसलिए जब बरगण्डी की सेना पेरिस को जा रही थी तो जोन डार्क ने मार्ग में बरगण्डी से कहा—

"वीर बरगण्डी! फ्रांस की आशा तुझी से है। हे बरगण्डी! मैं तेरी दासी कुछ प्रार्थना करना चाहती हूँ।"

बरगण्डी—संक्षेप से कह। मुझे अवकाश नहीं है।

जोनडार्क—अपने देश की ओर देख! उपजाऊ फ्रांस की ओर देख! सोच तो सही कि यह सुन्दर नगर किस प्रकार विनष्ट हो रहे हैं। अरे! अपने देश की ओर उसी दृष्टि से देख जिस प्रकार एक माता अपने मरते हुए पुत्र की ओर देखती है। देख तूने स्वय अपनी तलवार से अपने ही देश का हृदय किस प्रकार विदीर्ण किया है। अपनी इस तलवार को दूसरी ओर फेर और उन लोगों को मार जो तेरे देश को नष्ट कर रहे हैं। भला अपने देश के मित्रों के साथ इस प्रकार अहित क्यों करता है? अपनी मातृभूमि के रक्त की एक बूंद से तुझे शत्रु के रुधिर की नदियों की अपेक्षा अधिक पीड़ा होनी चाहिए। इसलिए हे बरगण्डी! अब लौट आ और अपने देश की रक्षा कर।

बरगण्डी—(मन में)—अरे! इसके शब्दों में बड़ी आकर्षण शक्ति है।

---

*अंगरेज़ी में राजों को उनके देश के नाम से पुकारते हैं जैसे "बरगण्डी" बरगण्डी के ड्यूक को कहते है। "यार्क" यार्क के ड्यूक को इत्यादि।

जोनडार्क—अगर तू ऐसा नहीं करता तो लोगों को तेरी उत्पत्ति और वंश में सन्देह है। क्योंकि तू ऐसी जाति से जा मिला है जो केवल स्वार्थ के लिए तुझे चाह रही है। यदि टाल्बट जीत गया तो सिवा हनरी के और कौन राजा होगा? और क्या उस समय तू इसी प्रकार रहने पायेगा।"

जोन्डार्क ने बरगण्डी को ऐसा फुसलाया कि अन्त में वह पिघल गया और अंगरेजों को छोड़कर डौफ़िन चार्ल्स से आ मिला।

फ्रांसदेशीय घटनाओं को हम इस समय यहीं छोड़ते हैं और इङ्गलैण्ड के विषय में कुछ वर्णन करते हैं। ऊपर लिखा जा चुका है कि पंचम हनरी की मृत्यु के पश्चात् उसकी इच्छानुसार बेडफ़र्ड राज कार्य्यकर्त्ता नियत किया गया। परन्तु वह प्रायः फ्रांस के झगड़े में फँसा रहा और उसे इङ्गलैण्ड में रहने का कुछ भी अवकाश न मिला। उस की अनुपस्थिति में उस का भाई ग्लोस्टर छठे हनरी का संरक्षक नियत हुआ।

परन्तु सम्राट् की बाल्यावस्था में इङ्गलैण्ड के मन्त्रिगण और अन्य प्रसिद्ध पुरुष आपस में लड़ने लगे। ग्लौस्टर और विंचेस्टर के लाट पादरी में बहुत कुछ वैमनस्य हो गया। उन दोनों ने बारी बारी से बालक इङ्गलैण्ड-नरेश को अपनी रक्षा में लेने का उद्योग किया। इस प्रकार कई बरसों तक घोर युद्ध होता रहा। इन दोनों के नौकर जहाँ कहीं मिल जाते परस्पर लड़ाई करते। एक समय इन के झगड़ों से तंग आकर लन्दन के लार्ड मेअर (मुख्याधिष्ठाता) ने उनको शस्त्र धारण करने से वर्जित कर दिया। परन्तु वे लोग अब पत्थर इकट्ठे करके अपनी जेबों में भरने लगे और एक दूसरे को मारने लगे। उधर थोड़े दिनों

पीछे ग्लोस्टर ने पार्लियामेंट (राजसभा) में विंचेस्टर के पादरी के विरुद्ध अभियोग चलाने की तैयारियाँ कीं। पादरी ने उस कागज को जिस पर ग्लोस्टर ने, उसके दोष लिखे हुए थे, भरी सभा में राजा के सम्मुख फाड़ डाला। छठा हनरी अब यद्यपि बड़ा हो गया था और राजसभा में आया करता था परन्तु उस के अशक्त होने के कारण और लोग उससे डरते नहीं थे। और सब अपने को स्वतंत्र समझते थे। पादरी के कागज फाड़ डालने पर ग्लोस्टर और पादरी में बहुत झगड़ा हुआ। हनरी बिचारे ने बहुत कुछ इन से प्रार्थना की कि जब आप लोग हों, जो कि राज-काज के करने वाले हैं, आपस में लड़ेंगे तो राज का क्या हाल होगा। पहले तो उन्होंने अपने,राजा की बात न सुनी। परन्तु जब हनरी ने बहुत कुछ उन से विनती की तो वे मान गये। और थोड़े दिनों के लिए झगड़ा मिट गया।

परन्तु इस समय एक और झगड़ा खड़ा हो रहा था। उस की कथा इस प्रकार से है। चतुर्थ हनरी का हाल लिखते हुए यह दिखलाया जा चुका है कि तीसरे एडवर्ड के दूसरे बेटे लाइनल क्लेरेन्स के वंश का एक पुरुष मार्टीमर ग्लेण्डोवर और हैरी हॉटस्पर के साथ मिल जाने के कारण कैद कर लिया गया था। यह मार्टीमर अभी तक बन्दीगृह में ही सड़ रहा था। और हनरी चतुर्थ तथा उस के लड़के पंचम हनरी ने उसे इस भय से मुक्त नहीं किया था कि कहीं वह राज लेने का प्रयत्न न करे। पाँचवे हनरी के समय में इस के बहनोई कैम्ब्रिज नेड़ स को राज देने का कुछ प्रयत्न किया था परन्तु उस का भाँडा शीघ्र ही फूट जाने के कारण कैम्ब्रिज को झट से प्राण-दण्ड दे दिया गया। कैम्ब्रिज का पुत्र रिचार्ड जो मार्टीमर का भांजा था और जो उस के पुत्ररहित होने के कारण उस का उत्तराधिकारी

था इस समय गुप्तरीति से अपना सिर उठाने की कोशिश कर रहा था।

जब मार्टीमर का अन्त-समय आया तो उसने रिचार्ड को अपने सरक्षकों द्वारा बुलवाया और कहा—

"मेरी वृद्धावस्था के सरक्षको! मुझ मरते हुए को इस स्थान पर बिठा दो! जिस प्रकार बहुत कष्टों के पश्चात् मनुष्य कुछ आराम लेता है इसी प्रकार बहुत दिनों के बन्धन के पश्चात् मेरे शरीर का हाल है। श्वेत केश कह रहे हैं कि अब मार्टीमर का अन्त समय है। ये आँखें उन दीपकों की भाँति, जिनका तेल समाप्त हो जाता है, धुंधली हो रही हैं। कन्धे बोझ के मारे दुर्बल हो रहे हैं, पैर अब शरीररूपी भार को धारण करने में असमर्थ हैं। अब मृत्यु के सिवा और किसी वस्तु की इच्छा नहीं है। क्या मेरा भाजा रिचार्ड आ रहा है?"

इसी समय रिचार्ड आगया, और मार्टीमर ने बड़े प्रेम से उसे छाती से लगाया। अब रिचार्ड ने अपने मामा से कहा—

"मामा! आज मुझसे और सोमर्सेट से झगड़ा हो गया। जब हम सब बैठे हुए थे तो वह मेरे पिता के लिए अपशब्द कहने लगा। मुझे अपने पिताजी का कुछ भी हाल ज्ञात नहीं है नहीं तो अवश्य मैं उसका सिर तोड़ डालता। इसलिए मामाजी बताइए कि मेरे पिताजी को क्यों प्राण-दण्ड दिया गया।"

मार्टीमर—इसका कारण वही था जिसने मुझे कैद कराया। और जिससे मेरा युवावस्थारूपी पुष्प इस वन्दीगृह में पड़ा पड़ा सूख गया।

रिचार्ड—स्पष्ट बताइए। मैं नहीं समझा।

मार्टीमर—यदि मेरी साँस चलती रही तो कहने का प्रयत्न करूँगा। इस वर्त्तमान सम्राट् के पितामह चतुर्थ हनरी

ने अपने भतीजे रिचार्ड (द्वितीय) को गद्दी से उतार दिया। उसके समय में उत्तरी देश के नार्थम्बरलैण्ड और उसके पुत्र हॉटस्पर ने राजा के अत्याचारों से तंग आकर मुझे गद्दी पर बिठाने का इरादा किया। मैं वास्तव में राज्य का अधिकारी था क्योंकि तीसरे एडवर्ड के पहले पुत्र का लडका रिचार्ड सतानरहित मर चुका था। अब राज मेरा था क्योंकि मेरी माता एडवर्ड के दूसरे लडके लाइनल के वंश की थी। चतुर्थ हनरी का पिता गाण्ट एडवर्ड का तीसरा लडका था इसलिए मेरे होते हुए उसका अधिकार नही था। परन्तु मेरे सहायक कृतकार्य नहीं हुए और मुझे कैद कर लिया गया। पचम हनरी के समय में तेरे पिता कैम्ब्रिज ने, जो यार्क के वंश से था, मेरी बहन अर्थात् तेरी माता से विवाह किया और मेरे कष्टों पर दया करके एक सेना इकट्ठी की। परन्तु भेद खुल जाने पर उसको प्राणदण्ड दिया गया। इस प्रकार आज मार्टीमर-कुल की समाप्ति होती है।

रिचार्ड—तो मेरे पिता जी के साथ अत्याचार किया गया।

मार्टीमर—हाँ। अब तू मेरा उत्तराधिकारी है। परन्तु सोच समझ कर काम करना चाहिए क्योंकि वर्त्तमान राजवंश बडा प्रबल हो रहा है।

अब मार्टीमर तो मर गया। और रिचार्ड ने राजसभा में जाकर यार्क की जागीर के लिए प्रार्थना की। छुठे हनरी ने उसकी प्रार्थना स्वीकार करली और रिचार्ड को यार्क का ड्यूक बना दिया गया।

इसके पश्चात् ग्लोस्टर ने राजा से प्रार्थना की कि "आप फ्रांस को चलिए। वहाँ आप का राज्याभिषेक होना चाहिए। क्योंकि आप को देखकर फ्रांस के विद्रोही लोग शान्त हो जायँगे।" ऐसा विचार करके हनरी फ्रांस को प्रस्थान किया।

पेरिस पहुँच कर हनरी का अभिषेक हुआ। ग्लोस्टर सोमरसेट और रिचार्ड यार्क उसके साथ थे। अभिषेक के पश्चात् यार्क और सोमरसेट में फिर झगडा हो गया। परन्तु हनरी ने बडी मुश्किल से उनको शांत किया, पर यद्यपि उनके मन में शत्रुता की आग भडकती रही। इसी समय हनरी ने सुना कि बरगण्डी डौफिन से जा मिला। इस पर हनरी को बडा क्रोध आया और टाल्बट को उसके दमन के लिए भेजा। परन्तु कई बातों का विचार करके वह स्वयं इंग्लैण्ड को लौट गया।

टाल्बट थोडी सी सेना लेकर बोर्डो की ओर चला। और नगर के फाटक को खुलवाने का इरादा किया। परन्तु नगरवासी पहले से ही अँगरेजों के विरुद्ध हो रहे थे उन्होंने टाल्बट की बात न सुनी और छठे हनरी का स्वत्व अङ्गीकार नहीं किया। अभी टाल्बट फाटक-पर ही खडा था कि डौफिन की सेना ने आकर उसको घेर लिया।

टाल्बट के पास बहुत थोडी सेना थी और शत्रु का सामना करने में असमर्थ थी। उसने यार्क और सोमरसेट से सहायता की प्रार्थना की। परन्तु ये दोनों आपस में झगडा कर रहे थे, भला टाल्बट को कैसे सहायता भेजते। यार्क ने उद्योग भी किया कि किसी प्रकार कुछ सेना टाल्बट के पास पहुँचा दी जाय। परन्तु सोमरसेट ने डाह के मारे सेना भेजने में देर कर दी। क्योंकि हनरी ने रिचार्ड यार्क को फ्रांस का अध्यक्ष नियत

किया था और यदि विजय हो जाती तो इसमें रिचार्ड यार्क का ही नाम होता।

इस समय टालबट का पुत्र जौन अपने पिता से मिलने गया, टालबट ने सात वर्ष से इसे देखा न था और अब अपना अन्त-निकट समझ कर उसने इसे इसलिए बुलाया था कि युद्ध-विद्या म कुछ शिक्षा दे सके। जौन अपने पिता से ऐसे समय मिल सका जब टालबट शत्रु के बीच में घिरा हुआ था। इसलिए उसने अपने पुत्र से कहा कि जल्दी से भाग जा।

जौन—"क्या मैं आपका पुत्र नहीं हूँ? क्या मैं भाग जाऊँगा? यदि आप मेरी माता से प्रेम करते हों तो मुझे रण से भगा कर उसका अपमान न कीजिए क्योंकि मुझे भागता हुआ देखकर लोग कहेंगे कि यह टालबट का पुत्र नहीं है।

टालबट—अरे भाग भाग! यदि मैं मर गया तो तू बदला ले सकेगा।

जौन—जो इस प्रकार भागेगा वह बदला कब ले सकेगा?

टालबट—अगर हम दोनों रहे तो दोनों मरेंगे।

जौन—तो आप जाइए। मैं यहीं रहूँगा। आपके मरने से अधिक हानि होगी। मुझे कोई नहीं जानता इसलिए मैं मरा भी तो क्या? आप की मृत्यु से सब निराश हो जायँगे। आपके पराक्रम इतने हैं कि एक बार भागने से उनमें कमी नहीं आ सकती। परन्तु यदि पहली ही लड़ाई से मैं भाग गया तो बड़े अपयश की बात है। यदि आप भागेंगे तो लोग कहेंगे कि यह नीतिज्ञता है। परन्तु मेरे भागने को लोग भय से ही सम्बद्ध करेंगे। मरना अच्छा है परन्तु अपयश के साथ जीना भला नहीं।

टाल्बट—मैं तुझे भागने की आज्ञा देता हूँ।
जौन—मैं भाग नहीं सकता। मैं लड़ाई करूँगा।
टाल्बट—यदि तू भाग जायगा तो तेरे पिता का नाम जीवित रहेगा।
जौन—केवल अपयश के साथ।
टाल्बट—पिता की आज्ञा से भागने में कुछ दोष नहीं है।
जौन—आप तो मर जायँगे फिर इसकी साक्षी कौन देगा। यदि मृत्यु का ऐसा ही भय है तो हम दोनों भाग चले।
टाल्बट—फिर मेरे साथियो का क्या हाल होगा? मेरी श्वेत डाढी मे धब्बा लग जायगा।
जौन—फिर मेरी युवावस्था मे क्यों धब्बा लगे? मैं आप के पास से नहीं जा सकता। चाहे ठहरिए चाहे जाइए।
टाल्बट—अच्छा, यहीं रहेंगे। और यदि भागेंगे तो साथ साथ स्वर्ग को भागेंगे।

अब युद्ध हुआ और बाप बेटे दोनो इस वीरता से लड़े कि शत्रु के दाँत खट्टे हो गये। यदि सोमरसट और यार्क की सहायता पहुँच जाती तो फरासीसियो की अवश्य हार होती। परन्तु अकेला टाल्बट क्या क्या करता। जौन का युद्ध दर्शनीय था। वह जिस ओर से निकल जाता था शत्रु के दल के दल खाली हो जाते थे और काई सी फट जाती थी। एक बार जोनडार्क ने जौन से कहा कि "आ मुझसे लड।" परन्तु उसने बड़े अभिमान के साथ उत्तर दिया कि "अँगरेज वीर अबला स्त्रियों पर हाथ नहीं उठाते" यह कहकर वह उसकी ओर से चला गया। एक बार शत्रु ने उसे घेर लिया। परन्तु टाल्बट ने आकर उसे बचा लिया। इस प्रकार घण्टों लड़ते लड़ते यह दोनों थक गये और पहले जौन मारा गया फिर टाल्बट घायल होकर मर

गया। इन दोनों की मृत्यु पर फरासीसियों को बड़ी खुशी हुई क्योंकि अब अँगरेजों के दल में कोई ऐसा बाकी नहीं रहा था जो विजय पा सके। यद्यपि कई वीर पुरुष अभी जीवित थे। परन्तु फूट और डाह के मारे उनकी योग्यता निकम्मी हो रही थी। अब चार्ल्स फ्रांस का राजा हो गया।

परन्तु अभी लड़ाई बन्द न हुई और पेंजीर्स के युद्ध में रिचार्ड यार्क ने जेन डार्क को पकड़ लिया। फरासीसी सेना भाग गई और किसी ने इस युवती के छुड़ाने का प्रयत्न नहीं किया जिसने फ्रांस को अँगरेजों के स्वत्व से मुक्त किया था।

अँगरेजों ने इस अबला के साथ बड़ा अत्याचार किया। उस पर जादूगरनी होने का दोष लगाया गया। उस समय जादू करना बड़ा दोष माना जाता था और जिस पर इसका सन्देह होता था उसको जीते जी जला दिया जाता था। यही हाल जेन डार्क के साथ हुआ। बहुत से पादरियों ने बैठ कर उसको इसी दण्ड के योग्य ठहराया और बहुत बड़ी अग्नि जला कर उसे उस पर फेंक दिया। इस प्रकार इस प्रवीण कुमारी का जीवन समाप्त हुआ जिसने अपने पराक्रम से अच्छे अच्छों के दाँत खट्टे कर दिये थे। फरासीसियों की कृतघ्नता और अँगरेजों के निर्दयीपन ने एक विचित्र आत्मा को संसार से उठा लिया।

इसी युद्ध में पेंजू के राजा की लड़की मारगरेट अँगरेजी योद्धा सफोक के हाथ लग गई। मारगरेट बड़ी रूपवती थी। उसके रूप को देखकर सफोक का चित्त उसकी ओर आकर्षित हो गया। परन्तु उसका विवाह हो चुका था इसलिए मारगरेट के साथ सम्बन्ध करना असम्भव था। अतएव उसने यह विचार किया कि इस युवती को इङ्गलैण्ड की महारानी बनाना

चाहिए। मारगरेट ने इस बात को स्वीकार कर लिया। और उसके पिता से इस शर्त पर सन्धि हो गई कि उसको एँजू का राज लौटा दिया जाय।

सफ़ोक ने इङ्गलैण्ड में आकर राजा हनरी को इसके लिए राजी किया। उधर रोम से पोप ने भी आग्रह किया कि फ्रांस और इङ्गलैण्ड के युद्ध में सहस्रों ईसाइयों का रक्तपात होता है। इसलिए सन्धि हो जानी चाहिए।

यद्यपि ऐसे समय में जब इङ्गलैण्ड के हाथ से फ्रांस का बहुत सा भाग निकल चुका था और यार्क को जेन के मर जाने से फिर कुछ आशा हो चली थी कि गया हुआ राज फिर लौट आवे उसे यह सन्धि अच्छी नहीं लगी, परन्तु उसका कुछ बस नहीं चला। वह कहने लगा—

"क्या हमारे सब कष्टों का यही परिणाम निकला। क्या इतने सेनापतियों तथा योद्धाओं की मृत्यु के पश्चात् जिन्होंने केवल अपने देश के हित के लिए अपने शरीरों को बलिदान कर दिया, हम इस अपमान के साथ सन्धि करेंगे। क्या झूठ, कपट छल तथा विद्रोह के कारण हमने फ्रांस के बड़े बड़े प्रान्त हाथ से नहीं दे दिये, जिनको हमारे पूर्वजों ने रक्त बहाकर जीता था। शोक! शोक!"

परन्तु अब हो क्या सकता था। यह सन्धि केवल पोप के आग्रह से की गई थी और विंचेस्टर का लार्ड पादरी, जो ग्लोस्टर का बड़ा शत्रु था, पोप के इस प्रस्ताव का कारण था। चार्ल्स डोफिन भी यही चाहता था कि जिस प्रकार हो सके सन्धि हो जाय, क्योंकि इस समय मुख्य मुख्य प्रदेश उसके हाथ लग चुके थे। इसलिए इस शर्त पर सन्धि हुई कि चार्ल्स डौफिन सदा हनरी का मित्र रहेगा और उसकी आज्ञा पालन

किया करेगा और कभी इङ्गलैण्ड नरेश से वैर न करेगा। यह शर्त केवल नाम मात्र थी क्योंकि सब प्रसिद्ध स्थान चार्ल्स के हाथ में थे, अगरेजों को कर लेने का भी अधिकार न था। अब सिवा कैले के और कोई फ्रांस देशीय स्थान उनके पास नहीं रहा था। परन्तु अब यहाँ उस युद्ध की समाप्ति होगई जो एडवर्ड (तृतीय) के समय में आरम्भ हुआ था और जिसको शताब्दीय युद्ध (HUNDRED YEARS, WAR) कहते हैं।

छठे हनरी की मारगरेट के साथ शादी हो गई और इसके बदले में ऐंजू और मेन नामी दो प्रान्त उसके पिता को दे दिये गये।

छठा हनरी

दूसरा भाग

(HENRY VI PART II.)

हम प्रथम भाग मे वता चुके हैं कि छठे हनरी और डौफिन चार्ल्स से सन्धि हो गई। अब चार्ल्स डौफिन नही रहा किन्तु फ्रांस का सम्राट् हो गया। मारगरेट सफ़ोर्क के साथ इङ्गलैण्ड में आई जिसका हनरी ने वडे समारोह से स्वागत किया और भरी सभा में सब मन्त्रियों ने अपनी इस नई महारानी को प्रणाम किया। सब ने उसकी चिरायु के लिए असीस दी। इसके पश्चात् सन्धिपत्र पढा गया जिसमें लिखा हुआ था —

"फ्रांसनरेश चार्ल्स * और इङ्गलैण्डनरेश हनरी के एल्ची विलियम डीलापूल सफोक के मध्य में यह सन्धिपत्र लिखा गया कि हनरी का विवाह नेपिल्स, सिसली और जरूसलम के राजा की पुत्री मारगरेट से हो और १३ वीं मई से पहले पहल वह इङ्गलैण्ड की महारानी बनाई जाय। और ऐञ्ज और मेन जो पहले इसके पिता के अधीन थे फिर उसे लौटा दिये जायँ। और मारगरेट हनरी के खर्च पर इङ्गलैण्ड को लाई जाय। यह भी निश्चित हुआ कि उसे कुछ यौतुक न दिया जाय"

---

* सफोक का पूरा नाम विलियम डीलापूल था।

हनरी ने इस पर बड़ा हर्ष प्रकट किया और डीलापूल को, जो अब तक सफोक का* मार्किस ही था, ड्यूक बना दिया और मारगरेट को महारानी बनाने के लिए बड़ी बड़ी तैयारियाँ कीं। परन्तु इस विवाह तथा सन्धि से हनरी के मन्त्रिगण खुश नहीं हुए। ग्लोस्टर, सालसबरी, वारिक विंचेस्टर का पादरी और रिचार्ड यार्क ये सब लोग लन्दन के राजमहल में बैठे बैठे इस प्रकार वार्तालाप करने लगे :—

ग्लोस्टर—"इङ्गलेण्ड के मन्त्रिगण ! राज्य के स्कन्ध ! मैं आपके सम्मुख अपना दुःख प्रकाशित करता हूँ। यह केवल मेरा ही दुःख नहीं है किन्तु आप का और समस्त जाति का दुःख है। क्या मेरे भाई ने वीरता, धन तथा सेना इस फ्रांस की विजय के लिए अर्पण नहीं की थी। क्या उसने जाड़े और गर्मी में इसी के लिए कष्ट नहीं सहे। क्या बेडफोर्ड ने इसीलिए अपने प्राण नहीं दिये। क्या वीर यार्क, सालसबरी वारिक, आप लोगों ने फ्रांस और नारमण्डी के रणक्षेत्रों में घाव नहीं खाये? यदि ऐसा है तो क्या इन सब कष्टों का यही परिणाम होना था? हम लोग रात दिन कोशिश करते करते थक गये कि किसी प्रकार फ्रांस हाथ से न जाय। परन्तु इन सब का परिणाम यह हुआ कि अपयश-सूचक सन्धि करनी पड़ी। क्या इस विवाह से भी अधिक घृणित कोई बात हो सकती थी जिसने हम सबकी वीरता को पानी में मिला दिया। आज कई पीढ़ियों की वीरता का चिह्न फ्रांस से मिट गया।

सालसबरी—ईसा की सोगन्ध ऐञ्जू और मेन नारमण्डी की

---

*मार्किस का पद ड्यूक से नीचा होता है।

कुंजियाँ थी और यह हाथ मे चली गईं।

वारिक—मुझे तो रोना आता है कि अब फ्रांस को कभी न ले सकेंगे। हाय! जो देश मैंने घाव खाकर जीते थे वे बात की बात में दे दिये गये।

यार्क—यह सब इसलिए है कि अब सफोक की चलती है। मेरी चलती होती तो मैं कभी इस सन्धि का अनुमोदन न करता चाहे मेरी बोटी बोटी उड जाती। मैंने किसी इतिहास में नहीं पढा कि किसी इङ्गलैण्ड-नरेश का विवाह विना यौतुक के हुआ हो। यहाँ हमारा सम्राट् अपनी रानी के बदले अपने देशों को बेच रहा है।

ग्लोस्टर—विवाह क्या है हास्य है। देखो सफ़ोक इसके मार्ग-व्यय का कितना रुपया माँगता है। इससे तो वह फ्रांस में ही क्यों न रह गई।

विंचेस्टर का पादरी—आप बहुत गर्म हो रहे हैं। क्या आप नहीं जानते कि हमारे सम्राट् की यही इच्छा थी?

ग्लोस्टर—मैं आपकी इच्छा को भले प्रकार समझता हूँ। न केवल मेरी बात ही आपको बुरी लगती है किन्तु मेरी उपस्थिति से भी आप को दु:ख होता है। अभिमानी पादरी! आप के चहरे से क्रोध के चिह्न प्रकट हो रहे हैं। यदि मैं यहाँ रहा तो न जाने क्या मुँह से निकल जाय, इसलिए जाता हूँ।

ग्लोस्टर तो चला गया अब विंचेस्टर के पादरी ने कहा—"ग्लोस्टर महाशय बडे क्रोध में जाते हैं। आप लोग जानते हैं कि इसको मुझसे वैर है। न केवल मुझसे ही किन्तु आप सब से। यह हनरी के वंश में निकटतम है और सन्तानाभाव की अवस्था में उसका उत्तराधिकारी भी यही है। इसीलिए

यह सब कोप है। आप सब लोग सावधान रहिए और इसकी बातो में न आइए, यद्यपि साधारण लोग इसको "भला! भला!" कहते हैं परन्तु मुझे तो इससे भय होता है।

बकिंहम—यदि ऐसा है तो हम लोग इसको राजा का संरक्षक न रहने देंगे। हम सब इसको निकाल बाहर करेंगे।

यह कह कर बकिंहम और पादरी सफोक की सम्मति लेने के लिए चले गये। रिचार्ड यार्क अपने मन में सोचने लगा कि "एंजू और मेन तो हाथ से निकल ही गये, पेरिस छिन गया। नार्मण्डी भी गया ही सा है। लोगो ने सन्धि करली। हनरी ने एक राजा की कन्या के लिए दो राज्य दे दिये। परन्तु इसमें इनका क्या दोष है। हराम का माल हराम में जाता है। यह लोग अपना क्या दे रहे हैं! है सो सब मेरा है। लुटेरे लोग अपनी लूट को बड़ी उदारता से व्यय करते हैं। इष्ट मित्रों को खिलाते हैं। रण्डी मुण्डियो को लुटाते हैं। बिचारा माल वाला हाथ पर हाथ धर कर रोता है। यही रिचार्ड* यार्क का हाल है। मुझे एक दिन फ्रांस मिलने की आशा थी। वह तो जाती रही। अब इङ्गलैण्ड लेने की कोशिश करनी चाहिए।" यह विचार कर उसने इरादा किया कि आपस के झगडो से लाभ उठावे। क्योंकि उसे विश्वास था कि ग्लोस्टर आदि में अवश्य झगड़ा होगा।

थोडे दिन पीछे फ्रांसदेशीय प्रान्तों के अध्यक्ष पद के लिए झगडा हुआ। पहले बेडफर्ड फ्रांस का अध्यक्ष था। दो आदमी अर्थात् सोमरसेट और यार्क इस पद के इच्छुक थे। ग्लोस्टर

* हम प्रथम भाग में दिखा चुके हैं कि राजगद्दी वास्तव में रिचार्ड यार्क की थी (देखो मार्टीमर का वार्तालाप)।

कुंजियाँ थीं और यह हाथ से चली गईं।

वारिक—मुझे तो रोना आता है कि अब फ्रांस को कभी न ले सकेंगे। हाय! जो देश मैंने घाव खाकर जीते थे वे बात की बात में दे दिये गये।

यार्क—यह सब इसलिए है कि अब सफोक की चलती है। मेरी चलती होती तो मैं कभी इस सन्धि का अनुमोदन न करता चाहे मेरी बोटी बोटी उड जाती। मैंने किसी इतिहास में नहीं पढ़ा कि किसी इङ्गलैण्ड-नरेश का विवाह विना यौतुक के हुआ हो। यहाँ हमारा सम्राट् अपनी रानी के बदले अपने देशों को बेच रहा है।

ग्लोस्टर—विवाह क्या है हास्य है। देखो सफ़ोक इसके मार्ग-व्यय का कितना रुपया माँगता है। इससे तो वह फ़्रांस में ही क्यों न रह गई।

विंचेस्टर का पादरी—आप बहुत गर्म हो रहे हैं। क्या आप नहीं जानते कि हमारे सम्राट् की यही इच्छा थी?

ग्लोस्टर—मैं आपकी इच्छा को भले प्रकार समझता हूँ। न केवल मेरी बात ही आपको बुरी लगती है किन्तु मेरी उपस्थिति से भी आप को दुःख होता है। अभिमानी पादरी! आप के चहरे से क्रोध के चिह्न प्रकट हो रहे हैं। यदि मैं यहाँ रहा तो न जाने क्या मुँह से निकल जाय, इसलिए जाता हूँ।

ग्लोस्टर तो चला गया अब विंचेस्टर के पादरी ने कहा—"ग्लोस्टर महाशय बडे क्रोध में जाते हैं। आप लोग जानते हैं कि इसको मुझसे वैर है। न केवल मुझसे ही किन्तु आप सब से। यह हनरी के वंश में निकटतम है और सन्तानाभाव की अवस्था में उसका उत्तराधिकारी भी यही है। इसीलिए

प्रकार हो सके ग्लोस्टर के संरक्षण से महाराज को मुक्त करना चाहिए। भरी सभा में एलीनर पर विद्रोह का अपराध लगाया गया। और जीवन पर्यन्त के लिए मान टापू में कैद करदी गई।

इसके पश्चात् हनरी ने ग्लोस्टर को संरक्षक पद से अलग कर दिया और स्वतंत्र होगया। इस प्रकार ग्लोस्टर ने जो स्वप्न देखा था वह ठीक हो गया। और उसके अधःपतन में केवल इतनी ही कसर रही थी कि अभी उसके प्राणों पर हस्तक्षेप नहीं किया गया। परन्तु अब उसकी भी बारी आई। हनरी ने बेरी नामी नगर में राजसभा की और ग्लोस्टर को बुलाया। जिस समय ग्लोस्टर ने निमंत्रण की सूचना पाई उसी समय उसका माथा ठनकने लगा। क्योंकि इस सभा के करने में उसकी सम्मति नहीं ली गई। वह समझ गया कि अवश्य दाल में कुछ काला है। बेरी में राजसभा हुई। राजा, रानी, विंचेस्टर का पादरी, सफोक, यार्क, बकिंहम और अन्य प्रतिष्ठित पुरुष बैठे हुए थे। उनके सामने राजा ने कहा—

"ग्लोस्टर अभी नहीं आये। वह तो कभी पीछे नहीं रहते थे। न जाने क्या कारण हुआ ?"

मारगरेट—क्या तुम देखते नहीं हो कि थोड़े दिनों से उसकी क्या दशा हो रही है। उसका मुँह कैसा चमकता जाता है। और वह कैसा अभिमानी होता जाता है। हम उसे उस समय से जानते हैं जब वह आज्ञा पालन में तत्पर रहता था। क्या आपने देखा नहीं था, कि टेढ़ी आँख होते ही उसका सिर झुक जाता था। और समस्त सभा उसकी राजभक्ति की प्रशंसा

लगी हुई है? आप क्या देख रहे हैं? क्या आपकी दृष्टि हनरी के राजमुकुट पर है। यदि ऐसा है तो प्रयत्न कीजिए और राजमुकुट धारण कीजिए। हाथ बढ़ाइए और मुकुट उतार लीजिए हम तुम दोनों इङ्गलैण्ड पर राज करेंगे!

ग्लोस्टर—प्यारी! यदि तुम अपने पति से प्रेम करती हो तो ऐसे विचारों को अपने अन्तःकरण से दूर कर दो। ईश्वर न करे कि अपने महाराज से मैं विरोध करूँ मेरे दुःख का कारण भयानक स्वप्न है जो मैंने रात देखा है। मैंने देखा कि मैं सरक्षण से पृथक् कर दिया गया और सफ़ोक और सोमरसेट मेरे स्थानापन्न हो गये।

एलीनर—यह कुछ भी नहीं है। मैंने रात यह देखा कि मैं और तुम राजमुकुट पहने हुए बैठे हैं और हनरी तथा मारगरेट हमको प्रणाम कर रहे हैं।

ग्लोस्टर—एलीनर! एलीनर! ऐसे विचारों को दूर कर! क्या तू अपना और अपने पति का नाम विद्रोहियों में लिखाना चाहती है। हे ईश्वर! मेरी रक्षा कर।

यह कहकर ग्लोस्टर तो चला गया परन्तु एलीनर अपनी सी कोशिश करती रही। उसने सगुन लेने वालों को बुलाया जिन्होंने कहा कि "हनरी मारा जायगा।" फिर उसने सफ़ोक के विषय में पूछा। उन्होंने सगुन विचार कर कहा "कि समुद्र के बीच में उसकी मृत्यु होगी।" सोमरसेट के सम्बन्ध में सगुन यह निकला कि वह नगर छोड़कर बराबर वनवास करे। एलीनर इस सगुन को निकलवा रही थी बकिङ्घम ने उसकी बातें सुनलीं और राजा हनरी से सम्पूर्ण वृत्तान्त कह दिया।

अब क्या था मारगरेट तो पहले से ही उसके विरुद्ध हो रही थी। उसने सफ़ोक से कई बार कह दिया था कि जिस

प्रकार हो सके ग्लोस्टर के संरक्षण से महाराज को मुक्त करना चाहिए। भरी सभा में एलोनर पर विद्रोह का अपराध लगाया गया। और जीवन पर्यन्त के लिए मान टापू में कैद करदी गई।

इसके पश्चात् हनरी ने ग्लोस्टर को संरक्षक पद से अलग कर दिया और स्वतन्त्र होगया। इस प्रकार ग्लोस्टर ने जो स्वप्न देखा था वह ठीक हो गया। और उसके अध पतन में केवल इतनी ही कसर रही थी कि अभी उसके प्राणों पर हस्ताक्षेप नहीं किया गया। परन्तु अब उसकी भी बारी आई। हनरी ने बेरी नामी नगर में राजसभा की और ग्लोस्टर को बुलाया। जिस समय ग्लोस्टर ने निमन्त्रण की सूचना पाई उसी समय उसका माथा ठनकने लगा। क्योंकि इस सभा के करने में उसकी सम्मति नहीं ली गई। वह समझ गया कि अवश्य दाल में कुछ काला है। बेरी में राजसभा हुई। राजा, रानी, विंचेस्टर का पादरी, सफोक, यार्क, बकिंहम और अन्य प्रतिष्ठित पुरुष बैठे हुए थे। उनके सामने राजा ने कहा—

"ग्लोस्टर अभी नहीं आये। वह तो कभी पीछे नहीं रहते थे। न जाने क्या कारण हुआ?"

मारगरेट—क्या तुम देखते नहीं हो कि थोड़े दिनों से उसकी क्या दशा हो रही है। उसका मुँह कैसा चमकता जाता है। और वह कैसा अभिमानी होता जाता है। हम उसे उस समय से जानते हैं जब वह आज्ञा पालन में तत्पर रहता था। क्या आपने देखा नहीं था, कि टेढ़ी आँख होते ही उसका सिर झुक जाता था। और समस्त सभा उसकी राजभक्ति की प्रशंसा

करती थी। परन्तु अब उसका हाल ही और है। प्रातःकाल को सब लोग प्रणाम दण्डवत् किया करते हैं परन्तु यदि हम ग्लोस्टर को मिल जायँ तो वह नाक-भौं चढ़ा लेता है। और उचित प्रणाम भी नहीं करता। छोटे पिल्लों के गुर्राने का कोई खयाल नहीं करता परन्तु शेरों की धाड़ से बड़े बड़े लोग डर जाते हैं। आप जानते हैं कि ग्लोस्टर कोई छोटा आदमी नहीं है जिसके क्रोध का कुछ खयाल न किया जाय। पहले तो वह घर के खयाल से आपसे निकटतम है। यदि दुर्भाग्यवश आप को कुछ हो जाय तो वह झट गद्दी पर चढ बैठेगा। इसलिए उसके विचारों को देखे मुझे तो यही उचित मालूम होता है कि आप उसे अपने पास न आने दीजिए और अपने मन के भावों को उस पर प्रकट न कीजिए। उसने खुशामद से सर्वसाधारण के हृदय को आकर्षित कर लिया है और मुझे भय है कि यदि कहीं उसने सिर उठाया तो सब लोग उसे सहायता देंगे। अभी तो बेटी बाप के है। अभी कुछ नहीं बिगड़ा है। विद्रोह की जड़ें अभी गहरी नहीं जमीं। परन्तु यदि इनके उखाड़ने का प्रबन्ध न किया गया तो विद्रोहरूपी वृक्ष अपने विषैले फल दिये बिना न रहेगा। सफोक, बकिङ्घम और यार्क! मैं आप लोगों से सविनय पूछती हूँ कि यदि मेरा कहना असत्य हो तो मुझे ठीक रास्ते पर लाइए।

सफोक—महारानी जी ने ठीक कहा है। यदि मुझे आज्ञा दी जाती तो मैं भी आपके ही कथन को कहता। इसकी स्त्री तो महाराज के मारने का ही प्रयत्न कर रही थी। वह अपने किये को पहुँच गई। परन्तु अब ग्लोस्टर से

सावधान रहना चाहिए। गहरी जगह में नदी बिना किसी कोलाहल के बहती है। जब लोमड़ी मेमने को पकड़ती है तो भौंकती नहीं। यही हाल ग्लोस्टर का है। न जाने इस चुप्पे के मन में क्या, क्या बातें काम कर रही हैं।

विंचेस्टर का पादरी—क्या उसने नियम विरुद्ध छोटे छोटे दोषों के लिए लोगों को प्राण दण्ड नहीं दिया?

यार्क—और क्या अपने संरक्षण के समय में उसने फ्रांस भेजने के लिए प्रजा पर अनुचित कर नहीं लगाया जिसको उसने कभी नहीं भेजा और जिसके कारण नगर के नगर विरुद्ध हो गये?

बकिङ्घम—यह दोष तो बहुत तुच्छ है। अभी इनसे भी बड़े बड़े अपराध हैं जिनसे ग्लोस्टर का हृदय कलंकित है और जिनको आप लोग नहीं जानते।

हनरी—महाशयो! मैं आपका बड़ा कृतज्ञ हूँ कि आप मुझसे इतना प्रेम रखते हैं और मेरे मार्ग से कण्टक-निवृत्ति की कोशिश करते हैं। परन्तु मेरा अन्तःकरण यही कह रहा है कि ग्लोस्टर निर्दोष है। वह इतना कोमल-हृदय है कि उसके आत्मा में मेरे अहित की बात नहीं आ सकती। वह तो हंस के समान अपराध-रहित है।

मारगरेट—इस अज्ञान से अधिक हानिकारक क्या हो सकता है? आप उसे हंस कहते हैं। परन्तु उसने वास्तव में हंस के पर लगा लिये हैं, उसकी आन्तरिक दशा बगले के समान है। छली पुरुष इसी प्रकार अपने छलों को छिपाया करते हैं। हमारा भला इसी में है कि इस दुष्ट को अलग कर दिया जाय।

इस समय सोमरसेट आया और उसने यह कुसमाचार सुनाया कि फ्रांस के रहे सहे प्रान्त भी हाथ से निकल गये। इसके पश्चात् ग्लोस्टर आया और कहने लगा—

"महाराज की जय हो! श्रीमान् मुझे क्षमा करें। आने में कुछ देर होगई।"

सफोक—नहीं ग्लोस्टर! आप जल्दी आये हैं। यदि आप राजभक्त होते तो अवश्य हम आपसे देरी की शिकायत करते। परन्तु अब मैं आप को विद्रोह के कारण पकड़ता हूँ।

ग्लोस्टर—मुझे इस से कुछ भी भय नहीं है। क्योंकि शुद्ध-हृदय मनुष्य कभी नहीं डरते। शुद्ध से शुद्ध नदी भी इतनी शुद्ध नहीं होती जितना मेरा अन्तःकरण विद्रोह से शुद्ध है। मुझ पर कौन दोषारोपण कर सकता है?

यार्क—आप पर यह दोष लगाया गया है कि फ्रांस में आपने रिशवत ली और सेना को वेतन नहीं दिया जिस से महाराज की सेना पराजित हो गई।

ग्लोस्टर—कौन है जो यह बात कहता है? मैंने कभी सेना को वेतन से वञ्चित नहीं किया! और न कभी एक पाई तक रिशवत ली। ईश्वर जानता है कि मैं इङ्गलैण्ड के हित के लिए रातों रात जागते हुए विचार करता रहा हूँ। यदि मैंने एक पैसा भी अनुचित रीति से लिया हो तो ईश्वर न्याय के समय मुझे दण्ड दे। यही नहीं मैंने बहुत सा अपना रुपया सेना को केवल इसलिए दे दिया कि कहीं प्रजा पर अधिक कर न लगाना पड़े। और कभी इस रुपये को माँगा तक नहीं।

विंचेस्टर का पादरी—यही कथन आप का हितकर है।

ग्लोस्टर—ईश्वर जानता है कि मैं सत्य कहता हूँ।

यार्क—अपने सरक्षण के समय अपने अपराधियों को ऐसे कठोर दण्ड दिये कि इङ्गलैण्ड कठोरता के लिए बदनाम हो गया!

ग्लोस्टर—सब लोग जानते हैं कि यदि मेरे शासन का कोई दोष था तो नम्रता! अपराधी के अश्रुपात पर मेरा हृदय पिघल जाता था। हाँ मनुष्य-हत्या के बदले में अवश्य प्राण-दण्ड देता था।

सफोक—श्रीमन्, इन दोषों का उत्तर तो आप सरलता से दे सकते हैं। परन्तु आप पर तो इनसे भी घोरतर अपराध लगाये गये हैं जिनसे आप का जल्दी छुटकारा नहीं हो सकता। इसलिए मैं आप को पकड़ कर पादरीजी के हवाले करता हूँ।

हनरी—लार्ड ग्लोस्टर! मुझे पूर्ण आशा है कि आप इन दोषों को असत्य सिद्ध कर देंगे, क्योंकि मेरा अन्त करण कह रहा है कि आप निर्दोष हैं।

ग्लोस्टर—महाराज! यह समय बड़ा बुरा है। ऐश्वर्य की इच्छा ने शुभ गुणों को छिपा रक्खा है। लोगों से दया का भाव उठ गया। श्रीमान् के देश से न्याय का अभाव हो गया। मैं जानता हूँ कि यह सब मेरे प्राण लेना चाहते हैं। यदि मेरी मृत्यु से इस देश में शान्ति हो जाय तो मैं बड़ी खुशी से प्राण देने को उद्यत हूँ! परन्तु मेरी मृत्यु इन लोगों के अत्याचारों की भूमिका है। पादरी की लाल लाल आँखें मेरे कथन को पुष्ट कर रही हैं। सफोक की चढ़ी हुई भौंहें उसके वैर-भाव को प्रकट कर रही हैं,

बकिङ्घम की वाणी उसके अन्तःकरण को छिपा रही है और वार्क की इच्छा मेरी जान लेने की है। और हे महारानी जी! आपने बिना किसी कारण के मेरे सिर पर अनेक दोष आरोपण कर दिये हैं। मैं यह नहीं चाहता कि झूठे साक्षी इकट्ठे किये जायँ। लोकोक्ति है कि "कुत्ते को मारने के लिए लकड़ी मिल ही जाती है।"

पादरी—महाराज! इसकी गालियाँ असह्य हो रही हैं। यदि आपके रक्षकों को इस प्रकार कोसा जाय और कोसने वाले से कुछ न कहा जाय तो न जाने क्या परिणाम हो!

सफोक—क्या इस दुष्ट ने महारानी जी को झूठा कह कर उनका अपमान नहीं किया?

मारगरेट—परन्तु मैं दुःखी मनुष्य को आज्ञा देती हूँ कि जो चाहे सो कहे।

ग्लोस्टर—ठीक कहा! मैं अवश्य दुःखी हूँ।

बकिङ्घम—यह तो बातें बना कर दिन भर बिता देगा। इसलिए पादरी जी! इसे पकड़ लीजिए।

ग्लोस्टर—आज हनरी प्रबल होने से पूर्व ही अपने सहारे को नष्ट किये देता है। आज भेड़िये गड़रिये को भेड़ों के पास से भगाये देते हैं। हनरी! आज मुझे अपना भय नहीं, किन्तु तेरे प्राणों का भय है, क्योंकि ये भेड़िये पहले तुझे ही काटेंगे।

अब ग्लोस्टर को तो लोग पकड़ कर ले गये। परन्तु हनरी शोक के मारे उठने लगा। मारगरेट ने कहा "क्या आप राज-सभा से जाते हैं?"

हनरी—हाँ मारगरेट! मेरा हृदय शोक से पूरित हो रहा है। मेरे आँसू निकले आ रहे हैं। मेरा शरीर दुःख से ग्रसित

हो रहा है। क्योंकि अशान्ति से अधिक और क्या दुःख हो सकता है। ग्लोस्टर! मुझे तो तू सच्चा और राजभक्त मालूम होता है। परन्तु हा! कैसे बुरे ग्रह आये हैं कि ये सब लोग, यहाँ तक कि महारानी मारगरेट भी तेरी जान लेना चाहती है। तूने इनका कुछ नहीं बिगाड़ा। जिस प्रकार कसाई बछड़े को बाँधते हैं और यदि वह भागता है तो उसे मारते हैं इसी प्रकार ये लोग तेरे साथ व्यवहार करते हैं। हाय! मैं तो यही कहूँगा कि ग्लोस्टर सच्चा राजभक्त है।

यह कहकर हनरी तो सभा से उठ गया, परन्तु बाकी लोगों ने निश्चय कर लिया कि ग्लोस्टर को मार डालना चाहिए। पहले तो नियमानुसार उस पर अभियोग चलाने का विचार हुआ। परन्तु मारगरेट इस से सहमत न हुई। क्योंकि उसे डर था कि हनरी ग्लोस्टर को बचाने की कोशिश करेगा। इसलिए यह सलाह हुई कि उसे गुप्त रीति से मरवा डालना चाहिए। इस विचार के अनुकूल सफोक ने घातकों द्वारा उसे मरवा डाला।

इसी समय यह भी खबर मिली कि आयर्लैण्ड के लोगों ने सिर उठाया है और बहुत से अँगरेज राजपुरुषों को मार डाला। उनके दमन के लिए यार्क बहुत सी सेना के साथ भेजा गया। यार्क इस काम से बहुत खुश हुआ, क्योंकि इसकी इच्छा किसी तरह राज्य लेने की थी। उसने यह भी इरादा किया कि केण्ट के एक प्रसिद्ध पुरुष केड के द्वारा वह इङ्गलैण्ड में विद्रोह मचावे और अवसर मिलने पर अपनी सेना सहित आकर हनरी को राजगद्दी से च्युत कर दे।

को भीड राजमहल के दरवाजे पर कोलाहल कर रही
अन्त में हनरी ने सफोक को देश-निकाला दे दिया।
रेट ने उसकी बहुत सिफारिश की, परन्तु हनरी ने
ी बात न सुनी और हुक्म दे दिया कि यदि सफोक
तक इङ्गलैण्ड में पाया गया तो उसका सिर काट लिया
ा। इस प्रकार ग्लोस्टर के घातकों में से एक तो देश
कल गया। अब दूसरे का हाल सुनिए।

चेस्टर का पादरी ग्लोस्टर की मृत्यु के पश्चात् ही उन्मत्त
या। ईश्वर ने स्वय ही उसे दण्ड देना चाहा। वह आत्म-
ाप के मारे चिल्लाने लगा। राजा और अन्य पुरुष उसके
के पास पहुँचे, परन्तु उसने किसी को नही पह-
और ग्लोस्टर की मृत्यु के विषय में बकवाद करता
। उसकी अन्त समय की बातचीत यह प्रकट कर रही
क निस्सन्देह ग्लोस्टर की मृत्यु का कारण वही था। अन्त
ाजा ने कहा—

"पादरी! ईश्वर से क्षमा माँग और अपने हाथों को जोड"
तु इस पादरी का जीवन ऐसा पापमय था कि अन्त
ईश्वर का नाम भी उसके मुँह से न निकला और उसके
भी आकाश की ओर न उठे। वह इसी दुःख में समाप्त
ा। हनरी पर इसकी मृत्यु का बड़ा प्रभाव पड़ा और जब
ने कहा "कि इस बुरी मौत से मालूम होता है कि इसने
पाप किये थे।" तो राजा ने उत्तर दिया "हम कुछ नहीं
कते! क्योंकि धार्मिक! हम सब पापी हैं।"

फोक को भी फ्रांस में ईश्वर ने सुरक्षित न रहने दिया।
थोड़े ही दिनों में वह क़ैद कर लिया गया, और एक
पर लोग उसे कैण्ट में ले आये, जहाँ वह अपने शत्रु ब्रिट-

मोर के हाथ से मारा गया। इस प्रकार यह सगुन ठीक हो गया कि सफोक समुद्र में मरेगा!

हम ऊपर कह चुके है कि यार्क ने आयर्लैण्ड को चलते समय कैण्ट के एक मनुष्य केड को विद्रोह के लिए उभार दिया था। इसलिए अब उसने बहुत से आदमियों को इकट्ठा कर लिया और लन्दन पर चढाई करने की तैयारी करली। उसके दल में बहुत से गवाँर मिल गये और केड ने उनके हृदयों को बहुत सी विचित्र आशाओं से भर दिया। उसके साथियों में डिक नामी कसाई और स्मिथ नामी जुलाहा भी था। इनके अतिरिक्त बहुत से नीच जातियो के आदमी थे। उसने अपने लिए एक गढन्त यह गढी कि मेरा बाप लाइनल क्लेरेंस का पुत्र था, जिसे बालकपन में कोई चुरा कर ले गया था, इसलिए उसने राज (विश्वकर्मा) का काम करना आरम्भ किया, और कैण्ट में रहने लगा। इस अद्भुत वंशावलि के द्वारा उसने अपने को राज का अधिकारी प्रकट किया और अपने साथियों से कहा कि अगर मैं राजा हो जाऊँगा तो अन्न बडा सस्ता कर दूँगा। सब लोग समानता से रहेंगे। ऊँच नीच में कुछ भेद न रहेगा। सबने यह सुन कर केड महाराज के जयजयकार बोले। केड ने इसके उत्तर में कहा—

"सज्जनों मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। मेरे राज में रुपये के सिक्के न होंगे, क्योंकि रुपयों की आवश्यकता ही न होगी। सब मेरा सिर खायेंगे। मैं सबको एक से वस्त्र बनवा दूँगा, जिससे सब लोग भाई के समान रहें और मुझे अपना राजा कहें।"

डिक—सबसे पहले हम व[illegible] ...।

केड—हाँ हाँ। यह जरूर होगा। कैसे अन्याय की बात है कि निर्दोष भेड की खाल से कागज बनाया जाय जिस पर लिखकर लोग अपने भाइयों का सत्यानाश करें। लोग कहते है कि मक्खी डङ्क मारती है, पर मै कहता हूँ कि मोम डङ्क मारता है। क्योंकि मैंने एक बार एक चीज पर मुहर करदी और मुझे कष्ट उठाना पडा।

इस प्रकार के मनुष्यो ने विद्रोह का झण्डा उठाया। राज्य की ओर से हम्फरे स्टफर्ड ओर उसका भाई विलियम स्टफर्ड उनके दमन के लिए भेजे गये। उन्होंने जाकर बहुत समझाया कि जो लोग केड का साथ छोड देंगे उनको महाराज क्षमा कर देंगे। परन्तु किसीने उनकी न सुनी। अन्त में ब्लेकहीथ पर लडाई हुई। परन्तु हम्फरे और विलियम दोनों खेत रहे और उनकी सेना अपने सेनापतियो को मरता देखकर भाग निकली। अब क्या था, विद्रोहियो के दिल बढ गये, वे चौगुने उत्साह से लडने लगे। अब उन्होंने समझा कि हम अवश्य देश को जीत लेंगे। अब उन्होने लन्दन की ओर कूच किया और शीघ्र ही लन्दन के पुल पर पहुँच गये। जब यह खबर राज-महल में पहुँची तो राजा के पेट में पानी हो गया और उसने जाकर रानी सहित क्लिंगवर्थ में शरण ली। राजा की ओर से अब मैथ्यूगफ बहुत बडी सेना के साथ केड का सामना करने के लिए भेजा गया। परन्तु वह भी मारा गया। नगर भर में लूट मच गई। विद्रोहियो ने महलों को तोड डाला। कागजों को जला दिया और सैकडो मनुष्यों को मार डाला। लार्ड से और उसके दामाद को पकड लिया और इस अपराध में इनके सिर काट लिये कि उन्होने फ्रांस के युद्ध के लिए लोगो से कर लिया था।

जब इन्होंने यह आफत मचा दी तो वकिङ्गम और क्लिफ़र्ड इनके हराने के लिए आगे बढे और वकिङ्गम ने कहा—

"केड! हम राजा की ओर से यह कहने आये हैं कि जो लोग तेरा साथ छोड़ देंगे, उनको महाराज क्षमा कर देंगे।"

क्लिफर्ड—भाइयो, क्या कहते हो। क्या तुम इसका साथ छोड़ कर दया के पात्र बनोगे, या विद्रोही बन कर मारे जाओगे? तुममें से जो लोग राजभक्त हों उनको चाहिए कि अपनी टोपी उछाल दें।

केड ने देखा कि सब लोग राजा के लिए जयजयकार बोलने और टोपियाँ उछालने लगे। इसलिए उसने कहा—

"भाइयो। क्या तुम क्लिफर्ड के वहकाने में आ गये! क्या तुमको यह नहीं मालूम कि यह लोग प्रजा के शत्रु हैं। क्या अभी मेरी तलवार टूट गई जो तुम निराश होकर मेरा साथ छोड़े जाते हो। क्या तुम ऐसे अधम हो कि अपनी प्राचीन स्वतन्त्रता को खोये देते हो? यदि इस समय भी अपने बच्चों, अपनी स्त्रियों और अपने घरों का हित चाहो तो अवश्य मेरा साथ दो।"

मूर्ख लोगों का वहकाना क्या दुस्तर था। उनमें निज की बुद्धि तो थी ही नहीं, वे झट से केड के साथ होगये। इस पर क्लिफर्ड ने कहा—

"भाइयो! क्या तुम केड को राजवंशी समझे हो? क्या तुमको आशा है कि यह जाकर फ्रांस को जीतेगा और तुममें से हर एक को जागीरें दे सकेगा। क्या तुमको यह नहीं मालूम कि इसके पास रहने को घर तक नहीं है। भाइयो! अपने हाथ अपने पैर में कुल्हाडी क्यों मारते हो! मुझे तो यह दीखता है कि केड का वश चला तो तुमको लूट कर खा जायगा और

शीघ्र ही फरासीसी लोग, जिनको तुम कई बार हरा चुके हो, आकर तुमको जीत लेंगे।"

इतना सुनना था कि वही लोग जो अब तक केड के साथी थे अब क्लिफर्ड के साथी हो गये और केड अपने को अकेला जान कर भाग गया। उसके पकड़ने के लिए एक हजार रुपये का विज्ञापन दे दिया गया। पहले तो वह केएट के जंगलों या बागों में छिपा रहा। एक दिन आइडिन नामी एक किसान ने उसे मार डाला।

हनरी अभी एक आपत्ति से नहीं निकल पाया था कि उसके सिर पर दूसरी आ पड़ी। यह ऐसी विपत्ति थी जिसने आयुभर उसे चैन न लेने दिया और एक दिन उसके प्राणों की लेवा हो गई। अभी केड के विद्रोह को दमन करके लोग आये भी नहीं थे कि यार्क की चढ़ाई का कुसमाचार सुनाई दिया। हम ऊपर बता चुके हैं कि रिचार्ड यार्क बहुत सी सेना-सहित आयर्लैंएड के विद्रोह दमन को गया हुआ था। वहाँ से लौट कर उसने लन्दन पर चढ़ाई करदी, क्योंकि वह बहुत दिनों से राज छीन लेने का अवसर ढूँढ रहा था।

बकिङ्घम एक सेना लेकर डार्टफर्ड और ब्लैकहीथ के बीच में यार्क से मिलने गया और उससे कहा "यार्क! यदि तुम्हारा उद्देश बुरा न हो तो मैं तुमसे मिलने आया हूँ।"

यार्क—मैं बहुत खुश हूँ। परन्तु क्या तुम राजा के भेजे हुए हो अथवा स्वयं आये हो?

बकिङ्घम—मुझे महाराज ने भेजा है कि तुमसे इस चढ़ाई का कारण पूछूँ।

यार्क—बकिङ्घम! क्षमा करो। मेरे मन में बड़ा दुःख है। इतनी सेना इकट्ठी करने का कारण यह है कि मैं सोमरसेट को

जब इन्होंने यह आफत मचा दी तो बकिङ्घम और क्लिफ़र्ड इनके हराने के लिए आगे बढ़े और बकिङ्घम ने कहा—

"केड! हम राजा की ओर से यह कहने आये हैं कि जो लोग तेरा साथ छोड़ देंगे, उनको महाराज क्षमा कर देंगे।"

क्लिफर्ड—भाइयो, क्या कहते हो। क्या तुम इसका साथ छोड़ कर दया के पात्र बनोगे, या विद्रोही बन कर मारे जाओगे? तुममें से जो लोग राजभक्त हों उनको चाहिए कि अपनी टोपी उछाल दें।

केड ने देखा कि सब लोग राजा के लिए जयजयकार बोलने और टोपियाँ उछालने लगे। इसलिए उसने कहा—

"भाइयो। क्या तुम क्लिफर्ड के बहकाने में आ गये! क्या तुमको यह नहीं मालूम कि यह लोग प्रजा के शत्रु हैं। क्या अभी मेरी तलवार टूट गई जो तुम निराश होकर मेरा साथ छोड़े जाते हो। क्या तुम ऐसे अधम हो कि अपनी प्राचीन स्वतन्त्रता को खोये देते हो? यदि इस समय भी अपने बच्चों, अपनी स्त्रियों और अपने घरों का हित चाहो तो अवश्य मेरा साथ दो।"

मूर्ख लोगों का बहकाना क्या दुस्तर था। उनमें निज की बुद्धि तो थी ही नहीं, वे झट से केड के साथ होगये। इस पर क्लिफर्ड ने कहा—

"भाइयो! क्या तुम केड को राजवंशी समझे हो? क्या तुमको आशा है कि यह जाकर फ्रांस को जीतेगा और तुममें से हर एक को जागीरें दे सकेगा। क्या तुमको यह नहीं मालूम कि इसके पास रहने को घर तक नहीं है। भाइयो! अपने हाथ अपने पैर में कुल्हाड़ी क्यों मारते हो! मुझे तो यह दीखता है कि केड का वश चला तो तुमको लूट कर खा जायगा और

इस पर बहुत झगडा हुआ । यार्क के लडके भी वहाँ पर आ गये । वारिक और सालसबरी ने भी आकर यार्क के पक्ष में ही कहना आरम्भ किया । अब तो खुल्लमखुल्ला लडाई आरम्भ हो गई । ऐसी अवस्था में किसका बल था कि यार्क को पकड़ सकता । हनरी ने वारिक और सालसबरी से कहा—

"अरे वारिक ! क्या तू अपने राजा को भी भूल गया ! सालसबरी ! तुझे इन श्वेत केशों पर भी लज्जा नहीं आती । तेरी राजभक्ति क्या हुई । यदि तेरे समान वृद्ध पुरुष भी विद्रोह करने लगें तो औरों का क्या हाल होगा ।"

सालसबरी—महाराज ! मैंने यार्क के अधिकार पर पूर्ण रीति से विचार किया है । और मेरा आत्मा यही कह रहा है कि इङ्गलैण्ड के राज्य का वास्तविक अधिकारी यही है ।

हनरी—क्या तूने मेरी भक्ति की शपथ नहीं खाई थी !

सालसबरी—हाँ !

हनरी—फिर ईश्वर को इससे विमुख होने के लिए क्या उत्तर देगा !

सालसबरी—अनुचित बात के लिए शपथ खाना पाप है । और पापयुक्त शपथ के अनुकूल चलना महापाप । यदि किसी ने किसी की हत्या करने, किसी स्त्री का सतीत्व नष्ट करने, किसी अनाथ का माल लेने या किसी विधवा को लूटने की शपथ खाई हो तो क्या उसे ऐसी प्रतिज्ञा का पालन करना उचित है ?

अब वारिक और यार्क अपनी अपनी सेनायें लेकर सेण्ट एल्बन्स की ओर चले । उनके मुकाबिले के लिए क्लिफर्ड राज्य की सेना लेकर उसी ओर गया और बडा घोर युद्ध हुआ । परन्तु क्लिफर्ड यार्क के हाथ से मारा गया ।

महाराज के पास से हटाना चाहता हूँ। क्योंकि उसका रहना राजा और देश दोनों के लिए हानिकारक है।

बकिङ्घम—यदि तुम्हारा यही प्रयोजन हो तो अच्छी बात है। महाराज ने आपकी इच्छा पूर्ण की और सोमरसेट को कैद कर लिया।

यार्क—क्या सत्य कहते हो कि सोमरसेट कैद हो गया?

बकिङ्घम—सत्य कहता हूँ।

यार्क—अच्छा मैं सिपाहियों को लौटाये देता हूँ। मैं महाराज का भक्त हूँ।

यह कहकर वह राजा के सामने गया और उसको प्रजावत् प्रणाम किया। राजा के पूछने पर उसने कहा कि मैं सेना को इसलिए लाया था कि सोमरसेट को कैद करलूँ और दुष्ट केड को अपने किये की सजा दूँ।

जिस समय यह बातें हो रही थीं सोमरसेट मारगरेट के साथ वहीं पर आ गया। क्योंकि हनरी ने वास्तव में सोमरसेट को कैद नहीं किया था। इसको देखते ही यार्क के तन में आग लग गई और कडक कर कहने लगा "क्यों! क्या! क्या सोमरसेट छुट गया? अच्छा फिर मैं भी अपने गुप्त विचारों को प्रकट करता हूँ। क्या मैं सोमरसेट को देख सकता हूँ? झूठे राजा! तूने मुझे धोखा दिया! मैं तुझे राजा कहता हूँ। पर तू राजा नहीं है। तू राज करने के योग्य नहीं है। तू इतने लोगों को वश में नहीं रख सकता। यह सिर राज-मुकुट के योग्य नहीं है। अब मैं तुझे राज करने न दूँगा। राजा मैं हूँ।

सोमरसेट—विद्रोही! विद्रोही! राजशत्रु! मैं तुझे पकड़ता हूँ।

और जोना है। आज उसने तीन बार मुझे मृत्यु के ग्रास से बचाया! परन्तु यह बात अच्छी नहीं हुई कि शत्रु भाग गये क्योंकि वे अब फिर युद्ध की तैयारियाँ करेंगे।"

यार्क—हमारा इसी में भला है कि उनके पीछे पीछे लन्दन को चलें। मैंने सुना है कि हनरी लन्दन को राजसभा करने गया है। इसलिए हुक्म लिखे जाने से पूर्व ही हम वहाँ पहुँच जायँ तो अच्छा है। कहो वारिक! क्या कहते हो!

वारिक—उनके पीछे नहीं, किन्तु आगे जाना चाहिए।

इस प्रकार यार्क ने सेण्ट एलवन्स की लड़ाई जीत कर हनरी का पीछा किया। इसका वर्णन तीसरे भाग में किया जायगा!

सोमरसेट भी यार्क के लडके रिचार्ड के हाथ से मारा गया। इस प्रकार यार्क के मुख्य मुख्य शत्रु नष्ट हो गये। मारगरेट ने हनरी को क्षेत्र में देखकर कहा "स्वामिन्! भाग जाओ! जल्दी भाग जाओ!"

हनरी ने निराश होकर कहा—

"मारगरेट! ठहरो! भला ईश्वर से भाग कर कहाँ जायँ।"

मारगरेट—अरे! तुम किस चीज के बने हो कि न लडते हो और न भागते हो। यही बुद्धिमत्ता और पुरुषत्व है कि शत्रु को रास्ता दे दिया जाय। यदि तुम पकडे गये तो हम सब की मौत है। यदि हम भाग जायँ तो जल्दी से लन्दन पहुँच सकते हैं और वहाँ हमारे साथी हमारी सहायता करेंगे।

इस प्रकार हनरी अपनी महारानी सहित लन्दन को भाग गया और जीत यार्क के हाथ लगी। वह अपने बेटे रिचार्ड से पूछने लगा—

"क्या किसी ने साल्सबरी को भी देखा है? वह बूढा साल्सबरी, जो रणक्षेत्र में अपने बुढापे को भूल जाता है-जो युवकों से भी अधिक लडता है। यदि आज साल्सबरी मर गया तो यह हमारी जीत नहीं, किन्तु हार है।

रिचार्ड—पूज्य पिता जी! मैंने आज तीन बार उसे घोडे पर चढाया और तीन बार लडने से निषेध किया। परन्तु वह ऐसी ही जगह पहुँच जाता था जहाँ भय अधिक हो। जिस प्रकार सादे मकान में सुनहरे परदे लगे हों इसी प्रकार इस वृद्धावस्था में उसका साहस मालूम होता है।

इतने में साल्सबरी वहीं पर आगया और कहने लगा—

"आज हम सब खूब लडे। ईश्वर जाने मुझे कितने दिन

म्बरलैण्ड, स्ट्रफोर्ड और *क्लिफर्ड ने हमारे ऊपर धावा किया तो नार्थम्बरलैण्ड मारा गया"। इस पर एडवर्ड ने अपनी रक्त-मय तलवार को दिखा कर कहा कि 'मैंने स्टूटफर्ड के बाप बकिंहम को मार डाला।"

रिचार्ड ने सोमरसेट के सिर को पटक कर कहा "मेरे पराक्रम को यह स्वय कह देगा।"

यार्क—रिचार्ड ने सब से प्रशसनीय काम किया। परन्तु क्या लार्ड सोमरसेट! आप मर गये?

नार्फाक—जोन आफ †गाण्ट की सब सन्तान को यही आशा रखनी चाहिए।

रिचार्ड—इस प्रकार मैं हनरी के सिर को हिलाऊँगा!

अब इन लोगों ने भवन में जाकर यार्क को राजगद्दी पर बिठा दिया। बिचारे सभासद इनका मुँह ताकते रहे। किसी की यह हिम्मत न पडी कि कुछ कह सकता।

यार्क का गद्दी पर पैर रखना था कि हनरी वहाँ पर आ गया। क्लिफर्ड, नार्थम्बरलैण्ड (पहले नार्थम्बरलैण्ड का लडका) वेस्टमोरलैण्ड और एक्सीटर उसके साथ थे। हनरी ने अपनी गद्दी पर यार्क को बैठा देखकर सभासदों से कहा—

"महाशयो! देखो यह राजशत्रु सिंहासन पर बैठा है और दुष्ट वारिक की सहायता से इङ्गलैण्ड का राजा होना चाहता है। क्लिफर्ड और नार्थम्बरलैण्ट! देखो इसने तुम दोनों के पिताओं का सहार किया है। इसलिए तुमको इससे बदला लेना चाहिए।"

---

* यह क्लिफर्ड उस क्लिफर्ड का लडका था जो पहले मर चुका था।

† चतुर्थ हनरी का पिता।

छठा हनरी

तीसरा भाग

(HENRY VI, PART III)



सरे भाग में यह बताया जा चुका है कि सेण्ट पेलवन्स की लड़ाई में हार कर छठा हनरी राजसभा करने के लिए लन्दन में आया और सभासदों को निमन्त्रित करके सभा की। जिस समय सभाभवन (Parliament House) में राजमन्त्रिगण वर्त्तमान दुर्घटना पर विचार कर रहे थे, यार्क अपने पुत्रों, एडवर्ड और रिचार्ड तथा नार्फाक और वारिक, के साथ वहाँ पर आ गया। इनकी टोपियों में श्वेत गुलाब के फूल लगे हुए थे और इनके विपक्षियों अर्थात् हनरी के साथियों का चिह्न लाल गुलाब था, इसलिए इस युद्ध को जो पेलवन्स की लड़ाई से आरम्भ हुआ और बराबर २५ वर्ष तक रहा गुलाब युद्ध के नाम से प्रसिद्ध किया गया है।

जिस समय यार्क अपने साथियों सहित राजसभा-भवन की ओर आया था उसका विचार हनरी को पकड़ लेने का था। परन्तु हनरी अवसर पाकर निकल गया। इसीलिए जब वारिक ने कहा "कि न जाने हनरी किस तरह हमारे हाथ से निकल गया?" तो यार्क ने उत्तर दिया।

"जब हम नार्थम्बरलैण्ड की सेना का पीछा कर रहे थे, हनरी अपने आदमियों को छोड़कर भाग गया और जब नार्थ-

यार्क—(सभासदों से) क्या आप लोग यह जानना चाहते हैं कि मेरा राज पर क्या अधिकार है?

हनरी—तेरा राज पर कुछ भी अधिकार नहीं। तेरा बाप तेरी तरह यार्क का ड्यूक था। तेरा पितामह मार्टीमर, मार्च का जागीरदार था। मैं पाँचवें हनरी का पुत्र हूँ, जिसने डौफिन से फ्रांस को छीन लिया।

वारिक—फ्रांस के विषय में क्यों कहता है। उसे तो तू खो चुका।

हनरी—क्या तुम समझते हो कि हनरी अपना राज इस तरह छोड़ देगा। वह राज, जिस पर उस के बाप और दादे ने राज किया है।

वारिक—अच्छा! अपना अधिकार सिद्ध कर दे। और फिर राज तेरा है।

हनरी—चौथे हनरी ने इङ्गलैण्ड को जीत कर राज किया था।

यार्क—नहीं! वह अपने राजा से लड़ पड़ा था।

हनरी—क्या राजा गोद नहीं रख सकता?

यार्क—इससे क्या प्रयोजन?

हनरी—यदि ऐसा है तो मैं नियमानुसार राजा हूँ, क्योंकि रिचार्ड ने सब लोगों के सामने मुकुट चौथे हनरी को दे दिया था।

यार्क—उससे बलात्कार से मुकुट ले लिया गया।

वारिक ने इस समय अपने पैर जमीन पर मारे और आहट के सुनते ही बहुत से सिपाही राजभवन में घुस आये। अब तो हनरी डर गया और समझा कि मैं कैद हुआ। बस उसने यार्क से कहा कि "यावज्जीवन मुझे राज करने दो। इसके पश्चात् राज तुम्हारा और तुम्हारी सन्तान का।" यार्क ने यह

नार्थम्बरलैण्ड—ईश्वर मेरी सहायता करे! मैं अवश्य बदला लूँगा।
क्लिफ़र्ड—इसीलिए मैंने अभी शस्त्र हाथ से नहीं रक्खा।
वैस्टमोरलैण्ड—अभी मैं इस दुष्ट को गद्दी से खींचे लेता हूँ।

वह यार्क को खींचने के लिए आगे बढ़ने लगा। इतने में हनरी ने कहा—

"यार्क! दुष्ट यार्क! नीचे उतर और मेरे सामने माथा टेक! मैं तेरा राजा हूँ।"

यार्क—मैं तेरा राजा हूँ।
एक्सीटर—धिक्! धिक्! अरे तुझे हनरी ने यार्क का ड्यूक बनाया था।
यार्क—यह जागीर मेरे बाप-दादों की है।
एक्सीटर—तेरा बाप राजशत्रु था।
यार्क—तू स्वयं राजद्रोही है जो हनरी का साथ देता है।
हनरी—अरे क्या मैं खड़ा रहूँ और तू सिंहासन पर बैठा रहे।
यार्क—अवश्य अवश्य! यही होगा! तुझे सन्तोष करना चाहिए।
वारिक—लङ्कास्टर की जागीर तुझे मिल सकती है। यार्क राज करेगा।
वैस्टमोरलैण्ड—वह राज भी करेगा और लङ्कास्टर की जागीर भी लेगा।
वारिक—वारिक ऐसा करने न देगा! क्या तुम मुझे भूल गये, जिसने तुम्हारे पिता को हरा कर मार डाला था।
नार्थम्बरलैण्ड—वारिक! याद रख! तुझे और तेरे सम्बन्धियों को इसका बदला देना पड़ेगा।
वैस्टमोरलैण्ड—यार्क! तू और तेरे लड़के! नहीं नहीं! तेरे वंश के इतने आदमी मारे जायँगे जितनी बूँद रक्त मेरे बाप के शरीर में था!

यार्क—(सभासदों से) क्या आप लोग यह जानना चाहते हैं कि मेरा राज पर क्या अधिकार है ?

हनरी—तेरा राज पर कुछ भी अधिकार नहीं। तेरा बाप तेरी तरह यार्क का ड्यूक था। तेरा पितामह मार्टीमर, मार्च का जागीरदार था। मैं पाँचवें हनरी का पुत्र हूँ, जिसने डौफिन से फ्रांस को छीन लिया।

वारिक—फ्रांस के विषय में क्यों कहता है। उसे तो तू खो चुका !

हनरी—क्या तुम समझते हो कि हनरी अपना राज इस तरह छोड़ देगा ! वह राज, जिस पर उस के बाप और दादे ने राज किया है।

वारिक—अच्छा ! अपना अधिकार सिद्ध कर दे। और फिर राज तेरा है।

हनरी—चौथे हनरी ने इङ्गलैण्ड को जीत कर राज किया था।

यार्क—नहीं ! वह अपने राजा से लड़ पड़ा था।

हनरी—क्या राजा गोद नहीं रख सकता ?

यार्क—इससे क्या प्रयोजन ?

हनरी—यदि ऐसा है तो मैं नियमानुसार राजा हूँ, क्योंकि रिचार्ड ने सब लोगों के सामने मुकुट चौथे हनरी को दे दिया था।

यार्क—उससे बलात्कार से मुकुट ले लिया गया !

वारिक ने इस समय अपने पैर ज़मीन पर मारे और आहट के सुनते ही बहुत से सिपाही राजभवन में घुस आये। अब तो हनरी डर गया और समझा कि मैं कैद हुआ। बस उसने यार्क से कहा कि "यावज्जीवन मुझे राज करने दो। इसके पश्चात् राज तुम्हारा और तुम्हारी सन्तान का ।" यार्क ने यह

बात स्वीकार करली और गद्दी से उतर पड़ा। उसने शपथ खाई कि कभी मन, वाणी, या कर्म से हनरी का विरोध न करूँगा। हनरी ने लिख दिया कि मेरे पीछे राज यार्क या उसके पुत्रों का होगा।

छठे हनरी के एक लड़का था, जिसका नाम था एडवर्ड और जिसको यार्क के लड़के एडवर्ड से भिन्न करने के लिए हम प्रिंस आफ़ वेल्ज कहेंगे। जिस समय महारानी मारगरेट ने सुना कि मेरे लड़के को राज के अधिकार से च्युत कर दिया है, तो वह बहुत बिगड़ी। मारगरेट हनरी की तरह डरपोक या मृदु स्वभाव की नहीं थी। वह कभी राज देने को तैयार नहीं थी। इसलिए इस प्रतिकूल खबर को सुनते ही प्रिंस आफ वेल्ज को साथ लिये वह वहाँ पर आ पहुँची, और हनरी को बुरा भला कहने लगी। हनरी ने कहा "प्यारी रानी! सन्तोष करो।"

मारगरेट—ऐसी दशा में कौन सन्तोष कर सकता है? अभागे आदमी! अच्छा होता अगर मैं तुझसे विवाह न करती और तेरे लिए पुत्र न जनती। क्योंकि तूने अपने पुत्र के साथ ऐसा अन्याय किया! क्या उसका जन्म का अधिकार इस प्रकार नष्ट हो गया। यदि तू उसे मेरी अपेक्षा आधा भी चाहता या तूने उसके जनने में मुझसे आधा भी कष्ट उठाया होता या जिस प्रकार अपने रुधिर से मैंने उसका पोषण किया उसी प्रकार तूने किया होता तो तू अपने प्राण देना पसन्द करता परन्तु अपने पुत्र को राज के अधिकार से च्युत करना स्वीकार न करता!

प्रिंस आफ वेल्ज—पिता जी! जब आप राजा हैं तो मैं क्यों न होऊँ?

हनरी—मारगरेट! क्षमा करो! प्रिय पुत्र! क्षमा करो! वारिक और यार्क ने मुझसे मजबूर करके स्वीकार करा लिया।

मारगरेट—मजबूर करके! हाँ मजबूर करके! क्या यह राजा है? राजों को कौन मजबूर कर सकता है? हे कायर अभागे! तूने अपना, मेरा और अपने पुत्र का नाश कर लिया। क्या तू समझता है कि अब बच जायगा? क्या भेड़ियों से घिरी हुई भेड़ बच जाती है? यदि मैं तेरी जगह होती तो चाहे सिपाही लोग भालों पर उछाल उछाल कर मुझे मार डालते परन्तु इस अन्याय-युक्त बात को स्वीकार न करती! परन्तु तू अपने प्राणों को यश से अधिक चाहता है। अतएव मैं तेरे पास से जाती हूँ और जब तक राजसभा से यह निश्चय न हो जायगा कि तेरे पीछे मेरा लड़का गद्दी पर बैठेगा उस समय तक तेरे पास न आऊँगी। मैं जाती हूँ और नार्थम्बरलैण्ड आदि की सहायता से यार्क का सामना करूँगी।

यह कह कर मारगरेट प्रिंस आफ वेल्ज को साथ लिये वहाँ से चली गई। और वेकफील्ड के पास बहुत सी सेना के साथ यार्क का मुक़ाबला किया। क्लिफर्ड, नार्थम्बरलैण्ड और बहुत से अन्य योद्धा उसके साथ थे। पहले तो क्लिफर्ड ने यार्क के छोटे लड़के रटलैण्ड को जो महल में अपने अध्यापक के साथ पढ़ रहा था पकड़ लिया और उसे मार कर उसके रक्त में रुमाल रँग लिया। फिर वे सब समर-क्षेत्र में आकर लड़ने लगे। बड़ा भयङ्कर युद्ध हुआ। यार्क के लड़के बड़े साहस से लड़े। तीन बार रिचार्ड ने यार्क के लिए रास्ता कर दिया और कहा "पिता जी! साहस से लड़िए।" एडवर्ड कई बार रुधिर-भरे वस्त्रों-सहित अपने बाप की सहायता को आया। रिचार्ड अपनी सेना को अपने उत्साह से उत्तेजित कर रहा था और कहता जाता था कि या तो राज मिलेगा या मौत! परन्तु हनरी

बात स्वीकार करली और गद्दी से उतर पड़ा। उसने शपथ खाई कि कभी मन, वाणी, या कर्म से हनरी का विरोध न करूँगा। हनरी ने लिख दिया कि मेरे पीछे राज यार्क या उसके पुत्रों का होगा।

छठे हनरी के एक लड़का था, जिसका नाम था एडवर्ड और जिसको यार्क के लड़के एडवर्ड से भिन्न करने के लिए हम प्रिंस आफ़ वेल्ज कहेंगे। जिस समय महारानी मारगरेट ने सुना कि मेरे लड़के को राज के अधिकार से च्युत कर दिया है, तो वह बहुत बिगड़ी। मारगरेट हनरी की तरह डरपोक या मृदु स्वभाव की नहीं थी। वह कभी राज देने को तैयार नहीं थी। इसलिए इस प्रतिकूल ख़बर को सुनते ही प्रिंस आफ वेल्ज को साथ लिये वह वहाँ पर आ पहुँची, और हनरी को बुरा भला कहने लगी। हनरी ने कहा "प्यारी रानी! सन्तोष करो।"

मारगरेट—ऐसी दशा में कौन सन्तोष कर सकता है? अभागे आदमी! अच्छा होता अगर मैं तुझसे विवाह न करती और तेरे लिए पुत्र न जनती। क्योंकि तूने अपने पुत्र के साथ ऐसा अन्याय किया! क्या उसका जन्म का अधिकार इस प्रकार नष्ट हो गया। यदि तू उसे मेरी अपेक्षा आधा भी चाहता या तूने उसके जनने में मुझसे आधा भी कष्ट उठाया होता या जिस प्रकार अपने रुधिर से मैंने उसका पोषण किया उसी प्रकार तूने किया होता तो तू अपने प्राण देना पसन्द करता परन्तु अपने पुत्र को राज के अधिकार से च्युत करना स्वीकार न करता!

प्रिंस आफ वेल्ज—पिता जी! जब आप राजा हैं तो मैं क्यों न होऊँ?

हनरी—मारगरेट! क्षमा करो! प्रिय पुत्र! क्षमा करो! वारिक और यार्क ने मुझसे मजबूर करके स्वीकार करा लिया।

मारगरेट—मजबूर करके! हाँ मजबूर करके! क्या यह राजा है? राजा को कौन मजबूर कर सकता है? हे कायर अभागे! तूने अपना, मेरा और अपने पुत्र का नाश कर लिया। क्या तू समझता है कि अब बच जायगा? क्या भेड़ियों से घिरी हुई भेड़ बच जाती है? यदि मैं तेरी जगह होती तो चाहे सिपाही लोग भालों पर उछाल उछाल कर मुझे मार डालते परन्तु इस अन्याय-युक्त बात को स्वीकार न करती। परन्तु तू अपने प्राणों को यश से अधिक चाहता है। अतएव मै तेरे पास से जाती हूँ और जब तक राजसभा से यह निश्चय न हो जायगा कि तेरे पीछे मेरा लड़का गद्दी पर बैठेगा उस समय तक तेरे पास न आऊँगी। मैं जाती हूँ और नार्थम्बरलैण्ड आदि की सहायता से यार्क का सामना करूँगी।

यह कह कर मारगरेट प्रिंस आफ वेल्ज़ को साथ लिये वहाँ से चली गई। और वेकफ़ील्ड के पास बहुत सी सेना के साथ यार्क का मुक़ाबला किया। क्लिफर्ड, नार्थम्बरलैण्ड और बहुत से अन्य योद्धा उसके साथ थे। पहले तो क्लिफर्ड ने यार्क के छोटे लड़के रटलैण्ड को जो महल में अपने अध्यापक के साथ पढ़ रहा था पकड़ लिया और उसे मार कर उसके रक्त में रुमाल रँग लिया। फिर वे सब समर-क्षेत्र में आकर लड़ने लगे। बड़ा भयङ्कर युद्ध हुआ। यार्क के लड़के बड़े साहस से लड़े। तीन बार रिचार्ड ने यार्क के लिए रास्ता कर दिया और कहा "पिता जी! साहस से लड़िए।" एडवर्ड कई बार रुधिर-भरे वस्त्रों-सहित अपने बाप की सहायता को आया। रिचार्ड अपनी सेना को अपने उत्साह से उत्तेजित कर रहा था और कहता जाता था कि या तो राज मिलेगा या मौत! परन्तु इनकी

वीरता काम न आई। यार्क की हार हुई और मारगरेट ने विजय पाई। यार्क के लड़के तो भाग गये। परन्तु वह इतना थक गया था कि खेत से न उठ सका और मारगरेट, क्लिफर्ड और नार्थम्बरलैण्ड ने उसे पकड़ लिया। मारगरेट ने उसके साथ बड़े अत्याचार किये। पहले तो कागज का मुकुट बनाकर उसके सिर पर रख दिया गया, फिर उसके पुत्र रटलैण्ड के खून से भीगा हुआ रूमाल उसके मुँह पर डाल दिया गया। जब वह रोने लगा तो मारगरेट ने उसको बहुत अपशब्द कहे और अन्त में पहले क्लिफर्ड ने, फिर मारगरेट ने उसे मार डाला!

इस समय वारिक लन्दन में था। जब उसने सुना कि वेकफील्ड में उसके साथियों की हार हुई और यार्क मारा गया तो वह शीघ्र ही वहाँ से सेण्ट एलबन्स की ओर बढ़ा कि रानी मारगरेट को लन्दन आने से रोक दे। क्योंकि वेकफील्ड की जीत से प्रफुल्लित होकर मारगरेट लन्दन को आने तथा राजसभा से अपने पुत्र को युवराज नियत कराने के लिए आरही थी। हनरी इस समय भी वारिक के साथ था। सेण्ट एलबन्स के निकट आकर फिर भारी युद्ध हुआ। वारिक की सेना हार गई और जिस समय यह लोग भागने लगे, हनरी उनके हाथ से छूट कर रानी मारगरेट से जा मिला।

यार्क के मरने के उपरान्त उसका लड़का एडवर्ड यार्क वालों का मुखिया बना और यद्यपि इन लोगों की दो लड़ाइयों में हार हो चुकी थी तथापि वारिक ने हिम्मत न हारी और इन लोगों को इकट्ठा करके जल्दी से लन्दन में पहुँच गया। यद्यपि जीत मारगरेट की हुई थी परन्तु अभी उसे लन्दन जाने में सफलता नहीं हुई थी कि एडवर्ड लन्दन पहुँच कर वारिक की सहायता से चौथे एडवर्ड के नाम से राजगद्दी पर बैठ गया और देश भर

में अपने राजा होने का ढँढोरा पिटवा दिया। अब मारगरेट, हनरी और प्रिंस आफ् वेल्ज क्लिफर्ड और नार्थम्बरलैंड समेत यार्क नगर में आये। नगर के द्वार पर यार्क का सिर लटका हुआ था। उसकी ओर संकेत करके मारगरेट ने कहा—

"स्वामिन्! देखिए! आपका शत्रु, जिसने आपका राज-मुकुट लेने का इरादा किया था, वह है। उसे देखकर अपने हृदय को सन्तुष्ट कीजिए।"

परन्तु हनरी को इस दृश्य से संतोष नहीं हुआ, क्योंकि उसका आत्मा कह रहा था कि मेरे पितामह ने बलात्कार और अन्याय से राज ले लिया था और वास्तव में यह राज यार्क को ही मिलना चाहिए। यदि हनरी का बस चलता तो वह कभी यार्क के विरुद्ध लड़ाई न करता। परंतु उसकी रानी झगड़ा मचा रही थी। हनरी जैसा न्याय-प्रिय था वैसा बलवान् नहीं था। इसलिए अपनी इच्छा पूर्ण करने में उसे सफलता नहीं होती थी। पहले दिखलाया जा चुका है कि उसका सर-क्षक ग्लोस्टर किस प्रकार उसकी इच्छा के विरुद्ध मारा गया, फिर मारगरेट ने किस प्रकार उसे युद्ध के लिए उत्तेजित किया। इन सब बातों से भली भाँति प्रकट होता है कि हनरी का हृदय कोमल और बलहीन था। मारगरेट की बात सुन कर वह कहने लगा—

"मेरे आत्मा को दुःख होता है। हे ईश्वर! क्षमा कर! यह मेरा अपराध नहीं है।"

क्लिफर्ड ने इस पर कहा—

"महाराज! आपको ऐसी कोमलता उचित नहीं है। सिंह कभी किसी पर दया नहीं करते। क्या साँप उस मनुष्य को बिना काटे छोड़ देता है जो उसकी पीठ पर पैर रखता हो। दय

कर तो चींटी भी काट खाती है। यार्क ने आपका राज लेने की इच्छा की थी और आपके लड़के को राज से च्युत कर दिया था। आपने इसका विरोध न किया। पक्षी भी उस मनुष्य पर आक्रमण करते हैं जो उनके बच्चों को मारता हो। इन्हीं से शिक्षा ग्रहण कीजिए। आप अपने लड़के की ओर देखिए। आपके पीछे यह कहेगा कि "जिस राज को मेरे परदादे और दादे ने प्राप्त किया था उसको मेरे बाप ने खो दिया", इसलिए राजन्! अपने हृदय को कठोर कीजिए और अपने राज की रक्षा करने का प्रयत्न कीजिए।

हनरी—क्लिफर्ड! तुम्हारी युक्तियाँ प्रबल हैं। परन्तु क्या तुमने नहीं सुना कि अन्याय से ली हुई चीज दुःखदायी होती है? पुत्र को तो वही पिता अच्छा लगता है। उसजेके लिए धन एकत्र करके नरक को चला जाय। मैं अपने पुत्र के लिए अपने शुभ कार्य्य छोड़ जाऊँगा। अच्छा होता अगर मेरे पिता जी मेरे लिए कुछ न छोड़ जाते। हाय! यार्क तेरे सिर को देखकर मुझे कैसा खेद होता है।

जब यह बातें हो रही थी उसी समय चतुर्थ एडवर्ड और वारिक सेना सहित वहाँ पर आगये। और एडवर्ड ने कहा—

"झूठे हनरी! मेरे आगे माथा टेक और अपना मुकुट मेरे सिर पर रख।"

मारगरेट—चल! छोकरे! परे हट!

एडवर्ड—मैं इसका राजा हूँ। इसलिए इसको चाहिए कि अपने सम्राट् के आगे सिर झुकावे! इसने मुझे अपना उत्तराधिकारी चुना था, अब प्रतिज्ञा भंग करके अपने पुत्र को राज देना चाहता है।

क्लिफर्ड—यही तो उचित बात है। पिता के पीछे पुत्र राजा होता है।

रिचार्ड—अरे कसाई! तू भी बोलता है!

क्लिफर्ड—हाँ मैं बोलता हूँ। तू या तेरे बड़े मेरा क्या कर सकते हैं?

रिचार्ड—इस कसाई ने बालक रटलैंएड को मार डाला।

क्लिफर्ड—और बूढे वार्क को भी!

वारिक—हनरी! राज देने को तैयार है या नहीं?

मारगरेट—हा! हा! बातूनी वारिक! सेएट एलबन्स में तेरी टाँगों ने तेरे हाथों की अपेक्षा अधिक काम किया था!

वारिक—तब मैं भागा था, अब तेरी बारी है।

क्लिफर्ड—तू तो पहले भी यही कहता था!

वारिक—तो क्या तूने मुझे भगाया था?

एडवर्ड—हनरी! क्या तू मुझे मेरा राज देगा?

वारिक—अगर न देगा तो इतने आदमियों का ख़ून इसके सिर है। क्योंकि एडवर्ड को राज मिलना ही न्याय है।

प्रिंस आफ़ वेल्ज़—यदि यही न्याय है तो अन्याय क्या होगा?

रिचार्ड—अपनी मा का सिखाया बोल रहा है।

मारगरेट—अरे तू तो बाप मा किसी को कहीं नहीं मानता!

रिचार्ड—हा! हा! तू बोलती है। अब इङ्गलेंएड में आकर तुझे यह साहस हो गया! तेरा बाप भी राजा कहलाता है, जैसे कोई* नाले का नाम समुद्र रख दे।

---

*मारगरेट का पिता नेपिलिज आदि कई देशों का राजा कहलाता था, यद्यपि उसके पास मेन और एंजू के सिवा और कुछ नहीं था!

इस प्रकार थोडा देर तक यह लोग वाक्युद्ध करते रहे। परन्तु इसके पश्चात् युद्ध आरम्भ हुआ। टौटन नामी नगर के पास दोनों दल मिले और ऐसा घोर युद्ध हुआ कि समस्त इङ्गलैण्ड वीरों से खाली होगया। कहते हैं कि दोनों ओर के बीस बीस हजार आदमी मारे गये। समस्त गुलाब-युद्ध में टौटन की लडाई सबसे बडी हुई। पहले तो यार्क वाले हारते हुए मालूम हुए, परन्तु अन्त में उनकी जीत हो गई। इस युद्ध ने हनरी को बहुत निर्बल कर दिया और उसके उभरने की कोई आशा रही क्लिफर्ड मारा गया। अन्य बहुत से योद्धा खेत रहे। हनरी अपनी रानी और लडके सहित स्काटलैण्ड को भाग गया। और चौथे एडवर्ड का लन्दन में आकर बड़े समारोह से राज्याभिषेक हुआ।

थोडे दिनों के पश्चात् हनरी को अपने देश की याद आई और वह उसे बिना देखे न रह सका। इसलिए एक दिन पुजारी का भेस रख, हाथ में धर्मपुस्तक लिये हुए इङ्गलैण्ड के उत्तरी भाग में आ निकला और यह देखकर कि वही इङ्गलैण्ड, जिस पर वह थोडे दिनों पहले राज करता था और जो उसका देश कहलाता था, आज दूसरों के हाथ में है, उसकी आँखों से आँसू निकल पडे। दो शिकारियों ने, जो उस समय उसी वन में आखेट के लिए गये हुए थे, उसे पकड लिया और चौथे एडवर्ड के हवाले कर दिया। एडवर्ड ने उसे कैद कर लिया।

हनरी की रानी मारगरेट अपने पुत्र सहित स्काटलैण्ड से फ्रांस को भाग गई। और उसने फ्रांस नरेश लूइस से सहायतार्थ प्रार्थना की। जिस समय मारगरेट फ्रास के राज दरबार में प्रविष्ट हुई तो लूइस खडा होगया और स्वागत करके कहने लगा—

"राजराजेश्वरी! महारानी! आप मेरे आसन पर विराजिए, क्योंकि इस प्रकार खड़ा रहना आपको उचित नहीं है।"

मारगरेट—नहीं! महाराज! अब मुझे उस स्थान पर सेवकाई करनी चाहिए जहाँ राजे शासन करते हैं। मैं मानती हूँ कि पहले मैं इङ्गलिस्तान की रानी थी! परन्तु अब दुर्भाग्य ने मुझे पददलित कर दिया है और अब मेरा बहुत अपमान हो चुका है। अतएव आप मुझे वही स्थान दीजिए जो मेरी वर्त्तमान अवस्था के अनुकूल हो!

लूइस—भला! आप ऐसी निराश क्यों हैं?

मारगरेट—कहते हुए मेरी जीभ रुकती है और आँखों में आँसू भर आते हैं। कलेजा टुकड़े टुकड़े हुआ जाता है।

लूइस—चाहे कुछ हो! हमारे लिए अब भी आप महारानी हो! इसलिए मेरे पास उच्च आसन पर सुशोभित हूजिए।

मारगरेट ने बैठ कर सब हाल कहा और चौथे एडवर्ड के विरुद्ध उससे सहायता चाही। लूइस ने यद्यपि कोई निश्चित उत्तर नहीं दिया, परन्तु कुछ कुछ सहारा अवश्य दिया और प्रतिज्ञा की कि सोच विचार कर जो कुछ बन पड़ेगा किया जायगा।

अभी मारगरेट वहीं थी कि वारिक भी इङ्गलैण्ड से आकर वहीं पहुँच गया। वारिक वस्तुत बड़ा बुद्धिमान् था। उसने पहले ही से समझ लिया था कि मारगरेट को फ्रांस से सहायता मिल जायगी और न जाने ऊँट किस करवट बैठे इसलिए उसने फ्रान्सनरेश से मेल करने का एक नया उपाय सोचा और एडवर्ड (चौथे) को इस बात पर राज़ी करके कि उसका विवाह फ्रांस-नरेश की बहन बोना से हो जाय, उसकी ओर से फ्रांस दरबार में सदेसा ले गया।

लूइस ने प्रार्थना स्वीकार करली और यह निश्चित हो गया कि योना इङ्गलैण्ड की महारानी होगी। मारगरेट को उसने अब स्पष्टतः कह दिया कि यद्यपि मुझे तुम्हारे और हनरी के साथ सहानुभूति है, परन्तु वंशावलि के अनुकूल राज एडवर्ड का ही है। इसलिए मैं सहायता नहीं दे सकता।

परन्तु इस समय वारिक का बनाबनाया खेल एडवर्ड की गलती से बिगड़ गया। क्योंकि उसने इस समय वारिक की अनुपस्थिति में, बिना उसकी इच्छा के, एलीज़बेथ ग्रे से विवाह कर लिया। एलीज़बेथ का भूतपूर्व पति हनरी की ओर से लडा था। एडवर्ड के राज्याभिषेक पर उसने आकर प्रार्थना की कि मेरे पति की जायदाद मेरे पुत्रों को देदी जाय। जिस समय यह राजा के समीप आई, राजा इस पर मोहित हो गया और झट से उस के साथ विवाह कर लिया।

जब इस विवाह के समाचार फ्रांस में पहुँचे तो लूइस को बडा क्रोध आया। उसे यह बात अच्छी न लगी कि पहले उस की बहन के साथ विवाह करने की इच्छा प्रकट कर के फिर बिना किसी कारण के एडवर्ड ने दूसरी स्त्री से विवाह कर लिया, इस से लूइस का बडा अपमान हुआ और उसने क्रोध में आ-कर मारगरेट को सहायता देने और एडवर्ड को गद्दी से उतारने की प्रतिज्ञा करली।

उधर वारिक भी एडवर्ड से क्रुद्ध हो गया, क्योंकि वह उसके इस नये विवाह से अप्रसन्न और असन्तुष्ट था। इसलिए उस ने भी मारगरेट की सहायता की और अपनी बडी लडकी का विवाह मारगरेट के पुत्र प्रिंस आफ वेल्ज से करने का निश्चय कर लिया।

जब एडवर्ड ने वारिक के विरोध की खबर सुनी तो उसने लड़ाई की तैयारियाँ करदीं। परन्तु उसका भाई क्लेरेंस वारिक से मिल गया, क्योंकि वारिक की छोटी लड़की का उससे विवाह होगया था।

जब वारिक ने फ्रांस से आकर सेना एकत्रित की तो एडवर्ड उस के मुकाबले के लिए आगे बढ़ा, परन्तु पकड़ा गया। वारिक ने एडवर्ड को यार्क में कैद कर दिया और हनरी को कैद से छुड़ा कर बादशाह बना दिया।

एडवर्ड यार्क से भागकर बरगण्डी को चला गया।

बरगण्डी के राजा ने उसकी सहायता की, और बहुत सी सेना उस के साथ भेजी। पहले कवेण्टरी में वारिक के साथी इकट्ठे हुए जिनमें लार्ड मौण्टेग, लार्ड आक्सफोर्ड, और लार्ड सोमर्सेट भी थे। एडवर्ड का भाई क्लेरेंस जो पहले वारिक से मिल गया था, अब फिर अपने भाई की ओर आगया। और दोनों दलों की बार्नेट नामक रणक्षेत्र में मुठभेड़ हुई। एडवर्ड बड़ी वीरता से लड़ा और वारिक उस के हाथ से मारा गया। वारिक के मरते ही उस के साथियों में खलबली मच गई और उस के शत्रुओं के मन बढ़ गये, क्योंकि वारिक से सब डरते थे। यह वारिक ही था जिसने हनरी को गद्दी से उतार कर एडवर्ड को राजा बनाया था। यह वारिक ही था, जिसने एडवर्ड के पिता यार्क को लड़ने के लिए उत्तेजित किया था। यह वारिक ही था जिसने फिर हनरी को सहारा दिया, सच पूछिए तो वारिक ही गुलाब-युद्ध का कारण था। इसी की वजह से युद्ध आरम्भ हुआ। इसी के द्वारा युद्ध की स्थिति हुई और इसी के शांत होते समय युद्ध भी शांत हो गया। वारिक अपने समय का बड़ा योद्धा हुआ है। उसके नाम से राजे काँपते थे। इङ्गलैण्ड

की राजगद्दी तो सर्वथा उस के हाथ में थी। उसे सम्राट् निर्माता (King Maker) कहा करते थे। वह जिस को चाहता था उसे गद्दी पर बिठा देता था और जब उससे अप्रसन्न होता तो राज-मुकुट उसके सिर से उतार कर दूसरे के सिर पर रख देता था। अब बार्निट के रणक्षेत्र में वारिक की मृत्यु होने से युद्ध की जान सी निकल गई।

जब थोड़े दिनों पीछे रानी मारगरेट फ्रांस से सेना लेकर आई तो उसने फिर अपने साथियों को उभारा और ट्यूक्सबरी पर बडा भयङ्कर युद्ध हुआ! जय एडवर्ड की हुई और मारगरेट अपने पुत्र सहित पकडी गई। एडवर्ड ने उस के पुत्र से पूछा—

"कह! दुष्ट! तुझे क्या दण्ड दिया जाय, क्योंकि तूने मेरी प्रजा को मेरे विरुद्ध भडकाया है!"

राजकुमार—"अरे! दुष्ट! अपने बडों से धृष्टता करता है। जो प्रश्न मुझे तुझसे करना चाहिए वही प्रश्न करने से क्या तात्पर्य है? क्योंकि तूने मेरे पिता की प्रजा को उसके विरुद्ध भडकाया है, जिसके लिए तुझे भारी दण्ड दिया जायगा!"

जिस समय राजकुमार यह बातें कर रहा था, एडवर्ड ने उसे तलवार मार दी। इसके देखते ही उसके भाई क्लैरेंस और रिचार्ड ग्लोस्टर ने भी बारी बारी से तलवार चलाई और बिचारा राजकुमार वहीं पर ढेर हो गया। ग्लोस्टर ने मारगरेट की ओर भी तलवार चलाई, परन्तु एडवर्ड ने उसे रोक दिया। मारगरेट रोती रही। जब एडवर्ड ने हुक्म दिया कि इसे यहाँ से ले जाओ तो वह कहने लगी—

"नहीं नहीं। ले मत जाओ। मुझे यहीं समाप्त करदो।"

इस पर क्लेरेंस ने उत्तर दिया।

"नहीं नहीं। मैं तुझे इतना आनन्द नहीं देना चाहता।"

मारगरेट को तो बलात्कार से पकड कर ले गये, और रिचार्ड ग्लोस्टर लन्दन को चल दिया, जहाँ पर हनरी कैद था। हनरी उस समय किताब पढ रहा था। रिचार्ड ने जाकर कहा—

"महाराज की जय हो। स्वामिन्। क्या आप पुस्तकावलोकन में ऐसे संलग्न हैं?"

हनरी—हाँ भले स्वामिन्। नहीं नहीं। मेरे स्वामिन्—क्योंकि असत्य भाषण पाप है। और 'भले' कहना असत्य है।

रिचार्ड—(जेल के सरक्षक से) यहाँ से हट। हम कुछ गुप्त वार्त्तालाप करना चाहते हैं?

हनरी—(सरक्षक को चलता देखकर) इसी प्रकार गडरिया भेडिये को देखकर चला जाता है और बेचारी भेड की पहले तो ऊन कतरी जाती है, तत्पश्चात् गला काटा जाता है। (रिचार्ड से) कहिए। आप अब क्या हत्या करना चाहते हैं?

रिचार्ड—अपराधी को सदैव शका होती है। चोर जिस झाडी को देखता है उसको सिपाही ही समझता है।

हनरी—यदि पक्षी एकबार किसी झाडी में फँस जाय तो उसे सब झाडियो पर शका होती है। मैं स्वत अपनी आँखों से देख चुका हूँ कि मेरा छोटा सा बच्चा पकड लिया गया और मार डाला गया। क्या तू मेरे प्राण लेगा?

रिचार्ड—क्या तू समझता है कि मैं हत्यारा हूँ?

हनरी—यदि निर्दोष बालकों को मारना हत्या है तो मैं कह सकता हूँ कि तू अवश्य हत्यारा है?

को राजगद्दी तो सर्वथा उस के हाथ में थी। उसे सम्राट्-निर्माता (King Maker) कहा करते थे। वह जिस को चाहता था उसे गद्दी पर बिठा देता था और जब उससे अप्रसन्न होता तो राज-मुकुट उसके सिर से उतार कर दूसरे के सिर पर रख देता था। अब बार्निट के रणक्षेत्र में वारिक की मृत्यु होने से युद्ध की जान सी निकल गई।

जब थोड़े दिनों पीछे रानी मारगरेट फ्रांस से सेना लेकर आई तो उसने फिर अपने साथियों को उभारा और ट्यूक्सबरी पर बड़ा भयङ्कर युद्ध हुआ। जय एडवर्ड की हुई और मारगरेट अपने पुत्र सहित पकड़ी गई। एडवर्ड ने उस के पुत्र से पूछा—

"कह! दुष्ट! तुझे क्या दण्ड दिया जाय, क्योंकि तूने मेरी प्रजा को मेरे विरुद्ध भड़काया है!"

राजकुमार—"अरे! दुष्ट! अपने बड़ों से धृष्टता करता है। जो प्रश्न मुझे तुझसे करना चाहिए वही प्रश्न करने से क्या तात्पर्य है? क्योंकि तूने मेरे पिता की प्रजा को उसके विरुद्ध भड़काया है, जिसके लिए तुझे भारी दण्ड दिया जायगा।"

जिस समय राजकुमार यह बातें कर रहा था, एडवर्ड ने उसे तलवार मार दी। इसके देखते ही उसके भाई क्लेरेंस और रिचार्ड ग्लोस्टर ने भी बारी बारी से तलवार चलाई और बिचारा राजकुमार वहीं पर ढेर हो गया। ग्लोस्टर ने मारगरेट की ओर भी तलवार चलाई, परन्तु एडवर्ड ने उसे रोक दिया। मारगरेट रोती रही। जब एडवर्ड ने हुक्म दिया कि इसे यहाँ से ले जाओ तो वह कहने लगी—

"नहीं नहीं। मैं मत जाओ। मुझे यहीं समाप्त करदो।"

छठे हनरी की मृत्यु के पश्चात् चौथे एडवर्ड ने थोड़े दिनों तक शांतिपूर्वक राज किया। उसके मरते ही रिचार्ड ग्लोस्टर ने एडवर्ड के बालक पाँचवें एडवर्ड को मार कर राज ले लिया। यह कथा आगे आवेगी।

——

रिचार्ड—मैंने तेरे लड़के को तो उसकी धृष्टता के कारण मार डाला!

हनरी—यदि तुझे भी उसी समय मार डाला जाता, जब तूने पहले पहल धृष्टता की थी, तो तू कभी मेरे पुत्र के मारने को न रहता! और मैं अब कहे देता हूँ कि हजारों पुरुष, जिनको इस समय मेरी भाँति भय नहीं है, हजारों वृद्ध पुरुष, सहस्रों विधवायें, सहस्रों अनाथ अपने मा-बाप की अकाल मृत्यु के कारण पछतायेंगे और उस घड़ी को कोसेंगे जिसमें तूने जन्म लिया था। जब तूने जन्म लिया था तो उल्लू बोला था और कुत्ते भोंके थे। भूकम्प आया था। तेरे जन्मते समय तेरी मा को बहुत कष्ट हुआ था। मा के पेट से ही तेरे दाँत थे, जिनसे विदित होता था कि तू जगत् को काट खाने के लिए उत्पन्न हुआ है। यदि जो कुछ मैंने सुना है वह सब ठीक हो तो तूने इसलिए जन्म लिया कि—

रिचार्ड—अब बकवक मत करो! मैंने इसलिए जन्म लिया है कि मैं तुमको मार डालूँ!

यह कह कर उसने हनरी के ऐसे जोर से तलवार मारी कि वह वहीं ढेर हो गया।

रिचार्ड हनरी को मार कर बड़ा ख़ुश हुआ, क्योंकि अब उसके शत्रु नष्ट हो चुके थे। परन्तु अभी वह सन्तुष्ट नहीं हुआ था, क्योंकि उसकी इच्छा अपने भाई चौथे एडवर्ड से राजगद्दी छीनने की थी। इस कार्य्य की पूर्त्ति के लिए वह अपने मँझले भाई क्लेरेंस और अन्य निज-वंशजों को भी मारना चाहता था, जिसका वर्णन 'तृतीय रिचार्ड' में किया जायगा! सच है, गद्दी के लालच में मनुष्य क्या क्या पाप नहीं करता!

लैपीडस को तो इन दोनों ने इसलिए बीच में मिला लिया था कि एक दूसरे की शक्ति असीम न हो जाय। अपने शत्रुओं के नाश के पश्चात् एएटनी रोमन राज्य की सैर को निकला और उसने पूर्वी यूरोप तथा पश्चिमी एशिया का चक्कर लगाया जहाँ जिसको मन चाहा उसी को गद्दी से उतार दिया और जिसको चाहा उसकी जगह गद्दी पर बिठा दिया। इस प्रकार राज्यों को बाँटता हुआ एएटनी अब मिश्र की ओर झुका, जहाँ कि प्रसिद्ध महारानी क्लियोपाट्रा राज करती थी। पहले क्लियोपाट्रा का थोड़ा सा हाल लिख कर हम आगे चलेंगे।

मिश्र का बादशाह अपनी मृत्यु के समय अपना राज्य अपने लड़के टोलमी और अपनी लड़की क्लियोपाट्रा को दे गया था* जिन दोनों में देश नियम के अनुसार विवाह हो गया था। परन्तु क्लियोपाट्रा जो अपने भाई अर्थात् पति से बड़ी थी, अकेले राज करना चाहती थी। मिश्र उस समय रोम वालों के अधीन था इसलिए रोम की राजसभा ने केवल टोलमी को राज देकर क्लियोपाट्रा और उसकी बहन आर्सीनो को देश से निकाल दिया।

जूलियस सीज़र ने मिश्र पर अपना अधिक स्वत्व प्राप्त करने के लिए क्लियोपाट्रा को नई आशायें बँधा दीं और उधर टोलमी से भी बात चीत आरम्भ कर दी। टोलमी ने तो बात का उत्तर युद्ध से दिया, परन्तु हार गया। क्लियोपाट्रा जिस के सौन्दर्य की प्रशंसा ऐतिहासिक हो गई है और जिसकी लावण्यता प्राय अत्युक्ति-अतीत समझी जाती है, एक विलक्षण महिला

* मालूम होता है कि मिश्र वाले सगे भाई बहन आपस में विवाह कर सकते थे।

एएटनी और क्लियोपाट्रा

(ANTONY and CLEOPATRA)

अनुभूमिका

पाठकवर्ग ! आपने रोम का कुछ हाल 'जूलियस सीज़र' की कथा से जान लिया है। शेष इस वर्त्तमान कहानी से विदित होगा, जिस को 'एएटनी और क्लियोपाट्रा' नामक नाटक में महाकवि शेक्सपियर ने दर्शाया है। परन्तु नाटकोक्त कहानी को आरम्भ करने से पूर्व उचित यह है कि जूलियस सीज़र की मृत्यु के पश्चात् और इस कहानी के पूर्व तक जो कुछ घटनायें रोम में हुई हैं। उनका सक्षेप से वर्णन कर दें, जिससे इस नाटक के समझने में कुछ सहायता मिले।

आपने जूलियस सीजर की मृत्यु का हाल पढ लिया। आपने यह भी जान लिया कि किस प्रकार फिलिपी की लडाई में सीजर के सब घातक आत्मघात करके या किसी अन्यके हाथ से मारे गये। रोम का राज्य तीन पुरुषों के सयुक्त आधिपत्य में आगया जिसको आधिपत्य-त्रय (Triumvirate) कहते हैं। एक इनमें से मार्क एएटनी था, जिसकी वक्तृता आप लोग सीजर की मृत्यु पर पढ चुके हैं और जो सीजर का भक्त सेनापति था। दूसरा आक्टेवियस था जो सीजर का नाती था और जिसे सीज़र ने गोद रख लिया था। तीसरा लैपीडस था। परन्तु मुख्य इनमें से एएटनी और आक्टेवियस ही थे।

लैपीडस को तो इन दोनों ने इसलिए बीच में मिला लिया था कि एक दूसरे की शक्ति असीम न हो जाय। अपने शत्रुओं के नाश के पश्चात् एण्टनी रोमन राज्य की सैर को निकला और उसने पूर्वी यूरोप तथा पश्चिमी एशिया का चक्कर लगाया जहाँ जिसको मन चाहा उसी को गद्दी से उतार दिया और जिसको चाहा उसकी जगह गद्दी पर बिठा दिया। इस प्रकार राज्यों को बाँटता हुआ एण्टनी अब मिश्र की ओर झुका, जहाँ कि प्रसिद्ध महारानी क्लियोपाट्रा राज करती थी। पहले क्लियोपाट्रा का थोड़ा सा हाल लिख कर हम आगे चलें गे।

मिश्र का बादशाह अपनी मृत्यु के समय अपना राज्य अपने लड़के टौलमी और अपनी लड़की क्लियोपाट्रा को दे गया था* जिन दोनों में देश नियम के अनुसार विवाह हो गया था। परन्तु क्लियोपाट्रा जो अपन भाई अर्थात् पति से बड़ी थी, अकेले राज करना चाहती थी। मिश्र उस समय रोम वालों के अधीन था इसलिए रोम की राजसभा ने केवल टौलमी को राज देकर क्लियोपाट्रा और उसकी बहन आर्सीनो को देश से निकाल दिया।

जूलियस सीजर ने मिश्र पर अपना अधिक स्वत्व प्राप्त करने के लिए क्लियोपाट्रा को नई आशायें बँधा दीं और उधर टौलमी से भी बात चीत आरम्भ कर दी। टौलमी ने तो बात का उत्तर युद्ध से दिया, परन्तु हार गया। क्लियोपाट्रा जिस के सौन्दर्य की प्रशंसा ऐतिहासिक हो गई है और जिसकी लावण्यता प्राय. अत्युक्ति-अतीत समझी जाती है, एक विलक्षण महिला

* मालूम होता है कि मिश्र वाले सगे भाई बहन आपस में विवाह कर सकते थे।

थी। कवियों ने स्त्रियों के रूप में जो जो अच्छी बातें बताई हैं प्रायः उसमें सभी मौजूद थीं। इस के अतिरिक्त उसमें वह वक्तृता भी थी जो शृङ्गार रस का अङ्ग समझी जाती है। सारांश यह है कि मनुष्य को रिझाने के उसमें सब गुण थे। भाषण उसका बहुत प्यारा और प्रभावशाली था। इसके अतिरिक्त उसकी विद्या का यह हाल था कि सात भिन्न २ देशों के राजदूतों से बिना किसी अनुवादक (Interpreter) के भली प्रकार बात चीत कर सकती थी।

जब क्लियोपाट्रा ने देखा कि सीजर टौलमी को पराजित कर चुका, वह झट जूलियस के पास पहुँच गई और अपने रूप से उसको ऐसा मोहित किया कि वह उसका पक्षपाती होकर उसके साथ रहने लगा। बहुत से झगड़े और लड़ाइयाँ हुईं। अन्त को सीजर ने मिश्र से क्लियोपाट्रा के शत्रुओं का बीज मेट दिया और उसे मिश्र की महारानी बनाया। सीजर का यह भी विचार था कि क्लियोपाट्रा के नाम से इथोपिया को भी जीत ले। परन्तु रोम की सेना ने इस अनुचित व्यवहार में सीजर का साथ देने से इनकार किया और तब सीजर इस प्रेम-मुग्ध अवस्था से जागकर रोम को लौट गया।

हम ऊपर कह आये हैं कि फिलिपी के युद्ध के पश्चात् एण्टनी का मिश्र पर दृष्टि-पात हुआ। सुना गया था कि क्लियोपाट्रा सीजर के घातकों को सहायता दे रही है। इसलिए एण्टनी ने उसे बुलाया कि अपने इस दोष का क्या उत्तर देती है।

क्लियोपाट्रा की अवस्था इस समय २७ वर्ष की थी। वह इस समय पूर्ण युवावस्था को पहुँच चुकी थी और अब उसमें वह छल बल भी आगये थे जो स्त्रियों में प्रायः हुआ करते हैं। इसके अतिरिक्त उसे सब बातों से बढ़कर अपने रूप पर

विश्वास था। यद्यपि रोम की कई स्त्रियाँ क्लियोपाट्रा के समान रूप-सम्पन्ना थीं, परन्तु मोहन-शक्ति जो क्लियोपाट्रा में थी वह अन्य स्त्रियों में पाई नहीं जाती। वह पुरुष की नस नस पहचानती थी और उस पर अपना स्वत्व जमाने के लिये अनेक विधियों से अभिज्ञ थी। इसलिए एएटनी के कोप से बचने के लिए उसने अपने लावण्य का ही आश्रय लिया और एक सुन्दर जहाज में बैठ कर, जिसका पिछला हिस्सा बिल्कुल सुनहरा था, जिसके पर्दे लाल रेशम के थे, जिसके डॉड चाँदी के बने हुए थे, एएटनी से मिलने आई।

एएटनी जो उस समय टार्सस में था क्लियोपाट्रा को देखते ही अपनी चौकड़ी भूल गया और बजाय उस पर स्वत्व प्राप्त करने के स्वयं उसके अधीन बन गया।

क्लियोपाट्रा के स्वत्व से एएटनी मरणपर्यन्त मुक्त न हो सका और शृङ्गाररस में फँस कर उसने वीर रस को तिलाञ्जलि दे दी। जिस एएटनी ने सैकड़ों वीर पुरुषों को परास्त करके हथकड़ियाँ और बेड़ियाँ डाल दी वही एएटनी क्लियोपाट्रा की प्रेम रूपी बेड़ियों में फँसकर निकम्मा हो गया और उसके साथी आक्टेवियस ने उसके विरुद्ध अवसर पाकर रोम में प्रभुत्व प्राप्त कर लिया।

एएटनी की स्त्री फुलिया ने अपने पति को क्लियोपाट्रा के पंजे से छुटाने का एक यह उपाय सोचा कि उसने बीच में पड़ कर आक्टेवियस और एएटनी में लड़ाई करा दी। इस यत्न से उसका केवल यही प्रयोजन था कि एएटनी मिश्र से आक्टेवियस के विरुद्ध लड़ने के लिए आवेगा। ऐसा ही हुआ। परन्तु इससे फुलिया की मनोकामना सिद्ध न हुई। और एएटनी उस पर इतना क्रुद्ध हुआ कि दीन अबला शोक के मारे

मर गई। एएटनी और आक्टेवियस में किञ्चित्काल के लिए सन्धि हो गई जिसके अनुसार आक्टेवियस की बहन आक्टेविया से उसका विवाह भी हो गया और रोमन राज्य का इस प्रकार विभाग हुआ कि पश्चिमी देश आक्टेवियस के पास रहें, पूर्वी एएटनी के और अफ्रीका लैपीडस के।

यह सन्धि बहुत दिनों न चली, क्योंकि एएटनी फिर मिश्र को लौट आया और क्लियोपाट्रा के साथ भोग विलास करने लगा। आक्टेवियस ने अवसर पाकर उसे रोम में खूब बदनाम कर दिया और अपनी बहन आक्टेविया को भेजा कि वह मिश्र में एएटनी के पास जाकर अपने पत्नीत्व को स्थापित करे। आक्टेविया भी रूपवती थी। जब एएटनी और क्लियोपाट्रा को मालूम हुआ कि आक्टेविया अर्थेस से आरही है, तो क्लियोपाट्रा ने वह वह खेल खेले कि एएटनी ने बीच से ही उसे कहला भेजा कि तुम सीधी रोम को लौट जाओ और कि तुम मेरी स्त्री नहीं हो।

एएटनी ने अपनी विषयासक्ति को यहीं तक रहने न दिया, किन्तु उसने खुल्लमखुल्ला क्लियोपाट्रा से विवाह कर लिया। सिकन्दरिया नगर में एक बडा उत्सव मनाया गया और एक चाँदी के चबूतरे पर दो सोने के तख्त रक्खे गये, जिनमें से एक पर एएटनी * वेकस बन कर और दूसरे पर क्लियोपाट्रा आइसिस* बनकर बैठे।

क्लियोपाट्रा का एक लडका सिसारियो, जो जूलियस सीजर से उत्पन्न हुआ था, एएटनी के साथ मिल कर राज करने लगा, और उसके दो लडके जो एएटनी से उत्पन्न हुए थे महाराजाधिराज की पदवी पर नियत किये गये।

*वेकस मिश्र के एक देव और आइसिस एक देवी का नाम है।

आक्टेवियस इन बातों से और चिढ गया और उसने रोम की राजसभा से सम्मति लेकर एएटनी पर चढ़ाई की। एएटनी भी सामना करने चला और दोनों दलों की पश्चिम में मुठभेड़ हो गई। परन्तु एएटनी क्लियोपाट्रा को भागता हुआ देखकर स्वय भी भाग आया, आक्टेवियस को जय प्राप्त हुई। और जय क्यों न प्राप्त होती। क्योंकि एएटनी तो शृङ्गार रस को ही चख रहा था। एक ओर तो अधीन राजों को सेना एकत्रित करने का हुक्म दे रक्खा था, दूसरी ओर नाचने गाने वाले भोग विलास के लिए आये हुए थे। लडाई क्या थी, एक तमाशा था।

क्लियोपाट्रा एक बनी हुई औरत थी। उसने एएटनी का तो इस प्रकार सत्यानाश ही कर दिया था, परन्तु दूसरी ओर गुप्त रीति से वह आक्टेवियस से अपने तथा अपने लड़कों के बचाव के लिए बात चीत करने लगी। एएटनी को इसका पता लग गया और वह बडा क्रुद्ध हुआ। क्लियोपाट्रा ने एएटनी को अप्रसन्न समझकर अपने तई प्रसिद्ध कर दिया कि क्लियोपाट्रा मर गई। एएटनी इसकी मृत्यु की खबर सुनकर बहुत दुखी हुआ और अपने एक नौकर से कहा कि मुझे मार डालो। नौकर ने तो उसको नहीं मारा, परन्तु एएटनी ने स्वय अपने कलेजे में ऐसी तलवार मारी कि वह घायल हो गया। क्लियोपाट्रा ने इतने में एएटनी को अपने पास बुला लिया और वह उसी की गोद में मर गया। क्लियोपाट्रा ने अपने प्यारे की मृत्यु पर बड़ा रज किया और स्वय अपनी छाती में इतने घूँसे मार लिए कि वह बीमार हो गई। आक्टेवियस इतने में सिकन्दरिया आदि नगरों को जीतता हुआ आ पहुँचा। उसकी इच्छा यह थी कि मैं क्लियोपाट्रा को ले आकर रोम में अपने जयोत्सव में दिखलाऊँ। क्लियोपाट्रा इस अपमान को सहन नहीं कर

सकी और उसने एक साँप को किसी माली से फूलों की टोकरी में मँगाकर अपनी छाती में डसवा लिया और मर गई। आक्टेवियस जब आया तो इस शोकप्रद दृश्य को देखकर बड़ा दुःखी हुआ। एण्टनी और क्लियोपाट्रा एक ही शवालय में गाड़े गये।

यह संक्षेप से एण्टनी और क्लियोपाट्रा का हाल लिखा गया। अब हम शेक्सपियर लिखित कहानी को आगे वर्णन करते हैं।

एण्टनी के दो साथी डिमेट्रियस और फ़िलो नामी एक दिन एण्टनी के वर्त्तमान आचार व्यवहार पर बातचीत करने लगे कि—

"देखो आज कल एण्टनी की क्या दशा हो गई है? क्या यह वही एण्टनी है जो युद्ध का शब्द सुनकर उत्तेजित हो जाया करता था? आज यह बिल्कुल क्लियोपाट्रा के हाथ में है। देखो, इस चतुर रमणी ने इसको भेड़ा बनाकर रख लिया है। देखो कहते कहते ही एण्टनी अपनी प्रमदा सहित आ रहा है।"

जब यह बातें हो ही रही थीं कि एण्टनी, क्लियोपाट्रा तथा अनुचरों सहित वहाँ पर आ पहुँचा। उन दोनों स्त्री पुरुषों में यह बातें हो रही थीं।

क्लियोपाट्रा—यदि यह सच्चा प्रेम है तो बताओ इसका परिमाण कितना है?

एण्टनी—वह प्रेम प्रेम नहीं जिसकी थाह हो सके।

क्लियोपाट्रा—मैं तुम्हारे प्रेम की सीमा लगा लूँगी।

एण्टनी—तो तुमको नया आकाश ढूँढ़ना पड़ेगा।

इतने में रोम का एक दूत एण्टनी के पास आकर कहने लगा—

"महाराज! रोम से खबर लाया हूँ।" एण्टनी इस समय कुछ सुनना नहीं चाहता था। इसलिए उसने कहा "संक्षेप से कहो।"

प्रेमरसिका क्लियोपाट्रा ताड़ गई कि एण्टनी को मिश्र से ले जाने की तैयारियाँ हो रही हैं। इसलिए बातें बना कर कहने लगी—

"नहीं! एण्टनी! नहीं! तुमको रोम की खबर सुन लेना चाहिए। शायद श्रीमती फुलविया देवी नाराज हों। शायद युवक आक्टेवियस ने हुक्म दिया हो कि 'यह करो या वह करो। इस राज को ले लो और उसे छोड़ दो। ऐसा करो नहीं तो दण्ड मिलेगा।' भला ऐसी बातें न सुननी चाहिए?"

एण्टनी—क्यों प्यारी?

क्लियोपाट्रा—शायद अब तुम यहाँ न रह सको। आक्टेवियस ने तुमको मिश्र से चले जाने की आज्ञा दी हो! मालूम होता है कि अब तुम मिश्र में नहीं रह सकते! इसलिए तुम को आक्टेवियस और फुलविया की बात सुननी चाहिए।

एण्टनी—चाहे रोम टाइबर नदी में बह जाय। चाहे समस्त राज नष्ट हो जाय। मुझे परवाह नहीं है। मेरा तो यही स्थान है। राज क्या है, मिट्टी ही मिट्टी तो है। (क्लियोपाट्रा का आलिङ्गन करके) जीवन का सुख तो केवल इसी में है।

क्लियोपाट्रा—प्रणयचातुरी! जब तुमने फुलविया से विवाह किया तो उससे प्रेम क्यों नहीं करते होंगे।

एण्टनी—अब व्यर्थ न कहो। मैं सुख भोगने के समय को इन बातों में व्यय करना नहीं चाहता।

क्लियोपाट्रा—दूत की बात सुनो।

एण्टनी—चलो चलो! झगड़ो मत! पर तुमको सब बातें शोभा देती हैं! हँसना, रोना और झगड़ना, सभी तुममें अच्छे मालूम होते हैं।

इस प्रकार क्लियोपाट्रा बातें बना बना कर एण्टनी को दूत की बात सुनने से रोकती थी, और एण्टनी उसके प्रेम में मुग्ध था। उस समय तो उसने रोम के दूत को बिना बात सुने हुए ही टाल दिया, परन्तु एक समय उसे अवसर मिल गया और एण्टनी को अकेला पाकर उसने रोम की सब दशा सुना दी। वह कहने लगा—

"आप की स्त्री फुलविया पहले पहल रणक्षेत्र में आई"

एण्टनी—मेरे भाई लूसियस से लड़ने।

दूत—हाँ। लेकिन उन दोनों में शीघ्र सन्धि हो गई और उन दोनों ने मिल कर आक्टेवियस सीजर का सामना किया, परन्तु हार गईं।

एण्टनी—अच्छा! और भी कोई बुरी खबर है?

दूत—श्रीमहाराज! बुरी बात कहने में कहने वाले की भलाई नहीं है।

एण्टनी—उसी समय जब उस बात का सम्बन्ध किसी कायर या मूर्ख से हो—कहो डरो मत! जो बात हो चुकी वह हो चुकी! जो मुझसे सच सच कहता है, चाहे उसमें मृत्यु ही क्यों न हो, मैं उसे प्रिय भाषण समझता हूँ!

दूत—खबर बहुत बुरी है। लैबीनस ने एशिया का राज यूफ्रेटीज तक फैला लिया है। पार्थियन सेना के साथ उसने सीरिया से लेकर लिडिया और आयोनिया तक सब देश पर प्रभुत्व पा लिया है। फिर भी—

एएटनी—क्या तू यह कहना चाहता है कि एएटनी—

दूत—श्रीमहाराज!

एएटनी—स्पष्ट कहो—बात को मत चबाओ—बताओ लोग रोम में क्लियोपाट्रा के लिए क्या कहते हैं। फुलूविया क्या कहती है—मेरे दोषों को भली प्रकार प्रकट करो।

दूत—जो श्री महाराज की आज्ञा!

"यह दूत तो चला गया। परन्तु उसी समय एक और दूत ने आकर खबर दी कि फुलूविया मर गई।"

एएटनी—कहाँ?

दूत—सिसन में उनका प्राणान्त हुआ। बीमारी आदि का सब हाल इस पत्र में लिखा है।

दूत तो पत्र देकर चला गया पर एएटनी पत्र पढ़कर सोचने लगा।

"देखो। एक महान् आत्मा ससार से उठ गया। यद्यपि मेरी इच्छा भी यही थी। परन्तु अब मै चाहता हूँ कि वह जीवित होती। मुझे अब इस जादूगरनी (क्लियोपाट्रा) के पजे से छूटना चाहिए। इन बुराइयो के अतिरिक्त जिनकी मुझे खबर है बहुत सी अन्य बुराइयाँ भी मेरे यहाँ रहने से उत्पन्न हो रही हैं।

फिर उसने अपने एक साथी एनोबार्बस को बुलाकर कहा कि हमको यहाँ से जाना चाहिए।

एनोबार्बस—तो मालूम होता है कि हम इन स्त्रियो की मृत्यु का कारण होंगे। इन हमारे निर्दयीपन से उनको दारुण दुःख होगा। हमारे विरह में ये अवश्य अपने प्राण दे देंगी।

एएटनी—हमको तो जाना ही होगा।

एनोबार्बस—अगर ऐसी ही जरूरत है तो स्त्रियों को मरने दो। परन्तु बिना किसी बात के उनको मारना ठीक नहीं है। क्लियोपाट्रा को अगर आपके जाने की साँस भी मालूम हुई तो वह झट मर जायगी। मैंने देखा है कि वह इससे छोटी छोटी बातों पर बीस बीस बार मर जाती है। बोध होता है कि मरने में भी कुछ प्रेमाकर्षण है, नहीं तो क्लियोपाट्रा इतनी जल्दी मरना न चाहती।

एण्टनी—उसका चातुर्य मनुष्य की बुद्धि में नहीं आ सकता।

एनोबार्बस—नहीं नहीं ऐसा मत कहो। उसको प्रेम के सिवा और कुछ नहीं आता। दूसरी स्त्रियों के आँसू और दीर्घश्वास क्लियोपाट्रा के सामने तुच्छ हैं। इसके आँसू समुद्र की तरङ्गों से कम नहीं हैं। इसको छल नहीं कह सकते। अगर आप इसको भी छल कहते हैं तो मानना पड़ेगा कि क्लियोपाट्रा भी इन्द्र की भाँति वर्षा कर सकती है।

एण्टनी—अच्छा होता कि मैंने इसको कभी देखा न होता।

एनोबार्बस—तो आप दुनिया की एक अद्भुत वस्तु से वञ्चित रह जाते। और आपका देशाटन कलङ्कित हो जाता।

एण्टनी—फुल्विया मर गई।

एनोबार्बस—क्या महाराज!

एण्टनी—फुल्विया मर गई।

एनोबार्बस—क्या फुल्विया?

एण्टनी—मर गई।

एनोबार्बस—यह तो खुशी की बात है, ईश्वर को धन्यवाद दो। जब ईश्वर किसी पुरुष की स्त्री को मार डाले तो इसका तात्पर्य यह है कि ईश्वर सांसारिक दर्जी के समान है।

क्योंकि जब पुराने वस्त्र फट गये तो नये मिलेंगे । अगर फुल्विया के सिवा दुनिया में कोई अन्य स्त्री न होती तो अवश्य शोक की बात थी । यह शोक तो हर्षसूचक है जीर्ण वस्त्र के स्थान में नया मिलेगा ।

एएटनी—राज के विषय में वह जो कुछ गड़बड़ डाल गई है, इससे तो जाना ही होगा ।

एनोवार्बल—और आपने जो यहाँ गड़बड़ डाली है इसके कारण आपका यहाँ से जाना नहीं हो सकता । क्लियोपाट्रा बिल्कुल आपके ही आश्रित है ।

एएटनी—अब अधिक हँसी मत उड़ाओ । निश्चय है कि हमको रोम को जाना चाहिए । राज में बड़ी गड़बड़ मची हुई है । रोम से कई मित्रों ने हमारे वहाँ जाने पर आग्रह किया है । सेक्स्टस पोम्पे का जोर हो रहा है उसने आक्टेवियस पर चढ़ाई की है । हमको बहुत काम करने हैं । मैं अब क्लियोपाट्रा को जाने की सूचना दूँगा ।

क्लियोपाट्रा के छल बल प्रसिद्ध थे । उसे पहले से ही मालूम हो गया था कि एएटनी जाने वाला है । इसलिए उसको रोकने के लिए उसने एक और ढङ्ग निकाला और बीमार सी बनकर बैठ गई । जब एएटनी निकट आकर कहने लगा कि "शोक है मुझे अब मन का भाव कहना ही पड़ा ।" तो क्लियोपाट्रा सुनी अनसुनी कर गई ।

जब एएटनी ने आगे बढ़ कर कहा "प्रियतम महारानी" तो क्लियोपाट्रा ने उत्तर दिया—

"मुझसे दूर खड़े हो ।"

एएटनी—क्या बात है ?

क्लियोपाट्रा—मैं तुम्हारी आँखों से पहचान गई कि कोई अच्छी खबर है। विवाहिता स्त्री ने क्या कहला भेजा है कि "तुम चले आओ?" अगर वह तुम्हें कभी यहाँ आने न देती तो अच्छा होता। तुम जाओ! वह यह न कहे कि मैं तुमको रोकती हूँ। मेरा तुम पर कुछ वश नहीं है। तुम उसी के हो!

एएटनी—ईश्वर जानता है!

क्लियोपाट्रा—कभी किसी महारानी को ऐसा धोखा नहीं दिया गया! मुझे तो पहले ही से शङ्का हो गई थी।

एएटनी—हे क्लियोपाट्रा—

क्लियोपाट्रा—जब तुमने फुलविया के साथ अन्याय किया तो मैं फिर तुम्हारी प्रतिज्ञाओं का कैसे विश्वास करूँ। तुम शपथ खाते जाते हो और प्रतिज्ञा तोड़ते जाते हो!

एएटनी—प्यारी महारानी!

क्लियोपाट्रा—नहीं नहीं! जाने के लिए बहाना ढूँढने की जरूरत नहीं। जाना है तो चले जाओ। बहानों की तो उस समय जरूरत थी जब रहना चाहते थे। तब तो जाने का नाम भी न था। तब हम रूपवती थीं। तब हमारा कुरूप से कुरूप अंग भी महा सुन्दर था। वही अङ्ग अब भी है—हे एएटनी! बड़ा वीर होकर भी तू बड़ा झूठा निकला!

एएटनी—प्रिये क्या कहती हो?

क्लियोपाट्रा—हाय! एएटनी जो मेरा हृदय तेरे शरीर में चला जाता तो तू जानता कि मिश्र में एक स्त्री तुझे प्राणों से भी अधिक चाहती है।

एएटनी—सुनो ! मुझे कार्य्यवश घर जाना है। लेकिन मेरा मन यहीं रह जायगा। इटली में लड़ाई झगड़े हो रहे हैं। सेक्स्टस पौम्पे रोम पर चढ़ा आ रहा है। तुमको डरना नहीं चाहिए। फुल्विया मर गई।

क्लियोपाट्रा—अरे मुझे बच्चों की तरह बहलाते हो ! भला फुल्विया मर सकती है ?

एएटनी—हाँ मर गई। देखो यह पत्र आया है। इसे पढ़ो।

क्लियोपाट्रा—हाय ! झूठा प्रेम ! पवित्र शीशियों में दुःख का पानी ! अब मैं जान गई कि फुल्विया के मरने पर मुझसे कैसा प्रेम होगा !

एएटनी—अब लड़ो मत। सुनो मुझे जाना है। कहो तो जाऊँ कहो न जाऊँ। ईश्वर साक्षी है कि मैं तुझे कभी न भूलूँगा।

इसके पश्चात् एएटनी मिश्र देश से चला गया और चलते समय एएटनी और क्लियोपाट्रा में दृढ़ प्रेम के लिए प्रतिज्ञायें हुईं। एएटनी के चले जाने पर क्लियोपाट्रा ने बड़ा शोक मनाया। वह प्रति दिन एक दूत एएटनी के पास भेजने लगी और सिवा 'एएटनी !' 'एएटनी !' के और कुछ बात उसके मुँह से नहीं निकलती थी। वह नित्य एएटनी का ही ध्यान किया करती थी। न उसे गाना अच्छा लगता था और न किसी और वस्तु से उसका जी बहलाता था। परन्तु वह एएटनी के ही विरह में अपना समय व्यतीत करती थी।

उधर रोम में आक्टेवियस एएटनी को बदनाम कर रहा था। वह एक दिन लेपीडस से कह रहा था—

"देखो मैं विना कारण एण्टनी से घृणा नहीं करता । सिकन्दरिया से खबर आई है कि वह रात दिन नाच रंग में समय व्यतीत करता है । अब उसमें उतना ही पुरुषत्व है जितना क्लियोपाट्रा में । क्लियोपाट्रा में उतना ही स्त्रीत्व है जितना एण्टनी में । देखो उसने हमारे दूत को विना बात किये ही टाल दिया !"

लैपीडस—मुझे तो एण्टनी में इतने दोष नहीं दिखाई देते कि उसकी समस्त भलाइयों को छिपा लें ।

आक्टेवियस—आप तो बड़े नर्मदिल मालूम होते हैं । क्या टालमी * के पलग पर लेटना दोष नहीं है ? क्या विषयासक्ति में राज लुटा देना दोष नहीं है ?

इस समय एक दूत ने आकर खबर दी कि सेक्स्टस पौम्पे मेसीना से युद्ध की तैयारियाँ करके रोम पर चढ़ा आरहा है । उसने यह विचार किया था कि एण्टनी क्लियोपाट्रा की गोद को छोड़कर ऐसे युद्ध के लिए क्यों आने लगा । सीजर के पास रुपया है, पर लोग उसको नहीं चाहते । लैपीडस खुशामदी आदमी है, पर कोई उसको पर्वा नहीं करता, इसलिए रोम को जीतने का यह सब से उत्तम अवसर है ।

परन्तु उसका यह विचार ठीक न निकला । क्योंकि जैसा हम ऊपर कह चुके हैं एण्टनी अपने देश की दुर्दशा का हाल सुन कर मिश्र से चल पड़ा था । जब वह रोम पहुँचा तो उसमें और आक्टेवियस में झगड़ा होगया, क्योंकि आक्टेवियस पहले ही से लोगों को एण्टनी के विरुद्ध भड़का रहा था । लैपीडस उन दोनों में सन्धि कराने का यत्न करता था और कहता था कि हम तीनों मित्रों को इस समय अपने निज झगड़ों

---

*क्लियोपाट्रा टालमी की स्त्री थी ।

को भूल जाना चाहिए; क्योंकि हम सब का शत्रु पौम्पे आ रहा है। शत्रु के परास्त करने के लिए हम सब को एक हो जाना ही उत्तम है।

एएटनी ने कहा—

"आक्टेवियस! मैंने सुना है कि तुम बहुत सी ऐसी बातों से नाराज हो गये हो, जिनका तुमसे कुछ भी सम्बन्ध नहीं है।"

आक्टेवियस—भला मैं क्यों नाराज़ हो जाता? और विशेष कर तुमसे? मुझे आपके नाम से भी कुछ सम्बन्ध नहीं है।

एएटनी—तुम्हारा मेरे मिश्र में रहने से क्या सम्बन्ध था?

आक्टेवियस—वही जो तुम्हारा मेरे रोम में रहने से है। हाँ अगर तुमने मेरे अधिकार में हस्तक्षेप किया तो तुम्हारा मिश्र में रहना भी मुझसे कुछ सम्बन्ध रखता है?

एएटनी—कैसा हस्तक्षेप?

आक्टेवियस—तुम मेरा आशय समझ गये होगे। तुम्हारे भाई और स्त्री दोनों ने मुझसे लड़ाई की। वह कहते थे कि तुमने उनको आज्ञा दी है।

एएटनी—तुम्हारी भूल है। मेरे भाई ने मुझसे कभी युद्ध के लिए नहीं पूछा। मेरे पत्रों से स्पष्ट है कि मेरे भाई ने मेरी इच्छा के विरुद्ध किया। अगर तुमको झगड़ा ही करना है तो दूसरी बात है। नहीं तो इसमें मैं निर्दोष हूँ।

आक्टेवियस—तुम तो आत्मश्लाघा करके मेरी भूल बताते हो। यह केवल बहाना है।

एएटनी—नहीं नहीं। हाँ मेरी स्त्री के झगड़ों का और कारण है। ईश्वर तुमको भी ऐसी स्त्री देता तो मालूम पड़

जाता। देखो, तिहाई दुनिया तुम्हारे अधिकार में है। परन्तु इस पर राज करना सरल है, लेकिन ऐसी स्त्री को वश में करना दुस्तर है। तुमको यह सोचना चाहिए कि मेरी स्त्री पर मेरा वश न था।

आक्टेवियस—मैंने सिकन्दरिया में तुम्हारे पास एक दूत भेजा, जब तुम वहाँ रँगरेलियाँ खेल रहे थे। उसको तुमने अपमान के साथ निकाल दिया।

एण्टनी—वह बिना आज्ञा के घुस आया था। दूसरे दिन मैंने उस की बात सुन ली। यह बात क्षमा माँगने के लगभग थी!

आक्टेवियस—तुमने प्रतिज्ञा भङ्ग की।

लैपीडस—आक्टेवियस! नर्मी से।

एण्टनी—नहीं नहीं कहने दो। भला कौन सी प्रतिज्ञा?

आक्टेवियस—मुझे ज़रूरत के समय न तो सेना भेजी और न, अन्य सहायता दी, और साफ इनकार कर दिया।

एण्टनी—इनकार नहीं किया। भूल गया। बात यह है कि फुलिवया ने मेरे मिश्र से बुलाने के लिये आप से लड़ाई छेड़ दी थी। मैं इसके लिये क्षमा माँगता हूँ।

आक्टेवियस—जब हम दोनों के दिलों में भेद है तो अब बनने की नहीं।

जब इस प्रकार झगड़ा हो रहा था तो कुछ मनुष्यों के कहने से सन्धि का एक उपाय सोचा गया अर्थात् आक्टेवियस की बहन आक्टेविया का, जो पहले मासीलस से ब्याही गई थी और जो अब विधवा हो गई थी, एण्टनी के साथ विवाह हो जाय।

यह प्रस्ताव दोनों ओर से स्वीकृत हो गया और दोनों का विवाह कर दिया गया। इस प्रकार थोड़े दिनों के लिए

आक्टेवियस और एण्टनी में सन्धि हो गई।

यह सब मिलकर मिसीनम के निकट पौम्पे का सामना करने के लिए उपस्थित हुए। परन्तु पौम्पे ने यह देख कर कि उसके शत्रुओं की सामुद्रिक तथा भौमिक सेना उसकी सेना से कहीं बढ़ कर है और जीतने की कुछ भी आशा नहीं है, युद्ध करने से इनकार कर दिया और इस शर्त पर सन्धि कर ली कि सिसली और सार्डीनिया पौम्पे ले ले और अन्य सामुद्रिक स्थानों पर अपना स्वत्व छोड़ दे।

इस सन्धि के पश्चात् इन चारों में प्रीति भोजन हुआ और पौम्पे ने बड़े समारोह से अपने जहाज पर एण्टनी, लैपीडस और आक्टेवियस को निमन्त्रित करके उत्सव मनाया। जब ये सब एक दूसरे से पृथक् हुए तो एण्टनी अपनी नई स्त्री आक्टेविया के साथ आकर अथेन्स में रहने लगा।

जिस समय एण्टनी अथेन्स में था क्लियोपाट्रा उसको वहाँ से बुलाने के बहुत से उपाय सोच रही थी। उसके दूत यहाँ की सब बातें उस तक पहुँचाया करते थे। कई बार उसने गुप्त रीति से एण्टनी को बुलाना चाहा। आक्टेविया के विवाह की ख़बर सुन कर सपत्नीभाव ने उसे बड़ा कष्ट दिया और उसने एक दूत अथेन्स को इसलिए भेजा कि देखो एण्टनी और आक्टेविया में कैसी बनती है। सिकन्दरिया में एक दिन जब क्लियोपाट्रा बैठी हुई थी, एक अनुचर ने उसे सूचना दी कि दूत आ गया।

क्लियोपाट्रा—कहाँ है ?
अनुचर—आने से डरता है।
क्लियोपाट्रा—क्यों ?

अनुचर—महारानी ! यह तो विचारा दूत है। यहूदियों का राजा हीरड भी आप के सम्मुख आने से डरता था !

क्लियोपाट्रा—हा ! हा ! हीरड का सिर अवश्य फटेगा। लेकिन एण्टनी जिसके हुक्म से ऐसा होता, यहाँ है ही नहीं !

दूत—महारानी की जय हो !

क्लियोपाट्रा—क्या तूने आक्टेविया देखी !

दूत—हाँ !

क्लियोपाट्रा—कहाँ !

दूत—रोम में एण्टनी और आक्टेवियस के साथ !

क्लियोपाट्रा—क्या वह मुझ जैसी लम्बी है।

दूत—नहीं !

क्लियोपाट्रा—क्या उसे बोलते सुना ? धीरे बोलती है ? या जोर से ?

दूत—महारानी जी ! धीरे !

क्लियोपाट्रा—ये तो अच्छी बातें नहीं हैं। एण्टनी बहुत दिनों इससे प्रेम न करेगा !

एक अनुचर (दूसरे से)—वह महारानी के तुल्य कैसे हो सकती है।

क्लियोपाट्रा—ठिगनी और धीरे बोलने वाली ! उसकी चाल कैसी है ?

दूत—रेंगती है ! उसका चलना और बैठना एक सा है। उसके देह पर चैतन्यता नहीं ! केवल चित्रवत् है !

क्लियोपाट्रा—क्या यह ठीक है ?

दूत—हाँ !

क्लियोपाट्रा—कितनी बड़ी है ?

दूत—विधवा थी !

क्लियोपाट्रा—ओ हो ! विधवा ?

दूत—तीस वर्ष की होगी !

क्लियोपाट्रा—मुँह कैसा है ? लम्बा या गोल ?

दूत—गोल ! वह भी भद्दा !

क्लियोपाट्रा एएटनी के मन का भाव जानती थीं। अपनी सपत्नी को अपने समान रूपवती न पाकर उसे कुछ सन्तोष हो गया और भीतर ही भीतर उसने इस प्रकार उद्योग किया कि एएटनी का मन आक्टेविया से हट गया और वह मिश्र जाने के लिए अवसर खोजने लगा।

दैवगति से यह अवसर भी उसके हाथ शीघ्र ही आ गया, क्योंकि किसी बात पर आक्टेवियस, लैपीडस और पौम्पे के मध्य में फिर युद्ध छिड़ गया ! और बिना एएटनी के सूचना दिये आक्टेवियस और लैपीडस ने पौम्पे को परास्त कर दिया। इसके पश्चात् आक्टेवियस ने इस दोष में कि उसने पौम्पे के साथ गुप्त रीति से देशहित के विरुद्ध पत्र-व्यवहार किया था लैपीडस को पकड़ लिया ! इस प्रकार आक्टेवियस और एएटनी के मध्य में जो एक प्रकार की रोक थी वह दूर हो गई। एएटनी को ये सब बातें बहुत बुरी मालूम हुईं। उसने आक्टेविया से कहा कि अब मुझमें और तुम्हारे भाई म अवश्य लड़ाई होगी क्योंकि उसने पौम्पे से लड़ाई की और मनमानी बातें राज सभा से स्वीकृत करा लीं, और सब के सामने मुझे गालियाँ देता है !

आक्टेविया—प्यारे पति ! इन सब बातों का विश्वास मत करो ! यदि युद्ध हुआ तो मेरी बड़ी दुर्गति होगी। मैं भाई के लिए प्रार्थना करूँगी या पति के लिए ! परमात्मा ऐसी प्रार्थना कभी स्वीकार नहीं करता है !

एण्टनी—जिस का अधिक प्रेम हो उसी के लिए! यहाँ आत्म-गौरव का प्रश्न है। मुझे अपना गौरव अवश्य रखना है। अगर तुम चाहती हो तो स्वयं जाकर अपने भाई से कहो और हम दोनों में सन्धि करा दो।

इस समय आक्टेविया तो अथेंस से रोम को गई इधर एण्टनी वहाँ से चल कर क्लियोपाट्रा के समीप चला आया! जब आक्टेविया अपने भाई के पास पहुँची तो आक्टेवियस ने कहा, "बहन! क्या तुमको तुम्हारे पति ने छोड दिया!"

आक्टेविया—तुम ऐसा क्यो कहते हो?

भाई—तुम ऐसे चुपके मेरे पास क्यों आ गई! तुम उस समारोह के साथ नहीं आई जिससे आक्टेवियस की बहन को आना उचित है। एण्टनी की स्त्री के साथ सेना होनी चाहिए! घोडों के हिनहिनाने से मालूम होना चाहिए कि एण्टनी की स्त्री आ रही है। लोग वृक्षों पर तुमको देखने के लिए चढ जायँ। धूल घरों की छत तक पहुँचने लगे! तुम तो साधारण स्त्री के समान चली आई! हम तुम्हारा सत्कार भी न कर सके!

बहन—मैं इस प्रकार आ सकती थी। परन्तु मुझे और काम था, जिसके कारण मैंने इसी तरह आना उचित समझा। मेरे स्वामी एण्टनी ने सुना था कि तुम युद्ध की तैयारी कर रहे हो। इसलिए मैंने यहाँ आने की आज्ञा चाही!

भाई—और उसने झट आज्ञा देदी, क्योंकि तुम अपने पति तथा उसकी विषय वासना के बीच में एक प्रकार की रोक थीं।

बहन—भाई! ऐसा मत कहो!

भाई—मैं उसे खूब जानता हूँ। मुझे पल पल की खबर मिलती रहती है। वह अब कहाँ है?

बहन—अथेंस में।

भाई—नहीं! बहन नहीं! तुम्हें धोखा हुआ! उसे क्लियोपाट्रा ने बुला लिया! उसने अपना राज उस दुष्ट स्त्री को दे डाला! वे दोनों युद्ध के लिए राजों को इकट्ठा कर रहे हैं। लिबिया का राजा बोकस, केपेडोसिया का आर्कीलस, पैसेगोनिया का फिलेडैल्फस, थिरेस का एडालस, अरब का माल्कूस और अन्य राजे हमारे विरुद्ध तैयारी कर रहे हैं।

थोडे दिनो पश्चात् दोनों दल एक्शियम के निकट एकत्रित हुए, एण्टनी की भौमिक सेना तो बहुत थी, परन्तु सामुद्रिक सेना इतनी सुशिक्षित नहीं थी, इसलिए एण्टनी के सेनापतियो ने प्रार्थना की कि महाराज आप भौमिक युद्ध कीजिए, क्योंकि आक्टेवियस के जहाज बडे मजबूत हैं। परन्तु एण्टनी के विचार क्लियोपाट्रा के अधीन थे। क्लियोपाट्रा उसके साथ थी और वह जो कुछ कहती थी, एण्टनी वही करता था! क्लियोपाट्रा तो स्त्री ही थी परन्तु उसने एण्टनी पर स्वत्व पाकर एण्टनी को भी स्त्रीवत् कर दिया, क्योंकि स्त्रैण मनुष्यो में पुरुषत्व कम हो जाता है, और उनके विचार भी बिगड जाते हैं। क्लियोपाट्रा के कथनानुसार, एण्टनी ने अपने सेनापतियो की बात न मानी और सामुद्रिक युद्ध आरम्भ कर दिया!

जब युद्ध हो रहा था उस समय क्लियोपाट्रा रणक्षेत्र से भाग निकली। उसके जहाजों को भागता देखकर एण्टनी भी उसके पीछे चल दिया। क्योंकि "विनाशकाले विपरीतबुद्धि"। इस प्रकार आक्टेवियस ने उस एण्टनी पर जय पाई, जिसने

पहले कभी रण में पीठ नही दिखाई थी। जब वह सिकन्द्-रिया में आया तो पछताने लगा और अपने कायरपन पर बड़ा लज्जित हुआ। उसने अपने को एक कमरे में बन्द कर लिया और जब कुछ अनुचर उसके समीप गये तो कहने लगा—

"सुनो! पृथ्वी मुझे अब अपने ऊपर चलने की आज्ञा नहीं देती! यह मेरा भार उठाने से लज्जित है! मित्रो! यहाँ आओ। मैं ऐसा मार्ग भूला कि सदा के लिए भूल गया। मेरे पास रुपयों से भरा हुआ एक जहाज है। उसे आपस में बाँट लो और आक्टेवियस से जा मिलो। यहाँ से भाग जाओ।"

अनुचर—हम नहीं भाग सकते!

एएटनी—मैं स्वय भाग आया और कायरों को पीठ दिखाने की विधि बता दी! मित्रो जाओ। अब मेरा ऐसा विचार है जिसमें आपकी जरूरत नहीं है। हाय, मैं उसके पीछे भाग आया जिसको देखकर मुझे लज्जा आती है। हाय! मेरे केश मुझे लज्जा दिलाते हैं! श्वेत केश काले केशों से कहते हैं कि तुम मूर्ख हो। काले श्वेतों से कहते हैं कि तुम कायर हो! मित्रो! अब जाओ।

इतने में क्लियोपाट्रा वहाँ आ गई और कहने लगी—

"यहाँ बैठ जाऊँ!"

एएटनी—नहीं नहीं!

क्लियोपाट्रा—हाय—हाय!

एएटनी—धिक् धिक्! फिलिपी के रणक्षेत्र में इस आक्टेवियस ने तलवार तक न छुई। यह तो इधर उधर नाचता ही रहा! केसियस और ब्रूटस दोनों को मैंने ही पराजित कर दिया था। परन्तु हाय!

अनुचर—म६

एएटनी—हाय! मेरा यश मिट्टी में मिल गया! हाय क्लियो-पाट्रा! तू मुझे कहाँ ले आई! इन लज्जित आँखों से मैं तुझे कैसे देखूँ!

क्लियोपाट्रा—नाथ! क्षमा करो। मेरे जहाज भयभीत हो गये। मैं नहीं जानती थी कि आप मेरे पीछे पीछे भाग उठेंगे?

एएटनी—अरी क्लियोपाट्रा! तू नहीं जानती कि मेरा मन तेरे पतवार से बँधा था। तू जानती है कि तेरा मुझ पर कितना स्वत्व है और तेरा संकेतमात्र मुझे खींचने के लिए काफी है।

क्लियोपाट्रा—(रोकर) क्षमा करो! क्षमा करो!

एएटनी—आँसू न गिराओ। तुम्हारा एक एक आँसू एक एक राज से बढ़ कर है।

अब एएटनी ने आक्टेवियस सीजर की सेवा में एक आदमी भेजा और प्रार्थना की कि मैं तुम्हारे अधीन रहना अङ्गीकार करता हूँ—अगर आप मुझे मिश्र में रहने दें। अगर यह बात आपको स्वीकृत न हो तो आप मुझे साधारण मनुष्य की भाँति अथेंस में रहने की आज्ञा दीजिए। इसके अतिरिक्त इसी दूत द्वारा क्लियोपाट्रा ने भी प्रार्थना की थी कि "मैं आप का स्वत्व स्वीकार करती हूँ, आप कृपाकर के *टोल्मी राज मेरी सन्तान के लिए छोड़ दीजिए, क्योंकि इस विजय से यह राज आप के अधीन हो गया है।" सीजर ने एएटनी की प्रार्थना स्वीकृत नहीं की, किन्तु क्लियोपाट्रा की बात मानली और एक दूत भेजा जो उसको मिश्र में आकर फुसलावे।

---

*मिश्र के राजे टोल्मी कहलाते थे।

जब एएटनी का दूत सीजर के पास से लौटकर आया उस समय क्लियेोपाट्रा सिकन्दरिया में बैठी हुई एनोबार्बस से बातें कर रही थी। उसने कहा—"एनोबार्बस ! अब हम क्या करें।"

एनोबार्बस—सोचो और मर जाओ !

क्लियेोपाट्रा—इसमें हमारा दोष है या एएटनी का !

एनोबार्बस—केवल एएटनी का ! क्योंकि उसने अपनी बुद्धि को अपनी इच्छा के अधीन कर दिया, आप युद्ध से भागीं। वह क्यों भागा ? उस समय वीरता प्रेम के अधीन नहीं होनी चाहिए थी। ऐसे समय में जब आधी आधी दुनिया दोनों ओर से लड रही हो, और सब एएटनी की ओर देख रहे हों तो तुम्हारे जहाजों के साथ भाग आना न केवल हानिकारक ही है किन्तु बडी भारी लज्जा का स्थान है।

इतने में एएटनी दूतसहित आ गया और कहने लगा—"क्या सीजर ने यह उत्तर दिया है ?"

दूत—जी हाँ !

एएटनी—क्लियेोपाट्रा को क्षमाकर दिया जायगा, और मुझे यह उसके हवाले कर देगी !

दूत—सीजर की यही इच्छा है।

एएटनी—अच्छा इससे कह दो (क्लियेोपाट्रा से) "लो इस श्वेत केश वाले सिर को युवक सीजरके समीप भेज दो। और वह तुमको बहुत सा राज दे देगा।"

क्लियेोपाट्रा—इस सिर को ?

एएटनी—(दूत से) अच्छा सीजर से इतना और कह दो कि अभी उसकी नई उम्र है—मैं वृद्धा हो चुका—रुपया,

जहाज सेना तो एक कायर के पास भी हो सकती है। इनकी सहायता से एक बच्चा भी ऐसी ही प्रबलता से लड सकता है जैसे सीज़र—इसमें कोई वीरता नहीं है। इसलिए हम तुम अकेले युद्ध करे।

एण्टनी तो यह कहता हुआ दूत के साथ बाहर चला गया। परन्तु क्लियोपाट्रा के नोकर ने आकर सूचना दी कि सीजर का एक दूत महारानी के दर्शन करना चाहता है। यह वही दूत था जिसे सीजर ने क्लियोपाट्रा को फुसलाने के लिए भेजा था।

क्लियोपाट्रा—कहो सीजर की क्या आज्ञा है?

दूत—अकेले में सुनिए।

क्लियोपाट्रा—कोई बाहरी आदमी नहीं है, स्पष्ट कहो!

दूत—महारानी जी! सीजर जानता है कि आपने एण्टनी को प्रेमवश ग्रहण नहीं किया किन्तु डर के कारण।

क्लियोपाट्रा—हाँ!

दूत—इसलिए जो दोष आप में आ गये उन पर आपका कोई वश नहीं था।

क्लियोपाट्रा—सीजर तो साक्षात् देव है। वह ठीक बात जानता है। मैं स्वयं एण्टनी के वश में नहीं हो गई किन्तु मुझे जीत लिया गया।

दूत—सीजर आप से बड़ा प्रसन्न होगा अगर आप उसके आश्रित हो जायँ और एण्टनी को छोड़ दे।

क्लियोपाट्रा—अच्छा सीजर से कह दो कि मैं उसके आश्रित हूँ।

ज्यों ही दूत ने सम्मान के लिये क्लियोपाट्रा के * हाथ

*पाश्चात्य देशों का यह नियम है कि सम्मान के लिए महाराजों या महारानियों के हाथ को चूमते हैं। पूर्वी देशों में पैर छूने का नियम है।

की ओर अपना मुँह बढाया त्यों ही एण्टनी वहाँ पर आ गया, और दूत को पकड कर इतना मारा इतना मारा कि उसके शरीर से रक्त बहने लगा। फिर क्लियोपाट्रा से कहने लगा—

"देख ! मेरे आने से पहले तेरा आधा यौवन समाप्त हो चुका था। हाय ! क्या मैंने रोम के स्त्री-रत्नों को इसलिए छोडा था कि एक दुष्ट स्त्री मेरी घातक बने।

क्लियोपाट्रा—स्वामिन्—

एण्टनी—अरे तू सदा की दुष्ट थी। पर जब पाप बढ जाता है तो आँखें मुंद जाती हैं। बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है और अपना दोष ही गुण मालूम होने लगता है।

क्लियोपाट्रा—हाय ! महाराज !

एण्टनी—अरे। अभागो ! तू तो सीजर और पौम्पे के भोजन का ग्रास थी। तू सदाचार क्या जाने ?

क्लियोपाट्रा—आप इतने क्रुद्ध क्यों हैं ?

एण्टनी—सीज़र की खुशामद के लिये उसके दूत से मिलती है।

क्लियोपाट्रा—हाय ! श्रीमान् ने मुझे नहीं पहचाना।

एण्टनी—और मुझे भूल गई।

क्लियोपाट्रा—हाय ! अगर मैंने ऐसा किया हो तो परमात्मा मेरे हृदय पर पाषाण की वर्षा करें। मुझे विष लग जाय। मेरा जीवन आज ही नष्ट हो जाय। (रोकर) मेरी ही सन्तान मुझे मार डाले।

क्लियोपाट्रा के आँसुओं को देख कर एण्टनी का सब प्रकोप शान्त हो गया और वह फिर उसी प्रकार उससे प्रेम करने लगा जैसा पहले किया करता था, क्योंकि क्लियोपाट्रा के स्वभाव में कुछ ऐसी चञ्चलता थी और एण्टनी का मन कुछ ऐसा

वशीभूत हुआ था कि एएटनी को यदि कभी क्रोध आता था तो वह थोडी देर से अधिक न रहता था और क्लियोपाट्रा के छल बल उसे अँगुलियों पर नचाते थे। जब वह चाहती एएटनी को हँसाती थी जब चाहती रुलाती थी। अब एएटनी ने एक बार फिर निश्चय किया कि थोडी सेना एकत्रित करके आक्टेवियस से भौमिक युद्ध किया जाय, क्योंकि अकेला लडना उसने स्वीकार नहीं किया था।

सिकन्दरिया के पास लडाई हुई और पहले दिन एएटनी की विजय हुई। जब एएटनी एक वीर सिपाही को, जिसने जान तोड कर कोशिश की थी, रात के समय क्लियोपाट्रा के पास लाया और उसकी प्रशंसा करने लगा तो क्लियोपाट्रा ने एक सुनहरा कवच उसे इनाम में दिया।

परन्तु भीतर ही भीतर आक्टेवियस के दूत क्लियोपाट्रा को फुसलाने में सफल हो गये और दूसरे दिन जिस समय बडे जोर से लडाई हो रही थी, क्लियोपाट्रा का संकेत पाकर बहुत से सिपाहियों ने सामुद्रिक युद्ध की भाँति पीठ दिखा दी और एएटनी बिचारा देखता का देखता ही रह गया। परन्तु अब हो ही क्या सकता था, एएटनी की रही सही आशाओं का भी अन्त हो गया। वह कहने लगा—

"सर्व नाश हो गया। इस दुष्ट स्त्री ने मुझे धोखा दिया। मेरी सेना शत्रु से मिल गई। देखो वे खुशी के मारे टोपियाँ उछाल रहे हैं। हे व्यभिचारिणी तूने मुझे एक युवक के हाथ बेच दिया। हाय! अब मेरा मन चाहता है कि तुझे यहीं समाप्त करदूँ! हे सूर्यदेव! आप के उदय होने तक मैं न बचूँगा! आज एएटनी और भाग्य दोनों एक दूसरे से पृथक् होते हैं। आज वे लोग जो मुझसे परम मित्रता रखते थे और जो मेरे

इशारे पर काम करते थे मेरे शत्रु से मिल रहे हैं। मिश्र की इस दुष्ट स्त्री ने मुझे पकड़वा दिया। इसी ने मुझसे युद्ध कराया। यह मेरे शिर का मुकुट थी और आज इसने फुसला कर मुझे नष्ट कर दिया। (क्लियोपाट्रा को देख कर) अरी चुडेल, आ तो सहा।

क्लियोपाट्रा—महाराज अपनी प्यारी से क्यों कुपित हैं?

एण्टनी—चल, हट! नहीं तो अभी तेरे प्राण ले लूँगा। जा, सीजर के साथ जा—वह तुझे रोम के बाजार में लटका कर दिखावेगा। लोग तुझे देख कर हँसेंगे। तू उसके रथ के पीछे चलेगी और चारों ओर से थू थू का शब्द सुनाई देगा। तुझसे समस्त स्त्री जाति कलङ्कित हो गई। आक्टेविया अपने नाखूनों से तेरे मुँह को फाड़ेगी। (क्लियोपाट्रा भाग गई) अच्छा हुआ भाग गई। परन्तु यदि मेरी तलवार के नीचे आ जाती तो अच्छा होता, क्योंकि एक की मृत्यु से सैकड़ों बच जाते। अब मैं अवश्य इसे मार डालूँगा।

अब एण्टनी का मन क्लियोपाट्रा से बिलकुल खट्टा हो चुका था। अब वह स्वयं देख चुका कि यह चुडेल छल करती है। इसलिए क्लियोपाट्रा को भी उसे समझाने का कोई उपाय सूझता न था।

पहले तो दो चार आँसू गिरा कर वह एण्टनी को प्रसन्न कर देती थी और एण्टनी उसकी मुसकराहट देखते ही उसके सब दोष भूल जाता था। परन्तु इस समय एण्टनी के हृदय में बड़ा भयङ्कर घाव लगा था, जो एक दो चिकनी चुपड़ी बातों से अच्छा नहीं हो सकता था। इसलिए अपनी सहेलियों की अनुमति से (क्योंकि क्लियोपाट्रा की सहचरियाँ भी कुछ कम छली न थीं) उसने अपने आप को एक मन्दिर में बन्द कर

लिया और एण्टनी के पास कहला भेजा कि क्लियोपाट्रा मर गई और अन्तिम समय उसके मुख से यही शब्द निकलते थे—"एण्टनी! एण्टनी!"

जब वह दूत एण्टनी के पास पहुँचा, एण्टनी ने कहा—

"देख आज तेरी रानी ने मेरे हाथ से तलवार छुड़ा दी।"

दूत—नहीं महाराज! रानी को आप से अगाध प्रेम था और उसका परिणाम भी आप का ही सा हुआ!

एण्टनी—नहीं दुष्ट! चुप रह! तेरी रानी ने मुझे नष्ट कर दिया। मैं उसे अवश्य प्राणदण्ड दूँगा!

दूत—श्रीमान्! मनुष्य को एक ही बार प्राणदण्ड दिया जाता है! यह वह स्वय पा चुकी। आप जो चाहते थे वह हो गया! अन्त में उसने यही कहा था "एण्टनी, सुयोग्य एण्टनी!" फिर उसका दम घुटने लगा और उसने "एण्टनी" कहना चाहा परन्तु शब्द मुँह का मुँह ही में रह गया!

एण्टनी—तो वह मर गई?

दूत—हाँ मर गई!

एण्टनी—अच्छा तो अब समस्त दिन का काम समाप्त हो गया। अब हमें सोना चाहिए। क्लियोपाट्रा! मैं तेरे पीछे आता हूँ। महारानी ठहर। मेरे लिए ठहर। मैं रो रो कर तेरे लिए क्षमा माँगूँगा। हम दोनों स्वर्ग लोक में मिलेंगे। (नौकर से) क्लियोपाट्रा मर गई इसलिए हमारा जीना व्यर्थ है। मैंने अपनी तलवार से समस्त संसार जीत लिया था, परन्तु आज मुझ में एक स्त्री के बराबर भी साहस नहीं है। तूने प्रतिज्ञा की थी कि जब कभी कोई अत्यावश्यक कार्य्य होगा तो आप की सेवा

करूँगा। सो आज सब से जरूरी काम है क्योंकि अब जीते रहने में लज्जा और अपयश के सिवा और कुछ नहीं है। इसलिए आज तलवार से इस जीवन को समाप्त कर।

नौकर—भला मै वह बात कब कर सकता हूँ जो आप के शत्रु भी नहीं कर सके।

एएटनी—अरे! क्या तू यह चाहता है कि रोम की खिडकियों से अपने स्वामी को सीजर के रथ के पीछे घसिटता हुआ देखे। क्या वर्त्तमान अपयश कुछ कम है?

नौकर—नहीं मै नहीं चाहता।

एएटनी—नहीं चाहता तो तैयार हो जा। एक घाव से मेरा सब रोग दूर हो जायगा। तलवार उठा।

नौकर—श्रीमान्! क्षमा कीजिए।

एएटनी—अरे क्या तूने प्रतिज्ञा नहीं की थी कि समय पर काम आऊँगा। सो तू आज क्यों हटता है?

नौकर—अच्छा महाराज अपना मुख दूसरी ओर को कर लें। क्योंकि मुख को देखकर अत्याचार नहीं किये जा सकते।

एएटनी—(पीठ फेर कर) ले।

नौकर—मेरी तलवार खिच गई।

एएटनी—अच्छा फिर कार्य्य समाप्त कर।

नौकर—श्री महाराज! इस अन्त समय में आज्ञा दीजिए कि में प्रणाम कर लूँ।

एएटनी—अच्छा प्रणाम।

नौकर—क्या अब मारूँ।

एएटनी—हाँ।

नौकर—अच्छा लो ! अब मुझे एएटनी की मृत्यु का शोक न भोगना पड़ेगा।

यह कह कर नौकर ने अपने सिर में तलवार मारली और गिर पड़ा।

एएटनी—अरे वीर नौकर तू मुझे शिक्षा दे गया कि मुझे क्या करना चाहिए। मेरी रानी और तू दोनों मुझ से अच्छे रहे अब मैं मृत्यु से विवाह करता हूँ।

यह कह कर एएटनी तलवार के ऊपर गिर पड़ा परन्तु उसकी जान न निकली। उसने पहरे के सिपाहियों से प्रार्थना की कि एक तलवार से शेष सम्बन्ध को तोड़ दो, लेकिन किसी ने स्वीकार न किया। जब वह इस प्रकार घायल पड़ा हुआ था क्लियोपाट्रा का नौकर वहाँ पर आ गया, जिसे रानी ने यह सोचकर एएटनी के पास भेजा था कि कहीं एएटनी उसकी कल्पित मृत्यु के शोक में प्राण न दे दे। एएटनी ने नौकर से प्रार्थना की कि "तलवार द्वारा इस कष्ट से छुड़ा दो।"

नौकर—श्री महाराज ! महारानी क्लियोपाट्रा ने मुझे भेजा है।

एएटनी—अरे कब भेजा था ?

नौकर—अभी !

एएटनी—वह कहाँ है ?

नौकर—श्रीमहाराज ! मन्दिर में। जब उसने देखा कि आप बहुत क्रुद्ध हैं और समझते हैं कि वह सीजर से मिल गई तो उसने आपके पास अपनी मृत्यु का समाचार भेज दिया, परन्तु फिर वह डरी कि कहीं आप आत्मघात न कर लें। इसलिए मुझे आप की सेवा में सच सच कहने को भेजा है। पर अब क्या होता है।

एरटनी—अच्छा अभी थोडी सी देर और है। पहरे वालों के द्वारा मुझे क्लियोपाट्रा के पास ले चलो।

इधर क्लियोपाट्रा ने सुना कि एरटनी ने आत्मघात कर लिया इसलिए वह सिर पीटने लगी। परन्तु मन्दिर से बाहर जाना उचित नहीं था क्योंकि आक्टेवियस सीजर के नौकर चारों ओर मॅडला रहे थे और क्लियोपाट्रा को जीवित पकड़ना चाहते थे। जब लोग एरटनी को मन्दिर के पास लाये तो खिड़की में होकर उसने बड़ी मुश्किल से उसे भीतर खींच लिया। उसके मुँह से इतना ही निकला—

"एरटनी! एरटनी!"

एरटनी—सीजर मुझे न मार पाया। एरटनी का अन्त एरटनी के ही हाथ से हुआ!

क्लियोपाट्रा—उचित भी यही था। एरटनी के सिवा और कौन एरटनी को जीत सकता था!

एरटनी—रानी मेरा अन्त निकट है, मुझे प्यार करले।

क्लियोपाट्रा ने कुछ शराब पिलाई, जिसके नशे से वह थोडी देर तक बोलता रहा। उसने अन्त में कहा—"प्यारी क्लियोपाट्रा सीजर के पास जा और रक्षा तथा यश की प्रार्थी हो।"

क्लियोपाट्रा—यश और रक्षा दोनों में परस्पर विरोध है।

एरटनी—मेरी इस शोचनीय दशा पर शोक मत करो! किन्तु मेरी उस अवस्था का ध्यान करके खुशी मनाओ जिसको मैं भोग चुका हूँ। न तो नीचता से मरो और न मेरे कवच को किसी अन्य रोमन के हवाले करो। अब मेरा अन्त आ गया। मैं कुछ नहीं कह सकता।

क्लियोपाट्रा—हे वीर! तुझे मेरी कुछ परवाह नहीं है, और मरा जा रहा है। क्या मैं अब इस संसार में रहूँगी।

क्योंकि विना तेरे यह घर सुअर के घर से उत्तम नहीं है। देखो! देखो! दुनिया का मुकुट पिघला जा रहा है। स्वामिन्! युद्ध की जयमाल मुरझा गई। अब लडके और लडकियाँ वीरों के समान हैं, क्योंकि जो भेद था सो जाता रहा।

इतने में एएटनी का प्राणान्त हो गया और क्लियोपाट्रा को यह देखकर मूर्छा आ गई। बडा देर के पश्चात् उसे होश आया और मृतकसंस्कार की तैयारियाँ कीं।

सीजर ने भी एएटनी की मृत्यु के विषय में सुना और बडा पश्चात्ताप किया, क्योंकि यद्यपि सीजर एएटनी का शत्रु हो गया था तथापि उसे विश्वास था कि एएटनी बडा वीर पुरुष था। वीर लोग अपने शत्रुओं की मृत्यु पर भी आँसू बहाया करते हैं।

सीजर को अब यह भी खयाल हुआ कि कहीं क्लियोपाट्रा एएटनी के सोच में मर न जाय। इसलिए उसने जल्दी जल्दी उसे सन्तोष देने के लिये दूत भेजे। एक दूत ने मन्दिर के निकट आकर कहा कि महारानी सीजर से क्या चाहती है।

क्लियोपाट्रा ने उत्तर दिया—

"अगर तुम्हारा स्वामी चाहता है कि मैं उससे भीख माँगूँ तो मैं यही माँगूँगी कि मेरे लडके को मिश्र का देश दे दिया जाय।"

इसके पश्चात् यह दूत खिडकी में रस्सी लगाकर मन्दिर के भीतर चढ गया। रानी डरी और तलवार उठा कर अपना अन्त करना चाहा परन्तु उस दूत ने झट उसके हाथ से तलवार छीन ली। इस प्रकार क्लियोपाट्रा आत्मघात करने में सफल न हो सकी। परन्तु उसने खाना पीना छोड दिया। दिन रात रोती रहती। ज्वर ने उसे आ घेरा। सीजर ने वैद्यों को उस

उसी समय एक किसान तरकारी की एक टोकरी दरवाजे पर लाया और भीतर आने की आज्ञा चाही। इस किसान को क्लियोपाट्रा के किसी चाकर ने नील नदी के साँप लेकर भेजा था। इन सांपों की ऐसी प्रकृति कही जाती है कि वह जिसको काट लेते हैं वह किसी औषध से भी नहीं बच सकता, परन्तु इनके काटने में थोड़ा सा भी कष्ट नहीं होता। क्लियोपाट्रा उस को देख कर खुश हुई और पूछा—

"क्या तेरे पास नील नदी का सर्प है जिसके काटने से सहज में ही मृत्यु हो जाती है?"

किसान—हाँ सर्प है। देखो, देखने में यह कितना सुन्दर है।

क्लियोपाट्रा—अच्छा तुम इस टोकरी को रखकर बाहर चले जाओ।

किसान के जाने पर चारमियन से कहा—

"सखि! मुझे शृङ्गार कराओ। मैं अवश्य मरूँगी। एण्टनी मुझे बुला रहा है। देर हो गई है वह कहता होगा कि मैं सीज़र के वश में आ गई। स्वामिन्! प्राणेश्वर! मैं तुम्हारे पास आ रही हूँ। अब देर नहीं है।"

इसके पश्चात् उसने सब सहचरियों को गले लगाया। उसके पश्चात् एक सर्प को उठा कर अपने वक्षस्थल से लगा लिया और कहने लगी—

"देखो! हमारे वक्ष में बालक दूध पी रहा है"

फिर उसने एक और सर्प को लेकर बाँह में लगा लिया। सर्प ने क्लियोपाट्रा के कोमल शरीर को झट काट लिया और वह मूर्छा खाकर गिर पड़ी।

क्लियोपाट्रा की मृत्यु पर उसकी सहचरी चारमियन ने भी सर्प-द्वारा आत्मघात किया।

जिस समय मिश्रेश्वरी इस प्रकार स्वर्ग को सिधार गई उसी समय सीजर के दूत उसे पकड़ने के लिये आ पहुँचे और सीजर भी उनके साथ था, क्योंकि सीजर को यह समाचार मिल गया था कि क्लियोपाट्रा अब आत्मघात करना चाहती है। इसलिए वह जल्दी से उसे रोकने के लिये आया था। परन्तु अब क्या हो सकता था, क्लियोपाट्रा अपने एण्टनी के पास थी और वे दोनों स्त्री पुरुष सांसारिक बन्धनों से छूट चुके थे।

सीजर आया और अपने परिश्रम को विफल देखकर शोकातुर हुआ। अन्त में उसका मृतक-संस्कार बड़े सम्मान के साथ किया गया और उसका शव एण्टनी के शव के साथ समाधिस्थ कर दिया गया।

इति

शेक्सपियर और बेकन

(छठे भाग की जीवनी)

पिछले पाँच भागों में हम शेक्सपियर के जीवन और ग्रन्थों के विषय में बहुत कुछ लिख चुके हैं। यहाँ अपने पाठकों के सूचनार्थ एक और विषय सक्षेप से लिखते हैं। आशा है कि यह भी उनको अप्रिय न होगा।

थोडे दिनों से पाश्चात्य देशों में एक विचित्र लहर उठ रही है, जिसका नाम हम ऐतिहासिक सदेह रख सकते हैं। इससे हमारा तात्पर्य्य यह है कि पाश्चात्य विद्वान् प्राय. ऐतिहासिक पुरुषो के अस्तित्व पर शका कर रहे हैं। बहुतो का मत है कि ईसा मसीह ने कभी ससार में जन्म नहीं लिया और जो काम उसके जीवन से सम्बद्ध माने जाते हैं वे अन्य पुरुषो ने उसके नाम के साथ मिला दिये हैं। बहुत से मानते हैं कि महात्मा बुद्ध का नाम कल्पनामात्र ही है और शाक्यमुनि नाम का कोई पुरुष नहीं था। बहुत से विद्वानो का सिद्धान्त है कि रामायण कोई ऐतिहासिक ग्रन्थ नहीं, किन्तु उपन्यास मात्र है। इसी प्रकार

विचित्रबुद्धि पुरुष बैठे विठाये नये नये सिद्धान्त अपने विलक्षण मस्तिष्क से निकाला करते हैं।

महाकवि शेक्सपियर भी वैसी ही कल्पनाओ से नहीं बच सका और यद्यपि आज तक कोई मनुष्य शेक्सपियर के अस्तित्व से इनकार नहीं कर सका परन्तु ६३ वर्ष से बहुत से लोग यह मानने लगे हैं कि जो नाटक इस महाकवि के बनाये प्रसिद्ध हैं उन सब का वास्तविक बनाने वाला फ्रान्सिस बेकन था, जो १५६१ ईसवी में उत्पन्न हुआ और १६२६ ईसवी में मरा। इस शंका का सब से पहला करने वाला जोजिफ हार्ट था जिसने १८४८ ईसवी में 'रोमास आफ यार्टिंग' (Romance of Yachting) नामी पुस्तक में शेक्सपियर की महत्ता पर शंका की। ७ अगस्त १८५२ ईसवी के चेम्बर्स जर्नल नामक पत्र में इसी विषय पर एक और लेख निकला। जनवरी १८५६ ई० के 'पटनम्समंथली' (Patnam's Monthly) नामक दूसरे पत्र में मिस डेलिया नामक बेकनवंशीया कुमारी ने एक लेख में बड़ी विचित्र युक्तियो से यह दिखाया कि यह सब नाटक शेक्सपियर के नहीं, किन्तु बेकन के लिखे हुए हैं। इस सिद्धान्त का प्रचार करने वाली सब से बडी यही कुमारी थी, जो पागल होकर २ सितम्बर १८५९ ईसवी में मर गई। परन्तु इसके पश्चात् अमेरिका वालो ने इस सिद्धान्त को बड़ी गम्भीर-दृष्टि से देखा और १८६६ ई० में नेथेनियल होम्स नामक एक वकील ने बेकन के पक्ष में एक बहुत

बड़ी पुस्तक लिखी। १८८७ ई० में मिस्टर इग्नेशियस डौनेली ने, जो मिनेसोटा का रहनेवाला था, 'दीग्रेट क्रूप्टो ग्राम' नामक पुस्तक में सिद्ध किया कि न केवल शेक्सपियर के नाटक ही किन्तु मार्लो के नाटक, मौण्टेन के लेख ग्रौर बर्टन का 'एनोटमी ग्रौर मेलकली भी बेकन के लिखे हुए हैं। इन सबका उत्तर लन्दन के प्रसिद्ध पत्र 'दी टाइम्स' में दिसम्बर १९०१ ग्रौर जनवरी १९०२ में निकल चुका है।

१८८५ ई० में इन सिद्धान्तों का प्रचार करने के लिए एक सभा लन्दन में स्थापित हुई, जिसने बेकोनियाना नामक एक पत्र निकालना आरम्भ किया। १८९२ में चिकागो से भी इसी नाम का एक त्रैमासिक पत्र निकला। कहते हैं कि इस विषय की अब तक इस ६३ वर्ष के भीतर ५०० से अधिक पुस्तके लिखी जा चुकी हैं। परन्तु बहुत से प्रमाण इस बात के हैं कि लार्ड बेकन इन नाटको को नहीं लिख सकता था।

फ्रांसिस बेकन एलीजिबिथ के समय का बहुत बडा फिला-सफर ग्रौर गद्य-लेखक हो गया है। वह बडा विद्वान था ग्रौर उसके ग्रन्थो में बहुत सी ऐसी बाते पाई जाती हैं जिनका वर्णन शेक्सपियर ने भी किया है। इसके अतिरिक्त बेकन कुछ ऐसे ग्रन्थों का भी अपने पत्रों में वर्णन करता है जो उसके नाम से प्रचलित नहीं हैं। इन्हीं के आधार पर लोगों का विचार है कि ये विचित्र नाटक बेकन ने लिखे। दूसरी बात यह है कि बहुत

से विद्वान् जब इन नाटकों की विचारशील बातों को शेक्सपियर के उस जीवन के साथ संयुक्त करते हैं जब वह लूसी के पार्क में खरगोश पकड़ते पाया गया और उस पर मार पड़ी तो उनको लज्जा के मारे विश्वास नहीं आता और वे झट यह स्वीकार कर लेते हैं कि जिस मस्तिष्क से ऐसे ऐसे रत्न निकले वह कदापि स्ट्रेटफ़ोर्ड का खरगोश-चोर न था। और जहाँ इसी कारण से बहुत से विद्वानों ने शेक्सपियर की घृणित घटनाओं से इनकार कर दिया है वहाँ बेकन का सहारा पाकर बहुत से लोग उधर चले गये हैं। परन्तु हमारे विचार में इन दोनों की भूल है। संसार में हम बहुत से मनुष्य देखते हैं जिनके भिन्न भिन्न अवस्था के कार्यों में पूर्व पश्चिम का भेद है। इसके अतिरिक्त बेकन-सिद्धान्त तो ऐसा निर्मूल है कि उसमें कल्पना के सिवा और कुछ भी नहीं। इस पर हनरी ग्रविङ्ग ने एक अच्छा लेख लिखा है, जिसकी कुछ युक्तियाँ हम भी यहाँ उद्धृत करेंगे।

सबसे पहले इस बात के बहुत से प्रमाण हैं कि शेक्सपियर अपने प्रारम्भिक जीवन में दूसरों के नाटकों को काट छाँट कर नाट्य-सभाओं की प्रार्थना पर समयानुकूल बना दिया करता था और इस काम में वह इतना प्रवीण और इसलिए प्रसिद्ध हो गया था कि कई बड़े नाटक-लेखक उससे डाह करने लगे थे और जब तब उसको बुरा भला भी कहते थे। उनमें से एक ग्रीन (Green) था जिसने उसे "काग" की उपमा दी है जो

"हमारे पर लगाकर उड़ने लगा है" और शेक्सपियर के बदले उसे शेक्स सीन (नाटकीय अङ्कों का बिगाड़ने वाला) लिखा है। यहाँ दो बातें सिद्ध हैं। (१) शेक्सपियर की कीर्ति उस समय इतनी बढ़ती जाती थी कि बड़े बड़े लेखक भी चौंक गये थे, (२) जिसकी ओर ग्रीन ने संकेत किया है वह बेकन नहीं किन्तु शेक्सपियर है जिसके लिए शेक्स-सीन शब्द का प्रयोग किया गया है। इसके सिवा समकालीन लेखक बेन जौनसन का उसको "पवन मराल" कहना सिद्ध करता है कि यदि बेकन इन नाटकों का लेखक होता तो कम से कम बेन जौनसन आदि मनुष्य अवश्य इस बात को जानते, क्योंकि इनका सम्बन्ध शेक्सपियर के साथ बहुत निकट का था। जो लोग शेक्सपियर की अयोग्यता के कारण बेकन को यह सब यश देना चाहते हैं उनको यह भी ध्यान रखना चाहिए कि यद्यपि कभी कभी शेक्सपियर बेकन से मिला करता था, परन्तु उसकी उससे परम मित्रता नहीं थी। ऐसी अवस्था में कैसे सम्भव था कि बेकन अपने अपूर्व लेखों को गुप्त रीति से शेक्स पियर के हवाले कर देता। और अगर शेक्सपियर ऐसा ही अयोग्य था तो बेकन जैसे विद्वान् पुरुष का शेक्सपियर जैसे नीच पुरुष से कैसे मेल हुआ और उसने क्यों इसे अपना स्थानापन्न नियत किया। यदि बेकन शेक्सपियर से मिलता था तो केवल इसलिए कि दोनों साहित्य के प्रेमी थे। इसके सिवा उनमें कोई सम्बन्ध नहीं था।

सबसे बड़ा और अच्छा प्रमाण बेकन-सिद्धान्त के विरुद्ध यह है कि यद्यपि बेकन बड़ा विद्वान् और फ़िलासेफ़र था परन्तु उसे नाट्य-शास्त्र का कुछ भी ज्ञान नहीं था। सम्भव है कि बेकन शेक्सपियर से भी उच्च विचारों को प्रकट कर सके परन्तु यह कैसे सम्भव है कि उन विचारों को नाट्य-विद्या जाने बिना नाट्य-शाला के योग्य नाटकों का रूप दे सके। हमने 'शेक्सपियर का नाट्य' नामक लेख में बहुत कुछ यह दिखलाने की कोशिश की है कि शेक्सपियर बड़ा प्रवीण नाट्य-कार था। उसके नाटकों से यह बात भली प्रकार प्रकट होती है कि नाट्य-शाला के नियमों का उसे भली प्रकार बोध था। और जो बातें उसे सूझी हैं वह नाट्य-कार के सिवा अन्य को सूझ नहीं सकती थीं। वह नाटक और नाट्य विद्या से इतनी उपमायें लेता है कि हम चकित रह जाते हैं और मानना पड़ता है कि इन नाटकों का निर्माता बड़ा भारी नाट्य-कार है। "कोरियोलेनस" में लिखा है—

"It is a part that I shall blush in acting'

"यह वह पार्ट है जिसके खेलने में मुझे लज्जा होगी"

'You have put me now to such a part, which never I shall discharge to the life'

"आपने मुझे वह पार्ट दिया है जिसे मैं आयु पर्यन्त नहीं खेल सकता"। बेकन नाट्य-कार न था। भला उसे यह बातें कैसे सूझ सकती थीं। फिर "द्वितीय रिचार्ड" में देखिए।

" As in a theatre, the eyes of Men
After a well-graced actor leaves the stage
Are idly bent on him that enters next,
Thinking his prattle to be tedious
Even so, or with much more contempt, men s eyes
Did Scowl on gentle Richard "

"जिस प्रकार एक उत्तम नाट्य-कार के रङ्गभूमि से चले आने के पश्चात् दूसरे की ओर लोग रुचि के साथ नहीं देख सकते, इसी प्रकार अथवा इससे भी अधिक घृणा से लोग सुयोग्य रिचार्ड की ओर देखने लगे।"

बेकन जैसा इतिहास-वेत्ता रिचार्ड के इस अपमान को नाट्य-सम्बन्धी शब्दों में कभी प्रकट न करता।

बेकन वकील भी था। अब देखिए, शेक्सपियर नाट्य-सम्बन्धी सूचनाओं में कभी अशुद्धि नहीं करता, परन्तु कानूनी बातों में उससे प्राय चूक हो जाती है।

बेकन कभी अपनी कविता के लिए प्रसिद्ध नहीं हुआ। शेक्सपियर सदा से प्रसिद्ध है। अपनी मृत्यु से पहिले बेकन ने इजील के भजनों का पद्य में अनुवाद किया है जिस से विदित होता है कि उसकी कविता और इस महाकवि की कविता में आकाश पाताल का भेद है।

बहुतसी अन्य त्रुटियाँ भी शेक्सपियर के नाटकों में ऐसी पाई जाती हैं जो एक नाट्य कार या नाटक-लेखक के लिए तो

बुरी नहीं हैं, परन्तु एक ऐतिहासिक अथवा भूगोल-वेत्ता के लिए सचमुच लज्जाप्रद हैं। रोम के देवतों का नाम ड्रूड लोगों के साथ संयुक्त कर दिया गया है और राजा जॉन के समय में तोपों का वर्णन है। यह बड़ी ऐतिहासिक अशुद्धि है। फिर देखिए, वैलिण्टायन वैरोना से मिलान को समुद्र-यान द्वारा जाता है और 'तूफ़ान' में प्रोस्पैरो मिलान के फाटक पर ही जहाज में सवार होता है। वेकन जैसा भूगोल वेत्ता कभी यह भूल न करेगा। इसलिए शेक्सपियर के गुण और दोष दोनो यह बता रहे हैं कि ये शेक्सपियर के ही गुण और दोष हैं न कि किसी अन्य के। वेकन-सिद्धान्त के प्रचारक चाहे कितना ही प्रयत्न क्यों न करें परन्तु जो यश शेक्सपियर को प्राप्त हुआ है उससे वे उसे वञ्चित नहीं कर सकते।

सम्भव है कि बहुत से पाठकों को हमारा शेक्सपियर-वेकन लेख रुचिकर न हो। परन्तु इससे उनको यह विदित हो जायगा कि पाश्चात्य देशों में साहित्यसम्बन्धी वादानुवाद किस प्रकार हुआ करते हैं और उनसे हम अपना देशीय साहित्य सुधारने में क्या क्या शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं।

हिन्दी-शेक्सपियर

छठा भाग

विण्डसर की हँसमुख स्त्रियाँ

(Merry Wives of Windsor)

विण्डसर* में पेज और फ़ोर्ड नामी दो धनी भद्र पुरुष रहते थे, जिन की स्त्रियाँ बड़ी रूपवती थीं। परन्तु पेज की पुत्री ऐनी अतीव सुन्दरी थी और उसके विवाह की लालसा कई पुरुषों के मन में थी। उनमें से एक का नाम डाक्टर केयस था, जो एक फरांसीसी वैद्य था। दूसरा स्लेण्डर शैलो नामी गाँव के एक मुखिया का भतीजा था। ऐनी का तीसरा चाहने वाला फैण्टन था, जिसे ऐनी भी चाहती थी। परन्तु उसके मा बाप अर्थात् पेज और उसकी स्त्री फ़ैण्टन को अपना दामाद बनाना स्वीकार नहीं

---

* विण्डसर इँगलैण्ड में एक स्थान का नाम है।

करते थे। उन्होंने .फ़ैण्टन से स्पष्ट कह दिया था कि तुम हमारे घर न आया करो और हम कदापि अपनी कन्या का विवाह तुम्हारे साथ नहीं करेंगे। यद्यपि बिना उनकी राजी के भी यह विवाह हो सकता था, परन्तु जब कभी फ़ैण्टन ऐनी से इस सम्बन्ध में वार्तालाप करता था तो ऐनी यही कह देती थी कि आप मेरे पिताजी को प्रसन्न कीजिए। एक दिन निराश हो कर .फ़ैण्टन ने ठण्डी साँस लेकर ऐनी से कहा—

"प्यारी ऐनी! मुझे दीखता है कि कभी तुम्हारे पिताजी मुझ से .खुश न होंगे। इसलिए तुम उनके आसरे पर मत छोड़ो।"

ऐनी—हाय! फिर क्या हो?

.फ़ैण्टन—तुम स्वय ही कार्य्यवाही करो। तुम्हारे पिताजी मुझ से नाराज है। वे कहते हैं कि तुम बड़े धनी घराने के थे। तुमने सब धन लुटा दिया। इसलिए केवल धन-प्राप्ति के लिए ऐनी से विवाह करना चाहते हो। तुम्हें ऐनी से कुछ प्रेम नहीं है।

ऐनी—शायद उनका कथन ठीक हो।

.फ़ैण्टन—नहीं प्रिये! नहीं! जो कुछ मुझ में दोष हैं उनको तुमसे न छिपाऊँगा। सच बात यह है कि पहले पहल मैंने धन के लिए ही विवाह की इच्छा की थी, परन्तु मन चलाते ही मैं तुम पर इतना आसक्त हो

गया हूँ कि तुम्हारे प्रेम को धन से भी अधिक समझता हूँ।

पेनी—फैण्टन! भले फैण्टन! मेरे पिताजी से फिर प्रार्थना करो। सम्भव है कि वह मानही जाय। यदि वह न मानेंगे तो कुछ और उपाय किया जायगा।

जब यह बातें हो रही थीं उसी समय स्लैण्डर शैलो के साथ वहाँ आगया। उसके साथ एक वृद्धा स्त्री क्किली भी थी जिसका हाल हम आगे चल कर लिखेंगे। यहाँ यही कह देना काफी है कि यह डाकृर केअस की दासी थी और प्रेमासक्त स्त्री पुरुषों के बीच में पत्र पहुँचाया करती थी। डाकृर केअस इसी के द्वारा पेनी को सदेसा पहुँचाया करता था और पेनी की माता डाकृर केअस से राजी होने के कारण इसे घर में आने दिया करती थी। पेनी का बाप स्लैण्डर से राजी था। इस प्रकार एक घर में तीन मत थे। लड़की यह चाहती थी कि जिस प्रकार हो सके फैण्टन से विवाह हो जाय। पिता उसका स्लैण्डर को दामाद बनाना चाहता था। माता केअस को अपनी कन्या देना चाहती थी।

स्लैण्डर धनी पुरुष था। उसकी वार्षिक आय ३०० पौण्ड थी, परन्तु उसमें बुद्धि नहीं थी। पेनी का पिता पेज उसे केवल धनी देख कर ही अपनी बेटी देना चाहता था, जिस प्रकार आज

कल भारतवर्ष के लोग केवल धनियो के साथ विना उनके गुणों का विचार किये हुए अपनी पुत्रियाँ व्याह देते हैं।

जब ये लोग वहाँ आये तो शैलो ने क्रिकली से कहा "क्रिकली! पेनी को बुलाओ। मेरा भतीजा उससे कुछ बातें करना चाहता है।"

पेनी ने स्लेण्डर को देखकर अपने जी में कहा—"यह मेरे पिता का प्रस्ताव है। हाय तीन सैा पैाण्ड के लिए दोष भी लोगो को गुण प्रतीत होते हैं।" जब वह उनके निकट आई तो शैलो ने कहा—

'पेनी! मेरा भतीजा तुम से प्रेम करता है"।

स्लेण्डर—"हाँ, मुझे पेनी सब स्त्रियो से अधिक प्यारी है।

शैलो—वह तुमको सहधर्मिणी बनाना चाहता है।

स्लेण्डर—सहधर्मिणी! हाँ, जो मेरा धर्म है वह इसका होगा।

शैलो—वह आप को १५० पैाण्ड देगा।

पेनी—श्रीमन्, आप उसको स्वयं कहने दीजिए।

शैलो—बहुत अच्छा! बहुत अच्छा! (स्लेण्डर से) लड़के! चल, पेनी तुझे बुलाती है।

पेनी—कहिए स्लेण्डर जी!

स्लेण्डर—भली पेनी!

पेनी—क्या आज्ञा?

स्लेण्डर—मुझे तो कुछ कहना नहीं है। तुम्हारे पिता और मेरे चचा ने विवाह का प्रस्ताव किया है। यदि होजाय तो हरि-इच्छा। वही मेरी अपेक्षा अधिक कह सकते हैं। देखो तुम्हारे पिताजी आते हैं।

इस समय पेज और उसकी स्त्री वहाँ पर आ गये। और पेज ने फ़ैण्टन को देखकर क्रोध से कहा—

"फ़ैण्टन! यह बुरी बात है। तुम मेरे घर क्यों आते हो। कई बार मैं कह चुका हूँ कि पेनी को वर मिल गया।

फैण्टन—पेज! क्रोध न कीजिए। शान्त हूजिए!

पेज की स्त्री—फैण्टन! मेरी बेटी के समीप न आया करो।

पेज—यह आप के लिए नहीं है।

फेण्ट०—अजी सुनिए तो सही!

पेज ने फ़ैण्टन की बात न सुनी और स्लेण्डर तथा [illegible] साथ वार्तालाप करता हुआ बाहर चला गया। [illegible] संकेत पर फैण्टन ने पेज की स्त्री से कहा।

"मिसिस पेज*! मुझे आपकी कन्या से सच्चा प्रेम है, चाहे कितनी ही मुझ से घृणा करे मैं इस प्रेम को [illegible] सकता। आप मेरे ऊपर दया कीजिए"।

* अंगरेजी नियम यह है कि [illegible] मिसिस पेज [illegible] मिसिस फोर्ड। अर्थात् पति के नाम के पहले मिसिस लगा[illegible]

ऐनी—पूज्य माताजी, मेरा विवाह इस मूर्ख (स्लेण्डर) से न कीजिए।

पेज की स्त्री—नहीं नहीं। मैं तेरे लिए एक उत्तम वर ढूँढूँगी।

मिसिस पेज का तात्पर्य यहाँ डाक्टर केअस से था। परन्तु वह अपने विचार से अपने पति को सूचित नहीं करती थी।

इन उपर्युक्त पुरुषों के अतिरिक्त विण्डसर में एक और मनुष्य रहता था जिसका नाम सर जौन फौल्स्टाफ था। यह फ़ौल्स्टाफ बहुत मोटा था। परन्तु उसमें बुद्धि नहीं थी। उसके पास धन भी नहीं था परन्तु उसके साथी प्रायः इधर उधर से लूट मार कर लाया करते थे और उसी से उसका निर्वाह होता था। वह बहुधा एक सराय में रहा करता था, जहाँ पथिकों को मद्य पिलाकर नशे की दशा में वह उनकी सम्पत्ति हरण कर लेता था। इस प्रकार छोटे छोटे झगड़े नित्य प्रति वहाँ हुआ करते थे। एक दिन फ़ौल्स्टाफ़ ने पेज और फोर्ड की स्त्रियों के विषय में सुना कि वे रूपवती होने के अतिरिक्त धनवती भी हैं और उनके पति का रुपया उन्हीं के स्वत्व में रहता है। इस पर फ़ौल्स्टाफ़ के मुँह में पानी भर आया और उसने इन दोनों स्त्रियों से प्रेम करके धन प्राप्ति की इच्छा की, क्योंकि प्राय असती स्त्रियाँ अपने मित्रों को बहुत धन लुटा करती हैं।

इस इच्छा की पूर्त्ति के लिए फौल्स्टाफ ने केअस की दासी किकली को गाँठना चाहा। किकली वास्तव में इन बातों में बड़ी निपुण थी और स्वयं भी यह चाहती थी कि इस प्रकार के कार्य्यों से अपना निर्वाह किया करे और आँख के अंधों और गाँठ के पूरों को लूटा करे। किकली ने फौल्स्टाफ से कुछ इनाम लेकर उसके पत्र मिसिस फोर्ड और मिसिस पेज तक पहुँचाने का भार अपने ऊपर ले लिया और उद्योग करने लगी। परन्तु इसके साथ ही किकली का प्रयोजन केवल धनोपार्जन था। वह व्यर्थ किसी स्त्री को बहकाना नहीं चाहती थी।

मिसिस पेज ने फौल्स्टाफ का पत्र पढ़ा, जिसमें लिखा हुआ था—

'यह न पूछो कि मैं तुमसे क्यों स्नेह करता हूँ, क्योंकि प्रेम किसी कारण से नहीं होता। तुम यदि युवती नहीं हो तो क्या चिन्ता, क्योंकि मैं भी तो युवक नहीं हूँ। प्रेम तो है। तुम हँसमुख हो। और मैं भी हँसमुख हूँ। यहाँ इतना ही कहना काफी है कि मैं तुम पर आसक्त हूँ। मैं यह नहीं कह सकता कि मुझ पर दया करो, क्योंकि मैं वीर हूँ और वीरों को ऐसा कहना अनुचित है। हाँ, यही प्रार्थना है कि मुझ से प्रेम करो।

तुम्हारा सच्चा और दिन रात
चाहनेवाला
जौन फौल्स्टाफ"

मिसिस पेज पत्र को देखते ही क्रोध में भर गई और कहने लगी कि देखो मेरी युवावस्था में भी ऐसे प्रेम-पत्र मेरे पास नहीं आये थे। फिर यह कौन मूर्ख है जो इस प्रकार मुझ से परिचय जताता है। वह फौल्स्टाफ को जानती थी। दो चार बार उससे बातचीत भी हो चुकी थी। परन्तु यह जान कर कि फौल्स्टाफ उसे कुदृष्टि से देखता है बड़ा क्रोध आया और कहने लगी कि ऐसे दुष्टों को दण्ड देने के लिए अंगरेजी पार्लीमेंट की ओर से नियम होने चाहिए।

इतने में मिसिस फोर्ड वहाँ पर आगई और कहने लगी "मिसिस पेज! मैं तुम्हारे घर को जारही थी।"

मिसिस पेज—और सत्य जानो मै तुम्हारे घर आरही थी।

मिसिस फोर्ड—देखो, मेरे पास एक पत्र आया है।

मिसिस पेज—आहा! यह तो मेरे ही पत्र के समान है। अक्षर अक्षर मिलता है। भेद केवल इतना है कि मेरे पत्र में पेज लिखा है और तुम्हारे में फोर्ड। प्रतीत होता है कि उसने बहुत से पत्र छपवा लिये हैं जिसको चाहे उसके पास भेज देता है।

मि० पेज—मुझे स्वयं सोच है । उसने मेरा कौन सा काम ऐसा देखा जिससे उसे इस दुष्टता की आशा हुई । हमको अवश्य उससे बदला लेना चाहिए ।

मि० फोर्ड—हाँ जी यह ठीक है । अगर मेरे पति जी इस पत्र को देख पावे तो उनके मन में मेरी ओर से सन्देह हो जाय ।

अब इन दोनो ने चालाकी से फॉल्स्टाफ को दण्ड देने के लिए यह विचार किया कि किसी प्रकार धोखा देकर उसे अपने घर बुलाना चाहिए। इसलिए उन्होंने क्विकली के द्वारा फौल्स्टाफ के पास एक संदेसा भेज दिया ।

जब क्विकली फौल्स्टाफ के पास लौट कर गई तो उसने कहा "प्रणाम ! महाशय !"

फौल्स्टाफ—बहुत बहुत प्रणाम । कहो क्या है ?

क्वि०—महाशय ! मिसिस फोर्ड ने मुझे भेजा है—निकट आ कर सुनिए । गुप्त बात है—मै डाक्टर केअस के पास रहती हूँ ।

फौल्०—कहिए मिसिस फोर्ड ने क्या कहा है ?

क्वि०—अजी निकट आइए ।

फौल्०—कहो । यहाँ कोई नही सुनता । ये सब अपने ही आदमी हैं ।

क्वि०—सारांश यह है कि मिसिस फोर्ड पर तुमने ऐसा जादू फैलाया है जैसा किसी बड़े से बड़े पुरुष ने भी

पिस्टल०—अरे वह तो बड़ी छोटी, युवती वृद्धा, धनी निर्धन सभी प्रकार की स्त्रियों से प्रेम करता है। फोर्ड! सचेत हो! जौन से सचेत हो!

फोर्ड—क्या मेरी स्त्री को चाहता है।

पिस्ट०—हाँ तेरी स्त्री को और पेज की स्त्री को। देखना हो तो देख, नहीं तो पछताना पडेगा।

यह कह कर पिस्टल तो चला गया और फोर्ड ने पेज से कहा—

"तुमने सुना कि इस दुष्ट ने क्या कहा!"

पेज—हाँ! और क्या तुमने नहीं सुना कि उसने मुझ से क्या कहा।

फोर्ड—क्या तुम इसकी बात को सच जानते हो?

पेज—नहीं नहीं! सरजौन ऐसा नहीं है। इन मूर्खों को उसने निकाल दिया है। इसीलिए वे इसके विरुद्ध लोगों को भड़काते फिरते हैं।

फोर्ड—क्या यह इसी के नौकर थे?

पेज—हाँ! थे!

फोर्ड—मैं उसको दण्ड दूँगा। मुझे यह बात अच्छी नहीं मालूम होती।

पेज—अगर वह मेरी स्त्री के पास आये तो मैं उसे स्वयं उसके पास भेज दूँ। मैं जानता हूँ कि वह भड़काने

के सिवा उससे और कुछ न कहेगी। मुझे अपनी स्त्री का विश्वास है।

फोर्ड—अपनी स्त्री पर मुझे भी विश्वास है। परन्तु मैं ऐसा करने को तैयार नहीं हूँ। अति-विश्वास उचित नहीं।

अब फोर्ड ने यह विचार किया कि भेस बदल कर फौल्स्टाफ के पास जाना चाहिए और उस से अपनी स्त्री का कुछ भेद जानना चाहिए। इसलिए अपना नाम ब्रुक रखकर वह वहाँ गया। और कहने लगा—"आप की जय हो।"

फौल्स्टाफ—आपकी भी जय हो। क्या आप मुझ से बात करेंगे।

फोर्ड—जी हाँ। मैं यहां का एक भद्र पुरुष हूँ। मैंने बहुत कुछ व्यय किया है। मेरा नाम ब्रुक है।

फौ॰—श्रीमन् ब्रुक! मैं आप से अधिक परिचित होना चाहता हूँ।

फोर्ड—सर जौन! मैं आप से कुछ लेने नहीं आया। क्योंकि स्पष्ट बात यह है कि मेरी आर्थिक दशा आप से अच्छी है। और इसी धन के ज़ोर से मैं बिना जाने बूझे यहाँ तक आगया हूँ। कहावत है कि धन के सामने सब मार्ग खुल जाते हैं।

फौल॰—रुपया बड़ी चीज़ है।

फ़ोर्ड—मेरी थैली में कुछ रुपया है जिसके बोझ से मैं दबा जाता हूँ। सो आप आधा या सब लेकर मुझे हलका कीजिए।

फ़ौल०—मैं नहीं समझता कि मेरा इस पर क्या अधिकार है।

फोर्ड०—यदि आप सुनें तो मैं अभी आपको बताये देता हूँ।

फ़ौल०—कहिए महाशय ब्रुक! मै आपकी सेवा करने का उद्योग करूँगा।

फोर्ड—मैंने सुना है कि आप बड़े विद्वान् है। और मैं आप को बहुत दिनो से जानता हूँ। यद्यपि आप मुझे नहीं जानते। मै आप से ऐसी बात कहूँगा जिससे मेरी त्रुटियां मालूम हो, पर मैं चाहता हूँ कि आप एक आँख से मेरी त्रुटियाँ देखे और दूसरी से अपनी। जिससे मेरी त्रुटियां बहुत बडी न मालूम हो। क्योंकि आप भली प्रकार जानते हैं कि इस प्रकार के दोष बहुत से लोगो में पाये जाते हैं।

फौल०—कहिए!

फ़ोर्ड—यहाँ एक स्त्री है, जिसके पति का नाम फोर्ड है।

फौल०—अच्छा!

फ़ोर्ड—मैं बहुत दिनो से उसे चाहता हूँ। और बहुत रुपया खर्च कर चुका हूँ। कई बार अच्छी अच्छी चीजें उसके लिए भेजीं और नौकरों द्वारा भी बहुत कुछ

व्यय किया। परन्तु इन सब कष्टों के बदले कुछ न मिला। मुझे उसकी प्राप्ति नहीं हुई।

फौल्०—क्या कभी वह तुम से नहीं बोली?

फोर्ड—कभी नहीं।

फोल्०—तो फिर तुम्हारा प्रेम कैसा?

फोर्ड—जैसा ग़ैर की भूमि में बनाया हुआ मकान। क्योंकि वह केवल इसलिए छोड़ना पड़ता है कि भूमि के चुनाव में भूल हुई।

फौल्०—मुझ से क्या चाहते हो?

फोर्ड—यद्यपि मुझे दिखलाने को वह एक सती स्त्री है परन्तु मैंने सुना है कि अन्य पुरुषों से वह प्रेम रखती है। आप मुझे बड़े सज्जन, शीलयुक्त, सुन्दर और मनोहर मालूम होते हैं।

फौल्०—अजी नहीं।

फोर्ड०—यह ठीक है। यह रुपया रक्खा हुआ है। आप इच्छानुसार व्यय कीजिए। मैं आपका दास हूँ। केवल यही प्रार्थना है कि इस मिसिस फोर्ड के सतीत्व पर आक्रमण किया जाय। यदि वह अन्य पुरुषों की बात मानेगी तो आपकी अवश्य मानेगी।

फौल्स्टाफ—यह तो ठीक नहीं जान पड़ता कि उद्योग मैं करूँ और उसका फल आप भोगें।

फ़ोर्ड—आप मेरा तात्पर्य्य नहीं समझे। इस समय वह बड़ी सती बनती है। और मेरी बात नहीं मानती। मेरा प्रयोजन यह है कि यदि वह आपके वश में हो जाय तो उसकी पवित्रता नष्ट हो जायगी, फिर वह मुझे झट स्वीकार कर लेगी। इस समय वह एक ऐसे पवित्र और तेजोमय मणि के तुल्य है कि मैं उसकी ओर नहीं देख सकता।

फौल॰—महाशय ब्रुक! पहले तो मैं आपका रुपया लिये लेता हूँ। फिर आप से प्रतिज्ञा करता हूँ कि आपकी मनोकामना सिद्ध होगी।

फोर्ड—भले मित्र!

फौल॰—महाशय ब्रुक! आप सफल होगे!

फोर्ड—यदि आप को रुपये की आवश्यकता हो तो और ले लेना!

फौल्स्टाफ—यदि रुपया है तो मिसिस फोर्ड की भी कमी नहीं है। मुझे उसने बुलाया है सो मै आज दस ग्यारह बजे के बीच में जाऊँगा। क्योंकि उस समय उसका दुष्ट पति घर से वाहर चला जायगा! उसी समय तुम मेरे पास आना।

फोर्ड—क्या आप फोर्ड को जानते हैं।

फौल्स्टाफ॰—मैं उस दुष्ट को नहीं जानता। मैंने सुना है कि

उसके पास गठरी भर रुपया है। इसीलिए मैंने उसे गाँठा है कि कुछ रुपया मिल जाय।

फ़ोर्ड०—यदि आप फोर्ड को पहचानते तो अच्छा होता क्योंकि यदि वह कहीं मार्ग में मिल जाय और आप न पहचान सकें तो बड़ी दुर्गति होगी।

फौल्०—मैं ऐसे मूर्खों से नहीं डरता। वह मेरा क्या करेगा। एक थप्पड़ में उसकी आँखें निकाल लूँगा। आज रात को आओ। मैं उस दुष्ट से बाहर लड़ता रहूँगा और तुम उसके घर में घुस जाना।

यह बातें करके फोर्ड वहाँ से चल दिया। परन्तु उसे यह जानकर बड़ा खेद हुआ कि जो कुछ पिस्टल कहता था वह सब ठीक था। वह पछताने लगा कि मैंने ऐसी दुष्ट और कुटिला स्त्री से क्यों विवाह किया। वह कहने लगा कि पेज मूर्ख है जो अपनी स्त्री को अच्छी जानता है। अब इसका कुछ उपाय करना चाहिए। अब उसने इरादा किया कि दस और ग्यारह बजे के बीच में घर आकर अपनी स्त्री और फोल्स्टाफ़ दोनों को दण्ड दूँगा।

शाम हुई और फोल्स्टाफ के आने का समय निकट आया। मिसिस फोर्ड और मिसिस पेज दोनों फोर्ड के घर में बैठी बातचीत कर रही थीं। अन्त में कुछ वाद-विवाद के पश्चात् यह निश्चित हुआ कि एक पीपा, जिसमें

धुलने के कपडे रक्खे जाया करते थे—तैयार रक्खा जाय। और मिसिस फ़ोर्ड ने अपने नौकरों को बुलाकर कहा—"देखो निकट के घर में बैठे रहो। जिस समय में पुकारूँ चुपके से चले आओ और इस पीपे को लेजा कर टेम्स नदी की निकटस्थ खाईं में इसके कपडों को फेंक आओ।"

जब वे लोग वहाँ से चले गये तो फ़ौल्स्टाफ के नौकर रौबिन ने आकर कहा।

"मेरा स्वामी घर के पिछले द्वार पर खडा हुआ है।"

अब मिसिस पेज तो वहाँ से चली गईं और फ़ौल्स्टाफ घर में घुस आया और कहने लगा "हे मेरे बहुमूल्य रत्न! आज मैंने तुझे पा लिया। आज मेरी मनोकामना पूरी हुई। अब यदि मैं मर भी जाऊँ तो भी कुछ चिन्ता नहीं।"

मिसिस फोर्ड०—प्यारे सर जौन!

फ़ौल०—मिसिस फोर्ड, मुझे बहुत बातें नहीं आतीं। पर यदि तुम्हारा पति मर जाय तो मैं तुम को अपनी पत्नी बनाना चाहता हूँ।

मिसिस फ़ोर्ड—मैं तुम्हारी पत्नी! भला मैं किस योग्य हूँ?

फ़ौल०—वाह! फ़्रांस के राजमहल में भी ऐसी सुन्दर स्त्री नहीं है। तुम्हारी आँखें मणि के समान चमकती हैं। तुम्हारी भौंए कैसी मनोहारिणी हैं। मैं तुझे प्यार करता हूँ और तेरे सिवा किसी को नहीं।

मि० फोर्ड—महाशय! मुझे धोखा मत देना। मैंने सुना है कि मिसिस पेज से तुम्हारा स्नेह है।

फ़ैाल्०—नहीं! नहीं!

मि० फोर्ड—ईश्वर जानता है कि मुझे तुमसे कितना स्नेह हे श्रौर एक दिन तुमको भी मालूम हो जायगा।

जब ये बाते हो रही थीं उसी समय मिसिस पेज ने श्राकर द्वार खटखटाया। फ़ैाल्स्टाफ डर के मारे किवाड के भीतर हो गया श्रौर मिसिस पेज श्राकर कहने लगी।

"मिसिस फोर्ड तुमने क्या किया। श्राज तुम्हारी बदनामी हो गई! तुम बरबाद हो गई!"

मि० फ़ोर्ड—क्या बात है?

मि० पेज—ऐसा श्रच्छा पति पाकर भी तुमने उसे धोखा दिया!

मि० फोर्ड—कैसा धोखा?

मि० पेज—कैसा धोखा! मुझे बहकाती हो। मैं तुम्हें ऐसा नहीं जानती थी।

मि० फोर्ड—बात क्या है?

मि० पेज—श्ररे भोली स्त्री! देख, तेरा पति पुलिस के साथ श्रपने घर की खोज में श्रा रहा है। उसे ज्ञात हुश्रा है कि तुमने किसी मनुष्य को यहां छिपा रक्खा है।

मि० फोर्ड—क्या? क्या?

मि० पेज—यदि यहाँ कोई न हो तो अच्छा है। परन्तु इस में सन्देह नहीं कि तुम्हारे पति के साथ नगर का नगर उस संदिग्ध मनुष्य की खोज में चला आ रहा है। यदि तुम निरपराधी हो तो बहुत अच्छी बात है और मैं ख़ुश हूँ। पर यदि कोई हो तो उसे शीघ्र ही निकाल दो। चकित मत हो। अपने नाम में बट्टा न लगाओ।

मि० फोर्ड०—बहिन! एक आदमी तो अवश्य है परन्तु मुझे अपनी बदनामी का इतना डर नहीं है जितना उसकी जान का है। यदि मेरे हजार पौंड खर्च हो जायँ और यह भले प्रकार बाहर निकल जाय तो भी अच्छा हो।

मि० पेज०—तुमने मुझे धोखा दिया। अब तुम उसे घर में नहीं छिपा सकतीं। देखो तुम्हारा पति तो दरवाजे पर आ गया। यदि वह छोटे क़द का आदमी हो तो उसे इस पीपे में बिठलादो और उसके ऊपर से मैले कपड़े रखदो। जिससे किसी को कुछ सन्देह न हो।

मि० फोर्ड०—हाय! अब मैं क्या करूँ! वह तो इतना बड़ा है कि इसमें नहीं समा सकता।

इतने में फ़ौल्स्टाफ निकल कर बाहर आया और घबराकर कहने लगा।

"मैं घुसा जाता हूँ। मैं घुसा जाता हूँ। मैं पीपे में घुसा जाता हूँ। किसी प्रकार मुझे बाहर निकाल दो।"

मिसि॰ पेज—अरे सर जौन फौल्स्टाफ ! क्या यह तुम्हारे ही पत्र थे।

फोल्स्टाफ—मैं तुम्हें चाहता हूँ और तुम्हारे सिवा किसी को नहीं। मुझे बैठ जाने दो। इस समय अधिक बातें नहीं हो सकतीं।

जब फौल्स्टाफ पीपे में बैठ गया तब उसके ऊपर से मैले कपड़े ठूँस दिये गये और मिसिस फोर्ड ने अपने नौकरों द्वारा उसे धोबिन के घर भेज दिया कि उसकी खाई में डाल दिया जाय जैसी पहले से उनको शिक्षा दी जा चुकी थी।

इतने में फोर्ड पुलिस के लोगों सहित घर में आगया और लोग इधर उधर फौल्स्टाफ को देखने लगे। पेज ने कहा—

"महाशय फोर्ड ! क्यों सन्देह करते हो। यहाँ कोई नहीं है।

फोर्ड—यजी ऊपर देखिए। अवश्य कोई मिलेगा।

डाकृर केअस—यह तो अच्छा तमाशा है। हमारे फ्रांस के पति ऐसे नहीं होते।

फोर्ड—यहाँ तो मिलता नहीं। सम्भव है कि उस दुष्ट ने डींग मारी हो !

केअस—यहाँ कोई नहीं है।

पेज—धिक् धिक् फोर्ड ! क्या तुमको लज्जा नहीं आती ! तुम्हें किसने बहका दिया।

मि० पेज—यदि यहाँ कोई न हो तो अच्छा है। परन्तु इस में सन्देह नहीं कि तुम्हारे पति के साथ नगर का नगर उस सदिग्ध मनुष्य की खोज में चला आ रहा है। यदि तुम निरपराधी हो तो बहुत अच्छी बात है और मैं खुश हूँ। पर यदि कोई हो तो उसे शीघ्र ही निकाल दो। चकित मत हो। अपने नाम में बट्टा न लगाओ।

मि० फोर्ड०—बहिन! एक आदमी तो अवश्य है परन्तु मुझे अपनी बदनामी का इतना डर नहीं है जितना उसकी जान का है। यदि मेरे हजार पौंड खर्च हो जायँ और यह भले प्रकार बाहर निकल जाय तो भी अच्छा हो।

मि० पेज०—तुमने मुझे धोखा दिया। अब तुम उसे घर में नहीं छिपा सकती। देखो तुम्हारा पति तो दरवाजे पर आ गया। यदि वह छोटे क़द का आदमी हो तो उसे इस पीपे में बिठलादो और उसके ऊपर से मैले कपड़े रखदो। जिससे किसी को कुछ सन्देह न हो।

मि० फोर्ड०—हाय! अब मैं क्या करूँ! वह तो इतना बड़ा है कि इसमें नहीं समा सकता।

इतने में फौल्स्टाफ निकल कर बाहर आया और घबराकर कहने लगा।

"मैं घुसा जाता हूँ। मैं घुसा जाता हूँ! मैं पीपे में घुसा जाता हूँ। किसी प्रकार मुझे बाहर निकाल दो।"

मिसि० पेज—अरे सर जौन फौल्स्टाफ ! क्या यह तुम्हारे ही पत्र थे ।

फौल्स्टाफ—मैं तुम्हें चाहता हूँ और तुम्हारे सिवा किसी को नहीं । मुझे बैठ जाने दो । इस समय अधिक बातें नहीं हो सकतीं ।

जब फौल्स्टाफ पीपे में बैठ गया तब उसके ऊपर से मैले कपड़े ठूँस दिये गये और मिस्सिस फोर्ड ने अपने नौकरों द्वारा उसे धोबिन के घर भेज दिया कि उसको खाई में डाल दिया जाय जैसी पहले से उनको शिक्षा दी जा चुकी थी ।

इतने में फोर्ड पुलिस के लोगों सहित घर में आगया और लोग इधर उधर फौल्स्टाफ को देखने लगे। पेज ने कहा—

"महाशय फोर्ड ! क्यों सन्देह करते हो । यहाँ कोई नहीं है ।

फोर्ड—अजी ऊपर देखिए । अवश्य कोई मिलेगा ।

डाक्टर केअस—यह तो अच्छा तमाशा है । हमारे फ्रांस के पति ऐसे नहीं होते ।

फोर्ड—यहाँ तो मिलता नहीं । सम्भव है कि उस दुष्ट ने डींग मारी हो ।

केअस—यहाँ कोई नहीं है ।

पेज—धिक् धिक् फोर्ड ! क्या तुमको लज्जा नहीं आती ! तुम्हें किसने बहका दिया ।

फ़ोर्ड—पेज महाशय ! यह मेरा दोष है और मै ही भोगता हूँ।

केअस—आपकी स्त्री बडी धर्मात्मा है।

यहाँ ये लोग .फौल्स्टाफ को ढूँढते रहे वहाँ फोर्ड के नौकरो ने कपडो सहित उसे खाई में डाल दिया जहाँ से निकल कर वह बड़ी कठिनाई से घर आया। ऐसी विपत्ति उस पर आज तक कभी नहीं पडी थी। उसके कपडे खराब हो गये थे, उसके सिर में कुछ चोट भी आई थी। पर यह अच्छा हुआ कि उसके प्राण बच गये। जैसे तैसे वह घर आया। दूसरे दिन क्विकली उसके समीप आई क्योंकि मिसिस पेज और मिसिस फोर्ड ने सिखा कर उसे भेजा था।

क्विकली—मुझे मिसिस फोर्ड ने आप के पास भेजा है।

.फौल्०—मिसिस फोर्ड ! चल हट ! मिसिस फ़ोर्ड से मेरा पेट भर गया।

क्विकली—हाय ! हाय ! यह तो उसका दोष नहीं था। उसको पश्चात्ताप है कि उसके नौकरो से भूल हुई !

फौल्०—भूल तो मुझ से भी हुई कि ऐसी मूर्खा स्त्री का विश्वास किया !

क्विकली—अजी उसे स्वयं बडा शोक हो रहा है, आप चल कर देखेंगे तो मालूम होगा। आज उसका पति आखेट को जारहा है। इसीलिए आज आपको उसने आठ और नौ बजे के बीच में बुलाया है। आप शीघ्र

उत्तर दीजिए। वह आज आपको कल की हानि का प्रत्युपकार कर देगी।

फ़ौलस्टाफ—अच्छा मे आऊँगा, उससे कह दो।

क्विकली—मैं कह दूँगी।

जब क्विकली वहाँ से चली गई तब मिस्टर फोर्ड फ़ौलस्टाफ के पास आया, जिसे देखकर उसने कहा—

"मिस्टर ब्रुक! क्या आप यह पूछने आये हैं कि मिसिस फ़ोर्ड और मुझ में कैसी बीती।"

फोर्ड—हाँ महाशय, यही मेरा प्रयोजन है।

फ़ौलस्टाफ़—ब्रुक महाशय! मैं आप से झूठ नहीं बोलूँगा। मैं कल नियत समय पर वहाँ गया था।

फोर्ड—तो क्या हुआ?

फ़ौलस्टाफ़—बड़ी बुरी बात हुई।

फोर्ड—क्या उसका विचार पलट गया!

फ़ौलस्टाफ—नहीं नहीं! उसका दुष्ट पति आगया और अपने घर को खोजने लगा?

फोर्ड—क्या उस समय आप वहीं थे?

फ़ौल॰—हाँ वहीं!

फ़ोर्ड—क्या उसने तुम्हें पकड़ लिया।

फ़ौल॰—मैं कहता हूँ। ईश्वर ने अच्छा किया कि मिसिस पेज आगई और उसने फोर्ड के आने की सूचना दी।

बस मैं कपड़ो के पीपे में बैठ गया और उसके नौकर मुझे खाईं में डाल आये।

फोर्ड—फिर आप वहाँ कितनी देर पड़े रहे?

फ़ौल्स्टाफ—अजी महाशय! मैंने आप के लिए बहुत कष्ट सहे। थोड़ी देर पीछे मैं वहाँ से उठ के आया!

फोर्ड—मुझे आप के इस कष्ट पर बड़ा दुःख होता है! अब आप मेरे लिए फिर उपाय न करेंगे?

फ़ौल्स्टाफ—अजी, अभी तो टेम्स में ही डाला गया हूँ। मैं तो ईटना* में कूदने को तैयार हूँ। आज उसका पति आखेट को जारहा है, सो मैं आठ और नौ बजे के बीच में वहाँ जाऊँगा।

उस समय आठ बज चुके थे, इसलिए फ़ौल्स्टाफ ने फोर्ड के घर को प्रस्थान कर दिया। जब वहाँ पहुँचा तो मिसिस फोर्ड से कहने लगा—

"मिसिस फोर्ड! आप के दुःख ने मुझे बेहाल कर दिया। मैं जानता हूँ कि तुम मुझे बहुत प्यार करती हो। क्या अब तुम्हे निश्चय है कि तुम्हारा पति चला गया?"

मि० फोर्ड—हाँ! जौन! आज वह आखेट को गया है।

अभी ये बातें होही रही थीं कि मिसिस पेज ने आकर द्वार पर दस्तक दी। फ़ौल्स्टाफ़ फिर पहले दिन की भाँति भीतर छिप गया और मिसिस पेज ने आकर कहा—

* इटना सिसली में ज्वालामुखी पर्वत है।

"क्या घर में कोई और है ?"

मि० फोर्ड—नहीं ! नहीं !

मि० पेज—ठीक बताओ ।

मि० फोर्ड—ठीक कहती हूँ ।

मि० पेज—अच्छा हुआ कि कोई नहीं है ।

मि० फोर्ड—क्यों ?

मि० पेज—अरे देख ! कल की भाँति तेरा पति फिर लोगों को लारहा है । और समस्त स्त्री जाति को कोस रहा है । मैंने ऐसा सन्दिग्धात्मा कोई नहीं देखा । अच्छा हुआ कि वह मोटा आदमी यहाँ नहीं है ।

मि० फोर्ड—क्या वह उसके विषय में कुछ कह रहा है ?

मि० पेज—हाँ ! हाँ ! वह शपथ खाकर कह रहा है कि कल तुमने अपने साथी को पीपे में बिठाल कर निकाल दिया । वह अभी मेरे पति से कह रहा है कि फौल्स्टाफ यहाँ अवश्य छिपा है । परन्तु मुझे हर्ष है कि वह मनुष्य इस समय यहाँ नहीं है ।

मि० फोर्ड—मेरा पति यहाँ से कितनी दूर है ?

मि० पेज—गली में है ।

मि० फोर्ड—हाय अब मैं क्या करूँ ? वह तो यहाँ है !

मि० पेज०—फिर क्या है । अब तुम मारी गई । औरउसके प्राण बचने तो असम्भव ही है । कैसी स्त्री हो ! तुम्हें

लज्जा नहीं आती। यदि उसके प्राण बचाने हों तो घर से निकाल दो।

मि० फोर्ड—क्या उसे पीपे में बिठाल दूँ।

फैल्स्टाफ (बाहर आकर)—नहीं! नहीं! मैं पीपे में न घुसूँगा। क्या इतनी देर में भाग नहीं सकता?

मि० पेज—नहीं। कदापि नहीं। तीन आदमी बन्दूक लिये द्वारों पर खड़े हैं।

फैल्०—अब क्या करूँ? क्या धुआँकश में घुस जाऊँ?

मि० फोर्ड—नहीं! वहां तो वह अपनी बन्दूक रक्खा करता है। पकड़े जाओगे!

फैल्—तो मैं बाहर निकला जाता हूँ।

मि० पेज—इस दशा में तो मारे जाओगे। भेस बदल लो!

मि० फोर्ड—भेस क्या बदला जाय?

मि० पेज—क्या किया जाय? यदि किसी मोटी स्त्री के कपड़े होते तो उनको पहन कर निकल जाता!

फैल्स्टाफ़—कुछ सोचिए। कुछ सोचिए। आज मेरी जान बच जाय!

मि० फोर्ड—मेरी दासी की एक चाची ब्रण्टफ़ोर्ड नामी इतनी ही मोटी थी। उसके कपड़े ऊपर कोठे पर रक्खे हैं।

मि० पेज—ठीक ठीक! सर जौन, जल्दी जाकर पहन लो!

फोल्स्टाफ़ ने जल्दी से बुड्ढी ब्रण्टफ़ोर्ड का भेस धारण कर लिया और मिसिस फोर्ड ने अपने नौकरों द्वारा गत दिवस की भाँति कपडों का पीपा बाहर भिजवाया।

इतने में फोर्ड, पेज और बहुत से आदमी वहाँ पर आगये और फोर्ड ने आतेही पीपे के कपडे निकाल डाले। इस समय वह क्रोध में भरा हुआ था और अपनी भार्य्या को अन्यान्य अपशब्द कह रहा था। उसकी स्त्री ने बहुत कुछ कहा कि "हैं! हैं! आज तुम क्या कर रहे हो।" परन्तु उसने एक न सुनी। जब सब कपडे देख चुका और किसी मनुष्य का पता न लगा तब वह कहने लगा—

"पेज महाशय! मैं सच कहता हूँ कि कल इसी में बैठ कर वह दुष्ट यहाँ से चला गया। मुझे ठीक सूचना मिली है कि वह यहाँ है। अजी इसी घर में है।

मि० फोर्ड—अगर तुम यहाँ किसी आदमी को पाजाओ तो मक्खी की तरह मार डालना।

पेज—यहाँ कोई नहीं है।

शेलो०—फोर्ड! यह ठीक नहीं है। तुम व्यर्थ सदेह करते हो।

फोर्ड—वह यहाँ नहीं है।

पेज—अजी तुम्हारे मन के सिवा कहीं नहीं है।

फोर्ड—अजी आज और खोज कीजिए, यदि इस समय न मिला तो कभी फिर न कहूँगा।

इस समय मि० पेज और फोल्स्टाफ कोठे पर थे। मि० फोर्ड ने आवाज दी कि तुम दोनों नीचे उतर आओ क्योंकि पति जी ऊपर किसी मनुष्य की खोज में आरहे हैं। मिस्टर .फोर्ड इस बुड्ढी स्त्री अर्थात् ब्रण्टफोर्ड से बड़ा नाराज था। और उसे घर में नहीं आने देता था इस लिए जब उसने सुना कि मेरे कहने पर भी ब्रण्टफ़ोर्ड मेरे घर में आगई तो वह आग भभूका हो गया और उसे (अर्थात् .फौल्स्टाफ को) .खूब मारा।

मि०पेज—हैं हैं .फोर्ड ! क्या करते हो। बिचारी बुढ़िया मर जायगी।

मि० .फोर्ड०—नहीं नहीं। वह इसी के योग्य है।

मारपीट कर .फोर्ड तो आदमियों को लेकर कोठे पर चढ़ गया और .फौल्स्टाफ बुढ़िया के भेस में मार खा कर घर आ गया। इस समय मि० .फोर्ड को निश्चित हो गया कि मेरा पति मेरे सतीत्व पर संदेह करता है। इस लिए उसने और मि० पेज ने अपने अपने पतियो से .फौल्स्टाफ़ के पत्रों और अपने कामो को क्रमशः कह दिया। इस पर सब लोगों में बड़ी हँसी हुई और मिस्टर फोर्ड को अपनी स्त्री की ओर से कुछ भी शङ्का न रही।

परन्तु इस तमाशे की समाप्ति यहीं न हुई। अब की बार पुरुषों ने भी अपनी स्त्रियो की सम्मति से इस विचित्र तमाशे में

हिस्सा लेना चाहा। बड़े वादविवाद के पश्चात् यह निश्चित हुआ कि फ़ोलस्टाफ को फिर बुलाना चाहिए और उसे सबके सामने लज्जित करना चाहिए। परन्तु अब फ़ौल्स्टाफ का फोर्ड के घर में आना कठिन था। वह दो बार भुगत चुका था, इस लिए निर्लज्ज पुरुष के लिए भी फिर वहाँ जाने का साहस करना दुस्तर था। यह जानकर यह बात ठहरी कि विण्डसर नगर के बाहर मैदान में एक पीपल है, जिसके लिए प्रसिद्ध है कि रात के समय वहाँ एक सींगोवाला भूत आया करता है। इस लिए फ़ौल्स्टाफ वहाँ पर भूत के भेस में बुलाया जावे और कह दिया जाय कि ऐसी दशा में कोई उसे पकड़ने का साहस न करेगा। जब वह वहाँ पर आवे तब पेज की पुत्री ऐनी और छोटे छोटे लड़के चमकीले वस्त्र पहन कर किसी गुप्त जगह से वहाँ पर आजायँ और कोलाहल मचावे। फ़ौल्स्टाफ इन को परियाँ समझ कर भागने लगेगा। उसी समय पेज और फोर्ड वहाँ पर आकर उसे पकड़ लेवें।

इस उपर्युक्त तमाशे के अतिरिक्त पेज इस समय एक और कार्य्य भी सिद्ध करना चाहता था। हम ऊपर बता चुके हैं कि उसकी इच्छा अपनी बेटी ऐनी को स्लेण्डर के साथ व्याहने की थी। इस बात को घर के लोग स्वीकार नहीं करते थे। इस लिए उसने विचार किया कि यदि स्लेण्डर उसी भीड़ भाड़ में जिसका वर्णन ऊपर किया गया है ऐनी को पकड़ कर ले जाय और झट विवाह कर ले तो कोई फिर कुछ न कहेगा। इस प्रयोजन के

लिए उसने अपनी पुत्री के श्वेत वस्त्रों के पर लगा दिये जिनको देखकर स्लेण्डर परियों के रूप में उसे पहचान सके।

मिसिस पेज अपने पति की बात समझ गई और इस लिए उसने पेनी को हरे वस्त्र पहनने की सम्मति दी, जिससे डाकृर केअस उसे पहचान कर अपने साथ ले जा सके।

पेनी ने वैसे तो माता और पिता दोनों की बात मान ली, परन्तु उसे करना कुछ और ही था। वह स्लेण्डर या केअस किसी को नहीं चाहती थी। उसका मन फ़ेण्टन में लगा हुआ था। इस लिए उसने दो लड़कों को हरे और श्वेत वस्त्र पहना दिये और अपने प्यारे को इसकी सूचना दे दी। इस समय स्लेण्डर, केअस और फ़ेण्टन अलग अलग तीन पुरोहितों को अपने घरों पर तैयार कर आये थे कि जिस समय हम पेनी को लावें उसी घड़ी विवाहसंस्कार हो जाय।

यहाँ एक बात और कह देनी चाहिए। जिस समय मिसिस फ़ोर्ड और मिसिस पेज ने फ़ौल्स्टाफ़ के बुलाने का विचार ठीक कर लिया तो उन्होंने क्विकली के हाथ उसको निमन्त्रण भेजा। जब क्विकली वहाँ पहुँची तो फौल्स्टाफ़ ने पूछा—

"कहाँ से आई हो ?"

क्वि०—मि० पेज और मि० फ़ोर्ड ने भेजा है।

फ़ौल्स्टाफ़—भाड़ में जायँ वे दोनों। मैं उनके लिए बहुत कुछ अपमान सह चुका।

किकली—और क्या तुम समझते हो उनका निरादर नहीं हुआ ? बिचारी मिसिस फ़ोर्ड पर तो इतनी मार पडी कि उस का शरीर नीला पड गया ।

फ़ौ०—अरे मुझ पर भी तो बहुत मार पड़ी थी ! मैं तो दम साध गया नहीं तो न जाने क्या दुर्गति होती ।

किक०—जो हुआ सो हुआ । देखो, मि० फोर्ड ने यह पत्र भेजा है । उसमें लिखा हुआ है कि आप अब किस प्रकार वहाँ चले ।

६ फ़ौलस्टाफ एक तो मूर्ख था दूसरे उसके दुराचार ने उसकी बुद्धि भ्रष्ट कर रक्खी थी । कहते भी हैं कि—

कामातुराणा न भय न लज्जा ।

पत्र को पढते ही उसकी बाछे खुल गई । फिर एक बार मुँह में पानी भर आया और वह किकली से कहने लगा ।

"अच्छा मैं आऊँगा । यह तीसरा बार है । कहते है कि तीसरी बार मनोकामना सिद्ध हो ही जाती है" ।

इतने में फ़ोर्ड भी ब्रुक के भेस में वहाँ पर पहुँच गया जिसे देखकर फ़ौलस्टाफ़ ने उस को भी उस रात नियत पीपल तले जाने की सम्मति दी । और गत दिवस की अपनी कहानी सुनाई ।

जिस समय फ़ौलस्टाफ सिर पर सींग लगाये भूत के भेस में पीपल तले पहुँचा तो पहले मिसिस फ़ोर्ड और मिसिस पेज से भेंट हुई । जब कुछ बातें चीतें होने लगीं तो संकेत पाकर

पेनी श्रौर उस के साथी परियों के रूप में कोलाहल मचाते हुए एक खाई से निकले। किसी के कपडे काले थे किसी के पीले किसी के श्वेत, किसी के हरे।

इन को देख कर मिसिस फोर्ड श्रौर मिसिस पेज ने "परी परी" कहना आरम्भ किया श्रौर फ़ौल्स्टाफ़ विचारा इतना घबराया कि वहीं भूमि पर पट लेट गया। परियां वहां पर आने लगीं श्रौर मशालो से इधर उधर देखने लगीं। जब वह फौल्स्टाफ के पास आईं तो उनमें से एक कहने लगी—

'अरे यह आदमी पवित्र है या अपवित्र"। दूसरी ने उत्तर दिया।

"इसकी उँगलियो को मशाल दिखाओ। यदि यह शुद्ध होगा तो चुप पड़ा रहेगा। यदि अशुद्ध होगा तो जलकर चिल्ला उठेगा"।

अब तो उन्होंने उसकी उँगलियां जलाईं श्रौर जब वह चीखने लगा तो कहने लगीं "अरे कोई पापी है। कोई पापी है"।

फिर उन्होंने उसे नोचना आरम्भ किया। फ़ौल्स्टाफ रोने पीटने लगा इतने में पेज, फोर्ड श्रौर अनेक पुरुष आगये जिन्होंने उसे पकड़ लिया। मिसिस पेज कहने लगी—

"कहिए सर जौन! क्या आपको विण्डसर की स्त्रियां पसन्द हैं"।

अब तो फौल्स्टाफ समझ गया श्रौर कहने लगा—

"अरे मुझे लोगों ने गधा बना लिया"।

फोर्ड—"अजी गधा नहीं बैल ! अपने सींग तो देखो"।

फौलस्टाफ् अपने किये पर बड़ा लज्जित हुआ। परन्तु उसी समय एक और बड़ा तमाशा हुआ। स्लेण्डर और केअस श्वेत और हरी परियों को अपने साथ लेगये जो वास्तव में दो लड़के थे। उन्होंने इनको ऐनी समझा था। इसलिए विवाह संस्कार के समय जब उनको मालूम हुआ कि यह लड़के हैं तो वे बड़े घबराये और पेज और उसकी स्त्री से कहने लगे—"हमको धोखा हुआ हमने तो लड़को से विवाह कर लिया"।

जब फोर्ड और पेज इस अद्भुत घटना पर चकित होरहे थे उसी समय फेण्टन और ऐनी भी अपना विवाह करके वहाँ पर आगये और ऐनी ने कहा—

"पिता जी, क्षमा कीजिए। माता जी, क्षमा कीजिए"।

पेज—अरे तू स्लेण्डर के साथ क्यों नहीं गई।

मि० पेज—अरे तू डाकृर के साथ क्यों नहीं गई।

फेण्टन—क्षमा कीजिए। आप इसे ऐसों के साथ व्याहते थे जहाँ इसका प्रेम नहीं था। अब इसका अपराध क्षमा कीजिए।

ऐनी के मा बाप ने अपनी पुत्री के विवाह की खबर सुन कर इसी पर सन्तोष किया और फेण्टन पेज का दामाद हुआ।

ऐनी और उस के साथी परियो के रूप में कोलाहल मचाते हुए एक खाई से निकले। किसी के कपडे काले थे किसी के पीले, किसी के श्वेत, किसी के हरे।

इन को देख कर मिसिस फोर्ड और मिसिस पेज ने "परी परी" कहना आरम्भ किया और फ़ौल्स्टाफ़ बिचारा इतना घबराया कि वहाँ भूमि पर पट लेट गया। परियाँ वहाँ पर आने लगीं और मशालो से इधर उधर देखने लगीं। जब वह फौल्स्टाफ के पास आई तो उनमें से एक कहने लगी—

'अरे यह आदमी पवित्र है या अपवित्र"। दूसरी ने उत्तर दिया।

"इसकी उँगलियो को मशाल दिखाओ। यदि यह शुद्ध होगा तो चुप पडा रहेगा। यदि अशुद्ध होगा तो जलकर चिल्ला उठेगा"।

अब तो उन्होंने उसकी उँगलियाँ जलाईं और जब वह चीखने लगा तो कहने लगीं "अरे कोई पापी है! कोई पापी है"।

फिर उन्होंने उसे नोचना आरम्भ किया। फ़ौल्स्टाफ़ रोने पीटने लगा इतने में पेज, फोर्ड और अनेक पुरुष आगये जिन्होंने उसे पकड़ लिया। मिसिस पेज कहने लगी—

"कहिए सर जौन! क्या आपको विण्डसर की स्त्रियाँ पसन्द हैं"।

अब तो फौल्स्टाफ समझ गया और कहने लगा—

"अरे मुझे लोगो ने गधा बना लिया"।

फोर्ड—"अजी गधा नहीं बैल ! अपने सींग तो देखो"।

फौल्स्टाफ अपने किये पर बडा लज्जित हुआ। परन्तु उसी समय एक और बडा तमाशा हुआ। स्लेण्डर और केअस श्वेत और हरी परियो को अपने साथ लेगये जो वास्तव में दो लडके थे। उन्होंने इनको ऐनी समझा था। इसलिए विवाह संस्कार के समय जब उनको मालूम हुआ कि यह लडके हैं तो वे बड़े घबराये और पेज और उसकी स्त्री से कहने लगे—"हमको धोखा हुआ हमने तो लडको से विवाह कर लिया"।

जब फोर्ड और पेज इस अद्भुत घटना पर चकित होरहे थे उसी समय फेण्टन और ऐनी भी अपना विवाह करके वहाँ पर आगये और ऐनी ने कहा—

"पिता जी, क्षमा कीजिए। माता जी, क्षमा कीजिए"।

पेज—अरे तू स्लेण्डर के साथ क्यो नहीं गई।

मि० पेज—अरे तू डाक्टर के साथ क्यों नहीं गई।

फेण्टन—क्षमा कीजिए। आप इसे ऐसों के साथ व्याहते थे जहाँ इसका प्रेम नहीं था। अब इसका अपराध क्षमा कीजिए।

ऐनी के मा बाप ने अपनी पुत्री के विवाह की खबर सुन कर इसी पर सन्तोष किया और फेण्टन पेज का दामाद हुआ।

निष्फल प्रेम Love's

(Labours Lost)

फ्रांस में नैवर नामी एक स्थान है। जहाँ बहुत दिन हुए फर्डीनण्ड नामी एक भद्र पुरुष राज करता था। एक समय उसके मन में यह समाई कि ब्रह्मचर्यव्रत धारण करके तीन वर्ष तक विद्या के उपार्जन में अपना जीवन व्यतीत करे। इस प्रयोजन के लिए उसने वे कठिन से कठिन नियम बनाये जो एक ब्रह्मचारी के लिए आवश्यक हैं और अपने तीन दरबारियों को भी अपने साथ यथार्थ ब्रह्मचर्य्य व्रत धारण करने के लिए कहा। इनका नाम बाइरन, लोंगविल और डूमेन था। व्रत धारण करने के समय उनसे एक प्रतिज्ञापत्र पर हस्ताक्षर कराये गये कि हम कभी अमुक नियमों का उल्लङ्घन नहीं करेंगे। लोंगविल ने हस्ताक्षर करते हुए कहा—

"मैं प्रतिज्ञा कर चुका। यह तीन वर्ष का व्रत है। चाहे शरीर दुर्बल हो जाय, परन्तु आत्मा उन्नति करेगा।"

डूमेन—महाराजाधिराज! आज मैं सांसारिक वैभव को विषयी पुरुषों के लिए त्यागता हूँ। मेरा जीवन अब दार्शनिक विद्या के उपार्जन में व्यतीत होगा। राग, धन तथा वैभव के लिए तो मैं मृतवत् हूँ।

बाइरन्—राजन्! मेरी भी यही प्रतिज्ञा है। श्रीमन्, मैंने अभी यही व्रत किया है कि तीन वर्ष विद्याप्राप्ति करूँ। परन्तु अन्य भी नियम हैं जिनकी प्रतिज्ञा मैंने नहीं की। जैसे स्त्रीदर्शन न करना, सप्ताह में एक दिन उपवास करना, रात में तीन घंटे से अधिक न सोना और दिन में आँख न लगाना। ये ऐसे कठिन व्रत हैं कि जिनका पालन मेरे लिए दुस्तर है। अब तक मैं दोपहर तक सोया करता था। स्त्रीदर्शन न करना, स्वाध्याय करना, उपवास करना और कम सोना—ये सब कैसे हो सकेंगे?

राजा—तो तुम्हारा व्रत ही क्या हुआ?

बाइरन—श्रीमन्! मैंने तो केवल स्वाध्याय का प्रण किया है।

लोंगविल—नहीं बाइरन! एक व्रत के अन्तर्गत सब व्रत आजाते हैं।

बाइरन—तो मेरा व्रत हास्य मात्र था। भला स्वाध्याय से क्या लाभ है?

राजा—स्वाध्याय से हमको उस ज्ञान की प्राप्ति होती है जो अन्यथा नहीं आ सकता।

बाइरन—आपका तात्पर्य उन वस्तुओं के ज्ञान से है जो साधारण बुद्धि के परे हैं।

राजा—हाँ। स्वाध्याय का पवित्र उद्देश यही है।

बाइरन—साधु! साधु! मैं अवश्य स्वाध्याय करूँगा। क्योंकि मुझे वे बातें मालूम होंगी जिनके जानने का निषेध किया गया है। अर्थात् ऐसी जगह खाना खाना सीखूँगा जहाँ खाना वर्जित है। या ऐसे स्थान पर किसी स्त्री का दर्शन करना जहाँ साधारण दृष्टि से कोई स्त्री दिखाई नहीं देती।

राजा—इन बातों से स्वाध्याय में बाधा पड़ेगी। हमको झूठे सुखों से घृणा करनी चाहिए।

बाइरन—सुख तो सभी झूठे हैं और सब से झूठे वे सुख हैं जिनके आदि और अन्त—दोनों में कष्ट हो। जैसे पुस्तकों का पढ़ना! हम सत्य के प्रकाश के लिए पुस्तकें पढ़ते हैं। परन्तु यह प्रकाश हमारे नेत्रों के प्रकाश को हर लेता है। इससे तो अपने नेत्रों को किसी मृगनयनी की ओर जमाने से अधिक लाभ हो सकता है।

राजा—इसने विद्या के विरोध में कैसी विद्वत्ता ख़र्च की है? बाइरन! अब घर आओ।

बाइरन—नहीं राजन्! मैंने आप के साथ रहने की प्रतिज्ञा

की है। मैं इसका यथार्थ पालन करूँगा। देखूँ और क्या नियम हैं।

राजा—पढ़ो।

वाइरन—"कोई स्त्री मेरे दरबार से पाँच कोस के भीतर न आने पाये।" क्या इस नियम का नगर में ढँढोरा हो चुका?

लौंग०—चार दिन हुए।

वाइरन—नियम-उल्लङ्घन का दण्ड क्या? अरे इसमें तो लिखा है कि "उसकी जीभ काट ली जायगी।" यह किसका प्रस्ताव था?

लौंग०—मेरा।

वाइरन—क्यों?

लौंग०—जिससे कि वे डर जायँ।

वाइरन—अबलाओं पर ऐसी कठोरता! देखो, इसी नियम में यह भी लिखा है "यदि इन तीन बरसों में कोई मनुष्य किसी स्त्री से बातचीत करता पकड़ा जायगा तो उसको सभा की इच्छानुसार दण्ड दिया जायगा"। क्यों महाराज (राजा की ओर देखकर) इसको तो स्वयं आपही तोड़ देंगे। क्योंकि आप जानते हैं फ्रांसनरेश की रूपवती कन्या एक्विटन देश के छुटकारे के लिए आप से प्रार्थना करने को आरही है। इसलिए यह नियम व्यर्थ बनाया गया। या राज-कुमारी का यहाँ आना वृथा होगा।

राजा—अरे! इसका तो ध्यानही नहीं रहा था। परन्तु राजकुमारी यहाँ विशेष कार्य्यवश आरही है। इसलिए उसे आज्ञा मिल सकती है।

बाइरन—यदि ऐसा ही है तो आवश्यकता के वशीभूत हो कर हम तीन वर्ष में तीन हजार बार नियमोल्लङ्घन करेंगे, क्योंकि प्रत्येक मनुष्य की भिन्न भिन्न आवश्यकतायें हैं, श्रौर उन आवश्यकताश्रों के कारण ही लोग नियमों को तोडते हैं!

बाइरन ने इसके पश्चात् प्रतिज्ञापत्र पर हस्ताक्षर कर दिये। परन्तु उसी समय कौस्टार्ड नामक एक गँवार राजा के सम्मुख लाया गया, जिसको कर्म्मचारियो ने राज-आज्ञा के विरुद्ध एक स्त्री जैकिण्टा के साथ कुत्सित व्यवहार करते पकडा था। राजा ने उसी समय उसको हवालात कर दी श्रौर हुक्म दिया कि सात दिन तक इसको सिवा पानी के श्रौर कुछ न दिया जाय, यही इसका दण्ड है।

जिस कर्म्मचारी ने कौस्टार्ड श्रौर जैकिण्टा को पकड़ा था उसका नाम आर्मेडो था, जो हस्पानिया का रहनेवाला था! यद्यपि इस पुरुष ने एक आदमी को स्त्री से व्यवहार करने के अपराध में पकड लिया था परन्तु वास्तविक बात यह है कि वह स्वयं जैकिण्टा पर मोहित था श्रौर कौस्टार्ड के पकड़ने की असली वजह यही थी!

उपर्युक्त घटना के दूसरे दिन फ्रांस की राजकुमारी अपनी सहेलियों—रोजालिन, मैरिया, और कैथरायन तथा एक राजमंत्री बोइट नामी के साथ नेवर के राज में आ उपस्थित हुई। उसके आगमन की सूचना राजा को दी गई, राजा अपने साथियों—बाइरन, लोंगविल और डूमेन—के साथ दरबार के बाहर ही राजकुमारी से भेंट करने आया। उसके आराम के लिए राजदरबार से बाहर डेरे तान दिये गये थे, क्योंकि तीन वर्ष तक किसी स्त्री को भीतर आने की आज्ञा नहीं थी।

राजा को देखते ही राजकुमारी और उसकी सहचरियों ने अपने मुँह पर वस्त्र डाल लिये। राजा ने कहा—

"सुन्दर कुमारी! नेवर के दरबार में मैं आप का स्वागत करता हूँ।"

राजकुमारी—"सुन्दर" शब्द मैं आप ही को लौटाती हूँ! यह 'दरबार' भी नेवर का नहीं है। इस* की छत इतनी ऊँची है कि यह आप का दरबार नहीं हो सकता। रहा 'स्वागत', सो क्या खेतों और जंगल में ठहरा कर स्वागत किया जाता है?

राजा—आप मेरे दरबार को भी चलेंगी!

---

* राजकुमारी के कहने का तात्पर्य यह है कि वह नगर के बाहर ठहराई गई थी, न कि दरबार में। इस लिए राजा का यह कहना कि तुम नेवर के दरबार में आई हो, असत्य था।

राजकुमारी—उस समय मेरा स्वागत होगा। चलो मुझे ले चलो।

राजा—राजकुमारी! मैंने एक प्रतिज्ञा कर रक्खी है!

कुमारी—प्रतिज्ञा टूट भी सकती है।

राजा—नहीं देवि! कदापि नहीं। मेरी इच्छा यही है।

राजकुमारी—यह इच्छा ही तोड देगी।

राजा—श्रीमती जी यह नहीं जानतीं कि मेरी इच्छा कितनी प्रबल है।

राजकुमारी—मैंने सुना है कि आपने स्त्री को न देखने की प्रतिज्ञा की है। ऐसी प्रतिज्ञा तो खण्डनीय ही है। अस्तु! मुझे अपना काम करना चाहिए! श्रीमन्, इस पत्र को (एक काग़ज देकर) देखिए और जो कुछ इसमें लिखा है उसे स्वीकृत कीजिए।

राजा—यह काम भी धीरे धीरे हो जायगा!

राजकुमारी—आप मुझे जल्दी ही उत्तर दे दीजिए, क्योंकि यदि मैं चिरकाल तक यहां रहूँगी तो आप के अध्ययन में भङ्ग होगा और आपकी प्रतिज्ञा झूठी होगी।

इस समय बाइरन रोजालिन से बातें करने लगा। उसने कहा—

"क्या मैं तुम्हारे साथ एक वार ब्रबण्ट में नहीं नाचा था?"

रोजालि०—"क्या मैं तुम्हारे साथ एक वार ब्रबण्ट में नहीं नाची थी?"

बाइरन—मुझे मालूम है कि तुम नाची थीं।

रोज़ालि०—फिर प्रश्न करने से क्या प्रयोजन ?

इस प्रकार बाइरन ग्रैार रोज़ालिन परस्पर बात चीत करने लगे। यदि कोई ग्रैार इनकी बातों को सुनता ते। वह यही समझता कि बाइरन रोज़ालिन पर मोहित हो गया है। डूमेन भी मन ही मन में कैथरायन के रूप की प्रशंसा करने लगा। लौंगविल को मैरिया का सौंदर्य ऐसा मनोहर प्रतीत हुग्रा कि उसने उसके विषय में अधिक परिचित होने के लिए बोइट से पूछा—"यह श्वेत वस्त्र पहने कौन है ?"

बोइट—एक स्त्री।

लौंगविल—मैं इस का नाम चाहता हूँ।

बोइट—इसका एक ही नाम है। वह आपको नहीं मिल सकता।

लौंग०—यह किसकी लड़की है ?

बोइट—अपनी माता की।

लौंग०—ईश्वर आपकी दाढ़ी को चिरायु करे।

बोइट—नाराज़ न हूजिए। यह फाकन वृज की बेटी है।

लौंग०—यह ते। परम सुन्दरी है।

जिस प्रकार राजा के साथी प्रतिज्ञा के विरुद्ध राजकुमारी की सहचरियों पर मोहित हो गये थे इसी प्रकार राजा का हृदय भी मदनशरों से बिंध चुका था ग्रैार जो कुछ बातें उस

की राजकुमारी के साथ हुई उनसे प्रकट होता था कि वह उस से प्रेम करने लगा है। इस प्रकार जिन जिन पुरुषों ने ब्रह्मचर्य्य व्रत धारण करने की प्रतिज्ञा की थी वे सब के सब इन्द्रियवश हो गये। आर्मेडो जैकिण्टा पर आसक्त था, बाइरन रोज़ालिन पर, लोगविल मेरिया पर, डुमेन कैथरायन पर और राजा राज-कुमारी पर।

आर्मेडो ने कौस्टार्ड को बुलाकर उसको छोड़ देने का वादा किया, अगर वह उसका एक पत्र जैकिण्टा को दे आवे। कौस्टार्ड ने इस सेवा को स्वीकार कर लिया। इसी प्रकार बाइरन ने भी उसी के हाथ एक पत्र अपनी प्राणप्यारी रोज़ालिन को भेजा।

कौस्टार्ड ने चाहा कि जैकिण्टा के पत्र को फेंकदे और बाइरन की चिट्ठी रोज़ालिन के पास पहुँचा दे। परन्तु दैवगति से कुछ का कुछ हो गया। कौस्टार्ड पढ़ा तो था ही नहीं, उसने जैकिण्टा के पत्र को जाकर रोज़ालिन के हवाले कर दिया, जिस को पढ़कर उसे बड़ा ही आश्चर्य हुआ—क्योंकि वह आर्मेडो को नहीं जानती थी।

यहाँ बाइरन का पत्र, जिसे कौस्टार्ड ने जंगल में फेंक दिया था, दो शिकारियों के हाथ पड़ गया। उन्होंने बाइरन का ऐसा प्रेमपूरित पत्र देखकर बड़ा आश्चर्य किया, क्योंकि यह एक प्रसिद्ध बात थी कि राजा और उसके साथियों ने ब्रह्मचर्य्य व्रत धारण

किया है। इस लिए उन शिकारियों ने इस पत्र को राजा की सेवा में उपस्थित कर दिया।

इस पत्र को देने से पहले एक अद्‌भुत घटना हुई। बाइरन ने अपनी प्रेयसी के लिए एक और पत्र लिखा था, जिसको वह एक पार्क (बाग) में टहलते टहलते बार बार पढ रहा था, क्योंकि प्रेमीजनो का स्वभाव है कि वे प्रेमपत्र को लिख कर बार बार पढा करते हैं। ऐसा करने से उन को प्राय वही आनन्द होता है जो प्यारी के साथ बात करने से। जिस समय बाइरन इस कार्य्य में संलग्न था, दूसरी ओर से राजा भी एक पत्र को पढता हुआ आता दिखाई दिया। बाइरन छिपने के अभिप्राय से एक वृक्ष पर चढ गया और वहाँ से सुनता रहा कि राजा क्या पढ रहा है। राजा ने पढा—

"हे सुमुखि! स्वर्णमयी सूर्य्यकिरणें भी प्रात काल की गुलाब की ओस का इस प्रकार चुम्बन नहीं करतीं जिस प्रकार तुम्हारे नयनों की ज्योति मेरे मुख पर बहते हुए आंसुओं को चूमती है। और न समुद्र के स्वच्छ जल में रुपहले चन्द्रमा का आभास ऐसा झलकता है जैसा आपका चन्द्रवदन मेरे आँसुओं के कणों में। जो जल बिन्दु मेरे नेत्रों से निकलते हैं उन में तुम्हारी ही ज्योति झलकती है। जलबिन्दु क्या हैं, आपकी सैर करने की सवारी है। मेरा रुदन और आपकी सैर। यदि आप मेरे आंसुओं की ओर दृष्टि करें तो इनमें अपना ही प्रकाश आप को

मिलेगा। हे सुन्दरियो में सुन्दरी! मैं आप के रूप का कहाँ तक वर्णन करूँ!"

राजा ते पढता पढता आगे बढ गया। उसके पीछे लोगविल भी एक प्रेमपत्र पढता हुआ वहाँ पर आया जिसमें लिखा था "क्या आप के कटाक्ष मुझे मजबूर नहीं करते कि मैं अपनी प्रतिज्ञा का भंग करूँ। किन्तु हे सुमुखि! मेरी प्रतिज्ञा यह थी कि किसी स्त्री का दर्शन न करूँगा। परन्तु आप स्त्री नहीं, स्वर्ग की अप्सरा हैं। मेरा प्रण सांसारिक था, परन्तु आप पारलैाकिक हैं। मेरी प्रतिज्ञा ओस के समान है और आप की आँखें सूर्य्य के सदृश हैं, जिनकी गर्मी से प्रतिज्ञा-रूपी ओस सूख जाती है। यदि मैं प्रतिज्ञाभङ्ग करूँ ते इस में मेरा क्या दोष है? क्योंकि ऐसा कैान मूर्ख है जो एक स्वर्ग की देवी के लिए बात के न तोड़ दे"।

इसके थोडी देर बाद डूमेन भी प्रेमालाप में मग्न होता हुआ वहाँ पर आ निकला, और पत्र पढने के पीछे कहने लगा "क्या अच्छा होता यदि राजा, बाइरन और लोगविल भी मेरी तरह प्रेमासक्त होते, क्योंकि उस दशा में मेरे ऊपर प्रतिज्ञा-भङ्ग का दोष न लग सकता"।

यह सुनकर राजा और लोंगविल डूमेन के पास चले गये। राजा ने कहा—

"मैंने तुम दोनो के पत्र सुन लिये हैं। कोई ते स्वर्ग की

अप्सरा के लिए प्रतिज्ञाभङ्ग करने को तैयार है। कोई अपनी प्रेयसी से मिलने का उत्सुक हो रहा है। तुमने तो ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया था, परन्तु उस व्रत का खण्डन हो गया। यदि बाइरन सुनेगा तो क्या कहेगा"।

जिस समय राजा यह कह रहा था, बाइरन ने वृक्ष की शाखा से उतर कर कहा—

"महाराज! क्षमा कीजिए। आप किस लिए इन लोगों का, प्रेमासक्त होने के कारण तिरस्कार करते हैं? क्योंकि श्रीमान् भी तो उसी जाल में फँसे हुए हैं। क्या आपके अश्रु-विन्दुओं में आपकी प्यारी का मुख नहीं झलकता। आप इन बिचारों की आँखों का तिल देख रहे हैं, परन्तु मुझे आपकी आँखों में शहतीर दिखाई देता है। आहा! मैंने कैसा तमाशा देखा"

राजा—अरे! क्या तूने मुझे देख लिया? हमको धोखा हो गया!

बाइरन—नहीं महाराज! मुझे धोखा होगया कि आप लोगों के साथ ऐसा व्रत धारण किया। क्या आपने कभी मुझसे इस प्रकार की बातें सुनीं?
किसी रमणी के लिए इस प्रकार के पत्र
मैं किसी के प्रेम में इस प्रकार विकल
धिक्कार है!

जिस समय बाइरन इस प्रकार अपनी सच्चाई की डींगें मार रहा था उसी समय राजा के पास वह पत्र आया जिसे बाइरन ने रोजालिन के पास भेजा था और जो कौस्टार्ड की मूर्खता के कारण राजा के हाथ लग गया था। राजा ने इस चिट्ठी को बाइरन के हाथ में देकर कहा, "पढ़िए"। बाइरन ने अपना भाण्डा फूटता देख कर जल्दी से उस पत्र को फाड डाला।

डूमेन ने पत्र के टुकडों को जोड कर पढ लिया। फिर क्या था, उन सब में बाइरन भी शामिल होगया।

राजा ने पूछा—

"क्या इस पत्र में कुछ प्रेम सम्बन्धी बात थी?"

बाइरन ने उत्तर दिया "वाह! वाह! कौन ऐसा मनुष्य है जो रोजालिन के रूप को देख कर उस पर मोहित न हो जाय।"

अब सब आपस में मिल गये और उन्होंने इन फ्रांसीसी रमणियो से विवाह करने का उपाय सोचा। पहले तो सबने अपनी अपनी प्रिया के लिए उत्तम-उत्तम वस्त्र और आभूषण भेजे। इसके पश्चात् उनके साथ नृत्य-क्रीडा के लिए लिखा। राजकुमारी ने इन वस्त्रादि को देखकर अपनी सखियो से कहा—

"आहा! हम तो, जब तक घर जाने का समय आवेगा, बहुत अमीर हो जायेंगी। ओहो! राजा ने तो हमको हीरों में जड दिया!"

रोजालिन—श्रीमतीजी! क्या इनके साथ और कुछ भी आया है?

राजकुमारी—हाँ! कागज के इस पूरे तख्ते के दोनों ओर हाशिये पर भी लिखा हुआ यह पत्र आया है रोजालिन! तुम्हारे पास भी तो कुछ आया है। भला बताओ तो सही किसने भेजा है?

रोजालिन—हाँ! हाँ! देखिए! बाइरन का यह पत्र है।

राजकुमारी—कैथरायन! तुमको भी तो डूमेन ने कुछ भेजा है।

कैथरायन—हाँ! यह दस्ताना है।

राजकुमारी—क्या एक ही दस्ताना है। दो नहीं?

कैथरायन—दो हैं। जी, दो! और इनके अतिरिक्त एक लम्बा चौड़ा सौन्दर्य्य की प्रशंसा में पत्र भी लिखा है।

मैरिया—लोंगविल ने मेरे लिए ये मोती भेजे हैं और एक आध मील लम्बा चिट्ठा!

अब इन सब ने राजा की पार्टी को धोखा देने के इरादे से ऐसा किया कि एक के वस्त्र दूसरी ने पहिन लिये। रोजालिन ने राजकुमारी के और राजकुमारी ने मैरिया के इत्यादि। इस प्रकार जब राजा अपने मित्रों सहित आया तो नृत्य के समय हर एक ने अपनी अपनी कल्पित प्रेयसी का हाथ पकड़ कर एकान्त में अपनी अपनी प्रेम की कहानी सुनाई और अपनी अपनी

अँगूठियाँ भी दे आये। परन्तु किसी ने यह न पहिचाना कि हम अपनी प्यारियो के बदले दूसरो को अँगूठियाँ दिये जाते हैं। क्योंकि राजकुमारी और उसकी सहेलियो के मुख वस्त्रों से ढके हुए थे।

जब दूसरे दिन राजा फिर राजकुमारी से मिलने आया और निवेदन किया कि आप हमारे महल में चल कर उसको अपने चरणो से सुशोभित कीजिए तो राजकुमारी ने उत्तर दिया—

"नहीं नहीं! मैं तो इसी जंगल में रहूँगी। क्योंकि झूठे आदमियो को मैं पसन्द नहीं करती।"

राजा—देवि! मैंने क्या झूठ बोला है?

राजकुमारी—आपने प्रतिज्ञा भंग की है।

राजा—देवि! यह केवल आपके नेत्रों का प्रताप था।

राजकुमारी—नहीं नहीं! प्रताप किसी के व्रत का खण्डन नहीं करता! क्या तुम कल यहाँ नहीं आये थे?

राजा—हाँ आया था।

राजकुमारी—फिर तुमने अपनी प्रिया से क्या प्रतिज्ञा की थी?

राजा—यही कि जीवन पर्य्यन्त मैं तुम्हारा दास रहूँगा।

राजकुमारी—जब वह तुमसे कहेगी तो तुम उसको छोड़ दोगे।

राजा—अपनी कसम! कभी नहीं!

राजकुमारी—शपथ न खाओ। तुम एक बार उसे तोड़ चुके हो।

राजा—यदि अबकी बार मैं शपथ को तोड़ूँ तो फिर कभी मेरा विश्वास न करना।

राजकुमारी—कभी नहीं! (रोजालिन से) कहो रोजालिन रात को तुमसे इन्होंने क्या कहा था?

रोजालिन—यह कहते थे कि तुम मुझे नेत्रों की ज्योति से भी अधिक प्यारी हो और तुम संसार भर से अधिक सुन्दर हो। मैं या तो तुमसे विवाह करूँगा या तुम्हारे ही प्रेम में मर जाऊँगा।

राजकुमारी—कहो राजन्! क्या तुम अब इस प्रतिज्ञा का पालन करोगे?

राजा—अपने जीवन की कसम! देवि! मैंने इस स्त्री के साथ कभी इस प्रकार की प्रतिज्ञा नहीं की!

रोजालिन—ईश्वर की कसम! तुमने की थी। इसका साक्षात् प्रमाण यह लीजिए। क्या यह आपकी ही अंगूठी है? और क्या यह रात आपने मुझे नहीं दी थी?

राजा—नहीं नहीं! यह अँगूठी मैंने राजकुमारी को दी थी। इसकी बाँह पर यह हीरा लगा था।

राजकुमारी—क्षमा कीजिए। यह वस्त्र रोजालिन पहिने हुए थी। (बाइरन से) और देखिए आपने मुझे यह

मोती दिया था, क्या आप मुझसे विवाह करना चाहते हैं या अपना मोती वापिस लेना ?

बाइरन—कुछ नहीं। मैं दोनो छोडता हूँ। अब मैं चाल समझ गया। इन सब ने हमारी हँसी उडाने के लिए यह जाल रचा था।

इसी समय राजकुमारी ने सुना कि उसके पिता का देहान्त होगया। यह सुनते ही अपने देश जाने की तैयारियाँ कर दीं। राजा ने आग्रह करके कहा—

"श्रीमतीजी ठहरे," परन्तु राजकुमारी ने उसकी प्रार्थना स्वीकार नहीं की। जब राजा ने फिर आग्रह करके कहा कि यदि आप जाती ही हैं तो हमसे प्रेम करने की प्रतिज्ञा करती जाइए। इस पर राजकुमारी ने उत्तर दिया।

"राजन् ! इस समय आपने व्रत-खण्डन करके बडा अपराध किया है, इसलिए आपकी शपथ का विश्वास नहीं कर सकती। यदि आप बारह वर्ष के लिए राजपाट छोडकर किसी एकान्त स्थान का सेवन करें और यम नियम के अनुसार तपस्वी का जीवन व्यतीत करने के पश्चात् मेरे पास आवे तो मैं अवश्य आप से व्याह कर लूँगी।"

राजा—मैं शपथ खाता हूँ कि ऐसाही करूँगा।

राजकुमारी—आपकी शपथ का कुछ भरोसा नहीं।

बाइरन—(रोजालिन से) प्यारी मुझसे क्या कहती हो—?

रोज़ालिन—आप भी अपना प्रायश्चित्त कीजिए और तीन वर्ष तक हस्पताल में दरिद्र रोगियों की सेवा कीजिए। तब मेरी ओर ध्यान दीजिए।

डूमेन—(कैथरायन से) प्यारी, मेरे लिए क्या उत्तर है?

कैथरायन—साल भर और एक दिन तप कीजिए। तब मैं आप की बात सुनूँगी।

लोंग०—(मैरिया से) तुम भी कहो।

मैरिया—आपको भी साल भर प्रतीक्षा करनी चाहिए।

यह कह कर वे सब की सब चली गईं और ये लोग हाथ मलते रह गये।



तृतीय रिचार्ड

(Richard III)

"छठे हनरी" के 'तीसरे भाग' में हम दिखला चुके हैं कि रिचार्ड ग्लैास्टर ने छठे हनरी के बन्दीगृह में मार डाला। यह भी बतलाया जा चुका है कि चैाथे एडवर्ड के एक लड़का उत्पन्न हो गया था जिसका नाम भी एडवर्ड था और जो अपने पिता की मृत्यु पर पांचवें एडवर्ड के नाम से गद्दी पर बैठा।

रिचार्ड ग्लैास्टर कुटिल प्रकृति का मनुष्य था। यद्यपि इस समय लंकास्टर वंश के लोग मर चुके थे और यार्कवंश की विजय प्राप्त हुई थी परन्तु अब ग्लैास्टर स्वयं राज्य छीनना चाहता था। यह मालूम हो चुका है कि ग्लैास्टर चैाथे एडवर्ड का सब से छोटा भाई था। मँझला क्लेरेंस था। ग्लैास्टर यह चाहता था कि एडवर्ड के पीछे स्वयं गद्दी पर बैठे। इस लिए उसने कुटिलता से क्लेरेंस को मारने का उपाय सोचा।

पहले तो उसने राजा के कान भर दिये कि बहुत से लोग आप का प्राण लेना चाहते हैं और उनमें हमारा भाई क्लेरेंस

और एक लार्ड हेस्टिंग्ज नामी भी है। उसके पश्चात् क्लेरेंस को यह निश्चय दिला दिया कि यह सब रानी की करतूत है। एडवर्ड ने अपने प्राणों को सदिग्ध अवस्था में देखकर क्लेरेंस को कैद कर दिया जिस समय वह ब्रेकनवरी नामक एक लार्ड के साथ जो लन्दन के मीनार नामी बन्दीगृह का दारोगा था जा रहा था। मार्ग में रिचार्ड ग्लोस्टर मिला और उसे प्रणाम करके कहा—

"भाई! आपके साथ पुलिस कैसी?"

क्लेरेंस—महाराज ने मेरे शरीर की रक्षा के लिए बन्दीगृह तक सिपाही साथ कर दिये हैं।

ग्लोस्टर—क्यों।

क्लेरेंस—क्योंकि मेरा नाम जार्ज क्लेरेंस है।

ग्लोस्टर—यह तो आप का दोष नहीं। इस अपराध के लिए तो आपके नाम रखनेवाले को पकड़ना चाहिए था। क्या बन्दीगृह में आप का फिर नामकरण होगा? मुझे बताइए तो क्या बात है?

क्लेरेंस—मुझे भी ज्ञात नहीं है। परन्तु मैंने केवल इतना सुना है कि किसी ज्योतिषी ने उससे कह दिया है कि तुम्हारी सन्तान को 'ज' से हानि पहुँचेगी। अब चूँकि मेरा नाम 'ज' से आरम्भ होता है इस लिए मुझी पर सदेह किया गया है।

ग्लोस्टर—भाई! इसका कारण केवल यह है कि लोग स्त्रियों

के वश में हैं। आप को क़ैद में भेजनेवाला राजा नहीं किन्तु रानी है। इसी रानी ने अपने भाई की सहायता से लार्ड हेस्टिंग्ज को कैद करा दिया।

क्लेरेंस—ईश्वर! ईश्वर! अब तो रानी के सम्बन्धियों के सिवा और किसी का ठीक नहीं है?

ग्लौस्टर—आप बहुत दिनों कैद न रहेंगे। मैं बहुत जल्द छुड़ाने का उपाय करूँगा।

क्लेरेंस तो बन्दीगृह में चला गया और ग्लौस्टर ने बजाय छुड़ाने के उस को मार डालने की तैयारियाँ कीं और दो घातकों को रुपया देकर इस काम की पूर्ति के लिए भेजा।

एक दिन क्लेरेंस किसी सोच में बैठा हुआ था। उसे उदास देखकर ब्रेकनबरी ने कहा—

"श्रीमान्, आज क्यों दुखित हैं"?

क्लेरेंस—मैंने कल की रात इस कष्ट से काटी है और ऐसे ऐसे भयानक स्वप्न देखे हैं कि यदि मुझे संसार का राज्य मिले तो भी ऐसी दूसरी रात्रि जीना नहीं चाहता।

ब्रेकनबरी—श्रीमान् ने क्या स्वप्न देखा है? कृपया बताइए।

क्लेरेंस—मैंने देखा कि मैं क़ैदखाने को तोड़कर ग्लौस्टर के साथ बरगण्डी (फ्रांस) को भागा जा रहा हूँ। जब मैंने इँग्लैण्ड की ओर देखा तो गुलाब-युद्ध (Wars of

Roses) की बहुत सी बातें याद आ गई । जब हम नग्तों पर टहल रहे थे उस समय ग्लैास्टर का पैर फिसला ग्रैार ज्योंही मैंने उसे सँभाला उसने मुझे समुद्र में डाल दिया। हे परमात्मन्! डूबने में कैसा कष्ट होता है। पानी की भयानक आवाज मेरे कानो में आ रही थी ग्रैार मृत्यु आँखे फाड फाड कर मेरी ग्रोर देख रही थी। मैंने सैकडो आदमियो को देखा जिनको मछलियाँ खा रही थी। समुद्र की तह में सैकडों जहाजों के टूटे फूटे तख्ते पडे हुए थे। मानो स्वर्गीय आभूषण ग्रैार मोती रक्खे हुए थे। बहुत से मुर्दों की खोपडियो में गड़ गये थे। बहुत से उनकी पुतलियो में घुस गये थे।

ब्रेकनबरी—क्या आप को मृत्यु के समय यह सब देखने का अवसर मिल गया?

क्लेरेंस—मुझे तो मिल गया। मैंने कई बार चाहा कि आत्मा शरीर से निकल जाय पर न निकला। ग्रैार पानी मेरे शरीर में घुस घुस कर मुझ को कष्ट देने लगा।

ब्रेकनबरी—क्या आप इतने कष्ट से जागे नहीं?

क्लेरेंस—नहीं नहीं। मेरा स्वप्न मरण पश्चात् भी रहा। ग्रैार उस समय आत्मा को बहुत दुःख हुआ। मैं नरक में पहुँचा ग्रैार पहले मुझे मेरा ससुर वारिक मिला

और कहने लगा—"पापी क्लेरेंस ! इस अंधकाररूपी राज में तुझे मिथ्या-भाषण का क्या दण्ड मिल सकता है ?"। अब वह तो छिप गया और एक रक्त-मय आत्मा आ कर कहने लगा—"अब पापी क्लेरेंस आ गया, जिसने मुझे ट्यूक्सबरी के रणक्षेत्र में मारा था। इसे पकड़ लो और भले प्रकार कष्ट दो।" यह सुनकर बहुत सी दुरात्मायें आ गईं और मेरे कानों में भयानक भयानक शब्द करने लगीं। मैं काँपने लगा और काँपते ही जाग उठा। परन्तु जागने के पश्चात् भी मुझे बहुत देर तक यही मालूम होता रहा कि मैं नरक में हूँ।

ब्रेकनबरी—स्वामिन् ! आप के डरने का कुछ आश्चर्य नहीं है, मैं तो सुनकर ही भयभीत हो रहा हूँ।

क्लेरेंस—मैंने एडवर्ड के लिए वह काम किये हैं जो अब मेरी आत्मा के विरुद्ध साक्षी दे रहे हैं। अब देख लो इसका कैसा इनाम मिल रहा है। ईश्वर ! यदि मेरी हार्दिक प्रार्थनायें और पश्चात्ताप मेरे पापों को दूर नहीं कर सकते तो ईश्वर आप केवल मुझे ही दण्ड देलें और मेरी निर्दोष स्त्री तथा बच्चों पर दया कीजिए।

यह कहकर क्लेरेंस बेहोश हो गया और थोड़ी देर में सो

गया। इतने में वहाँ पर रिचार्ड के भेजे हुए घातक आये और कहने लगे—

"कौन है ?"

ब्रेकनबरी—अरे क्या चाहता है और कैसे आया है ?

१ घातक—मैं क्लेरेंस से बातें करना चाहता हूँ और अपनी टाँगों के बल आया हूँ।

ब्रेकनबरी—ऐसा सूक्ष्म उत्तर !

२ घातक—व्यर्थालाप से मितभाषण अच्छा है।

यह कहकर उसने ब्रेकनबरी को ग्लोस्टर का लिखा एक पत्र दिया जिस में लिखा था कि इन दोनों के संरक्षण में क्लेरेंस को छोड़ दो। ब्रेकनबरी तो इस आज्ञा-पत्र को देखकर चला गया और दूसरा घातक कहने लगा—

"क्या सोते हुए को ही मार दें ?"

१ घातक—नहीं ! नहीं ! जब वह जागेगा तो कहेगा कि धोखे से मार डाला।

२ घातक—अरे मूर्ख, वह जागने कब लगा ?

१ घातक—तो वह कहेगा कि सोते में मारा।

२ घातक—न्याय* के दिन ही कह सकेगा ! परन्तु 'न्याय' शब्द को कहने से मेरे मन में कुछ पछतावा होता है।

---

* ईसाइयों का सिद्धान्त है कि प्रलय के दिन सब मुर्दे कबरों में से उठेंगे और ईश्वर उनका न्याय करेगा।

१ घातक—अगर फिर तुझे दया आजाय तो कैसा हो ?

२ घातक—अब मैं इसकी परवा न करूँगा। इससे लोग भीरु होजाते हैं। न आदमी चोरी कर सकता है। न झूठी शपथ खा सकता है। यह आदमी को निकम्मा कर देती है।

१ घातक—मेरे मन में तो यह अब तक कह रही है कि क्लेरेंस को न मारो।

२ घातक—चल हट। इसकी बात मत सुन।

१ घातक—मेरा हृदय वज्र का है। यह मेरा क्या करेगी ?

२ घातक—क्या कार्य्य आरम्भ करें ?

१ घातक—इसको तलवार पर उठाकर शराब के पीपे में डाल दो।

२ घातक—अच्छी बनाई।

१ घातक—यह तो जाग उठा।

२ घातक—अच्छा, मारो।

१ घातक—नहीं, पहले बातें करेंगे।

क्लेरेंस (जाग कर)—अरे आदमी! कहाँ गया! मुझे एक ग्लास शराब दे।

१ घातक—श्रीमन्! आपको बहुत शराब मिलेगी।

क्लेरेंस—तू कौन है ?

१ घातक—आदमी! जैसे आप हैं!

१ घातक—अरे क्या डर गया ?

२ घातक—हत्या से नहीं, किन्तु दण्ड से ! क्योंकि ईश्वर के दण्ड से कौन बचा सकता है ?

१ घातक—मैं तो समझता था कि तू दृढ है।

२ घातक—मैं उसे जीवित रखने में दृढ हूँ !

१ घातक—अच्छा मैं जाता हूँ, ग्लौस्टर से यही कह दूँगा।

२ घातक—रह जा ! रह जा ! शायद मेरा यह शुद्ध विचार थोड़ी देर में जाता रहे। क्योंकि मेरी आत्मा में पुण्य के भाव आधे मिनिट से अधिक नहीं रहते !

१ घातक—(थोड़ी देर में) अब तेरा क्या हाल है ?

२ घातक—अभी तक तो कुछ दया बाकी है।

१ घातक—सोच तो सही कि इस काम की पूर्त्ति पर हम को कितना इनाम मिलेगा।

२ घातक—अरे मैं इनाम तो भूल ही गया था। अब तो यह अवश्य मारा जायगा।

१ घातक—अब तेरी दया कहाँ गई।

२ घातक—रिचार्ड ग्लौस्टर की थैली में !

१ घातक—जब वह इनाम देने के लिए थैली खोलेगा तो सब दया भाग जायगी !

२ घातक—अच्छा ! जल्दी करो ! दया को भाग जाने दो। बहुत सों को दया होती तक नहीं !

१ घातक—अगर फिर तुझे दया आजाय तो कैसा हो ?

२ घातक—अब मैं इसकी परवा न करूँगा। इससे लोग भीरु होजाते हैं। न आदमी चोरी कर सकता है। न झूठी शपथ खा सकता है। यह आदमी को निकम्मा कर देती है।

१ घातक—मेरे मन में तो यह अब तक कह रही है कि क्लेरेंस को न मारो।

२ घातक—चल हट। इसकी बात मत सुन।

१ घातक—मेरा हृदय वज्र का है। यह मेरा क्या करेगी ?

२ घातक—क्या कार्य्य आरम्भ करें ?

१ घातक—इसको तलवार पर उठाकर शराब के पीपे में डाल दो।

२ घातक—अच्छी बनाई।

१ घातक—यह तो जाग उठा।

२ घातक—अच्छा, मारो।

१ घातक—नहीं, पहले बातें करेंगे।

क्लेरेंस (जाग कर)—अरे आदमी। कहाँ गया। मुझे एक ग्लास शराब दे।

१ घातक—श्रीमन्। आपको बहुत शराब मिलेगी।

क्लेरेंस—तू कौन है ?

१ घातक—आदमी। जैसे आप हैं।

यह कहकर उन दोनों ने क्लेरेंस का वहीं ढेर कर दिया और उसकी लाश को पीपे में छिपा दिया।

यद्यपि एडवर्ड ने पहले ग्लौस्टर की चालाकियों से क्लेरेंस की मृत्यु के लिए हुक्म दे दिया था परन्तु फिर क्षमा कर दिया। लेकिन रिचार्ड ग्लौस्टर ने जल्दी से उसे मरवा डाला। जिस समय एडवर्ड ने क्लेरेंस की मृत्यु की खबर सुनी उसे बहुत खेद हुआ और वह ढारें मारकर रोने लगा। क्योंकि अब उसे अपने भाई के वे सब पराक्रम याद आगये जो उसने ट्यूक्सबरी के रणक्षेत्र में किये थे। एडवर्ड उस समय बीमार था और थोड़े दिनों में मर गया।

अब तो रिचार्ड की चढ़ बनी। एडवर्ड ने मरते समय यह निश्चय किया था कि राजकुमार एडवर्ड राजा हो और रिचार्ड उसका संरक्षक। रिचार्ड दिखलाने को तो सब से प्रेम करता था परन्तु उसके मन में सदा कपट-कतरनी चलती रहती थी। क्लेरेंस को मरवा ही चुका था। अब राजकुमार एडवर्ड और उसके भाई राजकुमार रिचार्ड की बारी आई। राजकुमार एडवर्ड और उसकी माता एलीजिबेथ उस समय लार्ड रिवर्स और लार्ड ग्रे की संरक्षकता में थे।

लार्ड रिवर्स एलीजिबेथ का भाई था और लार्ड ग्रे उसका पहले पति से उत्पन्न हुआ पुत्र। इन दोनों से रिचार्ड को वैर था। और इनके सामने वह अपने भतीजों को कुछ हानि नहीं पहुँचा सकता था इसलिए सब से पहले उसने इन्हीं की खबर

ली और बकिङ्घम की सहायता से इनको पैामफ्रेट के किले में कैद कर दिया। इलीजिबेथ ने जब अपने सम्बन्धियों की इस दुर्दशा का हाल सुना तो बड़ी दुःखित हुई और उसे मालूम हो गया कि रिचार्ड मेरा और मेरे वंशजों का नाश करना चाहता है। इसलिए वह भाग कर अपने छोटे बेटे रिचार्ड के साथ किसी धर्म सम्बन्धी मठ को चली गई।

जब राजकुमार एडवर्ड ने अपने मामा का हाल रिचार्ड ग्लौस्टर से पूछा तो उसने कह दिया कि ये तुम्हारे सम्बन्धी तुमको मार डालना चाहते हैं। इसलिए यही उचित मालूम होता है कि उनको तुम्हारे पास से अलग कर दिया जाय और तुमको तुम्हारे भाई सहित लन्दन के मीनार में भेज दिया जाय क्योंकि वह जगह बहुत अच्छी है। एडवर्ड ने यद्यपि इस बात को पसन्द न किया परन्तु बेचारे को जाना पड़ा और उसका छोटा भाई रिचार्ड भी महारानी इलीजिबेथ के पास से छीन कर वहीं भेज दिया गया। इस समय यद्यपि नाममात्र को पंचम एडवर्ड देश का राजा था परन्तु सब अधिकार रिचार्ड ग्लौस्टर के हाथ में था। वह जो चाहता था वही करता था और शनैः शनैः अपने को गद्दी पर बिठाने का उपाय करता जाता था।

पहले तो उसने लार्ड रिवर्स और ग्रे को इस अपराध में फांसी लगवा दी कि ये लोग मेरे मारने की तैयारियाँ कर रहे हैं। इसके पश्चात् लार्ड हेस्टिंग्ज का सिर कटवा लिया, क्योंकि वह रिचार्ड को राजा बनाना स्वीकार नहीं करता था।

इतने आदमियों के मरने पर लन्दन में शोर मच गया और नगर के लोग उत्तेजित हो गये, परन्तु बकिङ्घम और रिचार्ड ने नई नई झूठी बातें गढ़ कर उनको शान्त करना चाहा। रिचार्ड मक्कारी से एक कमरे में दो पादरियों के साथ धर्मशास्त्र को पढ़ने और ईश्वर की आराधना में संलग्न हो गया और बकिङ्घम को सिखला कर लोगों को शान्त करने के लिए भेजा।

बकिङ्घम ने लोगों से हेस्टिंग्ज को प्राणदण्ड देने का कारण बतला कर कहा कि प्रथम तो चौथा एडवर्ड * रिचार्ड ड्यूक आफ यार्क का लड़का नहीं था, क्योंकि उसका जन्म ऐसे समय हुआ था जब रिचार्ड फ्रांस की लड़ाइयों में फँस रहा था, इसलिए वह जारज मालूम होता है और यह बात यों भी सिद्ध होती है कि चौथे एडवर्ड का आकार अपने पिता के सदृश न था दूसरे यह कि पांचवां एडवर्ड चौथे एडवर्ड का धार्मिक पुत्र नहीं है क्योंकि इसकी माता इलीज़िबेथ का विवाह होने से पहले चौथे एडवर्ड की मँगनी फ्रांस में हो चुकी थी। ऐसी अवस्था में इलीज़िबेथ न तो उसकी धर्मपत्नी हो सकती है और न उसके लड़के उसके धर्मपुत्र। इसलिए अब राज का वास्तविक अधिकारी रिचार्ड ग्लौस्टर ही है। यह अपने पिता रिचार्ड आफ

*यह रिचार्ड वह है जिसने छठे हेनरी से लड़ाई की और जो चौथे एडवर्ड का बाप था।

यार्क का सच्चा पुत्र है, इसका आकार भी अपने पिता के तुल्य है और यह धार्मिक भी है।

लोग इस विचित्र कथा के सुन कर चकित हो गए, क्योंकि उनके स्वप्न में भी इन झूठी बातो का ध्यान न था। वे अपने छोटे राजा को गद्दी से उतारना नहीं चाहते थे। परन्तु रिचार्ड ग्लैास्टर और बकिङ्घम ने बड़े बड़े आदमियो को ऐसा भर रक्खा था और अपने विरोधियो के मुँह तलवार से बन्द कर रक्खे थे कि लन्दन का लार्ड मेयर (मुख्य शासक) और अन्य लोग रिचार्ड को राज देने पर राज़ी होगये और बकिङ्घम चालाकी से उन सब लोगों के साथ लेकर उस महल में आया जहाँ रिचार्ड बगलाभगत बना पादरियो सहित शास्त्राध्ययन कर रहा था।

जिस समय रिचार्ड के इन सबके आने की सूचना दी गई तो दूत ने आकर उत्तर दिया—

"महाराज इस समय ईश्वर की आराधना में सलग्न हैं। कृपा करके कल आइए। पारलैाकिक विचारो में सांसारिक बातो से बाधा पड़ेगी।"

बकिङ्घम—भाई! महाराज से कह दे। कि इस समय बड़ा आवश्यक कार्य्य है।

जब दूत चला गया तो बकिङ्घम लार्ड मेयर और अन्य पुरुषों से कहने लगा—

"देखिए ! रिचार्ड ग्लौस्टर कोई एडवर्ड तो है ही नहीं जो हमेशा सांसारिक व्यसनों में लिप्त रहे। यह तो धार्मिक है और ईश्वर के ध्यान में मग्न है। एडवर्ड की भाँति यह मंत्रियों और राजसभासदों सहित केवल राजकाज में ही नहीं रहता किन्तु पादरियों की सत्संगति में अपने आत्मा की उन्नति करता रहता है। वह दिन बड़ा उत्तम होगा जब यह धार्मिक पुरुष इँग्लैंड का राजा होगा।"

इतने में ग्लौस्टर कोठे पर आया। उसके हाथ में इञ्जील थी और दो पादरी दोनों ओर खड़े हुए थे। उसे देखकर बकिङ्घम ने कहा—

"धर्मावतार ! हमारी विनती सुनिए"।

रिचार्ड ग्लौस्टर—आप लोग क्षमा कीजिए, मैं इस समय परमपिता परमात्मा की सेवा में था, अतएव आप की सेवा न कर सका ! आप की क्या आज्ञा है ?

बकिङ्घम—वही जो ईश्वर चाहता है और इस द्वीप के लोग पसन्द करते हैं।

रि० ग्लौस्टर—क्या मैंने कुछ अपराध किया है कि इतने लोग इकट्ठे होकर यहाँ आये हुए हैं !

बकिङ्घम—हाँ, आपने किया है और हमें आशा है कि अपने इस दोष की निवृत्ति कीजिए।

ग्लौस्टर—जब मैं ईसाई हूँ तो अवश्य करूँगा।

बकिंह्म—आपका यह अपराध है कि आपने अपने पूर्वजो की राजगद्दी को अधार्मिक लोगो के लिए छोड रक्खा है। आप अभी सोये हुए हैं और यह देश उन लोगो के अधिकार में आया हुआ है जिनके धर्म कर्म तथा जन्म किसी का ठिकाना नहीं है। हमारी प्रार्थना है कि आप अपने कधों पर इस भार को लीजिए क्योंकि राज के वास्तविक अधिकारी आपही हैं और देश की प्रजा आप को ही चाहती है।

रिचार्ड ग्लैास्टर—मैं नहीं जानता कि आपको इसका क्या उत्तर दूँ। यदि चुप रहूँ तो आप कहेंगे कि राज का लालच आ गया, यदि आप ऐसे प्रेमियो को ललकार दूँ तो मुझे डर है कि मेरे मित्र मुझ से अप्रसन्न हो जायँगे। इसलिए मेरा स्पष्ट उत्तर यह है कि आप के प्रेम के लिए मैं आपका कृतज्ञ हूँ, परन्तु आप की प्रार्थना स्वीकार नहीं कर सकता। यदि राज का कोई और अधिकारी न होता तो भी मैं राज न लेता, क्योंकि मेरी योग्यता ऐसी कम है कि मैं इस भार को नहीं उठा सकता। परन्तु ईश्वर को धन्यवाद है कि मेरी आवश्यकता नहीं है। राजवृक्ष ने छोटे छोटे फल छोड़ दिये हैं जो समय पाकर पक जायँगे और मैं खुश हूँ कि हमारा योग्य राजा पचम एडवर्ड किसी दिन भले प्रकार से हमारे ऊपर राज करेगा। ईश्वर

न करे कि मैं अपने भतीजे से राज छीनने का विचार तक करूँ ।

बकिङ्घम—महाराज ! आप धार्मिक हैं । इसीलिए ऐसा कहते हैं। आपका विचार है कि एडवर्ड आपके भाई का पुत्र है, हम भी यही कहते हैं परन्तु हमारा आक्षेप यह है कि आप के भाई की धर्मपत्नी का पुत्र नहीं है। पहले आपके भाई की मँगनी लेडी लूसी से हुई थी, यह बात आपकी माता जी को मालूम है। इसके पश्चात् उसकी मँगनी फ्रांसनरेश की बहन बोना से हुई। परन्तु आपके भाई ने इन दोनो योग्य स्त्रियो को छोड कर एक अधबूढी विधवा को ग्रहण कर लिया जिसके कई बालक हो चुके थे। इस स्त्री से यह एडवर्ड उत्पन्न हुआ जो आज राजकुमार—नहीं ! नहीं ! राजा—कहलाता है । शोक है कि मैं प्रत्येक बात स्पष्ट नहीं कह सकता। क्योंकि इससे आप के ही पूर्वजों पर दोष आता है।

रिचार्ड ग्लैास्टर—शोक ! शोक ! आप मेरे सिर पर इतना भार रखते ह । मैं इस योग्य नहीं हूँ कि राज कर सकूँ ।

बकिङ्घम—यदि आप राज न ग्रहण करेंगे तो हम अन्य देश के किसी योग्य पुरुष को गद्दी दे देंगे, क्योंकि जारज एडवर्ड हमारा राजा नहीं हो सकता।

ग्लौस्टर—अच्छा यदि आप की यही इच्छा है तो मुझे कुछ सकोच नहीं है, परन्तु यदि पीछे मुझ पर कोई दोष रक्खे तो यह अपराध मुझ पर नहीं है, क्योंकि ईश्वर जानता है और कुछ कुछ आप को भी मालूम है कि मेरी इच्छा राज लेने की नहीं है।

इस धोखे से रिचार्ड ने इंग्लैंड का राज ले लिया और दूसरे दिन अपने भतीजो एडवर्ड और रिचार्ड को कैद करके तृतीय रिचार्ड के नाम से गद्दी पर बैठ गया।

इनकी माता एलीज़िबेथ को कुछ खबर नहीं थी। इसलिए जब वह अपनी सास अर्थात् तृतीय रिचार्ड की माता के साथ लन्दन के मीनार के पास अपने पुत्र पौत्रों को देखने गईं तो ब्रेकनबरी ने जो मीनार का अधिष्ठाता था उनको भीतर न जाने दिया और कहा कि राजा ने आज्ञा दी है कि कोई भीतर न जाने पावे।

एलीज़िबेथ—राजा ने! अरे कौन राजा है?

ब्रेकनबरी—वही सरक्षक (अर्थात् तीसरा रिचार्ड)!

एलीज़िबेथ—अरे क्या उसने मुझमें और मेरे पुत्रों में भेद करा दिया। मैं उनकी मा हूँ और मुझे भीतर जाने से कौन रोक सकता है?

सास—मैं इनके बाप की माता हूँ। इसलिए उन्हें अवश्य देखूँगी।

ब्रेकनबरी—नहीं श्रीमतीजी। मुझे शपथ दिलाई गई है। मैं आपको नहीं जाने देने का।

इस समय स्टेनली आया और उसने तीसरे रिचार्ड के राज्याभिषेक की सूचना दी। एलीज़िबेथ ने जब यह कुसमाचार सुने तो उसे बड़ा दुःख हुआ। अब उसे निश्चय होगया कि मेरे पुत्र जीते न बचेंगे। इसलिए उसने अपने एक और पुत्र डैसिंट को हनरी रिचमौण्ड के पास भेजा कि वह आकर रिचार्ड को उसके पापों का दण्ड दे। यह हनरी रिचमौण्ड कौन था इसका वर्णन हम आगे करेंगे।

अब दोनो राजकुमारों अर्थात् पाँचवे एडवर्ड और उसके छोटे भाई का मृत्यु समय आपहुँचा, क्योंकि उनका चचा हर घड़ी उन्हीं के मारने का उपाय सोच रहा था। जिस बकिङ्घम की कुटिल सहायता से उसे राजगद्दी मिली थी उसी के द्वारा वह यह काम भी कराना चाहता था। राजा होने से पूर्व उसने बकिङ्घम से प्रतिज्ञा की थी कि मैं गद्दी पर बैठ कर तुम को हियरफोर्ड की जागीर दे दूँगा। एक दिन जब वह गद्दी पर बैठा हुआ था उसने बकिङ्घम को बुला कर कहा—

"मैंने आपकी सहायता से इस उच्चपद की प्राप्ति की है। परन्तु क्या यह गद्दी केवल एकही दिन के लिए है या मैं बहुत दिनों तक इसका सुख भोगूँगा"।

बकिङ्घम—ईश्वर करे आप सदा राज्य करें।

रिचार्ड—अभी एडवर्ड जीवित है। देखें आप क्या राज-भक्ति दिखाते हैं ? क्या आप जानते हैं कि मैं क्या कहूँगा ?

बकिङ्घम—श्रीमहाराज कहें।

रिचार्ड—मैं राजा होना चाहता हूँ।

बकिङ्घम—श्रीमान् तो राजा हैं ही।

रिचार्ड—अरे क्या मैं एडवर्ड के जीते जी राजा हूँ ? मैं चाहता हूँ कि आप इसे शीघ्र मरवा डालें।

यह सुनकर बकिङ्घम के पेट में पानी होगया। यद्यपि उसने रिचार्ड की राजगद्दी के लिए उचित अनुचित सभी काम किये परन्तु एडवर्ड की हत्या से अपने माथे में कलंक का टीका लगाना नहीं चाहता था। रिचार्ड इस कारण बकिङ्घम से क्रुद्ध होगया और हियरफ़ोर्ड की जागीर उसे न दी, क्योंकि बुरे आदमी अपनी प्रतिज्ञा का पालन नहीं कर सकते। जब बकिङ्घम उसकी दुष्ट इच्छाओं को सन्तुष्ट न कर सका तो उसने टाइरल नामी एक हत्यारे के द्वारा एडवर्ड और उसके छोटे भाई रिचार्ड को सोते समय मरवा डाला।

उनकी माता एलीजिबेथ ने जब यह कुसमाचार सुना तो उसकी छाती फट गई। वह रो रोकर कहने लगी—

"हे मेरे लालो ! हे मेरे बच्चो ! हे कुम्हलाये हुए फूलो ! यदि तुम्हारे आत्मा अभी वायु में उड़ते हों तो मेरे सिर के चारों ओर उड़ो और अपनी माता के विलाप को श्रवण करो"

उसकी सास रोकर कहने लगी—

"मेरे ऊपर दुखो का ऐसा पहाड आपडा है कि मैं कुछ नहीं कह सकती। हाय मेरे एडवर्ड तू क्यो मर गया।"

छठे हेनरी की रानी मारगरेट ने, जो उस समय वहीं पर थी, उत्तर दिया—

"एडवर्ड * के बदले एडवर्ड मर गया।"

एलीजिबेथ—हे ईश्वर, क्या तू ने इन मैमनो को त्याग कर भेडिये के मुख में डाल दिया। हे ईश्वर, ऐसे भयानक पाप के समय तू कहां था ?

मारगरेट—जब मेरे पति और पुत्र मारे गये।

एली० की सास—हे ईश्वर, इस पृथ्वी को शीघ्र ही नष्ट कर, क्योंकि इसने निरपराधियों का रक्त बहुत पिया है।

मारगरेट—मेरे एक एडवर्ड था, जिसे रिचार्ड ने मार डाला। मेरे एक हेनरी (उसका पति) था उसे भी रिचार्ड ने मरवा दिया। (एलीजिबेथ से) तेरे एक एडवर्ड था जिसे रिचार्ड ने मरवा डाला। तेरे एक रिचार्ड था जिसे रिचार्ड ने मरवा डाला।

एलीजि० की सास—मेरे एक रिचार्ड † था जिसे तूने मरवा डाला। मेरे एक रटलेण्ड था जिसे तूने मरवा डाला।

---

* मारगरेट के लडके एडवर्ड को चौथे एडवर्ड ने रिचार्ड द्वारा मरवाया था।

† उसके पति अर्थात् चौथे एडवर्ड के पिता का नाम रिचार्ड था।

मारगरेट—तेरे एक क्लेरेंस था जिसे रिचार्ड ने मरवा डाला। तेरे गर्भ से एक ऐसा कुत्ता उत्पन्न हुआ है जो हम सब को खाये जाता है। हे ईश्वर! तू कैसा न्यायी है कि इसी कुत्ते से अपनी माता की सन्तान को मरवा कर उसे औरों की भाँति दुःखी करता है।

एलीजि० की सास—हनरी की बहू! तू मेरे दुःखों पर मत हँसे! ईश्वर जानता है कि तेरे दुःखों पर मैंने शोक किया है।

मारगरेट—मेरा आत्मा बदला लेने की आग से जल रहा है। तेरा एडवर्ड, जिसने मेरे एडवर्ड को मारा था, मर गया। तेरा दूसरा एडवर्ड मार डाला गया। तेरा रिचार्ड भी मर गया। क्योंकि इन सब की मृत्यु से मेरे दुःखों का बदला नहीं हो सका। तेरा क्लेरेंस मर गया, क्योंकि उसने मेरे एडवर्ड के तलवार मारी थी। हेस्टिंग्ज रिवर्स, ग्रे आदि सब जिन्होंने मुझे दुःख दिया था नरक में पहुँचा दिये गये। रिचार्ड अभी जीवित है। हे ईश्वर इसकी मृत्यु मेरे आँखों के सामने हो!

एलीजिबेथ—तूने तो पहले ही कहा था कि मैं तेरे साथ कोसूँगी।

मारगरेट—मैंने तो कहा था कि तू भी मुझ सी ही होगी। अब देख तेरा पति कहाँ है ? तेरे भाई अब क्या हुए ? तेरे पुत्रों का भी कुछ पता है ?

एलीजिवेथ—तेरा शाप ठीक होता है। मुझे भी बता दे कि अपने शत्रुओं को किस प्रकार शाप दूँ।

मारगरेट—रात को सो मत, दिन को खा मत। कोसे ही जा। फिर देख कि तेरा शाप ठीक होता है या नहीं।

एलीजिवेथ—मेरे शब्द तीक्ष्ण नहीं हैं।

मारगरेट—दुःख सबको तीक्ष्ण बना देता है।

यह कह कर मारगरेट उठ गई और रिचार्ड थोड़ी देर पीछे वहाँ होकर गुज़रा। उसे देख कर उसकी माता रोने लगी। रिचार्ड ने एक स्त्री को आर्त्तस्वर से रोते हुए दूर से देख कर पूछा—

"यह कौन है ?"

माता ने उत्तर दिया "मैं वह हूँ जो यदि चाहती तो तुझे जन्म समय ही गला घोट कर मार डालती"।

एलीजिवेथ—अरे दुष्ट ! हत्यारे ! तूने मेरे बच्चों को मार कर यह मुकुट सिर पर रक्खा है। अरे निर्दयी, बता मेरे लाल कहाँ हैं ?

माता—मेरा क्लेरेंस कहाँ है ? अरे दुष्ट बता, और उसका लड़का नेड कहाँ है ?

एलीजि०—मेरा भाई रिवर्स और मेरा बेटा ग्रे कहाँ है ?
माता—दयालु हेस्टिंग्ज कहाँ है ? अरे क्या तू मेरा पुत्र है ?
रिचार्ड—हाँ ! इसके लिए मैं पिता जी का और आपका कृतज्ञ हूँ।
माता—तू मेरी बात सुन !
रिचार्ड—कहो, पर मैं सुन नहीं सकता।
माता—मैं कोमल शब्द कहूँगी।
रिचार्ड—संक्षेप से—मुझे जल्दी है।
माता—तुझे इतनी जल्दी है। मैं रो रो कर तेरी प्रतीक्षा कर रही थी।
रिचार्ड—फिर मैं आपको शान्ति देने के लिए आ तो गया।
माता—नहीं नहीं ! तूने तो इस पृथ्वी को मेरे लिए नरक बना दिया। तेरे जन्म पर मुझे बड़ा कष्ट हुआ था। बचपन में भी तू बड़ा चंचल और कुटिल था। लड़कपन में भी तू बड़ा उत्पाती था। युवा अवस्था में भी तो तू बड़ा घातक निकला। भला तुझ से मुझे कब सुख मिला है ?
रिचार्ड—यदि मैं ऐसा ही हूँ तो मुझे जाने दो।
माता—एक बात सुन।
रिचार्ड—तुम्हारे शब्द बड़े कर्कश हैं !
माता—मैं एक बात कहूँगी। फिर कभी न कहूँगी।

रिचार्ड—अच्छा।

माता—या तो ईश्वर तुझी को तेरे पापों के बदले में परास्त करेगा। और यदि तुझे जीत हुई तो मैं मर जाऊँगी। पर कभी तेरा मुँह न देखूँगी। इसलिए यह अन्तिम शाप तुझे देती हूँ कि जिस प्रकार तूने हत्या की है उसी प्रकार तू बुरी मौत मरेगा।

माँ बाप के शाप बहुधा ठीक होते हैं और रिचार्ड की माता का शाप यथार्थ हुआ। हम ऊपर कह चुके हैं कि एलीज़िबेथ ने डोर्सेट को हनरी रिचमौण्ड की सेवा में भेजा था कि वह आकर रिचार्ड से उसके अत्याचारों का बदला ले।

इस हेनरी रिचमौण्ड का राज-अधिकार समझने के लिए हम को दूसरे रिचार्ड और चौथे हनरी के पूर्वजों की ओर ध्यान देना चाहिए। चौथे हनरी के पिता गाण्ट की तीसरी स्त्री कैथरायन सिनफोर्ड थी। हनरी रिचमौण्ड इस कैथरायन की परपोती का लड़का था और इसका बाप एडमण्ड ट्यूडर हनरी पंचम की विधवा कैथरायन का पुत्र था, जिसने हनरी की मृत्यु के पश्चात् वेल्ज के एक सिपाही ओविन ट्यूडर से विवाह कर लिया था।

यद्यपि हनरी रिचमौण्ड का यह दूरस्थ सम्बन्ध राज पर अधिकार जमाने के लिए संतोषजनक नहीं था परन्तु उसने

इस अवसर को बहुत ही अच्छा समझा। उधर महारानी एलीज़िबेथ ने अपनी पुत्री एलीज़िबेथ का विवाह भी उससे करना अङ्गीकार कर लिया। रिचमैाण्ड ने डोर्सेट का सदेसा सुनते ही बहुत सी सेना इकट्ठी की ग्रैार मिल्फोर्ड बन्दर पर आ गया। उसको देखते ही, बहुत से जागीरदार, जो तीसरे रिचार्ड की दुष्टता से तंग आ रहे थे, विद्रोह करके रिचमैाण्ड से जा मिले। बकिङ्घम भी उनमें से एक था जिससे ग्रैार रिचार्ड से पाँचवें एडवर्ड की मृत्यु पर कुछ अनबन हो गई थी।

बकिङ्घम की सेना तो एक तूफान के कारण तितर बितर हो गई ग्रैार वह पकड़ा गया। रिचार्ड ने उसी समय उसका सिर कटवा लिया।

अब दोनों दलों की बौस्वर्थ के रणक्षेत्र में मुठभेड़ हुई। रात्रि के समय जब रिचार्ड ग्रैार रिचमैाण्ड अपने अपने डेरों में सो रहे थे, रिचार्ड ने स्वप्न में देखा कि छठे हैनरी के पुत्र राजकुमार एडवर्ड ने उससे आकर कहा—

"कल रण में मैं तुझे पराजित करूँगा, क्योंकि तूने मुझे युवावस्था में ट्यूक्सबरी में मार डाला था"।

इसके पश्चात् छठा हेनरी आकर कहने लगा—

"जब मैं जीवित था उस समय तूने मेरे शरीर में छिद्र ही छिद्र कर दिये। इसलिए कल तू निराश होकर मरेगा"।

फिर राजकुमार क्लेरेंस ने कहा—"देख रिचार्ड, तूने मुझे छल करके मरवाया है। याद रख, कल तू जीता न बचेगा।"

इसके पीछे रिवर्स और ग्रे कहने लगे—

"तूने हम को पोम्फ्रेट में मरवाया था। इसका बदला कल लिया जायगा"।

फिर हेस्टिंग्ज आया और कहने लगा—

"पापी हत्यारे, जाग, याद रख जिस प्रकार तूने हेस्टिंग्ज़ को मारा है उसी प्रकार कल तू मारा जायगा"।

इसके पश्चात् पाँचवें एडवर्ड और उसके भाई रिचार्ड ने आकर कहा—

"अपने भतीजों की याद कर जिनको तू ने कैदखाने में मरवाया था। येही कल तेरी मौत के कारण होंगे"।

सबसे पीछे बकिंहुम आकर कहने लगा—

"अरे दुष्ट! मैंने ही तुझे राजगद्दी दिलाई थी! और सब से पीछे मैं ही तेरे अत्याचार की भेंट हुआ। कल मुझे याद करके अपनी दुष्टता पर पश्चात्ताप करना, क्योंकि तेरे कुकर्म कल रण-क्षेत्र में फलीभूत होंगे।"

रिचार्ड अब जाग पड़ा और मारे डर के काँपने लगा। अब उसे अपनी सब दुष्टतायें याद आ गई। क्योंकि अन्त समय पापियों को अपने सब पाप याद आ जाते हैं। उसका अन्तःकरण

उसे दुःख देने लगा। कुकर्मों का चित्र उसकी आँखों के सामने खिँच गया। वह कहने लगा—

"ईश्वर! ईश्वर! दया करो! मैंने कैसा भयङ्कर स्वप्न देखा है। कायर अन्तःकरण! तू मुझे क्यों सताता है। यहाँ तो और कोई नहीं। मैं अकेला ही हूँ। फिर क्यों डर लगता है। क्या रिचार्ड अपने आप से ही भय खाता है? क्या यहाँ पर कोई घातक है? नहीं! नहीं! अगर घातक हूँ तो मैं ही। फिर क्या मैं अपने को ही मारूँगा? नहीं नहीं! मुझे अपना आत्मा प्रिय है। क्यो, क्या मैंने इसका हितकर कुछ काम किया है? नहीं! अब मुझे अपने आप से घृणा है क्योंकि मैंने बड़े बड़े पातक किये हैं। मैं बड़ा दुष्ट हूँ। परन्तु मैं झूठ बोलता हूँ। मैं ऐसा नहीं हूँ। मेरे अन्त करण में सहस्रों वाणियाँ हैं और हर एक उनमें से आ आकर मेरे कुकर्मों की कथा सुनाती है। मेरे पाप एक एक करके सामने आते हैं और कहते हैं कि मैं हत्यारा हूँ। मुझे कोई प्यार नहीं करता और यदि मैं मर गया तो कोई मेरे लिए आँसू न बहावेगा। औरों की तो बात ही क्या है मैं स्वयं अपने से घृणा करता हूँ। प्रतीत होता है कि उन सब मनुष्यों के आत्मा, जिनको मैंने मरवाया था, आ आकर मुझे धमकाते हैं और कल बदला लेंगे!"

जब वह इस प्रकार अनुताप कर रहा था, उसके एक सेनापति रैटक्लिफ ने आकर कहा—"स्वामिन्!"

रिचार्ड—कौन है!

रैटक्लिफ़—श्रीमन् ! मैं हूँ रैटक्लिफ़। मुर्ग़ा दो बार प्रातःकाल को प्रणाम कर चुका है और आपके साथियों ने शस्त्र धारण कर लिये हैं।

रिचार्ड—मैंने एक बुरा स्वप्न देखा है। क्या मेरे साथी कल मेरा साथ देंगे?"

रैट०—निस्सन्देह !

रिचार्ड—मुझे भय है ! मुझे भय है !

रैट०—नहीं महाराज ! स्वप्न से क्या डरना ?

रिचार्ड—"आज जितना भय स्वप्न से हुआ है उतना रिचमैाण्ड के दश सहस्र शस्त्रधारियों से भी नहीं आ सकता।"

उधर रिचमैाण्ड को आज की रात भले प्रकार नींद आई और उसे अच्छे अच्छे स्वप्न दिखाई दिये। उसने उठ कर लोगों से कहा—

"ईश्वर हमारी सहायता करेगा और हमारे शुभ काम में सफलता होगी। सिवा रिचार्ड के और सब हमारी जय के अभिलाषी हैं। क्योंकि हमारे विपक्षी गण भले प्रकार जानते हैं कि वे एक दुष्ट के लिए लड़ रहे हैं, जो अवसर पाकर उन्हीं का शत्रु हो जायगा। यह वही मनुष्य है जिसने हत्या के द्वारा राज पाया है और जिसने उन्हीं के सिर लिये हैं जिन्होंने उसे सहायता दी थी। यह पातकी, जिसने इँग्लैण्ड की राजगद्दी को

अपवित्र किया है, सदैव ईश्वर का विरोधी रहा है। फिर यदि आप लोग ईश्वर के इस शत्रु के विरुद्ध लड़ेंगे तो ईश्वर अवश्य आपसे प्रसन्न होगा। यदि आप इस घातक के मारने का प्रयत्न करेंगे तो आपको शान्ति की नींद प्राप्त होगी। यदि आप देश-शत्रुओं के विरुद्ध लड़ाई करेंगे तो देश आपका कल्याण करेगा। यदि आप अपनी स्त्रियों के सतीत्व की रक्षा के लिए युद्ध करेंगे तो स्त्रियाँ आपको साधुवाद कहेंगी। यदि आप अपने बच्चों को अत्याचाररूपी तलवार से बचावेंगे तो आपके बच्चों के बच्चे आपको असीस देंगे। इसलिए ईश्वर का नाम लेकर इन अधिकारों की रक्षा के लिए युद्ध कीजिए।"

अब युद्ध आरम्भ हुआ। रिचार्ड को जिन लोगों की सहायता की आशा थी वे सब उसके विरोधी हो गये। नार्थम्बरलेण्ड ने कहला भेजा कि मेरी सेना सुशिक्षित नहीं है, इसलिए इसका भेजना व्यर्थ है। सरे रिचार्ड का सदेसा सुनकर हँसने लगा। स्टेनले जाकर रिचमोण्ड से मिल गया। इस प्रकार रिचार्ड के साथी बहुत कम हो गये। और जो रहे वे भी आधे मन से लड़े। परिणाम यह हुआ कि रिचार्ड मारा गया। उसकी सेना पराभूत हो गई और उसका मुकुट एक जगह झाड़ी में पड़ा पाया गया।

हनरी रिचमौण्ड ने उसको अपने सिर पर रख लिया और सातवें हेनरी के नाम से गद्दी पर बैठा। मृत पुरुषों का यथा-

योग्य मृतक सस्कार किया गया और जो लोग रिचार्ड के साथ लडे थे उनको क्षमा कर दिया गया।

सातवे हेनरी ने चौथे एड्वर्ड की पुत्री एलीजिवेथ से विवाह किया और इस प्रकार लङ्काष्टरवंशी हेनरी के यार्क वंशी एलीजिवेथ को विवाहने से यह दोनो वंश मिल गये और जो झगड़ा तीस वर्ष पूर्व गुलाब-युद्ध के नाम से आरम्भ हुआ था उसको वोस्वर्थ की लडाई ने समाप्त कर दिया।

आठवाँ हनरी ।

Henry VIII

'तृतीय रिचार्ड' में कहा जा चुका है कि हनरी रिचमौण्ड ने तृतीय रिचार्ड को मारकर स्वयं अपने को इंग्लैण्ड का राजा बना लिया। उसने १५०९ ई० तक राज किया। उसके मरण उपरान्त उसका छोटा लड़का हनरी अष्टम हनरी के नाम से गद्दी पर बैठा, क्योंकि ज्येष्ठ पुत्र आर्थर अपने पिता के जीवन-समय में ही मर चुका था।

हनरी को लड़ाई बहुत पसन्द थी और वह यूरोप के जिस राजा को प्रबल समझता था उसी के विरुद्ध उठ खड़ा होता था। यहाँ तक कि आज इस देश से सन्धि करता और उससे लड़ता, कल उससे सन्धि करता और इससे लड़ता। इस प्रकार पहले उसने फ्रांस के राजा बारहवें लूइस से लड़ाई की। परन्तु इस युद्ध से अंगरेजों को बहुत हानि उठानी पड़ी। १५१४ ई० में फ्रांस से सन्धि हो गई और हनरी की छोटी बहिन मेरी का

विवाह लूइस से कर दिया गया। थोड़े दिनों पीछे लूइस की मृत्यु पर उसका भतीजा फ्रांसिस फ्रांस की गद्दी पर बैठा और अँगरेजों से फिर उसकी लड़ाई छिड़ गई। परन्तु शीघ्र ही मेल हो गया और १५२० ई० में हनरी फ्रांसनरेश से भेंट करने के लिए फ्रांस गया। कैले के पास दोनों सम्राटों का मिलाप हुआ और फ्रांस वालों ने ऐसे समारोह से इँग्लैण्ड-नरेश का सत्कार किया और ऐसे सुनहरे कपड़े उसके मार्ग में बिछाये गये कि आज तक उस स्थान का नाम स्वर्णाम्बर-क्षेत्र (Field of cloth of gold) चला आता है।

इन सब कामों में उसका प्रसिद्ध मंत्री वुल्ज़े था, जिसकी बिना सम्मति राजा कुछ काम न करता था। वुल्ज़े इप्सविच नामी नगर के एक कसाई का लड़का था जो अपनी विद्या तथा बुद्धि के बल से इस उच्च पद को पहुँच गया था। वुल्ज़े यद्यपि बड़ा विद्वान्, नीतिज्ञ और राजकाज में दक्ष था परन्तु उसकी अभिलाषायें अनन्त थीं। वह बड़े से बड़े उच्च पद को प्राप्त करना चाहता था। मंत्री होने के कारण उसे देश भर में सब से अधिक अधिकार था। राजा को छोड़ कर वह सब से ऊँचा समझा जाता था। इस पर भी उसे सन्तोष न था और प्रसिद्ध पुरुषों को वह झट से गिरा दिया करता था। २० वर्ष तक उसने राज का काम किया और मनमाना प्रबन्ध किया। राजा बिलकुल उसके हाथ में था। छल कपट उसका इतना बढ़ा हुआ

था कि जिस प्रतिष्ठित पुरुष को न चाहता उसी से झट राजा को नाराज कर देना और उसे फांसी या कैद करा देता। इन दिनों उसकी शक्ति बहुत बढ़ रही थी और फ्रांस से लौट कर राजा उसे और भी अधिक प्यार करने लगा था। इस समय उसे यार्क का लाट पादरी बना दिया गया और पोप * ने उसे अपना प्रतिनिधि भी चुन लिया था। इस प्रकार अब उसकी शक्ति कैण्टरबरी के लाटपादरी से भी अधिक बढ़ गई थी और उसे इस पर बड़ा अभिमान था।

एक समय बकिङ्घम, नारफाक और एबर्गेवनी की लन्दन में भेंट हुई और वे आपस में फ्रांसिस और हनरी के मिलाप के विषय में वार्तालाप करने लगे। बकिङ्घम ने कहा—

"ज्वर के कारण मैं घर में ही पड़ा रहा, जब कि केले में उत्सव मनाया जा रहा था।"

नारफाक—"मैं उस समय वहीं था और अपनी आंखों से इस महोत्सव का अवलोकन किया था। दोनों राजे घोड़ों पर सवार दोनों ओर से आये, एक ने दूसरे को प्रणाम किया। दोनों घोड़ों से उतरे और एक ने दूसरे को गले लगा लिया।"

*रोमन कार्थलिक ईसाइयों का सबसे बड़ा धर्मराज, जो रोम में रहता है, पोप कहलाता है।

विवाह लूइस से कर दिया गया। थोड़े दिनों पीछे लूइस की मृत्यु पर उसका भतीजा फ्रांसिस फ्रांस की गद्दी पर बैठा और अँगरेजों से फिर उसकी लड़ाई छिड़ गई। परन्तु शीघ्र ही मेल हो गया और १५२० ई० में हनरी फ्रांसनरेश से भेंट करने के लिए फ्रांस गया। कैले के पास दोनों सम्राटों का मिलाप हुआ और फ्रांस वालों ने ऐसे समारोह से इँग्लैण्ड-नरेश का सत्कार किया और ऐसे सुनहरे कपड़े उसके मार्ग में बिछाये गये कि आज तक उस स्थान का नाम स्वर्णाम्बर-क्षेत्र (Field of cloth of gold) चला आता है।

इन सब कामों में उसका प्रसिद्ध मंत्री वुल्जे था, जिसकी बिना सम्मति राजा कुछ काम न करता था। वुल्जे इप्सविच नामी नगर के एक कसाई का लड़का था जो अपनी विद्या तथा बुद्धि के बल से इस उच्च पद को पहुँच गया था। वुल्जे यद्यपि बड़ा विद्वान्, नीतिज्ञ और राजकाज में दक्ष था परन्तु उसकी अभिलाषायें अनन्त थीं। वह बड़े से बड़े उच्च पद को प्राप्त करना चाहता था। मंत्री होने के कारण उसे देश भर में सब से अधिक अधिकार था। राजा को छोड़ कर वह सब से ऊँचा समझा जाता था। इस पर भी उसे सन्तोष न था और प्रसिद्ध पुरुषों को वह झट से गिरा दिया करता था। २० वर्ष तक उसने राज का काम किया और मनमाना प्रबन्ध किया। राजा बिल्कुल उसके हाथ में था। छल कपट उसका इतना बढ़ा हुआ

था कि जिस प्रतिष्ठित पुरुष को न चाहता उसी से झट राजा को नाराज कर देता और उसे फाँसी या कैद करा देता ! इन दिनों उसकी शक्ति बहुत बढ़ रही थी और फ्रांस से लौट कर राजा उसे और भी अधिक प्यार करने लगा था। इस समय उसे यार्क का लाट पादरी बना दिया गया और पोप * ने उसे अपना प्रतिनिधि भी चुन लिया था। इस प्रकार अब उसकी शक्ति कैण्टरबरी के लाटपादरी से भी अधिक बढ़ गई थी और उसे इस पर बड़ा अभिमान था।

एक समय बकिङ्घम, नारफाक और एबर्गेवनी की लन्दन में भेंट हुई और वे आपस में फ्रांसिस और हनरी के मिलाप के विषय में वार्तालाप करने लगे। बकिङ्घम ने कहा—

"ज्वर के कारण मै घर में ही पड़ा रहा, जब कि फेले में उत्सव मनाया जा रहा था।"

नारफाक—"मैं उस समय वहाँ था और अपनी आँखों से इस महोत्सव का अवलोकन किया था। दोनों राजे घोड़ों पर सवार दोनों ओर से आये, एक ने दूसरे को प्रणाम किया। दोनों घोड़ों से उतरे और एक ने दूसरे को गले लगा लिया।"

---

*रोमन कैथलिक ईसाइयों का सबसे बड़ा धर्मगुरु, जो रोम में रहता है, पोप कहलाता है

बकिङ्घम—उस समय मैं ज्वर के वन्दीगृह में कैद था।

नारफ़ाक—तो तुमने इस भौमिक उत्सव का अवलोकन न किया ! हर एक दिन पहले दिन से अधिक समारोह था। आज अगर फरासीसी लोग स्वर्ण-वस्त्र पहने हुए अंगरेजो से मिलने आये तो दूसरे दिन उन्होंने इँग्लैण्ड को हिन्दुस्तान बना दिया। हर एक आदमी यह मालूम होता था कि सोने की खान है। छोटे छोटे नौकर सुनहरी वरदियाँ पहने दमकते फिरते थे। और युवतियाँ, जिनका परिश्रम करने का स्वभाव नहीं था, मान के बोझ से दबी जाती थीं।

बकिङ्घम—यह सब प्रबन्ध किसने किया था ?

नारफ़ाक—यार्क के लाटपादरी ने।

बकिङ्घम—बुरा हो इसका ! यह किसी के सुख की बात नहीं सोचता। दिन प्रति दिन इसका अभिमान बढ़ता जाता है और यह अपने काम के लिए दूसरों का नाश कर देता है। भला इसको क्या पड़ी थी कि इस भीड़भाड़ से फ्रांस को जाता !

एबर्ग्रेवनी—तीन पुरुषों को तो मैं जानता हूँ कि इस यात्रा के कारण ही उनकी जायदाद नष्ट हो गई !

बकिङ्घम—सैकड़ों अपनी जायदादों को पीठ पर रख कर इस यात्रा को गये और उनकी दुर्गति हो गई ! भला इस भीड़भाड़ से क्या परिणाम निकला ?

नार्फोक—मुझे बड़ा शोक है कि हमारी और फ़रासीसियों की सन्धि से इसके व्यय को देखे कुछ भी नतीजा न निकला।

बकिङ्घम—मुझे तो यह जान पड़ता है कि शीघ्र ही यह सन्धि टूट जायगी।

नार्फोक—यह तो ठीक है। देखो फ्रांसवालों ने हमारे व्यापारी जहाजों को बोर्डो में पकड़ लिया है।

एबर्गेवनी—यह तो अच्छा मेल है, क्या इसी के लिए इतना खर्च हुआ?

बकिङ्घम—यह सब इस वुल्ज़े की करतूत है।

नार्फोक—आप आज कल होशियार रहिए। क्योंकि वुल्ज़े और आप में जो विरोध हो गया है उसका परिणाम अच्छा न होगा। वुल्ज़े की शक्ति को देखते हुए असावधानी ठीक नहीं है।

थोड़े दिनों से वुल्ज़े और बकिङ्घम में कुछ बिगड़ गई थी। इसीलिए नार्फोक ने इस ओर सङ्केत किया था। जब ये बातें हो ही रही थीं उसी समय वुल्ज़े वहाँ पर आगया। उसके कटाक्षों से विदित होता था कि वह बकिङ्घम के विरुद्ध कोई अभियोग चलाने का उपाय सोच रहा है। वास्तव में यही हुआ। वुल्ज़े का तो स्वभाव ही यह था कि जिसके विरुद्ध हो जाता उसकी जड़ खोद के फेंक देता। अब बेचारे बकि-

ङ्घम की बारी आगई। उसके एक निकाले हुए भृत्य को रुपया देकर बुल्ज़े ने ऐसा सिखाया कि वह राजविद्रोह का अभियोग उसपर सिद्ध करने को राजी होगया। उधर राजा के ऐसे कान भरे गये कि उसने वारण्ट काट कर बकिङ्घम और उसके सम्बन्धी एवर्ग्रेवनी को कैद करा लिया। और जब बुल्ज़े और राजा इस मुकद्दमे को सुनने के लिए बैठे तो बकिङ्घम के नौकर ने आकर साक्षी दी कि—

"महाराज! बकिङ्घम रोज यह कहा करता था कि यदि राजा बिना सन्तान के मर जाय तो मैं उसकी गद्दी पर बैठूँ। यह शब्द मैंने इसको अपने दामाद एवर्ग्रेवनी से कहते हुए सुने थे। और यह कहता था कि मैं शीघ्र बुल्ज़े से बदला लूँगा।"

बुल्ज़े—देखिए महाराज! इसकी इच्छायें कैसी कुटिल हैं।

राजा—अच्छा कहो, यह अपना अधिकार राजगद्दी के लिए किस प्रकार सिद्ध करता है?

नौकर—श्रीमन्! किसी पुजारी ने उससे यह भविष्यत् वाणी कही है कि राजा सन्तानरहित मर जायगा और यदि बकिङ्घम को प्रजा पसन्द करे तो वह राजा हो सकता है।

राजा—अच्छा कहो।

नौकर—मैं सत्य सत्य कहता हूँ। मैंने उसे बहुत समझाया कि यह पुजारी झूठा है। आप कोई ऐसी बात न

कीजिए जिससे हानि उठानी पड़े। परन्तु उसने झिड़क कर कहा 'नहीं मुझे कुछ हानि नहीं पहुँच सकती।' उसने यह भी कहा कि यदि पिछली बीमारी में राजा मर गया होता तो बुल्जे श्रौर सरलाविल के सिरों का पता भी न लगता।

राजा—ऐसी दुष्टता! श्रौर क्या?

नौकर—एक बार जब महाराज ने इसे कुछ कहा था तो यह कह रहा था कि यदि आज मुझे कैद का हुक्म होता तो मैं वह करता जो मेरे पिताजी तीसरे रिचार्ड के साथ करना चाहते थे। अर्थात् राजा के पेट में छुरी भोंक देता।

राजा हनरी—बड़ा हत्यारा है।

नौकर—यह कह कर उसने अपनी तलवार पर हाथ रख कर एक बड़ी शपथ खाई।

राजा ने बकिङ्घम पर अभियोग चलाया श्रौर उसके नौकरों की साक्षी पर उसको फांसी का आदेश दिया गया। जिस समय लोग बकिङ्घम को पकड़े लिये जारहे थे श्रौर सैकड़ों आदमी मार्ग में उसके दर्शनों के लिये एकत्रित हो रहे थे, बकिङ्घम ने कहा—

सज्जन पुरुषो! आप इतनी दूर से यहाँ मेरे ऊपर दया करने पधारे हैं तो मेरी बात सुनिए श्रौर फिर घर चले जाइए। मुझे आज राजविद्रोह के दोष में फांसी का हुक्म हुआ है।

परन्तु ईश्वर जानता है कि मेरा कुछ भी अपराध नहीं है। यदि मैं सच न कहता हूँ तो ईश्वर मुझे दण्ड दे। यह दोष राज-नियम का नहीं है। क्योंकि न्यायालय में साक्षी के अनुसार न्याय किया गया। परन्तु मैं चाहता हूँ कि साक्षी देने वालो में अधिक ईसाईपन (धर्मत्व) होता। परन्तु जो कुछ उन्होने किया सो अच्छा किया। मै उनको क्षमा करता हूँ। परन्तु उनको चाहिए कि वे प्रतिष्ठित पुरुषो पर इस प्रकार झूठे दोष लगाने का परिश्रम न किया करें। नहीं तो ईश्वर उनको अपने किये की सजा देगा। मैं अपने प्राण बचाना नहीं चाहता और न राजा से क्षमा का प्रार्थी हूँगा। मेरे सच्चे मित्रो! जो मेरी मृत्यु पर रोने के लिए आये हो, कृपा करके मेरे लिए ईश्वर से प्रार्थना कीजिए, जिससे मेरी मुक्ति हो जाय।

सर निकालस वौक्स ने जो उसके साथ था कहा कि आप अब नौका पर सवार हुजिए, आप के उच्च पद के अनुकूल यह सजा दी गई है। इस पर बकिङ्घम ने उत्तर दिया—

"नहीं! सर निकालस रहने दीजिए। मेरा कुछ पद नहीं है। आप व्यर्थ मेरे सम्मान में क्यो कष्ट करते हो। जिस समय मैं आया था उस समय मैं सब कुछ था। अब कुछ भी नहीं! परन्तु अब भी मैं अपने शत्रुओ से उच्च हूँ, क्योंकि मैंने कभी झूठ नहीं बोला। मेरी वही दशा हुई जो मेरे पिता जी की हुई थी। जिस समय उन्होंने तीसरे रिचार्ड के अत्याचारो का विरोध

किया और विपत्ति में पड गये तो उन्होंने अपने नौकर का आश्रय लिया। परन्तु उस दुष्ट ने उनको पकडवा दिया। मुझे भी मेरे ही नौकरों ने पकडवाया। परन्तु प्यारे सज्जन पुरुषो! यह बात याद रक्खो कि जो मनुष्य तुम से प्रेम करता है उसी को राजा मरवा डालता है। अब मैं तुम से बिछडता हूँ। ईश्वर तुम्हें खुश रक्खे।"

बकिङ्घम के मरने के पीछे एक और घटना हो गई। इसकी कथा इस प्रकार है।

हम ऊपर कह चुके हैं कि हनरी का बडा भाई आर्थर अपने पिता के सामने ही मर गया था। उसका विवाह आरागन (हस्पानिया) की राजकुमारी कैथरायन से हुआ था। आर्थर की मृत्यु पर उस की मँगनी हनरी से हो गई। जब हनरी राजा हुआ तो कैथरायन का नियमानुकूल विवाह भी हो गया और वह अठारह वर्ष तक महारानी रही। उसके एक बेटी भी उत्पन्न हुई, जिसका नाम राजकुमारी मेरी था।

एक दिन राजा वुल्जे के घर भोजन करने गया। वहाँ नगर की युवती सुन्दरियाँ इकट्ठी थीं। उनमें से एक रूपवती का नाम ऐन बोलिन था। ऐन बोलिन महारानी कैथरायन की सहेली थी, परन्तु उसके रूप की प्रशंसा बहुत थी। हनरी उसको देखते ही मोहित हो गया और उससे विवाह करने का विचार किया। अकस्मात् उसे ऐसा करने के लिए एक बहाना भी हाथ

आ गया। ईसाइयों में यह बात धर्मविरुद्ध समझी जाती है कि विधवायें अपने मृत पति के भाई से विवाह कर सकें। इस सिद्धान्त के अनुसार कैथरायन हनरी की धर्मपत्नी नहीं हो सकती थी। परन्तु उसके पिता सातवें हनरी ने नीतिज्ञता के विचार से यह विवाह स्वीकार कर लिया था और इन अठारह वर्षों में किसी को यह विचार नहीं हुआ कि हनरी का विवाह धर्मविरुद्ध हुआ है। परन्तु अब ऐन बोलिन के प्रेम में मग्न होकर राजा को धर्माधर्म का विचार हुआ और उसने कैथरायन को परित्याग करने का इरादा किया।

यह परित्याग बिना धर्मराज अर्थात् पोप की आज्ञा के असम्भव था। अतएव उसने १५२७ ई० में क्लीमेण्ट सप्तम को जो उस समय पोप था एक प्रार्थना-पत्र लिखा कि मुझे अपने धर्मविरुद्ध विवाह पर पश्चात्ताप है और मैं चाहता हूँ कि नियमानुसार कैथरायन को परित्याग करूँ। उसे पूर्ण आशा थी कि पोप उसकी प्रार्थना को अवश्य स्वीकार करेगा। क्योंकि थोड़े दिनों पहले हनरी ने मार्टिन लूथर* के विरुद्ध एक लेख लिखा था। जिस पर पोप लियोदशम ने उसको धर्मरक्षक की पदवी दी थी। परन्तु पोप को कैथरायन के भतीजे पाँचवे चार्ल्स का भय था। क्योंकि उस समय चार्ल्स यूरोप में बड़ा बलवान् गिना

---

* जर्मनी का एक पादरी था जो प्रोटेस्टेण्ट मत का सस्थापक हुआ। लूथर पोप के विरुद्ध था।

जाता था और उसके अधीन हस्पानिया, आस्ट्रिया और जर्मनी आदि कई देश आ गये थे। ऐसी अवस्था में पोप स्वय तो इस परित्याग को स्वीकृत न कर सका, लेकिन उसने कार्डीनल कम्पियस को अपना प्रतिनिधि बनाकर इँग्लैण्ड में भेजा कि इस मामले को नियमानुसार तै कर सके। ब्लैकफ्रायर्स नामक महल में यह कार्डीनल कम्पियस और वुल्जे इस मुकद्दमे को सुनने के लिए बैठे और हनरी और केथरायन भी वहाँ पर आये। नियमानुसार चपरासी ने न्यायालय* के बाहर पुकार कर कहा—इँग्लैण्ड नरेश हनरी हाजिर है ?

हनरी—"हाजिर"।

चपरासी—"इँग्लैण्ड की महारानी केथरायन हाजिर है ?"

कैथरायन ने कुछ उत्तर न दिया और कुर्सी से उठकर हनरी के पैरों पर गिर पड़ी और रोकर कहने लगी—

"श्रीमन्! आप मेरे साथ न्याय कीजिए। और दया कीजिए। क्योंकि मैं एक अशक्त स्त्री हूँ। यहाँ मेरा कोई नहीं है। मेरा जन्म आपके देश में नहीं हुआ। और परदेश में मेरा कोई मित्र नहीं है। शोक है कि आप मुझ से नाराज हैं, न जाने क्यों ? भला मैंने कौन सा ऐसा अपराध किया है कि आप मुझे त्यागना चाहते हैं। ईश्वर जानता है कि मै सदा आपकी आज्ञा-कारिणी स्त्री रही

* इँग्लैण्ड मे चर्चकोर्ट (धर्मन्यायालय) अलग थे, जिनमे पुजारी लोग उन बातों का निश्चय किया करते थे जो इसाई धर्म से सम्बन्ध रखती थीं।

हूँ। मैंने वही किया है जो आपने चाहा है। जब आपके मुख से प्रसन्नता प्रकट हुई है मैं प्रसन्न हुई हूँ। जब आप दुःखी हुए हैं मैं भी दुःखी हुई हूँ। भला कब मैंने आप की इच्छा के विरुद्ध काम किया और कब आपकी इच्छा को अपनी इच्छा नहीं माना? आपका कौन ऐसा मित्र है जिससे अपना शत्रु होते हुए भी मैंने प्रेम नहीं किया! ऐसा कौन मेरा मित्र था जिस पर आपकी दृष्टि बदली देख कर मैं नाराज नहीं हुई? श्रीमन्! याद तो कीजिए कि बीस वर्ष से अधिक मैं आपकी आज्ञा-कारिणी स्त्री रही और आप से कई बच्चे भी उत्पन्न हुए। यदि आपके पास एक भी ऐसा प्रमाण हो जिससे मेरा असतीत्व सिद्ध होता हो तो आप अभी मुझे निकाल दीजिए और ईश्वर मेरे आत्मा को काला करे। श्रीमहाराज! आपके पिता जी बड़े बुद्धिमान् और शास्त्रज्ञ थे। और मेरे पिता जी फर्डीनण्ड जो हस्पानियानरेश थे, बहुत से राजों में बुद्धिमान् गिने जाते थे। इन दोनों ने देश देश के धर्मात्मा विद्वानों की सभा करके यह निश्चय कराया था कि हमारा विवाह धर्मानुकूल है। फिर क्या यह इस बात का प्रमाण नहीं है कि विवाह धर्म विरुद्ध नहीं था? इसलिए महाराजाधिराज! आप कृपा करके मुझे समय दीजिए कि मैं अपने हस्पानिया वाले मित्रों से सम्मति मँगा लूँ।

वुल्ज़े—श्रीमती जी! यहाँ देश भर के चुने चुने विद्वान् बैठे हुए हैं जो अपने न्याय तथा सत्य के लिए प्रसिद्ध हैं।

ये लोग आपके अधिकारों की रक्षा करेंगे इसलिए अब न्याय सभा से अधिक समय माँगना व्यर्थ है।"

कम्पियस—श्रीमान् ने यथार्थ कहा है। इसलिए देवी जी, उचित यही है कि अब कार्य्यवाही की जाय और प्रमाणों पर विचार किया जाय।

कैथरा०—(वुल्जे से) मैं आप से कुछ कहना चाहती हूँ।

वुल्जे—देवी जी की आज्ञा ?

कैथरा०—श्रीमन्, मैं रोने को थी। परन्तु यह विचार करके कि हम महारानी हैं या कम से कम अपने को महारानी समझती रही हैं, और एक महाराजा की पुत्री हैं, हम अपने आँसुओं को आग की चिनगारियों में परिवर्त्तित कर देंगी।

वुल्जे—आप सन्तोष कीजिए।

कैथराय०—उसी समय जब आप उचित व्यवहार करेंगे। इससे पूर्व सतोष करने से ईश्वर मुझे दण्ड देगा। बहुत से दृढ़ प्रमाणों से मुझे ज्ञात हो गया है कि आप मेरे शत्रु हैं। और इसलिए मैं कह सकती हूँ कि आप मेरे न्यायाधीश नहीं हो सकते। आपने ही मेरे और मेरे स्वामी के बीच में आग भड़का दी है। ईश्वर इसे शान्त करे। इसलिए मैं फिर कहती हूँ कि मुझे आप से घृणा है और आप मेरे न्यायाधीश नहीं हो सकते।

मैं आपको बड़ा बुरा शत्रु मानती हूँ और आप कभी सत्य के प्रेमी नहीं हो सकते।

वुल्जे—आपको ऐसा कहना उचित नहीं है। देवी जी! आप मेरे साथ अनर्थ करती हैं। मुझे आप से वैर नहीं है और न मैं आप या किसी अन्य के साथ अन्याय कर सकता हूँ। जो कुछ मैंने किया है या करूँगा वह सब पोप के प्रतिनिधि की सम्मति के अनुकूल करूँगा। आप मुझे इस आग के भड़काने का दोष लगाती हैं, परन्तु मुझे इस बात से विरोध है। राजा यहाँ उपस्थित हैं। अगर वह कह दें कि मैं झूठ कहता हूँ तो मुझे दण्ड दीजिए और यदि वह जानते हैं कि मैं सत्य कहता हूँ तो आपका कथन ठीक नहीं है। अब महाराज के अधीन है कि मुझे सच्चा करें या झूठा। परन्तु महाराज से प्रार्थना करने के पूर्व मेरी आप से यह विज्ञप्ति है कि आप अपने मन से यह विचार दूर कर दीजिए।

कैथरायन—श्रीमन्! मैं एक सरल स्त्री हूँ और आप के कपट छल का सामना नहीं कर सकती। आप अपने धर्मपद के अनुसार नम्र और मृदुभाषी हैं, परन्तु आपका आत्मा अभिमान और वैर से युक्त है। आप अपने भाग्य और श्रीमहाराज की कृपा से बहुत बढ़ गये हैं और अब अपने ही बढ़ाने वालों पर शासन

करना चाहते हे। मै आप को अपना न्यायाधीश नहीं मानती और आप सबके सम्मुख पोप से प्रार्थना करती हूँ कि वही मेरा न्याय करें"।

यह कह कर राजा को प्रणाम करके उसने वहाँ से जाना चाहा। कम्पियस उसे बुलाता रहा। परन्तु महारानी ने किसी की बात न सुनी और चली गई।

राजा ने कम्पियस और अन्य उपस्थित पादरियों को यह बात दिखलानी चाही कि वह अपनी स्त्री का परित्याग किसी शत्रुता या अन्य कारण से नहीं करता है किन्तु विवाह धर्मविरुद्ध होने से उसे पश्चात्ताप हुआ है। इसलिए वह कहने लगा—

"वुल्जे ने मुझे कभी परित्याग के लिए नहीं कहा। पहले पहल यह बात मुझे उस समय सूझी जब मेरी पुत्री मेरी का विवाह औलियन्स के ड्यूक के साथ होने वाला था और वेअन के पादरी ने जो इस विवाह को निश्चय करने के लिए आया था यह प्रश्न उठाया कि क्या मेरी मेरी धर्म की पुत्री है, क्योंकि मैंने अपने भाई की विधवा से विवाह किया था। उसी समय से मुझे अपने अधर्म पर अनुताप होने लगा। पहले तो मैंने यही समझा कि ईश्वर मुझ से इस धर्मविरुद्ध विवाह के कारण अप्रसन्न है, क्योंकि इस रानी से मेरे जो पुत्र हुआ वह मर गया। इसलिए मैंने सोचा कि इस वंश का नाम केवल मेरे अधर्म के कारण नष्ट हुआ चाहता है। मेरे आत्मा में इस अधर्म का ऐसा

पश्चात्ताप हुआ कि उसका प्रायश्चित्त करने के लिए मैंने इस गुणवती स्त्री को परित्याग करने की ठान ली, जिसके लिए आप सब यहाँ उपस्थित हुए हैं। मैंने हर एक पादरी की सम्मति ली। लिंकोल्न और कैण्टरबरी के लाटपादरी से पूछा। सबने शास्त्र विचार कर यही उत्तर दिया। जिस का परिणाम आज यहाँ पर देख रहे हैं।"

लिङ्कोल्न और कैण्टरबरी के पादरियों ने राजा की साक्षी दी। इसके पश्चात् सभा विसर्जन हुई। परन्तु हनरी को यह बात अच्छी न लगी कि कम्पियस और वुल्जे ने मुकद्दमा इस समय नहीं किया। क्योंकि उसकी यही इच्छा थी कि जिस प्रकार होता परित्याग की जल्दी से व्यवस्था मिल जाती और वह पेन बोलिन से विवाह कर सकता।

इसके उपरान्त हनरी ने पेन बोलिन से अधिक प्रेम प्रकट करना आरम्भ कर दिया। कैथरायन विचारी लन्दन के ब्राइडवैल नामी महल में अपने दिन काटने लगी। पेन बोलिन को पेम्ब्रोक की मार्शनेस (रानी) की पदवी दी गई और उसके गुजारे के लिए एक सहस्र पौंड सालाना नियत कर दिये गये।

कैथरायन को अपने दुर्भाग्य पर अत्यन्त शोक था। शोक क्यों न हो? वह अब तक समस्त इंग्लैण्ड की महारानी थी। आज पल भर में वह एक साधारण स्त्री हो गई। दुःख का पहाड़ उसके शिर पर आ पड़ा। वह बेचारी बड़े कष्ट से रहने लगी।

एक दिन जब वह अपने महल में बैठी हुई थी और दासी काम कर रही थी तो उसने कहा—

"मेरा आत्मा शोकग्रसित हो रहा है। अरे बाजा उठा ले और गीत गाकर इन दुःखों को मेरे मन से हटा दे"।

उसी समय वुल्जे और कम्पियस वहाँ पर आ गये और वुल्जे ने कहा—

"श्रीमहारानी जी को शान्ति हो।"

कैथरा०—आपके यहाँ आने का क्या प्रयोजन है।

वुल्जे—आप अपने निज के कमरे में अकेली चलिए। वहाँ हम आपको अपने आने का पूरा कारण बतलायेंगे।

कैथरा०—यहीं कहो। अभी तक मैंने कोई ऐसा पातक नहीं किया है कि कोने में छिपने की आवश्यकता हो। ईश्वर करे, अन्य स्त्रियाँ भी अपने स्वतन्त्र आत्मा से इसी प्रकार कह सकें। श्रीमन्! मुझे इस बात की परवा नहीं है कि क्यों सब लोगों ने मेरे कामों के विषय में वादविवाद किया। मुझे मालूम है कि मेरा जीवन अब तक स्वच्छ रहा है और इस बात से मुझे ख़ुशी है। यदि आपको कुछ कहना है तो स्पष्ट कहिए, क्योंकि सत्य बातें स्पष्ट ही हुआ करती हैं"।

इस पर वुल्जे ने लैटिन भाषा में रानी से कुछ कहना चाहा। क्योंकि उसका प्रयोजन यह था कि उसकी दासियाँ न समझ सकें। परन्तु कैथरायन ने बात काट कर कहा—

"श्रीमन्! लैटिन न बोलिए। जब से मैं इस देश में आई हूँ कभी इँगलैण्ड से बाहर नहीं गई। मुझे यह भाषा भली प्रकार आती है। अन्य भाषा में कहने से मेरा झगडा और भी सदिग्ध हो जाता है। यहाँ कुछ स्त्रियाँ बैठी हुई हैं, ये आप के सत्य वचनों को सुन कर आप को साधुवाद देंगी"।

वुल्जे—श्रीमती जी! मुझे शोक है कि जो सेवा मैंने आपकी और श्रीमहाराज की की है और जिस सत्यता से मैं काम करना चाहता था उसको सदेह की दृष्टि से देखा गया है। हम यहाँ इसलिए नहीं आये कि आपके सर्वप्रिय आचरण में कुछ दोष लगावें या आपके दुःख को जो इस समय बहुत बढ रहा है अधिक करें। हमारा प्रयोजन केवल यह जानने का है कि आप अपने स्वामी की अप्रसन्नता के समय में किस प्रकार से हैं? और आपकी क्या सम्मति है?

कम्पियस—महारानी जी! वुल्जे आप का सच्चा सेवक है। इसलिए यद्यपि आप ने उसको बहुत कुछ बुरा भला कहा है, परन्तु तिस पर भी वह आप को यथोचित सम्मति देने आया है।

कैथरा०—श्रीमन्! मैं आपकी इस कृपा का धन्यवाद देती हूँ। आप धार्मिक पुरुष की भांति कह रहे हैं। ईश्वर करे आपका मन आप की वाणी के अनुकूल हो। परन्तु मैं नहीं समझती कि ऐसे आवश्यक समय में मैं इतनी जल्दी कैसे उत्तर दे सकती हूँ। मैं तो इस समय अपनी सहेलियों के साथ काम में लगी हुई थी। मुझे क्या मालूम था कि आप जैसे प्रतिष्ठित पुरुष आ रहे हैं। हाय! यहाँ मेरा कोई नहीं है?

वुल्जे—देवी जी! आप का कथन ठीक नहीं है। आप के मित्र बहुत हैं।

कैथरा०—इँगलैण्ड में कोई नहीं? क्या तुम समझते हो कि कोई अंगरेज़ मुझे सम्मति देगा। या राजा के विरुद्ध होकर मुझ से मित्रता करेगा? सच तो यह है कि मेरे मित्र जो मेरे भले की सोच सके यहाँ नहीं हैं, किन्तु यहाँ से दूर मेरे ही देश (इस्पानिया) में हैं।

कम्पियस—मेरी प्रार्थना है कि आप शोक को छोड़ कर मेरा कहा मानें।

कैथराय०—क्या?

कम्पियस—अपने को केवल राजा के आश्रय छोड़ दीजिए। क्योंकि वे बड़े दयालु हैं। इससे आपके मान में भेद न पड़ेगा। यदि न्यायालय में मुकद्दमा चला तो आप बदनाम हो जायँगी।

वुल्जे,—हाँ यह ठीक कहते हैं।

कैथरायन—आप वही कहते हैं जो चाहते हैं—अर्थात् मेरा सर्वनाश। क्या यह कोई सम्मति है? ईश्वर मेरे ऊपर है। वह ऐसा न्यायाधीश है कि उसे कोई राजा नहीं बिगाड़ सकता।

कम्पियस—क्रोध आप को धोखा दे रहा है।

कैथरा०—आपके लिए और लज्जा है। मैंने समझा था कि आप बड़े पवित्र हैं, परन्तु आपके हृदय कैसे काले हैं। आप मुझ दुखियारी को ऐसी सम्मति देते हैं। मैं नहीं चाहती कि ईश्वर आपको मुझ से आधा भी दुःख दे। परन्तु एक बात याद रक्खो। कहीं ऐसा न हो कि मेरे दुःखों का भार आपके ऊपर आ पड़े।

वुल्जे—देवी जी, मैं आपके भले की कहता हूँ और आप उससे भागती हैं।

कैथरायन—श्रीमन्! मैं अपने को इतनी पापिन नहीं बना सकती कि अपनी इच्छा से उस पदवी को त्याग सकूँ जो मुझे राजा ने विवाह करके प्रदान की थी। मेरी पदवी मेरी मृत्यु पर ही छूट सकती है।

वुल्जे—रानी जी! सुनिए।

कैथरायन—अच्छा होता कि मैं कभी इस देश में पैर न रखती। और इस मिथ्या व्यवहार से मुझे परिचय न

होता। आप लोगो के मुख देवतों के से है, परन्तु आप के मन की ईश्वर जानता है। हाय! संसार में मुझ से अधिक कौन अभागा होगा (अपनी सहेलियो से) अभागिनो! कहो अब तुम्हारा भाग्य कहाँ गया! मैं ऐसे स्थान पर विनष्ट हुई जहाँ कोई मेरा मित्र नहीं है। हाय! कोई मुझे रोने के लिए भी नहीं है। आज मैं उस कमलिनी के सदृश जो एक दिन खेतों की महारानी बनी हुई थी, मुरझा जाऊँगी।

वुल्जे—अगर आप हमारा कहना मानें तो आपको अधिक शान्ति होगी। भला हम आप से क्यों शत्रुता करने लगे? आप सोचिए तो सही! राजे लोग नम्रता से बहुत प्रसन्न होते हैं श्रोर धृष्टता से नाराज। मैं जानता हूँ कि आप का आत्मा बड़ा नम्र है। यदि आप सोचेंगी तो ज्ञात होगा कि हम आप के कैसे सच्चे सुहृद् हैं।

कम्पियस—हाँ श्रीमती जी! ऐसा ही है। आप व्यर्थ भय करके अपने आत्मा के साथ अनर्थ करती है। ईश्वर ने आप के शरीर में एक महान् आत्मा को प्रवेश किया है। राजा को आपसे प्रेम है। श्रोर यदि आप हम पर विश्वास करें तो हम आप के अनुकूल भरसक उद्योग करने को तैयार हैं।

कैथरायन—जो चाहो सो करो। मुझे क्षमा करो। आप जानते हैं कि मैं एक स्त्री हूँ। मुझ में ऐसा चातुर्य कहाँ जो आप ऐसे योग्य पुरुषों की बात का उत्तर दे सकूँ। आप राजा से कह दीजिए कि अब भी मेरा मन उन्हीं के चरणकमलों में है और जब तक मैं जीवित रहूँगी उनकी भलाई के लिए ईश्वर से प्रार्थना करती रहूँगी।

अब वुल्ज़े और कम्पियस चले गये और उन्होंने इस बात को स्वीकार कर लिया कि कैथरायन के कथनानुसार इस झगड़े का फैसला पोप ही करेगा।

जब हनरी ने देखा कि वुल्ज़े और कम्पियस स्वय उसकी इच्छा के अनुकूल नहीं करते और टालमटोल कर रहे हैं तो वह बहुत क्रुद्ध होगया और वुल्ज़े के ऊपर टूट पड़ा।

वुल्ज़े के शत्रु देश में बहुत थे। और जिस प्रकार आज तक वुल्ज़े दूसरे लोगों को तंग किया करता था इसी प्रकार ये लोग अपने बदले का अवसर ढूँढ रहे थे। नार्फोक, सफोक और लार्ड सरे ने सलाह की और राजा के महल में परस्पर यों बाते करने लगे—

नार्फ़ोक—यदि आप सब मिल कर इस समय वुल्ज़े की शिकायत करें तो उसकी एक न चलेगी। यदि इस

अवसर को छोड दिया तो फिर आप को इस समय से भी अधिक लज्जित होना पडेगा !

सरे०—मैं छोटे से छोटे अवसर के लिए भी तैयार हूँ। अपने ससुर की मृत्यु से मुझे शोक हो रहा है।

सफोक—कौन ऐसा प्रतिष्ठित पुरुष है जो इस दुष्ट की घातो से बचा हो।

लार्ड चेम्बरलेन—आप व्यर्थ बातें कर रहे हैं। मुझे भय है कि हम क्या कर सकते हैं। जब तक आप वुल्ज़े का आना जाना राजा तक बन्द नहीं कर सकते उस समय तक कुछ नहीं हो सकता।

नार्फ़ोक—इससे न डरिए। राजा के पास इसकी दुष्टता का काफी प्रमाण है। अब वह इसकी मीठी बातों में नहीं आने का।

सरे०—मुझे यह बात सुन कर बडा हर्ष है।

नार्फ़ोक—सच जानो, जो कार्यवाही इसने केथरायन के परित्याग के विरुद्ध की है, उसका राजा को पता लग गया है।

सरे०—यह भेद कैसे खुला ?

सफोक—अकस्मात्।

सरे०—कैसे ? कैसे ?

सफोक—वुल्ज़े ने पोप के लिए जो पत्र भेजे थे वे राजा के हाथ लग गये। उनमें इसने लिखा था कि आप अभी परित्याग की आज्ञा न दीजिए; नहीं तो राजा ऐन बोलिन से विवाह कर लेगा।

सरे०—क्या राजा ने इस पत्र को देखा है ?

सफोक—अवश्य !

चैम्बरलेन—राजा को अब इसकी करतूत मालूम हो गई है। परन्तु राजा ने पहले ही काम कर लिया अर्थात् चुपचाप ऐन बोलिन से विवाह कर लिया।

सरे०—क्या राजा इस पत्र पर कुछ न करेगा ?

नार्फोक—ईश्वर ईश्वर ! इस समय उचित यह है कि जो कुछ कहना हो कह डालें, क्योंकि राजा वुल्ज़े से बड़ा अप्रसन्न हो रहा है। कम्पियस देश से बिना कहे चला गया और राजा समझता है कि यह सब वुल्ज़े की करतूत है।

चैम्बरलेन—ईश्वर राजा को और क्रोध दे !

नार्फोक—क्या क्रेनमर लौट आया ?

सफोक—हाँ, और उसने राजा को दूसरा विवाह करने की व्यवस्था भी दे दी। अब ऐन बोलिन नियमानुसार महारानी होगी और कैथरायन केवल आर्थर की विधवा कही जायगी।

जिस समय ये बातें हो रही थीं, वुल्ज़े को कुछ खबर न थी। वह यह कोशिश कर रहा था कि हनरी का विवाह फ्रांस-नरेश की बहन से हो। इसलिए उसने इसी की पूर्ति के लिए चालें चलनी आरम्भ कर दी थीं। परन्तु राजा ने क्रेनमर नामी एक पादरी द्वारा व्यवस्था ले ली और विवाह कर लिया।

राजा वुल्ज़े से नाराज़ हो गया और अकस्मात् उसे वुल्ज़े का एक कागज़ मिल गया जिसमें उस रुपये का सब हिसाब था जो वुल्ज़े ने अपने व्यय के लिए लोगों से लिया था। राजा ने वुल्ज़े को बुलाया और उस पर राजविद्रोह का दोष लगाया।

वुल्ज़े झट समझ गया कि मेरा अन्त अब निकट आ पहुँचा। वह राजा का स्वभाव जानता था। और इसी चिन्ता में लन्दन को आते हुए लीसेस्टर में मर गया।

इस प्रकार एक ऐसे बड़े पुरुष का अधःपतन हो गया जिस की चालें समस्त यूरोप को चला रही थीं और हनरी तो उस की मुट्ठी में आ गया था।

इसके पश्चात् क्रेनमर का मान बढ़ा। उसको कण्टरबरी का लाट पादरी बना दिया गया और ऐन बोलिन अब महारानी होकर राजा के साथ गद्दी पर बैठने लगी।

थोड़े दिनों पीछे लोग क्रेनमर के भी शत्रु हो गये। उस समय जर्मनी में मार्टिन लूथर ने पोप के धर्म के विरुद्ध प्रचार

करना आरम्भ कर दिया था और यूरोप के बहुत से लोग उस के अनुयायी हो गये थे।

क्रेनमर की रुचि भी उसी ओर थी। इसलिए बहुत से लोगों ने उस पर अभियोग चलाया कि यह देश में अधर्म फैला रहा है। परन्तु हनरी उसके विरुद्ध नहीं था। इसलिए यद्यपि लोग उसे कैद करना चाहते थे और जो सभा इसका निश्चय करने के लिए नियत की गई थी उसने कैद का हुक्म भी दे दिया था, तथापि हनरी ने क्रेनमर को बचा लिया।

उन्हीं दिनों में ऐन बोलिन के एक लड़की उत्पन्न हुई, जिसका नाम एलीज़िबिथ रक्खा गया। इस पर राजा को अत्यन्त हर्ष हुआ और एक महोत्सव मनाया गया। क्रेनमर ने ही उसका नामकरण किया। राजा के पूछने पर पादरी कहने लगा—

"ईश्वर की प्रेरणा से मैं कह सकता हूँ कि यह राजकुमारी पालने में ही बड़ी तेजस्विनी मालूम होती है। ईश्वर ने कृपा की तो यह एक दिन सब राजों में प्रभावशालिनी होगी। संसार इसका मान करेगा। इसके राज में प्रजा शान्ति से रहेगी, देश उन्नति को प्राप्त होगा"।

राजा—आप तो बहुत कह रहे हैं।

क्रेनमर—नहीं महाराज! इस से इँगलैंड भर को सुख मिलेगा। इसकी आयु बहुत बड़ी होगी और यह कुमारी ही मरेगी।

राजा—लाटपादरी ! आज आपने मेरा जीवन सफल कर दिया। इसके जन्म से पहले मुझे कभी ऐसा आनन्द नहीं हुआ। आप की भविष्यवाणी से मेरे मन में ऐसी उत्कण्ठा हो रही है कि स्वर्ग में पहुँच कर मैं वहाँ से इसके पराक्रमों का अवलोकन करूँ।

वस्तुत एलीजिबिथ ऐसी ही हुई। क्योंकि १५५८ ई० में वह इंगलैंड की गद्दी पर बैठी और उसके समय में राज की ऐसी उन्नति हुई जैसी कई सौ वर्ष से सुनने में नहीं आई थी। ४५ वर्ष राज करके १६०३ ई० में वह कुमारी मर गई।

कोरियोलेनस

(Cariolanus.)

खीष्टीय संवत् के ५०० वर्ष पूर्व जब रोम (इटली का प्रसिद्ध नगर) के लोगों ने अपने राजवंश के अत्याचारों से तंग आकर राजों को देश से निकाल दिया और बड़ा प्रयत्न करने पर भी ये राजे अपने पूर्व स्वत्व को प्राप्त न कर सके उस समय रोम की उच्च और नीच जातियों में एक प्रकार का वैमनस्य था। उच्च जातियाँ भारतवर्ष की उच्च जातियों के समान नीच जातियों से घृणा करती थीं और उनकी उन्नति में बाधा डालती थीं। नीच जातियाँ इस घृणा से अप्रसन्न होकर उनके विरुद्ध उत्पात किया करती थीं। उच्च जातियों को पैट्रीशियन और नीच को प्लीबियन कहते थे। प्रथम राज-काज केवल पैट्रीशियन लोगों के हाथ में था, परन्तु होते होते प्लीबियन लोगों को भी यह अधिकार मिल गया था कि अपने प्रतिनिधि चुनें और नीच जातियों में से कुछ मजिस्ट्रेट चुन

लिये जाते थे, जिनका कर्तव्य नीच जातियो के अधिकारों का सुरक्षित रखना था।

जिस समय का हम वर्णन कर रहे हैं उस समय लड़ाई के कारण लोग अपने खेत न जोत बो सके और इसलिए दुर्भिक्ष हो गया। अन्नाभाव के कारण नीच जातियो में आपत्ति फैल गई और वे लोग उन पेट्रीशियन लोगों को जिनके घरो में अन्न भरा हुआ था और भी अधिक शत्रु समझने लगे। बहुत से लोगो ने हथियार लेकर नगर में विद्रोह करना आरम्भ कर दिया कि बलात्कार से अन्न प्राप्त करे। वे केअस मार्शस और अन्य पेट्रीशियनों को बुरा भला कहने लगे। इस भीड भाड में से एक बोला—

"आगे फिर बढना। पहले मेरी बात सुन लो।"

सब लोग०—"कहो कहो"।

१ ला आदमी०—तुम सब मरने को राजी हो, पर भूखे रहने को नहीं।

सब लो०—हाँ! हाँ!

१ ला आद०—तुम जानते हो कि केअस मार्शस प्रजा का शत्रु है।

सब लो०—हाँ हम जानते हैं! हाँ हम जानते हैं!

१ ला आद०—इसको मार डालो और मनमाना अन्न मिल जायगा! क्यों ठीक है न?

सब लोग—ठीक ठीक ! कहो मत ! कर डालो ! चलो चलो।

इस समय एक दूसरे आदमी ने उन्हीं में से कहा—

"भद्र-पुरुषो ! एक बात सुन लो"।

१ ला आदमी—हम दरिद्र पुरुष हैं। भद्रपुरुष तो पेट्री-शियन ही हैं। अगर वे अपना बचा खुचा भी हमको देदें तो हम बच जायँ। पर हमारी दरिद्रता ही उन को धनी बना रही है। जिस कारण हम दुःखी हैं उसी कारण वे लोग सुखी हैं। इसलिए अगर इन आपत्तियों से बचना चाहते हैं तो हमको तलवारों का आश्रय लेना चाहिए। मैं यह बात भूख से कहता हूँ, क्रोध से नहीं!

दूसरा आद०—क्या तुम विशेष कर केअस मार्शस के ही विरुद्ध हो ?

१ ला आद०—पहले तो उसी के ! वह बड़ा सुअर है !

२ रा आद०—तुम जानते हो कि उसने देश के लिए क्या क्या क्या सेवा की ?

१ ला आद०—हाँ ! और इसलिए प्रशंसा करते हैं। परन्तु उसका अभिमान उसे इस प्रशंसा से वञ्चित कर देता है।

२ रा आद०—पक्षपात से मत कहो

१ ला आद०—पक्षपात से नहीं। मैं सच कहता हूँ कि जिसको तुम देश की सेवा कहते हो वह उसने अपनी माता को प्रसन्न करने और अभिमान करने के लिए की थी।

जिस समय केअस मार्शस के विरुद्ध ये बातें हो रही थीं उस समय एक योग्य पुरुष मिनीनियस अग्रीपा वहाँ पर आ गया, जिसको प्रजा भी आदर की दृष्टि से देखती थी। वहाँ आकर उसने कहा "देशभाइयो! इन हथियारों सहित कहाँ जा रहे हो?"

२ ला आद०—राजसभा को भी हमारे विचारों की खबर मिल गई है। और हम जो कहते हैं सो कर दिखायेंगे। वह लोग कहते हैं कि दरिद्र पुरुषों की हाय प्रबल होती है। अब उनको मालूम पड़ जायगा कि उनके बाहु भी प्रबल होते हैं।

मिनीनियस अग्रीपा—भले मित्रो, तितर बितर हो जाओ।

१ ला आद०—नहीं! कदापि नहीं। हम तो वैसे ही तितर बितर हो रहे हैं।

मि० अग्री०—मित्रो मैं कह सकता हूँ कि पेट्रीशियन लोगों को आपका बड़ा ध्यान है। दुर्भिक्ष के उत्तरदाता देवतागण हैं न कि पेट्रीशियन! इसलिए हथियारों के बजाय ईश्वर की प्रार्थना कीजिए। विपत्ति के कारण

तुम्हारी मति भङ्ग हो रही है और तुम उन राज प्रबन्ध करनेवालों को कोस रहे हो जिनको तुमसे पितृवत् स्नेह है।

१ ला आद०—स्नेह ? कभी नहीं! वे स्नेह करते ? उनकी खत्तियाँ भरी हुई हैं और हम भूखों मर रहे हैं। व्याज खानेवालो के अनुकूल नियम बन रहे हैं। प्रजा-हितैषी नियमों की रोक हो रही है। अगर हम लोग युद्ध से बच गये तो ये लोग हमको खाने के लिए तैयार है।

मिनी० अग्री०—या तो तुम लोग पक्षपाती और झूठे हो या मूर्ख। मैं तुम से एक विचित्र कहानी कहना चाहता हूँ।

१ ला० आद०—कहिए कहिए! पर कहानी द्वारा हमारे दुःखों को कैसे निवृत्त करोगे!

मि० अग्री०—एक समय शरीर के अङ्गों में झगड़ा हुआ और वे सब पेट के विरुद्ध हो गये कि यह सुस्त पड़ा रहता है और अच्छे अच्छे माल खाया करता है। हमारे साथ कुछ काम नहीं करता। हम इसके लिए देखते, सुनते, चलते फिरते, सूँघते, बोलते, पकाते और अन्य काम करते हैं। पेट ने उत्तर दिया—

१ ला० आद०—पेट ने क्या उत्तर दिया?

मिनी० अग्री०—मैं कहता हूँ। उसने इन असन्तोषी अङ्गों को, जो पेट को उसी तरह दोष लगाते हैं जैसे तुम राजसभा को मुसकरा के यह उत्तर दिया—'मित्रवर्ग यह सच है कि सब से पहले उस भोजन को मैं ही लेता हूँ जो आपके जीवन का आधार है। और यही बात ठीक है। क्योंकि मैं समस्त शरीर की दुकान या कोश हूँ। परन्तु याद रखिए कि मैं उसे रुधिर-रूपी नदियों द्वारा दिल तक पहुँचाता हूँ। फिर यही भोजन मस्तिष्क में जाता है। सब नस और नाड़ियाँ मुझी से भोजन पाती हैं और यदि आप सब एक साथ यह नहीं देख सकते कि मैं क्या करता हूँ तो मुझ से हिसाब ले लीजिए कि सब तत्त्व खींच कर मैं आपको भेज देता हूँ और केवल फोक मेरे पास रह जाता है।

१ ला आद०—यह उत्तर था। भला हम पर यह कैसे संघटित होता है?

मिनी० अग्री०—रोम की राजसभा यह पेट है और तुम लोग विद्रोही अङ्ग। विचार करो और मालूम होगा कि जो कुछ लाभ तुम को मिलते हैं सब राजसभा ही से मिलते हैं।

जिस समय अग्रीपा अपनी अपर्व युक्तियों से विद्रोहियों को

शान्त कर रहा था केअस मार्कस वहाँ पर आ गया और भड़क कर उनको कहने लगा।

"अरे दुष्टो! क्या चाहते हो? तुम्हें न तो शान्ति प्रिय है और न युद्ध। युद्ध से डरते हो, शान्ति पर अभिमान करते हो सिंहवत् लडने के समय स्यार बन जाते हो। मामला क्या है कि तुम नगर के भिन्न भिन्न स्थानों में इस प्रकार कोलाहल कर रहे हो।

मिनो० अग्री०—इनका विचार है कि धनाढ्य पुरुषों की खत्तियाँ भरी हुई हैं इसलिए मनमाने भाव से अन्न खरीदना चाहते हैं।

केअस मार्शस०—चूल्हे में जाँय। घर बैठे यह समझते हैं कि हमको राजसभा की खबर है। अमुक पुरुष धनाढ्य है, अमुक, दरिद्र है। ये कहते हैं कि अन्न पुष्कल है। यदि पेट्रीशियन लोग दयाभाव को उठा रक्खें और मुझे आज्ञा दें तो मैं तलवार से इन सब की सफाई कर दूँ।

मि० अग्री०—नहीं नहीं। ये लोग तो अब मान गये हैं। अन्य विद्रोहियों का क्या हुआ?

के० मार्शे०—वे भी तितर बितर हो गये। वे कह रहे थे कि हम भूखे हैं। भूख दीवारों को तोड़ डालती है। कुत्तों को भी खाना मिलता है। अन्न ईश्वर ने केवल धनों

पुरुषों के लिए ही नहीं दिया। जब उनके साथ कुछ रिआयत कर दी गई तो वे ख़ुशी के मारे टोपियाँ उछालने लगे।

मि० अग्री०—क्या रिआयत?

के० मार्श०—उनको शान्त करने के लिए पाँच प्रतिनिधि चुनने का अधिकार दे दिया गया। एक जूनियस ब्रूटस है दूसरा सिसीनियस विल्टस और मैं भूल गया।

उसी समय एक दूत द्वारा ज्ञात हुआ कि वोल्सी लोग रोम पर चढ़ाई करने की तैयारियाँ कर रहे हैं। वोलसिया रोम के उत्तर में एक देश था जिसके साथ रोम वालों की सदा लड़ाई हुआ करती थी। इस समय वोल्सी लोगों में टूलस आफीडियस नामी एक प्रसिद्ध सेनापति था जिसकी वीरता से रोमवासी भी भय खाते थे और केग्रस मार्शस के सिवा और कोई मनुष्य ऐसा नहीं था जो इस भयानक शत्रु का मुकाबिला कर सकता। अन्त में राज-सभा ने यह निश्चय किया कि केग्रस मार्शस, कमानियस और टीटस लार्शस एक बड़ी सेना लेकर शत्रु का सामना करें।

उधर वोल्सिया में अफ़ीडियस को रोमवालों की तैयारियों की खबर लग गई और वे और होशियार हो गये। अफ़ीडियस सेना लेकर मुकाबिले को चला परन्तु अन्य वोल्सी लोग कोरियोली नामक दुर्ग की रक्षा करने में कटिबद्ध हुए।

केअस मार्शस बड़ी प्रवीण माता का पुत्र था। उस समय रोम की स्त्रियाँ बड़ी निर्भय हुआ करती थीं और उनके पुत्र युद्ध-सम्बन्धी साहस को अपनी माताओं की गोद में ही प्राप्त किया करते थे, यही कारण था कि रोम में ऐसे वीर हो गये हैं। केअस मार्शस की माता वैलम्निया अपनी पतोहू वर्जीलिया के साथ घर में बैठी सी रही थी। मार्शस के युद्ध पर चले जाने के कारण वर्जीलिया को दुःखी देख कर उसने कहा "बेटी! जाओ या अन्यथा प्रसन्न हो। अगर मेरा पुत्र मेरा पति होता तो मैं उसकी ऐसी अनुपस्थिति को जिस में उसे यश मिले ऐसी उपस्थिति से अच्छा समझती जिस में वह मुझ से अधिक प्रेम प्रकट कर सकता। जब यह मेरा इकलौता बेटा अभी छोटा ही था और जब कोई माता अपने पुत्र को बादशाह को देना भी स्वीकार न करती उसी समय मैंने यह समझ कर कि चित्रवत् घर में सुस्त पड़ा रहने से यशस्वी होना अच्छा है उसे युद्ध की आपत्तियों में भेज दिया था। और वहाँ से वह विजयी होकर आया। मैं सच कहती हूँ कि ऐसी मुझे इस मनुष्य-पुत्र का पहले पहल मुख देख कर ख़ुशी नहीं हुई जैसी यह जान कर हुई कि अब यह मनुष्य बन गया।

वर्जी०—और अगर मर जाता?

वैल०—तो उसका यश मेरा पुत्र होता।" मैं सच कहती हूँ कि अगर मेरे बारह पुत्र होते और सब मार्शस की

भाँति ही प्रिय होते तो भी मैं उनमें से ११ का युद्ध में मरना अच्छा समझती और एक का भागना पसन्द न करती।

वर्जीलिया ने वियोग से दुखित होकर कहा—

"श्रीमाता जी! मुझे एक स्थान में उठ जाने की आज्ञा दीजिए"।

वाल०—नहीं नहीं! मैं अपने मानसिक नेत्रों से तुम्हारे पति को रणक्षेत्र में लड़ता हुआ देख रही हूँ। वह अपने माथे से लोहू की बूँदें पोछ रहा है।

वर्जीलिया—लोहू! हे ईश्वर!

वाल०—मूर्ख लड़की! क्षत्रिय के माथे पर खून ही शोभा देता है।

इतने में वर्जीलिया की एक सहेली वैलीरिया वहाँ आ गई और कहने लगी।

"श्रीमती जी! प्रणाम!"

वाल०—बेटी जीती रहो!

वर्जीलिया—आप ने बड़ी कृपा की।

वैलीरिया—आप दोनो कैसे हैं? क्या सी रही हैं? आपका छोटा बच्चा कैसे है?

वर्जी०—अच्छा है। ईश्वर की दया है।

वाल०—ईश्वर करे वह पाठशाला में जाने के बजाय तलवार और युद्ध के बाजों में संलग्न हो।

वैलीरिया—यह तो ऐसे ही बाप का बेटा है। मैंने उसे गत बुधवार को देखा था। वह बड़ा सुन्दर और वीर प्रतीत होता था। वह एक मक्खी के पीछे दौड़ा और जब वह उसके हाथ न लगी तो उसने ऐसे दाँत पीसे ऐसे दाँत पीसे—

वौलम्निया—ऐसे ही उसका बाप किया करता था।

वैली०—(वर्जीलिया से) सीना उठा रक्खो। चलो जी बहलावें।

वर्जी०—नहीं बहन! आज घर से बाहर न जाऊँगी।

वैली०—क्यों?

वौल०—जायगी!

वर्जी०—नहीं! देवी जी! जब तक पतिजी घर नहीं आते, मैं नहीं जा सकती।

वैली०—यह तो मूर्खता की बात है, चलो!

वर्जी०—नहीं! क्षमा करो।

वैली०—नहीं नहीं! चलो! मैं तुम को तुम्हारे पति का हाल सुनाऊँगी।

वर्जी०—नहीं देवी! अभी कुछ हाल नहीं मिला होगा!

वैली०—मिला है! राज-सभा में पत्र आया है। कमीनियस वौल्सी लोगों से लड़ रहा है टीटस लार्शस और

तुम्हारे पति जी कोरियोली के पास उसको जीतने की कोशिश कर रहे हैं।

अब कुछ युद्ध का हाल सुनिए। केअस मार्शस और टीटस लार्शस कई दिनों तक कोरियोली को लेने का प्रयत्न करते रहे। यहाँ तक कि एक बार वौल्सी लोगों ने दुर्ग से निकल कर शत्रु पर छापा मारा और ऐसे लड़े कि रोम वालों के दाँत खट्टे हो गये। और वे भाग निकले। मार्शस घायल हो गया। परन्तु उसने हिम्मत न हारी और फिर अपनी तितर बितर सेना को इकट्ठा करके वौल्सी लोगों से युद्ध करने लगा।

अन्त को वौल्सी लोग पराजित हो गये और जिस समय नगर-वालों ने अपने भागते हुए भाइयों को आश्रय देने के लिए फाटक खोले तो मार्शस भी उनके साथ नगर में घुस गया और वहाँ ऐसी मारधाड़ मचा दी कि नगर-निवासियों के छक्के छूट गये और मार्शस और उसके आदमी लूट मार करके बाहर निकल आये।

कमीनियस पहले वौल्सी लोगों के सामने से अपने को निर्बल समझ कर हट गया। परन्तु फिर लार्शस और मार्शस की अफीडियस से मुठभेड़ हो गई। और मार्शस बोला।

"अफीडियस! मुझे तू ऐसा बुरा लगता है कि मैं तेरे सिवा किसी से नहीं लड़ना चाहता।"

अफीडियस—हम भी तुझ से ऐसी ही घृणा करते हैं।

मार्शस—जो भागे सो ही दूसरे का दास।

अफ़ीडि०—अगर मैं भागूँ तो खरगोश की मौत मारना!

मार्शस—मैं अभी तीन घण्टे तक कोरियोली में लड़ता रहा। जो रक्त तू मेरे मुँह पर देखता है मेरा नहीं है।

जब इन दोनों में युद्ध हुआ तो थोड़ी देर पीछे वौल्सी-लोग अपने सेनापति की मदद को आ गये। परन्तु मार्शस ने उन सब को भगा दिया। अन्त में कोरियोली ले लिया गया और लज्जा के मारे अफ़ीडियस पेण्टियम में चला गया और वहाँ रहने लगा। जब कमीनियस और लार्शस मार्शस के साथ अपने कम्पू में मिले तो कमीनियस बोला।

"मार्शस! अगर मैं तुमसे तुम्हारे पराक्रमों की कथा कहूँ। तो शायद तुम्हें विश्वास न होगा। परन्तु मैं इनका उस समय वर्णन करूँगा जब सीनेट के सभासद रोम में आनन्द के आँसू बहावेंगे। और जब पेट्रीशियन लोग तुम्हारी प्रशंसा करेंगे और जहाँ प्लीवियन लोग भी जिनको तुमसे अत्यन्त वैर है अपनी इच्छा के विरुद्ध यह कहने पर मजबूर होंगे 'परमात्मन्! तुम धन्य हो। आज रोम में एक वीर मौजूद है'।"

मार्शस—बस बस! रहने दो! मेरी माता को अपने वंश की प्रशंसा करना बड़ा प्रिय है। परन्तु मुझे इससे दुःख होता है। जो मैंने किया है सो तुमने भी किया है। जिसने भक्तिभाव से अपने देश के लिए यथाशक्ति परिश्रम किया वही मेरे तुल्य है।

कमीनियस—अपने गुणों को छिपाना चोरी है। यहाँ समस्त सेना के सामने खड़े होकर जो मैं कहता हूँ उसे सुनो।

मार्शस—मेरे घाव हो रहे हैं और इनमें अपनी प्रशंसा सुन कर पीड़ा हो रही है।

कमीनियस—यह तो ठीक है। अगर उनमें पीड़ा न हो तो वे कृतघ्नता देख कर निर्जीव हो जायँगे। जो कुछ लूट का माल है उसमें से बाँटने से पहले हम दशांश आपकी भेंट करते हैं। इसको स्वीकार कीजिए।

मार्शस—आप का अनुग्रह है। परन्तु मैं अपनी तलवार को रिशवत नहीं दे सकता। मुझे यह अङ्गीकार नहीं है। मैं तो उतना ही लूँगा जो बाँट के अनुसार हर एक को मिलेगा।

यह सुन कर समस्त सेना के मुख से 'मार्शस' 'मार्शस' के जयकारे निकलने लगे। इस पर मार्शस बोला।

"बस करो। बस करो। इन हथियारों को जिनका काम धर्मयुद्ध है झूठी और अनर्थक प्रशंसा में न लगाओ। मुझे ऐसी अत्युक्ति-सूचक प्रशंसा नहीं चाहिए। जैसे मेरे घाव लगे हैं। ऐसे ही औरों को भी"।

कमीनिय०—आप तो बड़े सादे हैं। आज आप को जयमाल पहनाई जायगी और मैं इस उत्सव की ख़ुशी में

अपना सजा सजाया घोड़ा आप को भेंट करता हूँ।
चूँकि आपने कोरियोली को जीता है इसलिए आज
से आप का नाम केअस मार्शस कोरियोलेनस हुआ।"

कर्मीनियस के मुख से इस शब्द के निकलते ही फिर जय-कारों के मारे आकाश गूँज उठा। लोग ख़ुशी के मारे कूदने उछलने लगे और टोपियाँ सिरों के ऊपर उछलने लगीं। टीटस लार्शस ने कोरियोली के राज का प्रबन्ध किया और सन्धि के नियम निश्चित होकर नगर वौल्सी लोगों को ही लौटा दिया गया। कम्पू सेरीम को विजय की सूचना भेज दी गई और वहाँ रोमवाली राजसभा के सभासदों से लेकर ... पुरुषों तक बड़ी उत्कण्ठा से विजयी कोरियोलेनस का स्वागत करने की तैयारियाँ करने लगे। उसकी माँ वौल्म्न्य और धर्मपत्नी वर्जीलिया भी अपने प्यारे से भेंट करने के बाहर निकलीं और मिनीनियस अग्रीपा को मार्ग में मिल कहने लगीं।

वौल०—भद्र मिनीनियस! मेरा लड़का आज आ रहा है!

मिनी० अग्री०—क्या मार्शस आ रहा है?

वौल०—हाँ! और विजय के साथ!

मिनी०—ईश्वर को धन्यवाद हो! क्या सचमुच आ रहा है?

वौल० और वर्जी०—हाँ सचमुच!

चौल—देखो यह पत्र मेरे पास आया है। एक पत्र राज-सभा में आया है। एक उसकी स्त्री के पास। एक शायद अभी आप के घर गया है।

मिनी०—मेरे लिए! बड़े हर्ष की बात है। क्या उसके घाव नहीं लगे? वह पहले तो रोम को घायल हो कर आया करता था।

वर्जी०—नहीं नहीं।

वौल०—हां लगे हैं और मुझे इस बात से हर्ष है।

मिनी०—उसे घाव ही शोभा देते हैं।

वौल०—उसे विजयी होकर रोम में आने की यह तीसरी बारी है।

मिनी०—क्या उसने अफीडियस को मजा चखा दिया!

वौल०—लार्शस लिखता है कि उन दोनों का परस्पर युद्ध हुआ। परन्तु अफीडियस भाग गया।

मिनी०—उसके कहां घाव लगे हैं?

वौल०—कन्धे और बाये हाथ में। जब वह राज सभा में खड़ा होगा तो बड़े अभिमान के साथ इन सब लोगों को दिखा सकेगा। टार्किन* लोगों के निकालने में उसे सात घाव लगे थे।

---

*रोम के पूर्व राजवंशी।

मिनी०—एक गर्दन में है और दो जांघ में। मैंने कुल नौ घाव देखे हैं।

वौल०—पहले युद्ध में उसके पच्चीस घाव लगे थे।

मिनी०—अब सत्ताईस हो गये। हर एक घाव एक एक शत्रु की कबर है।

जब इस प्रकार वौलम्निया अपने पुत्र के घावों का वर्णन कर रही थी और इसके वीर चरित्रों का स्मरण करके ख़ुश हो रही थी उसी समय कोरियोलेनस वहाँ पर आ गया और सब लोगों ने तार स्वर से 'कोरियोलेनस' 'कोरियोलेनस' के जयकारे बोलने लगे। कमीनियस ने वौलम्निया की ओर संकेत करके कहा।

"देखिए आप की माता जी खड़ी हुई हैं।"

कोरियोलेनस ने दौड़ कर उसके पैर छुए और कहने लगा।

"माता जी! मैं जानता हूँ कि आप ने ईश्वर से मेरी विजय के लिए ख़ूब प्रार्थना की है"।

वौलम्नि०—उठो बेटे। उठो! मेरे पूत मार्शस उठो। आज तुम पराक्रमों द्वारा कोरियोलेनस हुए। देखो तुम्हारी स्त्री खड़ी हैं।

कोरियोलेनस ने अपनी स्त्री की आँखों में प्रेमभरे आँसू देखकर नम्रता से कहा।

"प्यारी ! मेरी विजय पर क्यों रोती हो ? क्या मेरा शव देख कर हँसतीं ? इस प्रकार तो कोरियोली की विधवायें रो रही हैं।

उसी समय एक दूत ने आकर खबर दी कि आप लोगों को दरबार में चलना चाहिए। वहाँ मार्शस को कौसल नियत करने की तैयारियाँ हो रही थीं। कौसल का पद वास्तव में रोम का सब से बड़ा अधिकार था। जिस समय से रोम से राजे लोग निकाल दिये गये उसी समय से प्रजा राज प्रबंध के लिए एक मुख्य आदमी को चुन लेती थी जिसका नाम कौसल था। कोरियोलेनस की देशसेवा को देख कर लोगों ने अब यह सम्मान उसी को देना चाहा जिसके लिए दूत ने आकर उसे निमंत्रण दिया। जब सब लोग राजदरबार में उपस्थित हुए तो अधिकारियों ने कौसल के निर्वाचन की यथोचित कार्य्यवाही करनी आरम्भ की और सब प्रजागण से वोट (सम्मति) ली गई। थोड़ी देर पीछे मिनीनियस ने खड़े होकर सभा में यह वक्तृता की —

"वौल्सी लोगों के विषय में निश्चित हो गया। इसलिए अब सभा की एक कार्य्यवाही की ओर हम सब का ध्यान होना चाहिए। सभ्यगण ! इस समय कौंसल को कोरियोलेनस के पराक्रमों के विषय में संक्षेप से वर्णन कर देना चाहिए।"

सभासद०—कमीनियस ! आप पूर्ण रीति से वर्णन कर दीजिए जिससे हम सब को ज्ञात हो जाय कि इस वीर पुरुष ने हमारे हित के लिए क्या किया ?

मिनी०—एक गर्दन में है और दो जाँघ में। मैंने कुल नौ घाव देखे हैं।

वौल०—पहले युद्ध में उसके पच्चीस घाव लगे थे।

मिनी०—अब सत्ताईस हो गये। हर एक घाव एक एक शत्रु की कबर है।

जब इस प्रकार वौलम्निया अपने पुत्र के घावों का वर्णन कर रही थी और उसके वीर चरित्रों का स्मरण करके ख़ुश हो रही थी उसी समय कोरियोलेनस वहाँ पर आ गया और सब लोगों ने तार स्वर से 'कोरियोलेनस' 'कोरियोलेनस' के जयकारे बोलने लगे। कमीनियस ने वौलम्निया की ओर संकेत करके कहा।

"देखिए आप की माता जी खड़ी हुई हैं।"

कोरियोलेनस ने दौड़ कर उसके पैर छुए और कहने लगा।

"माता जी! मैं जानता हूँ कि आप ने ईश्वर से मेरी विजय के लिए ख़ूब प्रार्थना की है"।

वौलम्नि०—उठो बेटे। उठो! मेरे पूत मार्शस उठो। आज तुम पराक्रमों द्वारा कोरियोलेनस हुए। देखो तुम्हारी स्त्री खड़ी है।

कोरियोलेनस ने अपनी स्त्री की आँखों में प्रेमभरे आँसू देखकर नम्रता से कहा।

"प्यारी! मेरी विजय पर क्यों रोती हो? क्या मेरा शव देख कर हँसतीं? इस प्रकार तो कोरियोली की विधवायें रो रही हैं।

उसी समय एक दूत ने आकर खबर दी कि आप लोगों को दरबार में चलना चाहिए। वहाँ मार्शस को कौंसल नियत करने की तैयारियाँ हो रही थीं। कौंसल का पद वास्तव में रोम का सब से बड़ा अधिकार था। जिस समय से रोम से राजे लोग निकाल दिये गये उसी समय से प्रजा राज प्रबंध के लिए एक मुख्य आदमी को चुन लेती थी जिसका नाम कौंसल था। कोरियोलेनस की देशसेवा को देख कर लोगों ने अब यह सम्मान उसी को देना चाहा जिसके लिए दूत ने आकर उसे निमंत्रण दिया। जब सब लोग राजदरबार में उपस्थित हुए तो अधिकारियों ने कौंसल के निर्वाचन की यथोचित कार्य्यवाही करनी आरम्भ की और सब प्रजागण से वोट (सम्मति) ली गई। थोड़ी देर पीछे मिनीनियस ने खड़े होकर सभा में यह वक्तृता की—

"वॉल्सी लोगों के विषय में निश्चिन्त हो गया। इसलिए अब सभा की एक कार्य्यवाही की ओर हम सब का ध्यान होना चाहिए। सभ्यगण! इस समय कौंसल को कोरियोलेनस के पराक्रमों के विषय में संक्षेप से वर्णन कर देना चाहिए।"

सभासद०—कमीनियस! आप पूर्ण रीति से वर्णन कर दीजिए जिससे हम सब को ज्ञात हो जाय कि इस वीर पुरुष ने हमारे हित के लिए क्या किया?

प्लीवियन लोगो के प्रतिनिधि ब्रूटस ने कहा ।

"हमको भी इस बात के सुनने से हर्ष है अगर वह पहले की अपेक्षा प्रजा से अधिक प्रेम करे" ।

मिनी० अग्री०—यह हो गया ! यह हो गया ! चुप रहो !

ब्रूटस—मैं मानता हूँ । पर मेरा कथन आपकी धमकी से अधिक उचित था ।

मिनी०—उसे प्रजा से हित है ।

कोरियोलेनस इस समय सभा से उठ कर चलने लगा । इस पर एक सभासद् ने कहा "आप जाइए न ! अपने पराक्रम सुनने में लज्जा की बात नहीं है" ।

कोरियोलेनस—क्षमा कीजिए । अपने घावों की प्रशंसा सुनने से तो यह अच्छा है कि मैं जाकर फिर के लिए इनको अच्छा कर रक्खूँ !

ब्रूटस—आप मेरे कहने का बुरा तो नहीं मान गये ।

कोरि०—नहीं ! नहीं ! लेकिन जहाँ चोटों से मैं नहीं भागता वहाँ शब्दों को नहीं सुन सकता !

कोरियोलेनस के चले जाने पर कमीनियस ने कहा —

"मेरे पास शब्द नहीं हैं कि कोरियोलेनस की प्रशंसा कर सकूँ । कहा जाता है कि वीरता सब से बड़ा गुण है और वह धन्य है जिसमें यह गुण हो । अगर यह ठीक है तो जिस

पुरुष के विषय में मैं कह रहा हूँ उसे संसार भर में कोई नहीं जीत सकता। १६ वर्ष हुए जब टार्किन ने रोम पर चढ़ाई की थी उस समय इसने सब से बढ़ कर वीरता दिखाई थी। हमारे डिक्टेटर* ने इसके महान युद्ध का अवलोकन किया था। स्वयं टार्किन से यह भिड़ गया और उसके घुटने को घायल कर दिया। उस दिन से १७ लड़ाइयाँ लड़ चुका है। कोरियोली के युद्ध का मैं पूरा वर्णन करने में अशक्त हूँ। उसने भगोड़ों को रोक लिया और अपनी तलवार के नीचे समाप्त कर दिया। सिर से पैर तक लोहू में सन गया था परन्तु इसके हर एक इशारे पर शिर कट रहे थे। वह अकेला नगर के फाटक में घुस गया और आफत मचादी। बिना किसी की सहायता के कोरियोली को ले लिया। वहाँ से आकर उसने युद्ध में रक्तपात करना आरम्भ किया और जब तक सब ने हमारा स्वत्व नहीं माना उसके हाथ चलते ही रहे और यद्यपि उसका शरीर थकित हो रहा था परन्तु उसका साहस बढ़ता जा रहा था"।

मिनी० अ०—वीर पुरुष।

सभासद०—वह हमारे सम्मान के योग्य है।

---

* रोम में आपत्ति के समय एक डिक्टेटर नियत हो जाता था जिसको बिना किसी सभा की सम्मति के सब कुछ करने का अधिकार था। डिक्टेटर उसी नियत समय के लिए होता था। इसके बाद उससे यह उपाधि ले ली जाती थी।

कमी०—उसने लूट का माल लेने से इनकार कर दिया। वह अपने पराक्रमो को यही पारितोषिक देना चाहता है कि ये उसके पराक्रम हैं।

मिनी० अ०—बड़ा योग्य पुरुष है।

सभासद०—कोरियोलेनस को बुलाओ।

इतने में कोरियोलेनस वहाँ पर आ गया और मिनीनियस ने कहा।

कोरियोलेनस! राजसभा तुमको कौसल बनाना चाहती है"।

कोरियो०—मेरा जीवन आपकी सेवा के लिए है।

मिनी०—अब आपको प्रजा से कहना चाहिए!

कोरियो०—मेरी प्रार्थना है कि इस नियम से मुझे क्षमा किया जाय। क्योंकि मैं नंगा होकर उनको अपने घाव नहीं दिखा सकता और न उनसे अपनी वोट के लिए प्रार्थना कर सकता हूँ।

सिसीनियस (प्रजा का प्रतिनिधि)—लोग अपने अधिकार को खोना नहीं चाहते।

मिनी०—कोरियोलेनस! चलो चलो और विधिपूर्वक कार्य्य करो और अपने पूर्वजो के समान अपनी पदवी को नियमानुसार प्राप्त करो।

कोरियोलेनस०—इस नाट्य के करने में मुझे लज्जा आती है।

ब्रटस०—देखो! देखो! क्या कह रहा है!

कोरियो०—घावों के चिह्नों को इन्हें दिखाओ। क्या मैंने यह घाव इसीलिए पाये थे कि इन लोगों की प्रशंसा प्राप्त करूँ।

कोरियोलेनस वास्तव में प्लीबियन लोगों को अपने से नीच समझता था और उसको यह बात कदापि प्रिय न थी कि वोट लेने के लिए सर्वसाधारण के हाथ जोड़े या उनका मुँह तके। परन्तु राजसभा उसे कौंसल बनाने पर कटिबद्ध थी इसलिए कोरियोलेनस के बदले अग्रीपा ने सब काम कर दिया और केअस मार्शस कोरियोलेनस को कौंसल बना दिया गया।

यद्यपि कार्य्यवाही हो गई परन्तु प्लीबियन लोगों को कोरियोलेनस की बात अच्छी न लगी। वे जानते थे कि जब उसे अवसर मिलेगा वह इन्हें तंग करेगा। परन्तु अब क्या हो सकता था। जब तक वोट नहीं दिये गये थे लोगों को हर एक अधिकार था। परन्तु अब कौंसल होकर यह सब अधिकार कोरियोलेनस को मिल गया और जब नागरिक लोग इस निर्वाचन पर पश्चात्ताप करने लगे तो सिसीनियस और ब्रूटस ने उनको उनकी भूल बताई। सिसीनियस ने कहा "क्या तुम इस कोरियोलेनस के स्वभाव को नहीं जानते थे। और अगर जानते थे तो इसे कौंसल चुनने में तुमने कैसा लड़कपन किया?"

ब्रटस—अरे हमने ते। इन लोगो का समझा दिया था। पर क्या करे। उस समय ये लोग जोश में आगये। तब ते। यह अशक्त था और राज्य का एक दास था। उस समय यदि कह दिया जाता कि यह मनुष्य प्रजा का शत्रु है, सदा इनके विरुद्ध कहना है ते। अवश्य यह कैासल न बनाया जाता। अगर समर्थ होकर वह अब भी ह्लीवियन लोगो का शत्रु बना रहा ते। तुम क्या कर सकते हो ?

सिसीनियस—उसने तुम लोगो से वोट नहीं माँगी किन्तु वह चिढ़ाता रहा और तुम ऐसे मूर्ख हो गये कि बिना माँगे वोट दे बैठे।

१ नागरिक—अभी हम इनकार कर सकते हैं।

२ नाग०—मैं उसके विरुद्ध ५०० वोट इकट्ठे कर सकता हूँ।

३ नाग०—मैं १०००।

ब्रूटस—अच्छा अब जल्दी करो और लोगो से कह दो कि जिसको तुमने कैासल चुना है वह तुम्हारा अहित चाह रहा है।

सिसीनि०—उनको अच्छी तरह समझा दो कि वह हमेशा ह्लीवियन लोगों से घृणा करता रहा है और निर्वाचन के समय भी चिढ़ाता था। अगर कोई कहे कि पहले

वोट क्यों देदी तो कह देना कि उसके पराक्रमो को देख कर हमने समझा था कि अब वह हमसे हित करेगा।

ब्रूटस—हमारे ऊपर दोष रख देना और कहना कि हमारी इच्छा वोट देने की नहीं थी किन्तु हमारे प्रतिनिधियों ने मजबूर करके हमसे वोट लेली। उन्होने कहा कि यह बड़ा वीर पुरुष है। लडकपन से अपने देश के हित के लिए लडता रहा है। यह बडे उच्च वश का पुरुष है और इसी आदर के योग्य है। हमारी कभी यह इच्छा नहीं थी कि ऐसे अभिमानो पुरुष को कौंसल बनाते जो हमारे अधिकारों को पद दलित करता है।

इस प्रकार ब्रूटस और सिसीनियस ने लोगों को सिखला सिखला कर राजसभा की ओर भेजा। थोडी देर में हजारों रोमन लोग कोरियोलेनस के विरुद्ध अपनी वोट देने के लिए वहाँ पहुँच गये। जब कोरियोलेनस ने देखा कि लोग मुझे अपने नवीन पद से अलग करना चाहते हैं तो वह बडा क्रुद्ध हुआ और अपने स्वभाव के अनुसार लोगों को बुरा भला कहने लगा। इस पर प्रजा के प्रतिनिधियों और सभासदों में झगडा हो गया और ब्रूटस और सिसीनियस ने कोरियोलेनस को पकडना चाहा। इस पर सब लोगों के दो दल हो गये। एक पेट्रोशियन लोग, जिन्होंने कोरियोलेनस का साथ दिया और

दूसरे प्लीवियन जो उसके विरुद्ध थे। थोडी देर तक बड़ी भारी लडाई हुई, परन्तु कोरियोलेनस की वीरता ने उसके विरोधियों को वहाँ से भगा दिया। अब कोरियोलेनस तो घर चला आया परन्तु राजमंत्रियों को निश्चय हो गया कि रोम पर बड़ी भारी आपत्ति आने वाली है। क्योंकि प्लीवियन लोग पेट्रीशियनों के शत्रु हो रहे थे। जिस नगर के लोग दो दलों में विभाजित हो जायँ उसमें शान्ति कैसे स्थापित हो सकती है?

मिनीनियस अग्रीपा और अन्य देशहितैषियों ने शान्ति के लिए बहुत कुछ प्रयत्न किया और जब फिर नगरनिवासी झुण्ड के झुण्ड कोरियोलेनस की तलाश में जा रहे थे कि उसे पकड लें और टार्पियन* पहाड़ी से ढकेल कर मार डालें उस समय उसने लोगों को बहुत कुछ समझाया कि कोरियोलेनस की अपूर्व देशसेवा पर ध्यान रखना चाहिए और कृतघ्न नहीं होना चाहिए। परन्तु प्लीवियनो के मस्तिष्क का पारा कई दर्जे चढा हुआ था, वे क्रोधानल में जल रहे थे। जो उनसे कोरियोलेनस के अनुकूल कहता था उसे वह अपना और अपने देश का बहुत बडा शत्रु समझते थे। इसलिए उन्होने मिनीनियस की एक न सुनी और उसके घर की ओर चलने लगे। परन्तु अन्त में मिनीनियस ने उन सबको इस बात पर राजी

*रोम मे एक पहाडी है जहा से अपराधी जन गिरा कर मार डाले जाते थे।

किया कि वह स्वयं जाकर घर से कोरियोलेनस को ले आवेगा और बाजार में जहाँ पंचायत हुआ करती थी वह प्लीबियन लोगों से अपनी क्षमा का प्रार्थी होगा। उस समय यदि लोगों को उस पर दया न आवे तो नियमानुसार जो चाहें उसको दण्ड दें। परन्तु इस प्रकार हल्ला करने से परस्पर वैर की अग्नि प्रज्वलित होगी, जिसमें भस्म होकर समस्त देश नष्ट भ्रष्ट हो जायगा।

लोग यह बात मान गये और बाजार में कोरियोलेनस की प्रतीक्षा करने लगे। उधर मिनीनियस ने कोरियोलेनस के घर जाकर उसको समझाना शुरू किया। क्योंकि अपराध उसी का था। कौंसल लोग प्रजा की वोट से बनाये जाते थे और उनका कर्त्तव्य था कि जिन्होंने उनको ऐसे पद पर नियत किया उनके हित का ध्यान रक्खें। कोरियोलेनस स्वभावतः अभिमानी था, वह नीच लोगों से मित्रता का व्यवहार करना नहीं चाहता था। इसलिए चाहे कुछ भी क्यों न हो, वह उनसे क्षमा माँगने के लिए उद्यत नहीं था। वोलम्निया भी अपने पुत्र को बहुभाँति उपदेश कर रही थी कि अपने पूर्वजों की भाँति उसको भी प्रजापालित राज्य से सन्तुष्ट रहना चाहिए और प्रजा के लिए अपशब्द नहीं कहने चाहिए, परन्तु कोरियोलेनस नहीं मानता था।

अन्त में जब उसकी माता ने बहुत आग्रह किया तो वह मान गया और मिनीनियस के साथ बाजार को चल दिया कि लोगों

से अपने किये की क्षमा मांगे। पहले उसने जाकर लोगों से नम्रता के साथ सभाषण किया और सबको आशा हो गई कि अब काम बन जायगा। परन्तु थोड़ी देर में, जिस समय वह लोगो से यह पूछ रहा था कि भला मेरा क्या अपराध है जिसके कारण आपने थोडी ही देर में मुझे पदच्युत करने की ठान ली है, उस समय ब्रूटस बोल उठा "कि तुम देशद्रोही हो और अपनी शक्ति का अनुचित प्रयोग करना चाहते हो।"

देशद्रोही का शब्द सुनते ही कोरियोलेनस के तन में आग लग गई और वह अपनी समस्त प्रतिज्ञाओ को जो उसने अपनी माता के साथ की थीं भूल गया। वह कहने लगा—

"भाड में जाओ सब लोग! मैं कैसे देशद्रोही हो सकता हूँ। ब्रूटस तो झूठा है। अगर तेरे हाथ में सहस्र मौतें भी हों तो भी मैं कहूँगा कि तू झूठा है। महा झूठा है"।

सिसीनियस—देखो लोगो! देखो!

सब लोग—ले चलो। इसे टार्पियन पहाडी को ले चलो!

सिसीनियस—देखो। देखो! अन्य अपराधों के गिनाने की क्या जरूरत है। इसने हम को और हमारे आदमियो को मारा है और राजनियम का उल्लङ्घन किया है। इसने प्रजा के अधिकारो को पददलित किया है। दुर्भिक्ष के समय इसने अन्न बाँटने के विरुद्ध

अपनी आवाज उठाई थी। यह विद्रोही है। यह विद्रोही है।

मिनेनियस—(कोरियोलेनस से) देखो तुमने अपनी माता से क्या प्रतिज्ञा की थी।

कोरियो॰—मैं कुछ नहीं देखता। मैं कभी इन दुष्ट कमीने और नीच लोगों के आगे सिर नहीं झुकाऊँगा।

यह सुन कर लोग और बिगड गये और जो कुछ शान्ति की आशा बाकी रही थी वह भी जाती रही। सबने मिल कर विद्रोह और प्रजा-अहित के अपराध में कोरियोलेनस को एकस्वर होकर देश से निकाल दिया। कमीनियस ने बहुत कुछ प्रार्थना की कि कोरियोली के युद्ध का विचार करलें और केअस मार्शस को ऐसा घोर दण्ड न दें। परन्तु किसी ने न माना। और जब कोरियोलेनस बाजार से घर को चला तो लोग उसको चिढ़ाते और तालियाँ बजाते उसके पीछे पीछे चले गये।

देशनिकाले की खबर सुन कर कोरियोलेनस के घर में हाहाकार मच गया और उसकी माता तथा स्त्री ऊँचे स्वर से रोने पीटने लगीं। कोरियोलेनस ने घर से चलने की तैयारियाँ कर दीं और वह अपनी माता को समझाने लगा—

"रोओ मत! लोग मेरा सामना कर रहे हैं। इस समय चला जाना ही उचित है। माता जी! आपका पहला साहस कहाँ गया? तुम तो कहा करती थीं कि, आपत्ति में मनुष्य की

जाँच हुआ करती है। साधारण समय पर तो सभी संतोष किया करते हैं। जब समुद्र शांत होता है तो सभी नावें अच्छी तरह चला करती हैं। धन्य वह नाव है जो तूफान में भी न डगमगावे !"

वर्जीलिया—हाय ! ईश्वर ! हाय !

कोरियो०—प्यारी ! सन्तोष करो !

वैाल०—ईश्वर रोम को नष्ट करे।

कोरियो०—माता जी ! लोग मुझे याद करेंगे, जब मैं चला जाऊँगा। माता जी ! सन्तोष करो और उस दिन की याद करो जब तुम कहा करती थीं कि यदि मैं हरकुलीज़* की स्त्री होती तो बारह पराक्रमो में से छः पराक्रम मैं ही कर देती और अपने पति को कष्ट न देती। अब प्यारी माता जी ! बैठिए और अपने मन को कष्ट न दीजिए। प्यारी स्त्री, बैठो ! मैं अब जाता हूँ !

वैाल०—बेटे, तू देश छोड़ कर कहाँ जायगा ?

कमीनियस—मैं एक महीने के लिए इसके साथ जाऊँगा।

---

* हरकुलीज यूनान का एक बड़ा वीर पुरुष था जिसके विषय में कहा जाता है कि उसने बड़े बड़े बारह पराक्रम किये थे, जिनको अन्य पुरुष नहीं कर सकते थे।

कोरियो०—नहीं! नहीं! आप वृद्ध हैं, मैं कुछ न कुछ प्रबन्ध कर ही लूँगा।

यह कह कर अपने मित्रों से गले मिल कर और अपनी रोती हुई माता का आशीर्वाद लेकर केअस मार्शस अपने प्यारे देश से चल दिया और एण्टियम की ओर प्रस्थान किया जहाँ उसका शत्रु अफीडियस रहा करता था। वहाँ जाने से उसका यह विचार था कि अफीडियस से सन्धि करके थोड़े दिन वहाँ रहे और जब दोनों एक बड़ी सेना को एकत्रित कर लें तो मिल कर रोम पर चढ़ाई करें और उन कृतघ्न लोगों को जिन्होंने इस प्रकार उसका अपमान किया है दण्ड दें।

जिस समय कोरियोलेनस फटे कपड़े पहने हुए एण्टियम नगर में पहुँचा और अफ़ीडियस के महल में गया उस समय उसके घर कुछ उत्सव था और अतिथि, पाहुने प्रीति-भोजन के लिए वहाँ पर आये हुए थे। नौकर लोग भोजन परोसने में लगे हुए थे। एक नौकर ने इसे देख कर कहा—

"कहो कहाँ से आते हो? क्या द्वारपाल की आँखें उसके सिर में हैं कि वह ऐसे लोगों को भीतर घुस आने देता है। चले जाओ!"

कोरियो०—जा! जा!

नौकर—जा! अरे क्यों नहीं जाता!

कोरियो०—मुझे खड़ा रहने दो। मैं तुम्हारा नुक़सान नहीं करता।

नौकर—तुम कौन हो?

कोरियो०—एक भद्र पुरुष।

नौकर—दरिद्र भद्र पुरुष!

कोरियो०—हाँ भाई!

नौकर—भद्र पुरुष, यहाँ से चले जाओ। यहाँ तुम्हारे लिए स्थान नहीं है। जल्दी जाओ।

कोरियो०—जा! जा! अपना काम कर।

नौकर कहाँ रहते हो?

कोरियो०—आकाश के नीचे!

नौकर—बड़ा विचित्र आदमी है।

कोरियोलेनस—मैं तेरे स्वामी का नौकर नहीं हूँ।

अपने स्वामी के लिए अपशब्द सुन कर नौकर ने उसे पकड़ कर हटाना चाहा परन्तु कोरियोलेनस ने उसे मार कर भगा दिया। कोलाहल सुन कर अफीडियस वहाँ आ गया और पूछने लगा—

"कहाँ से आता है? क्या चाहता है? क्या तेरा नाम है? क्यों नहीं बोलता?"

कोरियो०—टूलस! अगर तू मुझे नहीं पहचानता और मेरी शकल देख कर मेरा नाम नहीं जानता तो मैं मजबूर होकर अपना नाम बताऊँगा।

अफीडिय०—तेरा क्या नाम है ?

कोरि०—यह नाम जो वोल्सी लोगों को बुरा मालूम होता है और जिससे तेरे कान चौक पडते हैं।

अफ़ी०—तेरा क्या नाम है ? यद्यपि तेरे कपडे फटे हैं परन्तु तू बडा आदमी मालूम होता है।

कोरियो०—अच्छा क्रोध करने के लिए तैयार हो, क्या तूने मुझे पहिचाना ?

अफीडि०—मैंने नहीं पहिचाना ! नाम ?

कोरियो०—मेरा नाम केअस मार्शस है, जिसने तुझे और वोल्सी लोगों को बडे बडे कष्ट दिये हैं और जिसके बदले मुझे कोरियोलेनस की पदवी दी गई थी। परन्तु अब केवल यह नाम ही शेष रह गया है। मेरे कृतघ्न देशभाइयो ने मेरा सब कुछ छीन लिया और मुझे देश से निकाल दिया। अब ऐसी अवस्था में मै तेरे घर आया हूँ। मेरी यह इच्छा नहीं है कि तू मेरे प्राण बचा दे। क्योंकि हम दोनो एक दूसरे के बड़े शत्रु रहे हैं। अगर तू चाहता है तो मेरा शिर काट ले, क्योंकि ऐसा अवसर तुझे न मिलेगा। परन्तु यदि तू रोम से लडना चाहता है तो मैं भी तेरी ओर से इन कृतघ्न लोगों से लडना चाहता हूँ।

अफीडियस तो पेसे ही अवसर की तलाश में था कि जिस से वह अपने देश के शत्रु रोम वालों पर विजय पा सके। इस लिए उसने झट कोरियोलेनस को गले लगा लिया श्रौर वे दोनो मित्रवत् रहने लगे।

थोड़े दिनो रोम वाले बड़ी शान्ति के साथ रहे श्रौर किसी दल में किसी प्रकार का झगड़ा नहीं हुश्रा। पेसे समय में साधारण पुरुषों को किसी वीर की श्रावश्यकता ही क्या हो सकती थी। वे समझते थे कि श्रच्छा हुश्रा मार्शल कोरियोलेनस निकाल दिया गया श्रौर जो कहते थे कि उसके जाने से हानि होगी सो भी नहीं हुई क्योंकि रोम उसके बिना भी सुरक्षित है। प्रजा के प्रतिनिधि ब्रूटस श्रौर सिसीनियस उन पेट्रीशियनो को चिढ़ाने लगे जो कोरियोलेनस के मित्र समझे जाते थे श्रौर जिन का यह विचार था कि रोम की शत्रुश्रो से रक्षा करने के लिए उस जैसे वीर पुरुषों की श्रावश्यकता थी। बहुत से इनमें पेसे थे जो फिर कोरियोलेनस के बुलाने के पक्षपाती थे। परन्तु प्लीवियन लोग उन्हें हँसी में उड़ा देते थे।

परन्तु ये सुख के दिन बहुत समय तक न रहे श्रौर कृतघ्न रोम वालो को बहुत शीघ्र मालूम हो गया कि पाप का फल मीठा नहीं होता। एक दिन खबर लगी कि वोल्सी लोग दे। बड़ी सेनाश्रो सहित रोम पर श्राक्रमण करना चाहते हैं। इस भयानक वार्त्ता को सुन कर सब घबरा उठे, क्योंकि इस समय

रोम में कोई ऐसा वीर नहीं था कि अफ़ीडियस का सामना कर सकता। इस पर जब उन्होंने सुना कि कोरियोलेनस स्वयं सेनापति होकर आ रहा है तब तो इस घबराहट की कुछ सीमा ही नहीं रही और मिनीलियस अग्रीपा कहने लगा—

"यदि वह वीर पुरुष दया न करेगा तो हम अवश्य नष्ट हो जायँगे।"

कमीनियस ने कहा—

"उससे प्रार्थना कौन करे। मजिस्ट्रेट लोग किस मुँह से कह सकते हैं। प्लेबियन लोग उसी दया के अधिकारी हैं जिसकी भेड़िया गड़रिये से आशा कर सकता है। उसके मित्र भी कैसे कह सकते हैं कि 'रोम पर दया करो' क्योंकि उन्होंने भी उसके शत्रुओं के समान व्यवहार किया था।

मिनी०—यह तो सच है। यदि वह दियासलाई लेकर मेरा घर जलाने लगे तो भी मुझे यह कहने का साहस नहीं हो सकता कि 'कृपया क्षमा कीजिए' (ब्रूटस से) यह तुम्हारे ही कर्मों का फल है।

कमीनियस—हाँ। यह तुम्हारे ही कर्म थे जिन्होने रोम को इस घोर विपत्ति में डाल दिया।

ब्रूटस और सिसीनियस—हमने क्या किया॥

मिनी०—क्यों, क्या हमने किया है, हम तो उसे चाहते थे। हाँ इतना हमारा अपराध है कि पशुओं की भाँति हम तुम्हारे कहने में आ गये।

जैसे तैसे लड़ाई की तैयारियाँ की गई, मगर
थी वैसा ही परिणाम हुआ। सब रोमन लोग बुरी
जित हुए और कोरियोलेनस और अफ़ीडियस ने रोम के
कैम्प डाल कर अपनी विजय के दूसरे दिन रोम को अ
सहित जलाने का हुक्म दे दिया।

अब तो रोम में खलबली मच गई। हर घर में
पड़ गया। हाहाकार होने लगे। कोई उपाय बचने
सूझा। अन्त में कमीनियस बड़ी नम्रता-पूर्वक कोरिय
के पास गया और हाथ जोड़, आँखों में आँसू भर कर
प्रार्थी हुआ। परन्तु कोरियोलेनस ने उसे सूखा जवाब
जब कमीनियस ने कहा कि आप हमारे परम मित्र थे
और आप साथ साथ युद्ध में लड़ा करते थे। इस
ध्यान दीजिए, तब कोरियोलेनस ने उत्तर दिया।

"हम कुछ नहीं जानते। जब तक रोम का सर्व
भस्मीभूत न हो जाय तब तक हम किसी को नहीं
जब कमीनियस ने कहा कि "दया कीजिए। दया रा
है," तो उसने उत्तर दिया कि "ऐसे मनुष्य से दया
गया, जिसे घृणा करके देश से निकाल दिया
न ने कहा कि "अपने निज मित्रों की
उसने उत्तर दिया "कि मैं मनो भूसो
दानों को उठाने का कष्ट सहन नहीं

इस प्रकार कमीनियस के निराश लौट आने पर वृद्ध मिनीनियस से सब लोगों ने मिल कर प्रार्थना की कि "भगवन्, अब आप जाइए, मार्शस आपको पिता के समान समझता रहा है। वह अवश्य आप के कहने से मान जायगा"। यद्यपि मिनीनियस को कोरियोलेनस की दया पर किञ्चित् भी विश्वास नहीं था, यद्यपि वह देख चुका था कि कमीनियस को किस अपमान के साथ लौटना पड़ा और यद्यपि कोरियोलेनस के निश्चल विचारों को वह भली प्रकार जानता था, परन्तु सब के कहने से अन्त में उसने जाना उचित समझा।

जब मिनीनियस वौल्सियन सेना के कैम्प में घुसा तो सिपाही ने टोका—"ठहरो! कहां से आते हो?"

मिनी०—मैं रोम का सरदार हूँ और कोरियोलेनस से सभाषण करना चाहता हूँ।"

सिपा०—चले जाओ, हमारा स्वामी रोम के किसी मनुष्य से मिलना नहीं चाहता।

मिनी०—सिपाही जी। मैं मार्शस का मित्र मिनीनियस हूँ।

सिपा०—चले जाओ! नाम से भीतर जाने का अधिकार नहीं मिल सकता।

मिनी०—सुनो। तुम्हारा स्वामी मेरा बड़ा मित्र है। जाकर कहो, वह अवश्य मुझ से भेंट करेगा।

जैसे तैसे लडाई की तैयारियाँ की गई, मगर जैसी आशा थी वैसा ही परिणाम हुआ। सब रोमन लोग बुरी तरह पराजित हुए ग्रोर कोरियोलेनस ग्रोर अफीडियस ने रोम के बाहर कैम्प डाल कर अपनी विजय के दूसरे दिन रोम के जन बच्चे सहित जलाने का हुक्म दे दिया।

अब तो रोम में खलबली मच गई। हर घर में रोना पीटना पड गया। हाहाकार होने लगे। कोई उपाय बचने का न सूझा। अन्त में कर्मानियस बड़ी नम्रता-पूर्वक कोरियोलेनस के पास गया ग्रोर हाथ जोड, आंखों में आंसू भर कर क्षमा का प्रार्थी हुआ। परन्तु कोरियोलेनस ने उसे सूखा जवाब दे दिया। जब कर्मानियस ने कहा कि आप हमारे परम मित्र थे, हम ग्रोर आप साथ साथ युद्ध में लडा करते थे। इस मित्रता पर ध्यान दीजिए, तब कोरियोलेनस ने उत्तर दिया।

"हम कुछ नहीं जानते। जब तक रोम का सपूर्ण नगर भस्मीभूत न हो जाय तब तक हम किसी को नहीं पहचानेंगे'। जब कर्मानियस ने कहा कि "दया कीजिए। दया राजो का धर्म है" तो उसने उत्तर दिया कि "ऐसे मनुष्य से दया की प्रार्थना क्या, जिसे घृणा करके देश से निकाल दिया हो।" जब कर्मानियस ने कहा कि "अपने निज मित्रों की तो रक्षा कीजिए" तो उसने उत्तर दिया "कि मैं मनो भूसो के ढेर में एक दे। अन्न के दानें को उठाने का कष्ट सहन नहीं कर सकता।"

इस प्रकार कमीनियस के निराश लौट आने पर वृद्ध मिनीनियस से सब लोगों ने मिल कर प्रार्थना की कि "भगवन्, अब आप जाइए, मार्शस आपको पिता के समान समझता रहा है। वह अवश्य आप के कहने से मान जायगा"। यद्यपि मिनीनियस को कोरियोलेनस की दया पर किंचित् भी विश्वास नहीं था, यद्यपि वह देख चुका था कि कमीनियस को किस अपमान के साथ लौटना पड़ा और यद्यपि कोरियोलेनस के निश्चल विचारों को वह भली प्रकार जानता था, परन्तु सब के कहने से अन्त में उसने जाना उचित समझा।

जब मिनीनियस वोल्सियन सेना के कैम्प में घुसा तो सिपाही ने टोका—"ठहरो! कहाँ से आते हो?"

मिनी०—मैं रोम का सरदार हूँ और कोरियोलेनस से संभाषण करना चाहता हूँ।"

सिपा०—चले जाओ, हमारा स्वामी रोम के किसी मनुष्य से मिलना नहीं चाहता।

मिनी०—सिपाही जी! मैं मार्शस का मित्र मिनीनियस हूँ।

सिपा०—चले जाओ। नाम से भीतर जाने का अधिकार नहीं मिल सकता।

मिनी०—सुनो! तुम्हारा स्वामी मेरा बड़ा मित्र है। जाकर कहो, वह अवश्य मुझ से भेंट करेगा।

सि०—अगर तुम उसके मित्र होते तो तुम भी रोम से उसी के समान घृणा करते क्योंकि रोम वाले बड़े कृतघ्न हैं और अपने रक्षक को ही मारते हैं और अपनी मूर्खता से अपने शत्रुओं के हाथ में डाल दे बैठते हैं। क्या तुम समझते हो कि स्त्रियों के रोने चिल्लाने से वह बदला लेना छोड़ देगा? जाओ। होश की दवा करो। चलो हटो और अपने नष्ट होने की तैयारियाँ करो। इसने शपथ खाई है कि किसी रोमनिवासी को जीता न छोड़ूँगा।

जब ये बातें हो रही थीं तो कोरियोलेनस वहाँ पर आ गया और उसे देखकर मिनेनियस कहने लगा—

"बेटे! तुम हमारे लिए आग जलवा रहे हो और मैं अपने आँसुओं से इसे बुझाना चाहता हूँ। मैं कभी यहाँ न आता परन्तु मुझे निश्चय हो गया है कि तुम मेरे सिवा किसी की न ।ईश्वर तुम्हारे क्रोध को शान्त करे"।

कोरियो०—चलो! हटो!

मिनी०—क्यों, क्यों।

कोरियो०—मा, स्त्री, लड़का किसी को मैं नहीं जानता। इस समय मैं दूसरे का काम कर रहा हूँ। वही करूँगा जो वोल्सियन लोगों के लिए हितकर होगा।

यह कह कर उसने मिनीनियस को निकाल दिया और वह विचारा अपना सा मुँह लेकर रोम को लौट आया। अब क्या उपाय हो सकता था? लोगों के छक्के छूट रहे थे। बच्चे आग की खबर सुनकर बिलक रहे थे। स्त्रियों की आँखों से आँसुओं की धार बह रही थी। ऐसे समय में कोरियोलेनस की माता वैलम्निया उसकी स्त्री वर्जीलिया और रोम की सब प्रतिष्ठित देवियों को लेकर अपने पुत्र के राजी करने को चल दी। इनके साथ कोरियोलेनस का पुत्र भी था।

कोरियोलेनस ने दूर से इस मण्डली को देखकर पहले ही से अपना हृदय पत्थर सा कड़ा कर लिया और निश्चय कर लिया कि चाहे जो कुछ हो किसी की बात न मानूँगा। जब ये स्त्रियाँ निकट पहुँचीं तो वर्जीलिया ने कहा—

"मेरे स्वामिन्! मेरे पति!"

कोरियो०—ये वे आँखें नहीं हैं जो रोम में थीं।

वर्जी०—हमारी दुर्दशा के कारण आपको यह विचार होता है।

कोरि०—सुस्त नाट्य-कर के समान मैं अपना पार्ट भूल गया!

इसके पश्चात् उसने अपनी रोती हुई माता के चरण छुए और विनय-पूर्वक कहा कि "आप मुझे क्षमा कीजिए और मुझ से चाहे सो कहिए परन्तु रोम पर दया करने की आज्ञा न दीजिए। क्योंकि मैंने शपथ खाई है कि जो कह चुका उसे करके रहूँगा।"

सि०—अगर तुम उसके मित्र होते तो तुम भी रोम से उसी के समान घृणा करते क्योंकि रोम वाले बड़े कृतघ्न हैं और अपने रक्षक को ही मारते हैं और अपनी मूर्खता से अपने शत्रुओं के हाथ में डाल दे बैठते हैं। क्या तुम समझते हो कि स्त्रियों के रोने चिल्लाने से वह बदला लेना छोड़ देगा? जाओ। होश की दवा करो। चलो हटो और अपने नष्ट होने की तैयारियाँ करो। इसने शपथ खाई है कि किसी रोमनिवासी को जीता न छोड़ूँगा।

जब ये बातें हो रही थीं तो कोरियोलेनस वहाँ पर आ गया और उसे देखकर मिनीनियस कहने लगा—

"बेटे! तुम हमारे लिए आग जलवा रहे हो और मैं अपने आँसुओं से इसे बुझाना चाहता हूँ। मैं कभी यहाँ न आता परन्तु मुझे निश्चय हो गया है कि तुम मेरे सिवा किसी की न सुनोगे। ईश्वर तुम्हारे क्रोध को शान्त करे"।

कोरियो०—चलो। हटो!

मिनी०—क्यों, क्यों।

कोरियो०—मा, स्त्री, लड़का किसी को मैं नहीं जानता। इस समय मैं दूसरे का काम कर रहा हूँ। वही करूँगा जो वौल्सियन लोगों के लिए हितकर होगा!

यह कह कर उसने मिनीनियस को निकाल दिया और वह विचारा अपना सा मुँह लेकर रोम को लौट आया। अब क्या उपाय हो सकता था? लोगों के छक्के छूट रहे थे। बच्चे आग की खबर सुनकर बिलक रहे थे। स्त्रियों की आँखों से आँसुओं की धार बह रही थी। ऐसे समय में कोरियोलेनस की माता वौलम्निया उसकी स्त्री वर्जीलिया और रोम की सब प्रतिष्ठित देवियों को लेकर अपने पुत्र के राज़ी करने को चल दी। इनके साथ कोरियोलेनस का पुत्र भी था।

कोरियोलेनस ने दूर से इस मण्डली को देखकर पहले ही से अपना हृदय पत्थर सा कड़ा कर लिया और निश्चय कर लिया कि चाहे जो कुछ हो किसी की बात न मानूँगा। जब ये स्त्रियाँ निकट पहुँची तो वर्जीलिया ने कहा—

"मेरे स्वामिन्! मेरे पति!"

कोरियो०—ये वे आँखे नहीं हैं जो रोम में थीं।

वर्जी०—हमारी दुर्दशा के कारण आपको यह विचार होता है।

कोरि०—सुस्त नाट्य कर के समान मैं अपना पार्ट भूल गया।

इसके पश्चात् उसने अपनी रोती हुई माता के चरण छुए और विनय-पूर्वक कहा कि "आप मुझे क्षमा कीजिए और मुझ से चाहे सो कहिए परन्तु रोम पर दया करने की आज्ञा न दीजिए। क्योंकि मैंने शपथ खाई है कि जो कह चुका उसे करके रहूँगा।"

वैालम्नि०—(अपने पुत्र के पैरों पर गिर कर) ईश्वर तुझे चिरंजीव करे। मै तेरे चरणो पर गिर कर उलटी प्रार्थना करती हूँ। मैंने तुझे शूरवीर बनाया था। तुझे खबर है कि हम सब तुझ से प्रार्थना करने आये हैं।

कोरियो०—शात हो। जो मैं कह चुका सो कह चुका। मुझ से यह मत कहो कि रोम को क्षमा कर दो। या सेना को ले जाओ।

वैाल०—बस। बस। तुम कह चुके कि हमारा कहना न करोगे। क्योंकि हम वही माँगती हैं जिसको तुम देना नहीं चाहते। इसलिए अब केवल एक प्रार्थना है। उसे सुन लो, जिससे यदि तुम इसे अस्वीकार करो तो दोप हमारा न हो किन्तु तुम्हारी कठोरता का हो।

कोरियो०—अच्छा।

वालम्नि०—क्या हम चुप रहें और मुँह न खोलें? हमारे वस्त्र और हमारी दशा कह रही है कि जिस दिन से तू देश से गया है तब से हमारी क्या गति हुई है। अपने हृदय से पूछ कि कैसी अभागिन हम स्त्रियें तेरे पास आई हैं। तुझे देख कर हमारा हृदय खुश होता और हम आनन्द के मारे गद्गद होतीं। परन्तु आज हम डर के मारे तेरा मुँह देख देख कर रो

रही हैं। क्योंकि हम देखती हैं कि मेरा लड़का, वर्जीलिया का पति और इस लड़के का बाप अपने देश को नष्ट कर रहा है। और तू हमारी प्रार्थनाओं पर पानी फेर रहा है। हम किस प्रकार ईश्वर से तेरी रक्षा के लिए प्रार्थना करें और अपने देश का बुरा चाहें। हम को उचित था कि अपने पुत्र की विजय पर खुशी मनातीं। पर ऐसी विजय से कैसे आनन्द हो सकता है जो अपने ही देश की घातिनी हो। क्या तू अपनी स्त्री, बच्चे और देशवासियों का रक्तपात करके अपनी विजय पर अभिमान कर सकेगा? रही मैं। याद रख मैं उस समय तक जीती न रहूँगी जब तू उसी गर्भाशय को पददलित कर सके जिससे तूने जन्म लिया है।

वर्जीलि०—और न मेरे उदर को जिस से तेरा नामलेवा पुत्र उत्पन्न हुआ है।

पुत्र—और न मुझे। मैं भाग जाऊँगा। और फिर लड़ूँगा।

कोरियोलेनस पर कुछ असर होने लगा और वह इसको टालने के लिए वहाँ से उठ चला, परन्तु उसकी मा फिर बोली।

"जाता कहाँ है। बैठ हम यह नहीं कहतीं कि तू हमको बचादे और वौल्सी लोगों को दण्ड दे। हम यह चाहती हैं कि दोनों में सन्धि हो जाय। यदि तू ने आज अपना देश न

बचाया तो भविष्यत् में तेरा नाम बड़े अपमान के साथ लिया जायगा और लोग कोस कोस कर कहा करेंगे कि 'आदमी तो बहादुर था परन्तु अन्त में देशघातक निकला। बोल तो सही! तू ने बड़ा भारी यश प्राप्त किया और देवताओं के समान वीरता पाई। पर अब तू अपने देश को ही नष्ट करना चाहता है। (वर्जीलिया की ओर सकेत करके) बेटी तू ही कह। पर वह तेरी क्या परवा करता है। (लड़के की ओर देखकर) अरे तू ही कह! सम्भव है कि तेरी भोली भाली बातें इसे पसन्द आ जायँ। अपनी माता का सभी कहना मानते हैं। परन्तु मैं कैदी की तरह रो रही हूँ और यह चुपचाप खड़ा सुन रहा है। अरे यही कह दे कि मैं अनुचित कह रही हूँ। हम चली जायँगी। परन्तु यदि तू यह नहीं कह सकता तो फिर अनुचित के करने में कैसी वीरता? ईश्वर तुझे दण्ड देगा कि तू कर्त्तव्यपालन से जी चुराता है और अपनी माता की अनुचित आज्ञा का पालन नहीं करता। देवियो! तुम सब इसके पैरों पड़ो और अगर अब भी यह नहीं सुनता तो चलो। हम सब अपने पड़ोसियों सहित जान देंगी। जाने दो। जान पड़ता है कि इस की माता कोई वाल्सी स्त्री होगी। इसकी स्त्री भी कोरियोली में होगी जिसके इसी के समान कठोर पुत्र होगा"।

अपनी पूज्य माता की ऐसी विचित्र वक्तृता सुन कर कोरियोलेनस का हृदय पिघल गया और उसकी आँखों में आँसू भर आये और वह अपनी माता के गले लग कर कहने लगा—

"मा ! मा ! तुमने क्या किया ! आकाश के द्वार खुल गये ! देखो देवता लोग इस अनहोने दृश्य पर हँसी उडा रहे है । मा ! मा ! तुमने रोम के लिए विजय पा ली। परन्तु अपने पुत्र के लिए—अच्छा नहीं किया ! ।"

यह कहकर कोरियोलेनस ने रोम को क्षमा कर दिया और वोल्सी लोगो के साथ एण्टियम को चला गया ! रोम में इन देवियो के लौट आने पर खुशी के बाजे बजाये गये। सब लोगो का नया जन्म हुआ और एक देवी ने वह काम कर दिखाया जो बडे बडे वीरो से न हुआ था।

परन्तु कोरियोलेनस की इस कार्य्यवाही से वोल्सी लोग प्रसन्न न हुए। अफीडियस थोडे दिनो से इससे डाह करने लगा था क्योंकि इसकी वीरता को देख कर वोल्सी लोग अफीडियस से अधिक इसकी प्रतिष्ठा करते थे। इस लिए जब यह एण्टियम में पहुँचा तो इस पर विद्रोह और देश के अहित का दोष लगाया गया और जिस समय इस पर राजसभा में अभियोग चलाया जा रहा था उसी समय अफीडियस के कुछ साथियो ने तलवार से इसे मार डाला।

टीटस एण्ड्रोनीकस

Titus Andronicus

बहुत दिन हुए रोम में एण्ड्रोनीकस नामक एक पेट्रीशियन वंश था जिसकी वीरता और देशभक्ति तथा राजभक्ति जगत्प्रसिद्ध थी। ये लोग अपने राजा और देश के लिए कोई ऐसा काम न था जिसे नहीं कर सकते थे। इन्हें अपने भाई बहन बच्चे, यहाँ तक कि अपने प्राण भी इतने प्रिय नहीं थे जितना अपना देश। इस वंश के अग्रगन्ता दो वीर पुरुष थे। बड़े का नाम टीटस और उसके छोटे भाई का नाम मार्कस एण्ड्रोनीकस था। टीटस ने अपने नगर की रक्षा में बड़े बड़े पराक्रम कर दिखाये थे। कहा जाता है कि उसके २१ लड़के रोम के शत्रुओं से लड़ कर मारे जा चुके थे, परन्तु वह इसको अपना बड़ा भाग्य समझता था कि उससे उत्पन्न हुए पुत्रों का इसी वीरता से अन्त हुआ।

जिस समय का हम वर्णन कर रहे हैं उस समय टीटस और उसके पुत्रों ने गाथ लोगों पर विजय पाई थी जो बहुत दिनों से

रोम से शत्रुता रखते थे । और उनकी महारानी तमोरा को उसके तीन पुत्रों अलार्बस, डिमीट्रियस और चीरन सहित पकड़ कर रोम में ले आये थे। इस लड़ाई में टीटस के भी कई पुत्र मारे गये थे, जिनकी लाशें मृतकसंस्कार के लिए अपने देश में लाई गई थीं।

उस समय रोम के लोगों में एक भयानक रीति यह थी कि वे अपने शत्रुओं को मार मार कर अपने देवताओं को बलिप्रदान किया करते थे। इसलिए जिस समय इन पुत्रों के मृतक संस्कार का समय आया तो इनके भाइयों ने अपने पिता से प्रार्थना की कि हम महारानी तमोरा के सबसे बड़े पुत्र की बलि देना चाहते हैं जिससे हमारे भाइयों की आत्मा को शान्ति हो सके, क्योंकि उन्होंने इन्हीं गाथ लोगों के विरुद्ध लड़ कर अपने प्राण दिये हैं। टीटस ने उत्तर दिया कि मैं हर्षपूर्वक तुम को आज्ञा देता हूँ कि इस अभागी महारानी के सबसे बड़े पुत्र की बलि चढ़ा दो।

बिचारी तमोरा इस आज्ञा के पाते ही खड़ी खड़ी सूख गई और आँखों में आँसू भरकर कहने लगी—

"विजयी टीटस ! मेरे आँसुओं पर दया करो। एक माता के आँसुओं का ध्यान करो जो वह अपने प्रिय पुत्र के लिए बहा रही है। यदि कभी तुमको तुम्हारे लड़के प्यारे थे तो याद रक्खो कि उतने ही मेरे बच्चे मुझे प्यारे हैं। यही काफी है कि

हम और हमारे बच्चे कैद होकर आप के इस विजय-उत्सव की शोभा को बढ़ाने के लिए यहाँ खींच लाये गये हैं। अब क्या आप इन वीर पुत्रों का रोम की गलियों में वध करना चाहते हैं, जिनका अपराध केवल इतना ही है कि वे अपने देश के लिए जी तोड़ कर लड़े थे। यदि अपने देश और राजा के लिए लड़ना तेरे पुत्रों के लिए यश और प्रशंसा का कारण है तो मेरे लड़कों के लिए भी होना चाहिए। एण्ड्रोनीकस! अपने वंश की समाधियों को रुधिर से अपवित्र न करो! यदि तुम देवतों के समान हुआ चाहते हो तो दया करो! क्योंकि दया ही भद्र पुरुषों का चिह्न है। वीर टीटस मेरे ज्येष्ठ पुत्र पर कृपा करो!"

टीटस ने तमोरा के विलाप की कुछ भी परवा नहीं की और लोग अलार्बस को पकड़ कर लेगये, क्योंकि टीटस ने कहा था कि हमको धर्मकार्य्य करना है। लाशों को समाधिस्थ करते समय बलि चाहिए और बलि के लिए अलार्बस ही सबसे उत्तम पुरुष है।

तमोरा ने रोते हुए कहा—"हाय! यह कैसा निर्दयी धर्म है?"

चीरन—सिथिया वाले भी इतने जंगली नहीं थे।

डिमीट्रियस—अरे कुछ परवा नहीं। अलार्बस के लिए यह बहुत अच्छा हुआ! अब वह शान्ति की नींद सोवेगा और हम टीटस के क्रोधानल में जला

करेंगे। हे रानी! साहस करो जिन देवतों ने ट्रोय* की रानी को साहस दिया था वेही तुमको भी बल देंगे।

टीटस के पुत्रों ने अलार्बस के टुकडे टुकडे करके देवता पर चढा दिये और अपने पिता को अपने कार्य्य की समाप्ति की सूचना दी।

जिस समय गाथ वालों पर रोमन लोगों ने विजय पाई उन्हीं दिनों रोम के राजा का देहान्त हो गया था और उसकी गद्दी के लिए सेटरनीनस और कैसियेनस दोनो भाई आपस में झगडा कर रहे थे। टीटस के रोम में आने पर दोनो ने इसकी सहायता चाही। परन्तु टीटस सेटरनीनस को चाहता था। प्राय ऐसा देखा गया है कि जब कोई नया विजयी किसी बडे देश पर विजय प्राप्त करके आता था तो रोमन लोग उस समय के लिए उस विजयी पर अपना सर्वस्व वार दिया करते थे, फिर चाहे थोडे दिनो पीछे वे उसका कुछ भी क्यो न करें। इसी रीति के अनुसार लोगो ने टीटस को राजा बनाने का विचार प्रकट किया। परन्तु हम ऊपर कह चुके हैं कि टीटस राजभक्त था, वह अवसर पाकर राज छीनना नहीं चाहता था। अतएव अपने विचारानुसार उसने सर्वसाधारण से आग्रह करके सेटरनीनस को राजा बना दिया।

---

* ट्रोय की रानी का वर्णन होमर ने अपने काव्य में किया है।

सेटरनीनस ने राजा होकर टीटस को कोटिशः धन्यवाद दिये और उसका मान बढाने के लिए उसकी बेटी लैवीनिया से विवाह करने की इच्छा प्रकट की, जिससे टीटस की कन्या रोम की महारानी हो सके।

टीटस ने राजा की बात मानली और अपनी कन्या देने को उद्यत हो गया। विवाह की तैयारियाँ होने लगी और पुरोहित भी संस्कार करने के लिए आ उपस्थित हुआ। परन्तु वास्तव में लैवीनिया का बेसियेनस से प्रेम था और उन दोनो की मॅगनी भी हो चुकी थी। इसलिए यही उचित था कि लैवीनिया बेसियेनस की स्त्री होती। यद्यपि बेसियेनस राज्य दे देने पर राजी हो गया था परन्तु स्त्री भी दे देना उसे पसन्द न था। अतएव उसने टीटस के भाई मार्कस और उसके लडको लूशियस, क्विण्टस और मार्शस की सहायता से लैवीनिया को बीच मन्दिर से हरण कर लिया और जितनी देर में टीटस और राजा की आँख उधर को उठे आन की आन में भगा ले गया और विवाह कर लिया। टीटस को अपने वंशवालो के इस अनुचित व्यवहार पर बडा क्रोध आया और जब वह उन का पीछा करने को चला तो उस का छोटा पुत्र म्यूशियस अपनी बहन को बचाने के लिए दौडा। इस झगडे में टीटस ने अपने इस पुत्र को मार डाला और अपने लडको के अत्याचार पर पश्चात्ताप करने लगा।

सेटरनीनस को स्त्री हरण-रूपी अपमान असह्य हो गया और चूंकि वह उसी समय अपना विवाह करना चाहता था इस लिए रूपवती तमोरा से अपनी शादी करली। इस प्रकार अभागिनी तमोरा एक देश को छोड़कर फिर दूसरे देश की महारानी हो गई और उसके पुत्र बिना किसी दण्ड के स्वतंत्र कर दिये गये। परन्तु तमोरा को टीटस से वैर था, क्योंकि टीटस के द्वारा ही उसका राज्य नष्ट हुआ, उसी के द्वारा उसके पुत्र मारे गये और उसी के कारण यह सब अपमान सहना पड़ा। इसलिए रोम में शक्ति पाकर तमोरा तन मन धन से एण्ड्रोनीकस वंश को निर्बीज करने के उपाय सोचने लगी। हमारी शेष कहानी में केवल यही वर्णन किया जायगा कि किस प्रकार तमोरा को प्रथम अपने मनोरथ की प्राप्ति में सफलता हुई और फिर किस प्रकार उस का भी नाश हो गया।

लैवीनिया के हरण पर सेटरनीनस टीटस और उसके भाई बेटों के साथ नाराज हो गया। परन्तु तमोरा एक बनी हुई औरत थी। वह उसी समय से इनके नाश का उपाय सोचने लगी और चूंकि टीटस का रोम में बहुत जोर था, इसलिए केवल बनावट के लिए राजा को समझाकर उस समय मेल करा दिया। राजा ने न केवल टीटस को ही क्षमा कर दिया किन्तु अपने भाई बेसियेनस और लेवीनिया तथा उनके सब भाइयों का अपराध भी क्षमा कर दिया। और एण्ड्रोनीकस वंश

को राजा की ओर से जो पहले सन्देह था वह जाता रहा।

डिमीट्रियस और चीरन जो तमोरा के पुत्र थे, दोनो के दोनों लैवीनिया के रूप पर आसक्त हो गये। परन्तु लैवीनिया एक सती स्त्री थी और वैसियेनस को मारना भी सरल कार्य्य नहीं था। इस लिए उन्होंने एरन नामी एक हबशी की सहायता से जो तमोरा का गुप्त प्रेमी था लैवीनिया का सतीत्व भङ्ग करने की ठान ली।

तमोरा बड़ी दुष्टा थी, जिस समय एरन ने इस विचार को उस पर प्रकट किया तो बडी .खुश हुई, क्योंकि उसे टीटस के वंश का अपमान होना देख कर बडी .खुशी होती थी। थोड़े दिनो में एक दिन राजा शिकार को गया और रोम की सब बड़ी बड़ी स्त्रियाँ भी अपने पतियो के साथ गई। मार्ग में बहुत से गुप्त स्थान थे, जहाँ पुरुष छिप सकते थे। पहले तो एरन और तमोरा वहाँ खडे खड़े गुप्त बातें करने लगे। फिर जिस समय वैसियेनस और लैवीनिया उसी स्थान पर होकर गुज़रे तो बिना बात के तमोरा ने उनसे झगडा करना आरम्भ कर दिया। बात का बतङ्गड हो गया और कोलाहल तक नौबत आ गई। इधर एरन ने डिमेट्रियस और चीरन को सिखाकर वहाँ भेज दिया। जिस समय यह युवक अपनी कुटिला माता के पास पहुँचे, तमोरा चिल्ला चिल्ला कर सहायता के लिए पुकारने लगी।

इन लोगों को तो हत्या करने की सूझ रही थी। झट अवसर पाकर बैसियेनस को मारडाला और रोती लैवीनिया को पकड़ कर ले गये। इस बिचारी ने तमोरा और इन दुष्टों से बहुत कुछ प्रार्थना की कि चाहे प्राणदण्ड दे दिया जाय परन्तु उसके सतीत्व पर आक्रमण न किया जाय! लेकिन किसी ने उसकी विनती न सुनी और एकान्त स्थान में जा उसका धर्म भ्रष्ट कर उसके दोनों हाथ और जीभ काट ली जिससे वह इस अत्याचार का हाल न कह सके और न लिख सके। इधर तो लैवीनिया को दुर्गति करके उन्होंने जङ्गल में छोड़ा उधर बैसियेनस की लाश को एक गहरे गड्ढे में डाल दिया और उस गड्ढे पर इस प्रकार घास बिछा दी कि जो कोई वहां पर आवे वह उसमें गिर पड़े।

एरन ने टीटस के पुत्रों—क्विण्टस और मार्शस—से कहा कि अमुक गड्ढे में मैंने एक तेंदुआ सोते हुए देखा है। चलो इसे मार लाएं। जब मार्शस उस स्थान पर पहुँचा तो झट गिर पड़ा और जब उसका भाई क्विण्टस उस को निकालने के लिए झुका तो वह भी उसी गड्ढे में गिर गया। वहाँ जाकर उन लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ जब उन्होंने बैसियेनस की लाश को वहीं पड़ा हुआ देखा। वे घबराने लगे।

जिस समय क्विण्टस और मार्शस को एरन ने तेंदुये के शिकार के बहाने से इधर भेजा था उसी समय उसने

रुपयों की एक थैली एक वृक्ष के नीचे गाड दी और मार्शस के हाथ का लिखा हुआ एक जाली पत्र बनाया, जिसमें मार्शस की ओर से किसी शिकारी के लिए लिखा गया था कि हम वैसियेनस को मार कर ला रहे हैं सो तुम अमुक वृक्ष के तले एक गड्ढा खोद रक्खो जिससे बिना किसी के जाने हुए हम उसको दबा सके। इसके पुरस्कार में हमने रुपये की थैली तुम्हारे लिए उसी स्थान पर गाड दी है। यह पत्र एरन ने अपनी मनोरथसिद्धि के लिए राजा को दे दिया।

राजा यह समझा कि इन्होंने अवश्य मेरे भाई को मारने का इरादा किया है। इसलिए ज्यो ही वह शिकार से लौटा उसने क्विण्टस को गड्ढे में गिरते हुए देखा, और कहा—

"अरे तू कौन है, जो इसमें कूद रहा है"।

मार्शस—श्रीमन्! मैं वृद्ध एण्ड्रोनीकस का अभागा पुत्र हूँ जो इस दुर्दशा से यहाँ गिर पडा हूँ। यहाँ आप का भाई मरा पडा है।

सैटरनीनस—(टीटस से) दुष्ट! देख, तेरे लडको ने मेरे भाई को मार डाला!

यह कह कर राजा ने दोनों को पकडवा लिया और जब पत्र के अनुसार वे सब लोग वृक्ष तले गये तो वहां देखा कि रुपये गडे हुए हैं। अब तो सबको निश्चय हो गया कि वैसियेनस के

घातक यही दोनों हैं। इसलिए राजा ने उनको प्राणदण्ड की आज्ञा दे दी।

यद्यपि टीटस को इस कपट की कुछ खबर नहीं थी परन्तु उसे यह बात भले प्रकार विदित थी कि मेरे पुत्र अपने बहनोई को नहीं मार सकते। इसलिए वह बहुत ही शोकातुर हुआ और रो रो कर मजिस्ट्रेटों से प्रार्थना करने लगा कि जो सेवा मैंने अब तक अपने देश की की है उसके बदले में मेरे पुत्रों को क्षमा कर दिया जाय। परन्तु कोन उसकी सुन सकता था। क्योंकि तमोरा और एरन ने भली भांति राजा के कान भर दिये थे।

टीटस जिस समय इस प्रकार अपने पुत्रों के लिए रुदन कर रहा था उसी समय लैवोनिया भी अपने चचा मार्कस के साथ अपने पिता के पास आई। उसके मुँह से ख़ून निकल रहा था और उसकी बाहों की जगह केवल दो ठूँठ से लगे हुए थे। वह अपने मन ही मन में अपनी दशा का विचार कर रही थी क्योंकि इसके प्रकाशित करने के समस्त साधन उससे छीन लिये गये थे। मार्कस और टीटस दोनों बडे आश्चर्य्य में थे कि किस हत्यारे ने इसके साथ यह दुष्टता की। टीटस को अपनी कन्या की दुर्गति पर अत्यन्त शोक हुआ और वह ढाढे मार मार कर रोने लगा। उसका लड़का लूशियस भी छाती पीटने लगा, क्योंकि उनकी समझ में नहीं आता था कि किस मनुष्य ने यह घोर हत्या की है।

परन्तु अभी एरन और तमोरा के छल की समाप्ति नहीं हुई थी। वे टीटस के इतने ही दुःख पर सन्तुष्ट न थे। इसलिए एरन ने टीटस से आकर कहा—

"हमारे राजा ने सदेसा भेजा है कि अगर तुम अपने लडकों को बचाना चाहते हो तो तुम या मार्कस या लूशियस, कोई एक अपनी भुजा काट कर राजा के पास भेज दो। इसी को काफी दण्ड समझा जायगा और मार्शस और क्विण्टस को जीवित वापिस कर दिया जायगा।"

टीटस—भले एरन, आपने अच्छी बात सुनाई। मैं अभी अपनी भुजा काट कर राजा के पास भेजता हूँ। कृपया इसके काटने में सहायता करो।

लूशियस—ठहरिए पिता जी! आप का पूज्य हाथ, जिसने अपने देश के लिए ऐसे ऐसे काम किये हैं, कदापि नहीं भेजा जा सकता! मेरी भुजा इस समय काम दे जायगी।

मार्कस—तुम दोनो की भुजायें इस रोम के लिए बड़ी लाभदायक हैं। तुम दोनों ने शत्रुओं के दलों में खलबली मचा दी है। इस लिए अपने भतीजों की जान बचाने के लिए मैं ही अपनी भुजा काटूँगा।

एरन—जल्दी करो, क्योंकि फाँसी देने का समय निकट है।

मार्कस—मेरा हाथ जायगा।

लूशियस—नहीं जा सकता।

टीटस—क्यों लड़ते हो। यह सूखी भुजायें कटने ही योग्य हैं।

मार्कस—नहीं, मैं ही अपनी भुजाये भेजूँगा।

टीटस ने यह देख कर कि वे दोनो राजी नहीं होते उनसे कहा कि अच्छा तुमही अपनी भुजा भेज दो और तलवार ले आओ। जिस समय लूशियस और मार्कस तलवार लेने गये, टीटस ने जल्दी से एरन द्वारा अपनी भुजा कटवा कर राजा के पास भेज दी। परन्तु वास्तव में राजा ने कोई सदेसा नहीं भेजा था, यह सब एरन की कुटिलता थी। इस लिए जब तक भुजा राजा तक पहुँची टीटस के दोनो लड़को के सिर काट दिये जा चुके थे, जिनको राजा ने टीटस को दु ख देने के लिए भुजा सहित उसके पास भेज दिया।

अब तो एड्रोनीकस वश का दु ख क्रोध में बदल गया और उन्होंने दृढ विचार किया कि जिस प्रकार हो सके सेटरनीनस से बदला लेना चाहिए। इस कामना की सिद्धि के लिए टीटस का बचा हुआ पुत्र लूशियस रोम को छोड़ कर भाग गया और गाथ लोगो से मिल गया जिससे वह एक दिन बहुत बड़ी सेना लेकर रोम पर आक्रमण कर सके और सेटरनीनस को उसकी कृतघ्नता का स्वाद चखा सके।

अब टीटस, मार्कस, लैवीनिया और लूशियस का लड़का घर पर रह गये और रोरो कर दिन काटने लगे। एक समय जब वे सब भोजन करने के लिए बैठे थे, टीटस ने कहा—

"केवल इतना खाओ जिससे हममें बदला लेने की शक्ति बनी रहे। मार्कस! मैं और तेरी भतीजी दोनों निहत्थे हैं। और हाथ जोड़ कर अपने शोक को प्रकट नहीं कर सकते। मेरा दाहिना हाथ रह गया है, जिससे मैं अपनी छाती पीट लेता हूँ। (लैवीनिया से) बेटी, तू तो इतना भी नहीं कर सकती। हे दुखियारी अपने दांतों में चाकू पकड़ कर अपने हृदय में छेद कर ले, जिससे आंखों द्वारा धीरे धीरे निकलने वाले आंसू शीघ्रता से निकल जायँ।

मार्कस—धिक् भाई, धिक्! भला तुम उसे अपने मरने का उपाय क्यों बतलाते हो!

टीटस—हाय! भाई क्या कहते हो। भला इसे क्या सुख है जिससे जीवन प्रिय हो सके।

लूशियस का पुत्र—(रोकर) बाबाजी! आप बुआ को क्यों दुःख दे रहे हैं, कोई अच्छी बात कहिए!

मार्कस—बालक भी शोक के मारे रो रहा है।

टीटस—चुप बालक, चुप! तू तो आंसुओं का बना हुआ है और यह निकल कर तेरे जीवन को समाप्त कर देंगे।

इस समय मार्कस ने थाली पर बैठी हुई मक्खी को चाकू से मार दिया। इस पर टीटस कहने लगा—

"भाई, तू ने बड़ा पाप किया। निरपराधी का मारना टीटस के भाई को उचित नहीं है।"

मार्कस—मैंने केवल एक मक्खी मारी है।

टीटस—क्या इस मक्खी के मा—बाप विलाप न कर रहे होंगे?

मार्कस—क्षमा कीजिए। इसकी शकल तमोरा के प्यारे हबशी की थी, इसलिए मैंने मार दिया।

टीटस—तब तो अच्छा किया।

यह कह कर वह रोने लगा। क्योंकि टीटस बहुत दिनों से पागल होगया था और शोक के मारे उसकी मति भङ्ग हो गई थी।

एक दिन ऐसा हुआ कि जब लूशियस का लड़का किताबें लिये पढ़ रहा था लैवीनिया ने अपने हाथ के ठूठों से *ओविड की बनाई हुई मेटा मोरफोसिस नामी पुस्तक खोली और फिलोमिला की कहानी की ओर सकेत किया। टीटस और मार्कस ने फिलोमिला की कथा द्वारा यह समझ लिया कि जो दशा इसकी हुई थी वही लैवीनिया की हुई होगी। क्योंकि फिलोमिला को भी

* इटली का एक कवि।

जङ्गल में पकड कर उसका धर्म नष्ट किया गया था। परन्तु अब यह जानना था कि किसने ऐसा किया। मार्कस ने अपने दाँतों में कलम पकड कर कागज पर कुछ लिख कर बतलाया कि लैवीनिया भी बिना हाथों के उस हत्यारे का नाम लिख सकती है। इस प्रकार लैवीनिया ने चीरन और डिमेट्रियस का नाम लिख दिया। इनके देखते ही टीटस की आँखें लाल हो गईं और क्रोध के मारे काँपने लगा। परन्तु मार्कस ने कहा कि भाई यद्यपि हमारे दुःख के कारण नगर भर में गदर मच सकता है, क्योंकि ब्रूटस ने इसी घोर पाप के कारण एक समय राजवंश को देश-बाहर कर दिया था, परन्तु इस समय यदि हम कुछ कहेंगे तो तमोरा शीघ्र ही हमारा अन्त कर देगी। इसलिए इस समय चुप ही भली है। हम बदला लेने के दूसरे उपाय करेंगे।

थोड़े दिनों में डिमेट्रियस और चीरन की भी एरन से लड़ाई हो गई, क्योंकि दुष्ट आदमियों में कभी नहीं बन सकती। इस झगड़े का कारण यह था —

हम कह चुके हैं कि तमोरा का एरन से गुप्त प्रेम था। वह गर्भवती थी। जिस समय उसके लडका हुआ तो वह ऐसा ही काला था जैसा हबशी। यह देख कर तमोरा डर गई, क्योंकि सेटरनीनस उसे मरवा डालता। इस कारण उसने लडके को एरन के पास भेज दिया कि इसे मार डालो। एरन ने इसे अपना लडका समझ कर मारना पसन्द नहीं किया। परन्तु

चीरन और डिमेट्रियस ने अपनी माता का अपमान समझ कर यह लडका लेना चाहा। एरन की उन से लडाई हो गई और वह वहाँ से लडके को लेकर भाग गया। इस समय उसने धाय को भी मार डाला जिससे कोई बालक पैदा होने की साक्षी देने को बाकी न रहे।

जब एरन भागा जा रहा था उस समय लूशियस गाथवालों की बडी भारी सेना लिये रोम पर चढाई करने आ रहा था। लूशियस ने एरन को क़ैद कर लिया और साथ साथ रोम को ले आया।

जिस समय टीटस ने लैवीनिया के धर्म नष्ट करने वालों का नाम सुना था वह क्रोध में भर गया था और राजा को दण्ड देने के लिए उसने अपनी कमान से ऐसे तीर छोड़े कि वह राजा के लगे। राजा को बडा क्रोध आया और तीरों सहित सभा में आकर रोमन लोगों को टीटस के विरुद्ध भडकाने लगा।

परन्तु उसी समय लूशियस की चढाई की खबर मिली। जिसके सुनते ही राजा के घर में अशान्ति फैल गई और उसने अपना अन्त निकट समझ लिया। लेकिन तमोरा ने उसको ढारस दिया, क्योंकि उसे अब भी अपनी चालाकियों से टीटस को फुसलाने की आशा लगी हुई थी।

इस काम को पूरा करने के लिए वह अपने पुत्रो सहित टीटस के घर गई और दरवाज़े पर खटखटाया। टीटस उस समय शायद अपने लड़के के लिए पत्र लिख रहा था। इसलिए उसने उत्तर दिया—

"अरे कौन है जो मुझे इस प्रकार तंग कर रहा है। जो कुछ मुझे लिखना था सो मैं लिख चुका।"

तमोरा—टीटस! मैं तुझसे बात चीत करने आई हूँ।

टीटस—नहीं! नहीं! मैं कुछ बात नहीं कर सकता, क्योंकि उसके अनुकूल करने के लिए मेरे हाथ ही नहीं हैं।

तमोरा—अगर तुम मुझे पहचानते तो अवश्य बातचीत करते।

टीटस—मैं पागल नहीं हूँ। मैं तुझे पहचानता हूँ। महारानी तमोरा मेरा दूसरा हाथ भी लेने आई हैं।

तमोरा—अरे मैं तमोरा नहीं हूँ। वह तो तेरी शत्रु है और मैं मित्र! मैं बदला लेनेवाली देवी हूँ, जिसे पाताल लोक से इसलिए भेजा गया है कि तेरे वैरियों को दण्ड दिया जाय।

टीटस—ये दोनों कौन हैं?

तमोरा—एक का नाम हत्या और दूसरे का नाम भ्रष्टता है।

टीटस—यह तो तमोरा के से पुत्र मालूम होते हैं। पर हमारी आँखें ठीक नहीं रहीं। शायद जो तुम कहती हो

वही सच हो। इन हत्या और भ्रष्टता को मार क्यों न डालो।

तमोरा—नहीं। हत्या हत्यारे को मारेगी और भ्रष्टता उसका नाश करेगी जिसने किसी का सतीत्व नष्ट किया हो।

टीटस—ठीक! अच्छा (चीरन से) तुम अपनी शकल के जिस मनुष्य को देखो उसे मार डालना।

चीरन—अच्छा।

टीटस—(डिमेट्रियस से) और तुम भी।

डिमेट्रियस—बहुत अच्छा।

अब तमोरा चलने लगी। परन्तु टीटस ने कहा कि इन दोनों साथियों को छोड जाओ, जिससे मुझे कुछ सहायता हो। मैं अभी अपने पुत्र लूशियस को बुलाता हूँ और राजा को भी निमन्त्रित करूँगा। यदि तुम इनको न छोड़ोगी तो मैं अपने बेटे को न बुलाऊँगा।

तमोरा ने यह समझा कि जब लूशियस और राजा सह-भोज के लिए आवेंगे तो उनमें मेल हो जायगा। इसलिए वह दोनों लड़कों को वहीं छोड गई। परन्तु टीटस ने उन दोनों को मार कर उनके मांस को पकवा लिया।

जब राजा और तमोरा टीटस के घर खाना खाने आये तो उससे कुछ पहले लूशियस भी वहां आ गया। उसने एरन की ओर सकेन करके अपने चचा से कहा—

"चचाजी, आप इस हबशी को बिना भोजन दिये कैद रखिए। मैं रानी के आने पर इसके पापों की पोथी खोलूँगा। यह बड़ा दुष्ट है!"

थोड़ी देर के बाद खाना परोसा गया और टीटस पाचक के भेस में सब प्रबन्ध करने लगा।

सेटरनीनस ने कहा "टीटस, यह भेस क्यों धरा है?"

टीटस—इसलिए कि आपको कुछ कष्ट न हो और आपके भोजनों का यथोचित प्रबन्ध हो जाय।

तमोरा—हम आपके कृतज्ञ हैं।

टीटस—राजन्! क्या वर्जीनियस ने अपनी पुत्री को असतीत्व से बचाने के लिए मार डालने में कुछ बुरा किया?

सेटरनी०—नहीं!

टीटस—क्यों!

सेटर०—इस लिए कि उसका असती होकर जीना लज्जाप्रद था!

टीटस ने "ठीक" कह कर लेवीनिया को वहीं पर मार डाला!

सेटरनी०—अरे दुष्ट! क्या किया!

टीटस—मार डाला। क्योंकि इसके दुःख में रोते रोते मेरी

आँखे अन्धी हो गई। मुझे भी वही दुःख है जो वर्जीनियस* को था। अब इसकी समाप्ति हो गई।

सेटर०—इसका सतीत्व किसने नष्ट किया?

टीटस—आप भोजन पाइए।

सेटर०—अपनी बेटी को क्यों मारा?

टीटस—मैंने नहीं मारा। चीरन और डिमेट्रियस ने उसका सतीत्व नष्ट किया और जीभ और हाथ काट लिये।

सेटरनी०—अच्छा। उनको बुलाओ।

टीटस ने मांस की ओर उँगली उठाकर कहा कि "देखिए वे दोनों यहाँ उपस्थित हैं। इन्हीं का मांस तो आप खा रहे हैं।

---

* वर्जीनियस रोम का एक मनुष्य था जिसकी युवती और रूपवती कन्या वर्जीनिया पर एपियस नामी एक मजिस्ट्रेट मोहित था। जब वर्जीनिया उसके हाथ न लग सकी तो उसने क्लॉडियस नामी एक दूसरे मनुष्य से अपनी कचहरी में एक अर्जी दिलवाई कि वर्जीनिया मेरे गुलाम की लड़की है और वर्जीनियस झूठ मूठ अपनी लड़की बताता है। इस मुकद्दमे को एपियस ने क्लॉडियस के अनुकूल निश्चित किया और लड़की क्लॉडियस को मिल गई। जब वर्जीनियस को अपनी कन्या के सतीत्व और जीवन दोनों के बचाने का कोई उपाय न रहा तो उसने जीवन के बदले सतीत्व बचाना ही उचित समझा और उसको झट से कसाई की एक दूकान से खींच कर चाकू से मार डाला। मारते समय उसने कहा—"प्यारी बेटी मैं इस उपाय के सिवा किसी तरह तेरा धर्म नहीं बचा सकता।"

तमोरा ! आप उसी मांस को खा रही हैं जो आपके उदर से निकला था।"

यह कहकर टीटस ने तमोरा को मार डाला ! तमोरा को मारते देखकर सेटरनीनस ने टीटस को समाप्त कर दिया। इस पर लूशियस ने सेटरनीनस को ठण्डा कर दिया।

अब रोमवालों ने सर्वसम्मति से लूशियस को राजा बनाया, जिसने अपने पिता तथा बहन और राजा का आदर-पूर्वक मृतक-सस्कार किया। परन्तु तमोरा की लाश फेंक दी गई और उसका काला लडका भी मार डाला गया ! एरन भी दुर्गति करके मारा गया। इस प्रकार तमोरा और एरन को अपने किये की सजा मिली और एण्ड्रोनीकस वंश को देश-सेवा के बदले राज्य मिला।



ट्रोइलस और क्रैसीडा।

Troilus and Cressida

एशिया कोचक के पश्चिमोत्तरी कोने में पुराने समय में ट्रोय (Troy) नामी एक प्रसिद्ध नगर था, जहाँ का राजा प्रियम था, प्रियम के पाँच लड़के थे, जिनके नाम ये हैं—हैक्टर, ट्रोइलस, पेरिस, डैलाफोबस और हैलीनस। पेरिस एक बार स्पार्टा में जाकर वहाँ के राजा मैनीलस की स्त्री हैलिन को जहाज में बिठा कर हर लाया। इस पर यूनान की सब रियासतें बिगड़ गई और बड़ी भारी तैयारी कर के ट्रोय पर आक्रमण कर दिया। इस सेना में अगामेम्नन, अजाक्स, अकीलिस, उलीसिस, नैस्टर, डाइमोडीस, पेट्रोक्लस आदि बड़े बड़े योद्धा थे। इन सब ने ट्रोय को चारों ओर से घेर लिया*।

ट्रोय के एक पुजारी काल्कस की पुत्री क्रेसीडा बड़ी रूपवती थी और राजकुमार ट्रोइलस उसके रूप पर मोहित था।

---

* इस आक्रमण का पूर्ण वृतान्त यूनान के प्रसिद्ध महाकवि होमर ने अपने महाकाव्य इलियड (Illiad) में लिखा है।

क्रैसीडा यद्यपि ट्रोइलस से प्रसन्न थी परन्तु वह अपने मन के हावभाव को कभी किसी पर प्रकट नहीं करती थी, जैसा कि स्त्रियो का क़ायदा है। ट्रोइलस क्रैसीडा के चचा पण्डारस के द्वारा अपनी प्रेयसी की प्राप्ति का उपाय किया करता था। परन्तु जब पण्डारस क्रैसीडा के पास जाकर ट्रोइलस के गुणों तथा वीरता का वर्णन करता तो क्रैसीडा सुनी अनसुनी करके उसका तिरस्कार किया करती थी।

एक दिन क्रैसीडा अपने नौकर के साथ नगर की एक गली में तमाशा देखने के लिए खड़ी हुई थी, क्योंकि उसी ओर होकर लड़ाई से पलटे हुए योद्धा गुजरने वाले थे। इतने में उसने दो स्त्रियाँ निकलती हुई देखीं। क्रैसीडा ने पूछा—"ये कौन हैं"।

नौकर—महारानी हक्यूबा* और हैलिन।

क्रैसीडा—ये कहाँ जा रही हैं?

नौकर—पूर्वी महल को। वहाँ से ये लड़ाई की बहार देखेंगी। आज हैक्टर बड़े क्रोध में हैं।

क्रैसीडा—क्यों?

नौकर—कहते है कि यूनानियो की सेना में हैक्टर का भानजा है, जिसका नाम अजाक्स है।

क्रैसीडा—तो क्या!

---

* हक्यूबा प्रियम की स्त्री थी।

नौकर—वह एक वीर पुरुष है। वह अपनी ही टाँगों खड़ा होता है।

क्रैसीडा—यह कौनसी वीरता है? सब अपनी टाँगों खड़े होते हैं, अगर वे नशे में न हों, या रोगी न हों या लँगड़े न हों।

नौकर—देवि! इसने बहुत से पशुओं के गुण छीन लिये हैं। वह सिंह के समान वीर है और हाथी के समान मन्द।

क्रैसीडा—मुझे तो इन बातों से हँसी आती है। फिर हैक्टर क्यों नाराज़ हो गया?

नौकर—कहा जाता है कि कल उसने रणक्षेत्र में हैक्टर को पछाड़ दिया, जिसकी लज्जा के कारण हैक्टर न तो सोया और न उसने भोजन किया।

क्रैसीडा—हैक्टर बड़ा वीर है?

नौकर—हाँ।

इस समय पण्डारस भी उसी स्थान पर आ गया और कहने लगा—

क्रैसीडा! तुम क्या बातें कर रही हो?"

क्रैसीडा—यही कि हैक्टर नाराज़ है।

पण्डारस—हाँ यह बात ठीक है। मुझे उसके नाराज़ होने का कारण भी मालूम है। आज वह उसे अवश्य

पछाड़ेगा ! आज ट्रोइलस भी गया है। वह भी अपने बड़े भाई से पीछे नहीं रहेगा !

क्रैसीडा—क्या वह भी नाराज है ?

पण्डारस—कौन ? ट्रोइलस ? ट्रोइलस इन दोनों में अधिक वीर है।

क्रैसीडा—मेरे भगवान् ! यह तुलना नहीं हो सकती !

पण्डारस—क्या ट्रोइलस और हैक्टर में भी तुलना नहीं हो सकती ? क्या तुम किसी आदमी को देखकर पहचान सकती हो ?

क्रैसीडा—हाँ ! अगर पहले देखा हो !

पण्डारस—हाँ तभी तो मैं कहता हूँ कि ट्रोइलस ट्रोइलस ही है।

क्रैसीडा—यही तो मै कहती हूँ कि वह हैक्टर नहीं है।

पण्डारस—हाँ और हैक्टर ट्रोइलस नहीं है।

क्रैसीडा—यह सच है। एक दूसरा नहीं हो सकता।

पण्डारस—हैक्टर ट्रोइलस से अच्छा नहीं है।

क्रैसीडा—क्षमा करो।

पण्डारस—वह केवल बड़ा है।

क्रैसीडा—क्षमा करो ! क्षमा करो !

पण्डारस—हैक्टर में उसके से गुण भी नहीं हैं।

क्रैसीडा—क्या हानि ?

पण्डारस—और न रूप है।

क्रैसीडा—यह बात नहीं है।

जिस समय ये बातें होही रही थीं हैकूर, पेरिस, ट्रोइलस इत्यादि उसी गली के निकट होकर निकले। ये लोग रणभूमि से आ रहे थे और अस्त्र, शस्त्र तथा कवच धारण किये हुए थे। पण्डारस ने ट्रोइलस की ओर संकेत करके उसकी बड़ी प्रशंसा की और क्रैसीडा का चित्त उसकी ओर आकर्षित किया।

पण्डारस के द्वारा ट्रोइलस और क्रैसीडा का सम्बन्ध निश्चित हो गया। हम ऊपर बता चुके हैं कि क्रैसीडा वास्तव में ट्रोइलस से प्रेम करती थी, परन्तु मान के कारण इसे प्रकट नहीं करती थी। अपने चचा का संकेत पाकर उसने झट ट्रोइलस से विवाह करना स्वीकार कर लिया और जिस समय ये दोनों स्त्री पुरुष रंगरलियों में लगे हुए थे एक ऐसी दुर्घटना हुई, जिस के कारण बड़ी कठिनाई से मिले हुए प्रेमियों का फिर वियोग हो गया। इसका हाल हम आगे लिखेंगे।

यूनानी सेना को ट्रोय में पड़े हुए बहुत दिन हो गये थे। उन्होंने चारों ओर से इसे घेर लिया था और ट्रोय-निवासियों का नाक में दम था। एक दिन ट्रोय नरेश प्रियम ने अपने सब पुत्रों को बुलाकर युद्ध के विषय में उनकी सम्मति माँगी। क्योंकि

यूनानी जनरल नैस्टर का सदेसा आया था कि या ते हेलिन को वापस देदो और जो कुछ हमारा नुक़सान हुआ है उसका प्रतीकार कर दो, नहीं तो हम तुम्हारे नगर के जला कर राख में मिला देंगे। इसके अतिरिक्त प्रियम की एक लडकी कैसेण्डरा, जो फलित ज्योतिष की विदुषी थी, यही कह रही थी कि राजन् युद्ध में तुम्हारी पराजय होगी। इन सब कारणों से प्रेरित होकर राजा ने पहले हैकृर से पूछा कि "तुम्हारी क्या राय है?"

हैकृर—श्रीमन्! मुझे यूनानियों का कुछ भी भय नहीं है। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि युद्ध का भविष्यत सदिग्ध है। कौन जानता है कि कल क्या हो। इसलिए हैलिन को जाने दो। वे सब आदमी जो हैलिन के लिए रण में काम आये हैं, हैलिन से अधिक उपकारी थे। एक ऐसी चीज की रक्षा के लिए जो न तो हमारी है और न रखने योग्य है इतनी जानो का नाश कर देना उचित नहीं है। इसलिए मेरे विचार में तो यही आता है कि आप हैलिन को वापस भेज दे"।

ट्रोइलस—धिक्कार है भाई। तुम ऐसे ऐश्वर्य्यवान् राजा के गौरव को ऐसा तुच्छ समझते हो। क्या महाराज के अनन्त यश को आप कौड़ियों से नापते हैं। धिक्! धिक्!

हैक्टर—भाई ! यह इस योग्य नहीं है कि इसके लिए इतनी हानि उठाई जाय।

ट्रोइलस—इससे क्या होता है ? यदि आज मैं किसी स्त्री से विवाह करूँ तो मैं उसे अपनी इच्छा के अनुसार पसन्द करूँगा। और यदि कल को मुझे वह अच्छी न लगे तो क्या लौटा दूँगा। हम लोग एक बार बजाज से रेशम लेकर फिर उसे लौटा नहीं देते। पहले यही उचित समझा गया था कि पेरिस यूनान में जाकर यूनानियो से उनके इस अपराध का बदला ले कि वे एक वृद्ध स्त्री को यहाँ से कैद कर ले गये थे। पेरिस आप सब की सलाह से यूनान में गया और एक ऐसी सुन्दर और रूपवती रानी को भगा लाया जिस पर देवता भी मोहित होते है। अब आपही कहते हैं कि क्या यह रखने योग्य है ? हाँ अवश्यमेव ! वह एक ऐसा मोती है जिसका मूल्य हजारो जहाजों से भी बढकर है। यदि आप कहते हैं कि पेरिस ने यूनान जाने में बड़ी बुद्धिमत्ता की (आप को यह कहना पडेगा क्योंकि आप सब कहते थे कि पेरिस जाओ !) पेरिस जाओ ! और यदि आप कहते है कि पेरिस एक बहुमूल्य रत्न ले आया (यह भी आपको स्वीकार करना पड़ेगा क्योंकि हैलिन के आते समय आप सबने हर्ष प्रकाशित किया

था) तो फिर आप किस मुँह से उसे लौटाना चाहते हैं।

जब ट्रोइलस यह कह रहा था कैसेण्डरा वहाँ पर आगई और अपनी भविष्यद्वाणी कहने लगी—

"अब ट्रोय और ट्रोयवासी कोई न बचेंगे क्योंकि हमारा भाई पेरिस सबका दाह किये देता है। अरे हैलिन को जाने दो नहीं तो ट्रोय की ख़ैर नहीं है।"

हैक्टर—वीर ट्रोइलस! क्या हमारी बहन की भविष्यद्वाणी यह नहीं कह रही कि हम देश की रक्षा करने में सफल न होंगे।

ट्रोइलस—भाई! बहन के उन्मत्त प्रलाप का विश्वास नहीं करना चाहिए। वह तो योंही कहा करती है। ऐसा करने से हमारी मानहानि होती है।

पेरिस—आप विचारिए तो ऐसा करने में मेरी भी मानहानि होगी। ईश्वर जानता है कि आप सबकी सलाह से मैंने यह काम किया था। आप जानते हैं कि मेरी अकेली भुजायें क्या कर सकती हैं? परन्तु यदि मुझ में इच्छा के समान शक्ति भी होती तो मैं अपने किये को अनकिया करने को तैयार नहीं हूँ।

प्रियम—पेरिस! तुम तो अपने आनन्द के मारे कहते हो।

तुम्हारी वीरता ऐसी प्रशंसनीय नहीं है, क्योंकि तुम्हारा तो इसमें हित है।

पेरिस—श्रीमन्, मैं अपने स्वार्थ से नहीं कहता। हममें कौन ऐसा कायर है जो हैलिन की रक्षा के लिए रक्त बहाने को उद्यत न हो? अब यहाँ यश और अपयश का प्रश्न है।

उपर्युक्त वाद-विवाद के पश्चात् यही निश्चय हुआ कि लड़ाई जारी रखनी चाहिए। और हेक्टर ने ईनियस नामी सेना-पति को दूत करके यूनानियों के समीप भेजा कि तुम जाकर उनसे कह दो कि यदि कोई योद्धा यूनान में ऐसा हो जो अपने प्राणों को अपने यश से तुच्छ समझता हो तो मैं उससे धर्म-युद्ध करना चाहता हूँ।

हैक्टर के इस आवाहन को अजाक्ष ने स्वीकार कर लिया, जिस के विषय में हम ऊपर कह चुके हैं कि वह प्रियम की बहन का लड़का था और यूनानियों से जा मिला था।

क्रैसीडा का पिता काल्कस कैसेण्डरा की भाँति एक ज्योतिषी था। उसने भी जान लिया था कि ट्रोय का सर्वनाश होने वाला है। इसलिए वह आरम्भ से ही ट्रोय से भाग कर यूनानियों से जा मिला था और उनकी बहुत कुछ सेवा की थी, जिसके बदले में अगामैम्नन ने, जो यूनानी सेना का अध्यक्ष था, उसे मुँहमाँगा इनाम देने के लिए कहा था। अब काल्कस की यह इच्छा हुई

कि किसी प्रकार अपनी पुत्री क्रैसीडा को भी बुला लेना चाहिए। उस समय भाग्यवश यूनानियो ने ट्रोय के एक वीर सेनापति एण्टीनर को कैद कर लिया। ट्रोय वाले सर्वस्व देने के लिए तैयार थे यदि उनको एण्टीनर वापस मिल जाय। क्योंकि वह बड़ा भारी योद्धा था। इसके अतिरिक्त यूनानियो ने ट्रोय वालों से कई बार क्रैसीडा को माँगा था, परन्तु वह उसे देना स्वीकृत नहीं करते थे। अब काल्कस ने अगामैम्नन से प्रार्थना की कि आप कृपा करके मेरी सेवा के बदले मुझे एक वर दीजिए, अर्थात् एण्टीनर के बदले क्रैसीडा को माँग लीजिए। मुझे विश्वास है कि वे अवश्य क्रैसीडा को देकर एण्टीनर को लेना पसन्द करेंगे।

अगामैम्नन ने काल्कस की प्रार्थना स्वीकार कर ली और एक यूनानी जनरल डाइमीडीस से कहा कि तुम क्रैसीडा को ले आओ।

ट्रोय वाले इस बात पर राज़ी होगये और क्रैसीडा को देने की तैयारियाँ होने लगीं।

क्रैसीडा इस समय अपने प्यारे के साथ बैठी बातचीत का सुख प्राप्त कर रही थी कि उसका चचा पण्डारस हाय हाय करता हुआ वहाँ पहुँचा। क्रैसीडा घबरा कर कहने लगी—

"प्यारे चचा ! क्या बात है ? आप क्यो इस प्रकार दुःखी हैं।"

पण्डारस—आज यदि मैं मर जाता तो अच्छा होता।

क्रैसीडा—क्यों! क्यों!

पण्डारस—अच्छा होता अगर तू जन्मते ही मर जाती। हाय हाय! अब ट्रोइलस पर कैसी बीतेगी! दुष्ट पण्टीनर का सत्यानाश हो।

क्रैसीडा—क्यों! क्यों?

पण्डारस—अब तुझे जाना होगा! अब तुझे जाना होगा! पण्टीनर के बदले तुझे दे दिया है। अब तू अपने बाप के पास जाती है। ट्रोइलस से अब तेरा मिलना न होगा।

क्रैसीडा—हे भगवन्! मैं नहीं जाने की।

पण्डारस—तुझे जाना पड़ेगा।

क्रैसीडा—मैं नहीं जाऊँगी। मैं तो अपने पिता को भूल गई। अब ट्रोइलस के समान मेरा कोई हितू नहीं है। चाहे मेरे प्राण ही क्यों न जायँ मैं ट्रोय से नहीं जाऊँगी।

अब वह ट्रोइलस से कहने लगी—"क्या यह सच है कि मुझे ट्रोय से जाना होगा!"

ट्रोइलस—(उदास होकर)—हाँ सच है।

क्रैसीडा—क्या ट्रोइलस से भी?

ट्रोइलस—ट्रोय और ट्रोइलस दोनों से!

अभी ये बातें हो ही रही थीं कि ईनियस और डाइमेडीस क्रैसीडा को लेने के लिए वहाँ पर आगये । क्रैसीडा कहने लगी—

"क्या अब मैं यूनान को जाऊँगी ?

ट्रोइलस—कुछ उपाय नहीं है ।

क्रैसीडा—क्या अभागी क्रैसीडा प्रसन्नचित्त यूनानियों के घर जायगी ! हाय ! अब तुमसे कब भेंट होगी ?

ट्रोइलस—प्यारी सच्ची रहना !

क्रैसीडा—मैं सच्ची ! यह क्या ?

ट्रोइलस—क्षमा करो ! मैं जानता हूँ कि तुम्हारे हृदय में कोई कपट नहीं है । परन्तु चलते समय मैं तुझ से प्रतिज्ञा करता हूँ कि यदि तू सच्ची रहेगी तो मैं तुझ से अवश्य भेंट करूँगा ।

क्रैसीडा—मैं तो सच्ची रहूँगी । परन्तु आप को आने में बड़ी आपत्ति का सामना करना होगा !

ट्रोइलस—मैं इस दस्ताने को देता हूँ । इसे अपने पास रक्खो । तुम्हारे मिलने के लिए मैं हर एक आपत्ति को तुच्छ समझता हूँ ।

क्रैसीडा—आप भी इस दस्ताने को रखिए । अब तुम कब मिलोगे ?

ट्रोइलस—मैं यूनानी द्वारपालो को फुसला कर रात के समय तुम्हारे पास आया करूँगा। परन्तु सच्ची रहना।

कैसीडा—हाय हाय! फिर वही बात!

ट्रोइलस—मैं ये सब बाते इसलिए कहता हूँ कि यूनान के लोग बड़े योग्य, सुन्दर, शान्त चित्त, नीरोग तथा प्रेमशाली हैं। इसलिए मुझे डर लगता है कि कहीं तुम्हारा मन विचलित न हो जाय।

कैसीडा—शिव! शिव! तुम मुझ से प्रेम नहीं करते!

ट्रोइलस—यदि ऐसा हो तो ईश्वर मेरा बुरा करे। ऐसा कहने से यह तात्पर्य्य नहीं है कि मुझे तुम्हारे सतीत्व पर सन्देह है, किन्तु अपनी योग्यता पर। मुझे ऐसी बाते बनाना नहीं आतीं जैसी यूनानियो को। इस-लिए उनके छल में न फँस जाना।

कैसीडा—क्या तुम समझते हो कि मैं फँस जाऊँगी?

ट्रोइलस—नहीं नहीं! परन्तु मनुष्य कभी कभी धोखा खा जाता है।

अब इन दोनों के बिछुडने का समय आया और कैसीडा डाइमोडीस के हवाले कर दी गई।

जिस समय कैसीडा यूनानी कैम्प में पहुँची, वे लोग बहुत खुश हुए और उसका बड़ा आदर किया गया। काल्कस अपनी

साथ मुँह पर मुँह रक्खे हुए बातें कर रहे हैं। ट्रोइलस ने दूर से इतनी बात सुनी—

डाइमोडिस—कहो प्यारी क्रैसीडा !

क्रैसीडा—प्यारे सरक्षक ! एकान्त में एक बात सुनिए।

यह गुप्त वार्तालाप ट्रोइलस के कानों तक न पहुँच सका, परन्तु उसे मालूम हो गया कि जिस क्रैसीडा पर पहले उसे शका होती थी और जिससे वियोग के समय उसने न भूलने और सच्ची रहने के लिए प्रतिज्ञा कराई थी वही क्रैसीडा उसके शत्रु से ऐसा व्यवहार करने लगी मानों ट्रोइलस उसके सामने कुछ भी न था अथवा ट्रोइलस को उसने कभी नहीं देखा था। उसके मन को बड़ी चोट लगी। फिर उसने सुना—

डाइमोडीस—याद रखना।

क्रैसीडा—याद ? अवश्य ! अवश्य !

डाइमोडीस—याद रखना और अब भी बात का पालन करना।

क्रैसीडा—प्यारे यूनानी ! इससे अधिक मुझे न फुसला।

डाइमोडीस—तो नहीं—

क्रैसीडा—मेरी बात तो सुनो।

डाइमोडीस—तुम झूठी हुई जाती हो !

क्रैसीडा—कदापि नहीं ! तुम मुझ से क्या चाहते हो ?

डाइमोडीस—तुमने मुझे क्या देने के लिए कहा था ?

क्रेसीडा—उस बात को जाने दो, और जो चाहो सो करूँ।

डाइमोडीस—अच्छा! प्रणाम!

क्रैसीडा—डाइमोडीस!

डाइमोडीस—नहीं! नहीं! अब मैं जाता हूँ। मैं तुम्हारी चालों में न आऊँगा!

क्रैसीडा—कान में एक बात सुन लो!

अब उसने कुछ कान में कहा। इस पर डाइमोडीस क्रुद्ध होकर चलने लगा। तब क्रैसीडा बोली—

"तुम ग़ुस्से से जाते हो। एक बात और सुनते जाओ।"

डाइमोडीस—तो क्या तुम अपने वचन को पालोगी?

क्रेसीडा—न पालूँ तो कभी विश्वास न करना।

डाइमोडीस—अच्छा कुछ चिह्न दो।

क्रैसीडा—(ट्रोइलस का दिया दस्ताना देकर) लो इस दस्ताने को रक्खो!

अब क्रैसीडा को ट्रोइलस का ख्याल आ गया और दस्ताने को पीछे हटा कर कहने लगी—

"वह मुझे प्यार करता था। मैं अब इसको न दूँगी।"

डाइमोडीस—यह किसका है?

क्रैसीडा—इससे क्या प्रयोजन! अब मेरे पास न आना! यहाँ से चले जाओ!

डाइमोडीस—मैं इसे लेकर जाऊंगा।

क्रैसीडा—क्या इसे ?

डाइमोडीस—हाँ इसे !

क्रैसीडा०—(दस्ताने को चूमकर)-तेरा स्वामी आज अकेला पलँग पर पड़ा हुआ मेरी और तेरी याद कर रहा होगा ! और मेरे दस्ताने को इसी प्रकार चूम रहा होगा जैसे मैं तुझे ! (डाइमोडीस से) इसे मत लो ! मैं तुमको और चीज दूँगी ।

डाइमोडीस—मन तो दे चुकीं अब इसको भी देदो ।

क्रैसीडा—नहीं दूँगी ।

डाइमो—मैं तो लूँगा । यह किस का है ?

क्रैसीडा०—मैं नहीं कहूँगी ।

इस झंझट के बाद क्रैसीडा ने दस्ताना दे दिया और ट्रोइलस का हृदय जो इस दुःखदायी दृश्य को दूर से देख रहा था टूक टूक हो गया और बिना प्रिया से भेंट किये ही वह वहाँ से चल दिया । सच बात तो यह थी कि क्रैसीडा अब ट्रोइलस की प्रिया ही नहीं थी, किन्तु उसका चित्त डाइमोडीस की ओर लग गया था ।

ट्रोइलस के वहाँ से चले आने पर कुछ दिनो पीछे यूनानी और ट्रोय के दलों में बड़ा भारी युद्ध हुआ । हैक्टर मारा गया । ट्रोय वालों के बहुत से आदमी काम आये और यूनानियो की विजय हुई ! ट्रोय का नाश हो गया !

॥ इति ॥